अज़ इफ़ादात

महबूबुल उलमा व सुलाहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी
मुजद्दिदी मद्दा ज़िल्लहु

मुरत्तिब

फ़क़ीर सलाहुद्दीन सैफ़ी नक़्शबन्दी

उस्ताद दारुल उलूम फ़लाह दारेन, तरकेसर, सूरत, गुजरात

अमल से ज़िन्दगी बनती है

अज़ इफ़ादात महबूबुल उलमा व सुलाहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़्क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी
मुजद्दिदी मद्दा ज़िल्लहु

मुरत्तिब

फ़क़ीर सलाहुद्दीन सैफ़ी नक़्शबन्दी
उस्ताद दारूल उलूम फ़लाह दारैन, तरकेसर, सूरत, गुजरात

फ़रीद बुक डिपो (प्राईवेट) लिमिटेड
2158, एम.पी. स्ट्रीट, पटौदी हाउस,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

...... किताब से पहले ......

الحمد الله و كفى و سلام على عباده الذين اصطفى .... اما بعد

ज़ेरे नज़र किताब " अमल से ज़िन्दगी बनती है" हज़रत मौलाना पीर जुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी मद्दा ज़िल्लहू के उन खुतबात का मजमूआ है, जिन में हज़रत ने नेक आमाल के फ़वायद और आमाले बद के नक़्सानात, नीज़ आमाले सालिहा की तरग़ीब और आमाले शुनीआ से इज्तिनाब की तरग़ीब दिलाई है। अगर बन्दा इख़्लास के साथ उनको पढ़ कर अमल शुरू करे तो अबदी ज़िन्दगी के लिए तोशए आख़िरत बखूबी इख़्तियार कर सकता है।

लेकिन अफ़सोस ....! आज दुनिया के ला–मुतानाही झमेलों में उलझ कर हम फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गए हैं, जिस का नतीजा यह कि दिल वीरान, रातें सूनी, और आंखें खुश्क हो गई हैं।

आज जब कि रातों को गर्म--गर्म आंसू और सर्द–सर्द आहें भरने वाले अकाबिरीन पै दर पै उठते जा रहे हैं, हमें चाहिए कि मौजूदा अकाबिरीने उम्मत की क़द्र कर लें और खूने दिल में डूबी हुई उनकी नसीहतों पर अमल कर लें, करीम रब की ज़ात से उम्मीदे क़वी है कि अल्लाह रहम फ़रमा देंगे।

ज़ेरे नज़र किताब की तय्यारी में इस आजिज़ का जनाब अलहाज यूनुस सुलेमान और शाहनवाज़ भाई रावत साहब दामत बरकातुहुमा ने जो तआव्वुन फ़रमाया यह फ़क़ीर दिल की गहराईयों से उनके और उनकी नसलों के हक़ में दुआ करता है।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हज़रते वाला के साये आतिफ़त को हम कमज़ोरों के सर पर ता देर क़ायम दायम रखे और आप के फ़ैज़ को सलामत बा करामत रखे आमीन।

फ़क़ीर सलाहुद्दीन सैफ़ी नक़्शबंदी अफ़ी अन्हु

كان الله له عوضا عن كل شيء

खुतबात एक नज़र में

वक़्त की क़द्र कीजिए

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी दामत बरकातहुम

﴾लोसा का मस्जिद नूर एम ऐस्डल 1424 हि0 मुताबिक़ 2003 ई0﴿

इस बयान में हज़रत ने मोतकिफ़ीन को वक़्त क़दर्नी करने पर ज़ोर दिया

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

दीनी काम करने वालों के लिए एक हसीन नमूनए अमल

(3) .... इमाम अबू यूसुफ़ रह0 वक़्त के चीफ़ जस्टिस थे, आलमे इस्लाम के अपने ज़माना में सबसे बड़े क़ाज़ी थे, वह सारा दिन दीन का काम करते जब रात होती तो हर रात में दो सौ रकअत नफ़्ल पढ़ा करते थे इतने मसरूफ़ बन्दे और रात को इतनी अल्लाह तआला की इबादत करते उन्होंने दीन के लिए अपनी ज़िन्दगियां क्या खूब गुज़ारीं।

इरशादे फ़रमूदा
हज़रत पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब मद्दा ज़िल्लहू

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد ....!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ . بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔

﴿اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّائِفِيْنَ وَالْعَاكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ﴾

وفى مقام آخر

﴿وَمَاتَوْفِيْقِىْ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ﴾

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

रमज़ानुल मुबारक की इक्किसवीं रात है एतकाफ़ का वक़्त शुरू हो चुका पहली मज्लिस में कुछ हिदायात दि जायेंगी कि हम अपने वक़्त की अहमियत को पहचानें हम अपनी बेइल्मी और बे अमली के साथ आज इस दौर में ज़िन्दा हैं जिस दौर में पैदा होने से हमारे इल्म और अमल वाले बुजुर्गों ने अल्लाह की पनाह मांगी, वह हमारे बुजुर्ग वह अस्लाफ़, जो इल्म वाले थे और अमल वाले थे वह इस दौर में पैदा होने से अल्लाह की पनाह मांगते थे, आज हम अपनी बे इल्मी और बे अमली के साथ इस दौर में जिन्दा हैं, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हम पर बहुत बड़ा एहसान है कि उसने दुनिया के झमेलों से निकाल कर अपने घर में आकर बैठने की तौफ़िक़ अता फ़रमाई ﴿ذالك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم﴾ आज कल हमारी हालत इतनी बिगड़ चुकी है कि मुआशरे के अन्दर जो अख़लाकी अक़्दार मौजूद होनी चाहिये थीं वह नज़र नहीं आतीं सच्ची बात तो यह है कि दरिन्दो ने इन्सानों को इतना नक़्सान नहीं पहुंचाया जितना आज के इन्सानों ने इन्सान को नक़्सान पहुंचाया, ख़्वाहिशात की ज़न्जीरों में जकड़े हुए कैदी हैं

एक हुजूम औलादे आदम का जिधर भी देखिए
देखिए हर तरफ़ अल्लाह वालों का काल

यूं देखो तो हर तरफ़ भीड़ नज़र आएगी अल्लाह के बन्दे ढूंढने लगो तो कोई एक जाकर मिलेगा।

एक वाक़ेआ

हज़रत मौलाना अहमद लाहौरी अपने दर्से कुरआन में एक अजीब वाक़ेआ सुनाया करते थे फ़रमाते थे कि मैं बाज़ार जा रहा था, मुझे एक बुज़ुर्ग नज़र आए उनके चेहरे की नूरानीयत बताती थी कि यह कोई साहबे निस्बत आदमी है, मैं ने क़रीब होकर सलाम किया उन्होंने मुझ से पूछा अहमद अली इन्सान कहां रहते हैं? फरमाते हैं, मैंने इर्द गिर्द देखा बाज़ार बन्दों से भरा हुआ है मैं ने कहा हज़रत यह सब इन्सान ही तो हैं, यह बात सुन कर उन्होंने अजीब से अन्दाज़ में एक निगाह दौड़ाई और कहने लगे यह सब इन्सान हैं? उनके केहने में कोई तासीर ऐसी थी कि मुझ पर ऐसी कैफ़ियत हुई कि मुझे बाज़ार कुत्ते बिल्ली और जानवरों से भरा नज़र आया उनमें कोई कोई खुदा का बन्दा था, जब मेरी यह कैफ़ियत ख़त्म हुई वह बुज़ुर्ग चले गए थे, हज़रत यह वाक़ेआ दरसे कुरआन में सुना कर फ़रमाया करते थे

अल्लाह तो सब का एक, अल्लाह का कोई एक
हज़ारों में न मिलेगा, लाखों में तू देख

तो सच्ची बात तो यही है कि सौ फ़ीसद शरियत पर अमल करने वाले आज के दौर में बहुत थोड़े लोग है, दायें बायें आगे पीछे जिधर भी देखो बस ख़्वाहिशात की दुनिया है, जिस्म बूढ़े हो रहे हैं आरज़ूयें जवान हो रही हैं,

रात दिन हों मह्वे तन आराई व तन परवरी
वाए नादानी इसी को ज़िन्दगी समझा हूं मैं

आज कल की अदालतें इन्सानों से भरी हुइ हैं, यह इस बात की

दलील है कि दिलों में अदावतें भरी हुई हैं, जब अदावतें दिलों मे भरती हैं तब अदालतें इन्सानों से भरती हैं, ऐसे वक़्त में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की याद के लिए वक़्त फ़ारिग़ कर लेना यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बडी मेहरबानी है औऱ इसी में सुकून है और इसी में दिल का इलाज है।

निगाह उल्झी हुई है रंग व बू में
ख़िरद खोई हुई है चार सू में
न छोड़े दिल फ़ग़ाने सुब्ह गाही
अमाँ शायद मिल अल्लाहु में

मक़सूद यह है कि हम दो रंगी को छोड़ें और एक रंगी ज़िन्दगी को इख़्तियार करें यह जो एक चेहरे पर हम दो चेहरे सजा लेते हैं यह अल्लाह तआला को बहुत ना पसन्दीदा है

दो रंगी छोड़ दे यक रंग हो जा
सरा सर मोम हो जा या संग हो जा

इसी लिए अल्लाह ताला ने कुरआन मजीद में फ़रमा दिया ﴿ يـا يهـا الـذيـن آمـنـو آمنو بالله و رسولـه ﴾ ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ। अब ग़ौर करने की बात है यह कफ़िरों को तो नहीं कह रहे हैं कि 'يـايها الذين كفروا' मुशरिकों को भी नहीं कह रहे कि 'يـا يهـا الـذين اشركوا' मुनाफ़िक़ों को भी नहीं कह रहे कि 'يا يها الذين نا فقو' ओ मुनाफ़िक़ो किन को कह रहे हैं يا يهـا الـذ يـن آ مـنو ऐ ईमान वालो और हुक्म किस बात का दे रहे हैं آمـنـو بـالـلـه ورسو لـه अल्लाह और उसके रसूल ﷺ पर ईमान ले आओ क्या मक़्सद? ऐ ज़बान से इक़रार करने वालो अपने दिल से भी उसकी तस्दीक़ कर दो ।

तू अरब है या अजम है तेरा लाइलाहा
लुगत ग़रीब जब तक तेरा दिल न दे गवाही

जब तक दिल गवाही न देगा तब तक यह क़बूल नहीं होगा।

खि़रद ने कह भी दिया लाइलाहा तो क्या हासिल
दिल व निगाह मुसलमां नहीं तो कुछ भी नहीं

याद रखें बाहर मस्जिद बनाना आसान अन्दर मस्जिद बनाना मुशकिल काम यह दिल भी तो मस्जिद है, हदीस पाक में फ़रमाया गया नबी अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया न मैं ज़मीनों में समाता हूं न आसमानों में समाता हूं ,मैं मोमिन बन्दे के दिल में समाता हूं तो यह हमारा दिल भी अल्लाह ताला का घर है क़ल्बे अब्दुल्लाह, अरशुल्लाह है यह अल्लाह का कोठा है तो फिर इस घर को भी तो साफ़ रखना चाहिए ना ,जो मिट्टी गारे का बना हुआ घर रोज़ एक घंटा सफ़ाई करने के लिए लगाते हैं और जिस घर के बारे में अल्लाह ने खुद कहा उस में मैं होता हूं उसकी सफ़ाई के लिए हमें फुरसत ही नही मिलती

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की हरारत वालों ने
मन अपना पुरना पापी है बरसो में नमाज़ी बन न सका

जिस्म उधार का माल है

यह जिस्म हमें मुस्तआर मिला है उधार का माल है यह हमारी मिलकीयत नहीं है, यह उस पैदा करने वाले की मिल्क है, मालिक वह है हमें कुछ देर इस्तिमाल के लिए परवरदिगार ने अता फ़रमा दिया और जो उधार के माल पर फ़रैफ़ता होता फिरे उसी को पागल और दिवाना कहते हैं, कि उधार के माल पर फ़रैफ़ता हुआ फिर रहा है हम इस जिस्म को नेकी के कामों मे जितना इस्तेमाल कर सकते है उतना कर लें दस्तूर यही है अगर घर में इस्तरी ख़राब हो जाए तो हम भाई के घर से मंगायें कि जी हमें दफ़तर जाना है तो बीवी एक जोड़ा इस्तरी नहीं करती वह अपने भी कर लेती है बच्चों के भी कर लेती है दो चार दिन के कर लेती है की अपनी इस्तरी आने में टाईम लग जाएगा तो उधार लिया है बार बार मांगी भी नहीं जाती अब थोड़ी देर में जितना काम निकाल सकते हो निकाल लो, जिस तरह उधार की

चीज़ पर थोड़ी देर में ज़्यादा से ज़्यादा लोग काम निकालते हैं हमें भी चाहिए यह जिस्म उधार का माल है थोड़े वक्त में इस से ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की इबादत कर लो ।

अज्र बाक़ी रहता है

पिछले साल आप ने जो इबादतें कीं आज आप को उसकी तकलीफ़ें याद नहीं हैं, थकावट याद नहीं हैं मगर नामए आमाल में इसका अज्र मौजूद है तो इबादतों की थकावटें तो उतर जाती हैं मगर अज्र नामए आमाल में मौजूद हुआ करते हैं इसलिए हमें इस जिस्म को खूब थकाना चाहिए, मोमिन को चाहिए कि नेकी कर करके थके और थक–थक कर नेकी करे हमारे अकाबिर इतनी इबादत करते थे कि जब रात को बिस्तर पर सोने के लिए जाते ऐसे पाओं उठाते थे जैसे थका हुआ ऊंट पावं घसीट कर चला करता है।

इंसानी वजूद की मिसाल

इंसानी वजूद चक्की की मानिन्द है, चक्की में गंदुम पीस लें तो आप ने फ़ाइदा उठा लिया और ख़ाली चलती रहेगी तो नक़सान देह। हम भी अगर इस जिस्म से इबादत कर लें तो हम ने इससे फ़ाइदा उठा लिया वरना यह जिस्म बेकार रहा। बाज़ बुजुर्गों ने कहा कि इंसानी जिस्म बर्फ़ की मानिन्द है बर्फ़ को आप पानी में डाल कर ठंडा कर लें तो बर्फ़ से फ़ाइदा उठा लिया अगर ऐसा नहीं करेंगे तो बर्फ़ ने तो पिघलना ही है, एक बुजुर्ग फ़रमाते थे कि मुझे एक बर्फ़ वाले ने सबक़ सिखा दिया उन्होंने कहा वह कैसे? कहने लगे मैं बाजार में गया, मैं ने एक बर्फ़ वाले को देखा कि उसकी बर्फ़ पिघलती जा रही है और कुदरतन ख़रीदने वाला कोई नहीं अब उसको परेशानी लाहिक़ है कि अगर कोई नहीं खरीदेगा बर्फ़ तो पिघल जाएगी, मेरे पैसे तो ज़ाया हो जायेंगे बिल आख़िर वह बाज़ार में खड़े होकर आवाज़ लगाने लगा लोगो! रहम करो उस शख़्स पर जिस का सरमाया पिघल रहा है, तो

यह ज़िन्दगी भी सरमाया है जो पिघलती जा रही है।

हो रही है उम्र मिस्ल बर्फ़ कम

रफ़्ता–रफ़्ता चुपके–चुपके दम बदम

जो दिन आज हमारी ज़िन्दगी में गुरूब हुआ यह लौट के दोबारा तुलू नहीं हो सकता यह दिन गुजर गया अब जो दिन बाक़ी हैं वह गुज़रेंगे और बिल आख़िर ज़िन्दगी गुज़र जायेगी इंसान यही सूचता रहता है जब पूछते हैं ना एक दूसरे से सुनाओ ज़ी क्या हाल है, वक़्त अच्छा गुज़र रहा है? हम यही कहते हैं कि वक़्त अच्छा गुज़र रहा है और मौत के वक़्त पता चलेगा कि वक़्त ने तो क्या गुजरना था मैं खुद ही गुज़र गया, हम जैसे कई आए और गुज़र गये इसलिए किसी आरिफ़ ने कहा कि बेकार इंसान से तो मुर्दा ज़्यादा बेहतर है इसलिए कि मुर्दा कम जगह घेरता है, बेकार इंसान ज़्यादा जगह घेरता है आप ने देखा होगा कि जो पानी खड़ा होता है ना उसमें कीड़े पैदा हो जाते हैं, जिस तरह खड़े पानी के अन्दर कीड़े जन्म ले लेते हैं इसी तरह फ़ारिग़ ज़ेहन के अन्दर मज़मूम ख़्यालात जन्म ले लेते हैं, जो शख़्स अपने दिल व दिमाग़ को अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं रखेगा शैतानी शहवानी नफ़सानी ख़्यालात खुद बखुद उसके ज़ेहन में आयेंगे

अल्लाह वालों ने वक़्त कैसे गुज़ारा?

हमारे अकाबिर ने ज़िन्दगी की हक़ीक़त को समझा और उन्होंने अपने जिस्म को इबादतों में खूब थकाया नबी ﷺ इतनी इबादत फ़रमाते थे हदीस पाक में आता है "حتى تورمت قداماه" कि नबी ﷺ के क़दमैने मुबारक के ऊपर वरम आ जाया करता था, पावं मुबारक सूज जाते थे इतनी इबादत करते थे।

(1) ...... इमाम आज़म अबू हनीफा रह0 के बारे में लिखा है कि रमज़ानुल मुबारक में एक कुरआन पाक दिन में तिलावत करते और एक कुरआन पाक रात में तिलावत करते और तीन कुरआन पाक तरावीह में

पूरा करते तो टोटल उनके तिरसठ कुरआन पाक हो जाते थे।

(2) .... एक बुजुर्ग थे उनकी अस्सी साल उम्र थी और अस्सी साल की उम्र में वह रोज़ाना सत्तर मरतबा काबतुल्लाह का तवाफ़ किया करते थे, एक तवाफ़ के सात चक्कर होते हैं तो सत्तर तवाफ़ के चार सौ नव्वे चक्कर और हर तवाफ़ की दो रकअत वाजिबुल तवाफ़, उनको सत्तर से ज़रब दो तो एक सौ चालीस तो नफ़्लें हो गई, अब हम अगर किसी दिन एक सौ चालीस नफ़्लें पढ़ें ना तो फिर आख़िर की समीअल्लाह की जगह ओई अल्लाह निकलेगा और यह उनका ज़िन्दगी का एक अमल था, बाक़ी आमाल और मामूलात इसके अलावा हुआ करते थे।

(3)......... इमाम अबू यूसुफ़ रह0 वक़्त के चीफ़ जस्टिस थे, आलमे इस्लाम के अपने ज़माना में सबसे बड़े काज़ी थे, वह सारा दिन दीन का काम करते जब रात होती तो हर रात में दो सौ रकअत नफ़्ल पढ़ा करते थे इतने मसरूफ़ बन्दे और रात को इतनी अल्लाह तआला की इबादत करते उन्होंने दीन के लिए अपनी ज़िन्दगियां खूब गुज़ारीं।

(4) .... चुनांचे हमारे एक बुजुर्ग गुज़रे हैं ख़्वाजा फ़ज़ल अली कुरैशी रह0 वह खुद फ़रमाया करते थे कि मैं वुज़ू करके अपनी ज़मीन में काम करने के लिए निकलता था और ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र भी करता था हर रोज़ सत्तर हज़ार मरतबा इस्मे ज़ात का ज़िक्र करने का मेरा मामूल हुआ करता था, हमारे लिए एक तसबीह पढ़नी सुबहानल्लाह की मुश्किल होती है, चुनांचे कितने लोग हैं रोज़ाना दस हज़ार मरतबा कलमए तय्यबा का ज़िक्र करते हैं।

(5) .... लाहौर में एक आलिम सिलसिला में दाख़िल हुए तो उन्होंने सुबह के नाशते के लिए दावत दी कहने लगे कि हज़रत मेरे वालिद आशिक़े कुरआन थे, हम ने उनसे कहा कि भाई अब हमें नाशता में इतनी दिलचस्पी नहीं रही उनके हालात सुनने में दिलचस्पी ज़्यादा हो गई है आप हमें अपने वालिद के वाक़्यात सुनायें वह कहने लगे कि

जी एक वाक़्या सुनाता हूँ, मेरे वालिदे गिरामी को किसी बुज़ुर्ग ने बता दिया कि अगर दो साल तक रोज़ाना एक कुरआन मजीद की तिलावत करोगे तो कुरआन का फ़ैज़ तुम्हारी आइन्दा नस्ल में जारी हो जाएगा, मेरे वालिद साहब ने इस का इरादा कर लिया और रोज़ कुरआन पाक पढ़ने का मामूल बना लिया एक कुरआन मजीद रोज़ाना पढ़ना सर्दी, गर्मी खुशी, ग़मी, सिहत, बीमारी, देस, प्रदेस हर हाल में उन्होंने रोज़ाना एक कुरआन मजीद पढ़ा, हत्ता कि दो साल मुकम्मल हुए कहने लगा इसका नतीजा यह हुआ कि मेरे वालिद के जितने बेटे और जितनी बेटियां उनके आगे जितने बेटे जितनी बेटियां दस साल से ऊपर की उम्र के सब के सब कुरआन पाक के हाफ़िज़ हैं, मेरे वालिद की नस्ल में नरीना औलाद या मादीना औलाद हमारे खानदान का दस साल के ऊपर का हर बच्चा कुरआन पाक का हाफ़िज़ है ﷲ यह लोग अभी ज़िन्दा हैं फ़ौत शुदा लोगों की बातें नहीं कर रहा अगर यह लोग आज के इस दौर में इतनी अल्लाह तआला की इबादत कर सकते हैं तो क्या हम रोज़ाना एक पारे की तिलावत नहीं कर सकते।

(6) .... हमारे क़रीबी रिशतेदारों में से एक बुज़ुर्ग थे आलिम थे वह कहने लगे जब मैं अपने हज़रत से बैअत हुआ तो उन्होंने मुझे एक कुरआन पाक रोज़ाना तिलावत का हुक्म दिया खुद मुझे फ़रमाने लगे कि इस वक्त मुझे बैअत हुए तैंतालीस साल का अर्सा गुज़र चुका इन तैंतालीस सालों में एक दिन मेरी तिलावत कज़ा नहीं हुइ अगर यह लोग ऐसे आमाल नामा ले कर अल्लाह के हुज़ूर पेश होंगे कि तैंतालीस साल में एक दिन भी कुरआन पाक का एक पारा पढ़ना इसमें नाग़ा नहीं हुआ तो फिर सोचें कि हम उस दिन क्या करेंगे? करने वाले आज के दौर में बहुत कुछ कर रहे हैं हम ने तो देखा हुफ़्फ़ाज़ को भी रमज़ानी हाफ़िज़ बस रमज़ान आया तो दिन रात भाग दौड़ कर के कुछ कर लिया और उस के बाद उनमें अैर आम नौजवानों में कोई फ़र्क़ नहीं।

(7) हमारे एक क़रीबी तअल्लुक वाले दोस्त हैं उनकी वालेदा साहेबा कुरआन मजीद की हाफ़िज़ हैं अल्लाह तआला की शान उनको कुरआन मजीद इस तरह याद है/जिस तरह आम लोगों को सूरह फ़ातेहा याद होती है, जब चाहें जिस वक़्त चाहें जहां से पूछें एक लफ़्ज़ बोलें वह उसी से आगे पढ़ना शुरू कर देती हैं, अल्लाह तेरी शान वह हैरान होती हैं कि क्या हाफ़िज़े कुरआन भी भूलते हैं और वाक़ई जो मेहनत करते हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनको नेमत अता फ़रमाते हैं।

आज भी कैसे कैसे मौजूद हैं?

हमें एक दफ़ा मरी जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ रमज़ान मुबारक में तो एक जगह हम ने तरावीह पढ़ी एक अजीब बात सुनी वह कहने लगे कि इस मुसल्ले पर जो कुर्रा सुनाते हैं वह बड़े चुने हुए होते हैं, मगर ख़ास बात यह है कि छत्तीस साल में यहां तरावीह पढ़ाने वाले किसी हाफ़िज़ को एक मरतबा भी लुक़मा लेना नहीं पड़ा अल्लाहु अकबर तो आज के दौर में अगर ऐसे लोग मौजूद हैं तो हम क्यों कुरआन मजीद को अच्छी तरह नहीं पढ़ते हैं यह फ़क़त अहमियत है वक़्त की, जिस ने मेहनत कर ली उस ने वक़्त को कमा लिया वरना वक़्त तो गुज़र ही रहा है वक़्त इन्तेज़ार नहीं करता किसी का, तो जब यह जिस्म उधार का माल है हमें चाहिए कि हम इससे जितना ज़्यादा इबादत कर सकें नेकी कर सकें मख़्लूके खुदा की ख़िदमत कर सकें, दीन का काम कर सकें, हम इस को खूब अल्लाह के दीन के लिए थकायें, फ़ारिग़ रहना खुशी की बात नहीं है, अदीमुल फुरसत हो जाना यह खुशी की बात है, फुरसत ही न मिले इतना दीन के काम में इन्सान लग जाए।

(1)....एक साहब चन्द दिन पहले मिलने के लिए आए सोला साल से साएमुद्दहर थे मुतवातिर रोज़े की हालत में ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे

(2).... हमारे एक क़ारी साहब जिन को हमारे बाज़ दोस्तों ने देखा होगा उस साल इजाज़त भी दी ख़िलाफ़त भी दी चतराल के थे

अल्हमदु लिल्लाह उनकी ज़िन्दगी के उस वक़्त तेईस साल गुज़र चुके एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्तार तेईस साल इस तरतीब पर वह ज़िन्दगी गुज़ार चुके हैं तो भइ अगर आज के दौर में ऐसे लोग ज़िन्दा मौजूद हैं जो अल्लाह के लिए यह कुछ करते हैं, तो क्या दस दिन हम अल्लाह तआला की खूब जी भर के इबादत नहीं कर सकते, मक़सद यह है इन मिसालों के देने का कि हम जो नियत ले कर आए एतेकाफ़ की अब यह दस दिन जी भर कर अल्लाह तआला की इबादत करें खूब अपने जिस्म को थकायें, यह जिस्म दुनिया के लिए हज़ारों मरतबा थका हम ने रातें दुनिया की ख़ातिर सैंकड़ो मरतबा जाग कर गुज़ारीं, अगर यह दस रातें अल्लाह के लिए जाग के गुज़ार देंगे और दिन अल्लाह की इबादत में गुज़ार देंगे और थका देंगे तो यह कौन सी बड़ी बात हो जाएगी, तो इस लिए दिल में हिम्मत हो, जज़्बा हो शौक़ हो कि हम ने इन दस दिनों में खूब जी भर के अल्लाह तआला की इबादत करनी है।

वक़्त की क़दर करें

रमज़ानुल मुबारक का वक़्त वैसे ही क़ीमती और आख़री अशरह दो की निस्बत और ज़्यादा क़ीमती मोतकिफ़ के लिए तो फिर और भी ज़्यादा क़ीमती चूंकी मोतकिफ़ की मिसाल ऐसी है जैसे किसी सख़ी की दहलीज़ पकड़ के कोई साएल बैठ जाए कि मुझे जब तक कुछ नहीं मिलेगा मैं दरवाज़ा पकड़े रहूंगा तो सख़ी बिल आख़िर उसे कुछ दे ही दिया करता है हमारे मशाएख़ ने फ़रमाया الوقت من ذهب وفضة वक़्त जो है वह सोने और चाँदी की डलियों की मानिन्द है इस्तेमाल कर लो तो चाँदी बना लो और ज़्यादा इख़्लास के साथ करो तो सोने की डली बनेगी और अगर इस्तेमाल नहीं करोगे तो मिट्टी के ढेले की मानिन्द गुज़र जाएगा, बल्कि बाज़ बुज़ुर्गों ने तो यूं कहा कि الوقت سيف قاطع वक़्त एक कांटे वाली तलवार है इमाम शाफ़ई फ़रमाते थे कि मुझे सूफ़िया की दो बातों से बहुत फ़ाएदा हुआ एक बात तो यह कि वक़्त

एक काटने वाली तलवार है अगर तुम उसे नहीं काटोगे तो वह तुम्हें काट कर रख देगी और दूसरा फ़रमाया करते थे कि यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है कि अगर तुम नफ़्स को हक़ में मशगूल नहीं करोगे तो नफ़्स तुम्हें बातिल में मशगूल कर देगा तो बात बिल्कुल सच्ची है हम नफ़्स को पालने में मशगूल हैं और नफ़्स हमें जहन्नम में धक्का देने में मशगूल है बहरहाल जितना भी वक़्त है हमारा वह तय शुदा है।

ऐ शमा तेरी उमर तबई है एक रात
हंस कर गुज़ार दे या उसे रो कर गुज़ार दे

हक़ीक़ी ज़िन्दगी कौन सी?

इस हमारी ज़िन्दगी के औक़ात में जो यादे इलाही में वक़्त गुज़र रहा है यह तो ज़िन्दागी है और बाक़ी सारी शर्मिन्दगी, एक बड़े मियां से किसी ने पूछा कि बड़े मियां उम्र कितनी? कहने लगे पन्द्रा साल, उस ने कहा क्यों जवान बनने का ज़्यादा ही शौक़ है कि पन्द्रा साल कह रहे हो कहने लगे नहीं भई जब से तौबा करके अल्लाह से सुलह की है पन्द्रा साल गुज़रे हैं यह मेरी ज़िन्दगी है और इससे पहले वाली शर्मिन्दगी है।

मेरी जीस्त का हाल क्या पुछते हो
बुढ़ापा न बचपन न मेरी जवानी
जो चन्द साअतें यादे दिलबर में गुज़रीं
वही साअतें हैं मेरी ज़िन्दगानी

जो चन्द साअतें अल्लाह तआला की याद में गुज़र गईं वह मेरी ज़िन्दगी है और बाक़ी सारी की सारी शर्मिन्दगी है।

आख़ेरत की तय्यारी की फ़िक्र

(1).....एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं ओवैस क़रनी क़र्न एक क़बीला था उसके रहने वाले थे यह नबी अलैहिस्सलाम के दौर में थे वालेदा की ख़िदमत

करते थे उनसे इजाज़त ले नबी अलैहिस्सलाम के दीदार के लिए हाज़िर हुए मगर अल्लाह के महबूब सफ़र पर जा चुके थे, पीछे वालेदा अकेली थीं बीमार थीं इस लिए वैसे ही वापस आ गए जब नबी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप को पता चला तो मोतबर किताबों में लिखा है कि नबी अलैहिस्सलाम ने अपना जुब्बा हज़रत उमर को दिया और कहा कि तुम उन की तलाश करना फ़लां फ़लां जगह, निशानियां बताईं कि वहां तम्हें मिलेंगे और उन को मेरी तरफ़ से यह जुब्बा हदिया पेश करना और उनको कहना कि वह मेरी उम्मत के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें, चनांचे कुछ अर्सा के बाद नबी अलैहिस्सलाम का वेसाल हो गया तो बाद में हज़रत उमर और हज़रत अली यह दोनों हज़रात उनकी तलाश में गए उनको एक जगह पा लिया उनको जुब्बा भी दिया उनको बताया भी सही किताब में लिखा है कि बस थोड़ी सी गुफ़्तगू आपस में हुई उसके बाद ओवैस क़रनी ने कहा कि आप ने भी आख़ेरत की तय्यारी करनी होगी और मैं ने भी आख़ेरत की तय्यारी करनी है अच्छा फिर रोज़े महशर को मिलेंगें उनको रूख़्सत कर दिया

(2).... हमारे एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत मौलाना हुसैन अली वाँ भचराँ वाले उनके बारे में भी यही है कोई भी मिलने आता थोडी देर उस से गुफ़्तगू करते जो काम की गुफ्तगू थी और गुफ़्तगू करने के बाद कहते भई आपने भी आख़ेरत की तय्यारी करनी है और मैं ने भी तय्यारी करनी है अच्छा फिर मिलेंगे फ़ारिग़ कर देते थे यह कैसे लोग थे हर दिन अपनी आख़ेरत की तय्यारी में लगे होते थे।

(3)....चुनांचे एक आदमी ने राबीया बसरिया रह0 से दुआ करवानी थी किसी परेशानी में फंसा हुआ था वह कहते है मैं फज़र के बाद गया मिलने के लिए तो वह नफ़्लें पढ़ रही थीं, मैं ने कहा जुहर के बाद सही फिर गया तो नफ़्ल पढ़ रही थीं, मैं ने कहा असर के बाद सही असर के बाद गया तो तिलावते कुरआन कर रहीं थीं, कि मग़रिब के बाद सही तो फिर नफ़्ल पढ़ रही थीं, कहने लगे इशा के बाद सही, इशा के

बाद उन्होंने नफ़्ल की नीयत बांधी और पूरी ही नहीं कर रही थीं हत्ता कि इसी तरह उन्होंने पूरी रात गुज़ार दी फ़जर का वक़्त आ गया तो फ़ज़र पढ़ी मैं फज़र पढ़कर फिर जल्दी गया तो कहने लगे कि फज़र के बाद इशराक़ पढ़कर थोड़ी देर उनकी आंख लग गई जब मैं वहां पहुंचा तो मेरे पांवों की आवाज़ से उनकी आंख खुली तो ऐसे अचानक उठ बैठीं जैसे कोई बन्दा बड़ा लेट हो जाता है और जाना होता है कहीं ऐसे उठ बैठीं और दुआ मांगने लगीं" اللهم انی اعوذبك من عين لا تشبع من النوم ऐ अल्लाह मैं ऐसी आंख से तेरी पनाह मांगती हूं जो नींद से भरती ही नहीं है अब बताइए कि थोड़ा सा हिस्सा दिन का सोने मैं गुज़रा और उस पर भी इस्तेग़फ़ार कर रही हैं ।

जन्नतियों की हसरत

जब कोई खुशी की बात आती है ना तो ग़म की बात भूल जाते है जब भी खुशी होती है बन्दे को तो ग़म भूल जाते हैं, पक्की बात है जन्नत में जाने से बढ़ कर भी कोई खुशी हो सकती है? नहीं हो सकती इसी लिए जन्नती जब जन्नत में जायेंगे तो कहेंगे الحمد لله الذی اذهب عنا الحزن हम से वह ग़म चला गया और जन्नत में कितनी खुशी होगी कि इन्सान अल्लाह तआला का दीदार करेगा नबी अलैहिस्सलाम का दीदार करेगा नकों की महेफ़िल होगी और यह खुशी होगी कि अब यह नेमतें हम से कभी वापस नहीं ली जायेंगी उस खुशी के हाल में भी बन्दे को एक हसरत रहेगी हदीस पाक में आता है हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़क्रिया ने फ़ज़ाइले ज़िक्र में यह हदीस कोट की है वह फ़रमाते हैं

لا يتحسر اهل الجنة الا على ساعةمن ربهم لم يذكر الله تعالى

अहले जन्नत को किसी बात पर हसरत नहीं होगी सेवाए एक बात के कि वह वक़्त जो उन्होंने दुनिया में अल्लाह की याद के बग़ैर यानी ग़फ़लत में गुज़रे हुए उस वक़्त पर हसरत हुआ करेगी कि काश हम

इस में ग़फ़लत न करते तो आज हमारे रूतबे इतने ज़्यादा बुलन्द होते, अब बताओ जो हसरत जन्नत में भी जान न छोड़ेगी वह कैसी बड़ी हसरत होगी, तो इस लिए अपने वक़्त को अल्लाह तआला की याद से मामूर कर लीजिए।

पाँच चीज़ों की क़दर करें

नबी अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया(اغتنم خمسا قبل خمس) पाँच को पाँच से ग़नीमत समझो

(1).....ज़िन्दगी को ग़नीमत समझो मौत से पहले

(2).....फ़ुरसत को ग़नीमत समझो मशग़ूली से पहले

(3).....जवानी को ग़नीमत समझो बुढ़ापे से पहले

(4).....माल को ग़नीमत समझो फ़िक्र से पहले

(5).....और सेहत को ग़नीमत समझो बीमारी से पहले

एक और हदीस पाक में नबी अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया (نعمتان مبغون فيهما كثير من الناس الصحة والفراغ)दो नेमत ऐसी हैं कि जिन में अकसर लोग धोका खाए हुए हैं

(1) सेहत, और (2) फ़ुरसत, हदीस पाक में यह मज़मून आया तो हमें चाहिए कि हम अपने वक़्त की क़दर करें जो परवरदिगार ने हमें इनआम के तौर पर अता फ़रमाया बस यह दस दिन हैं डट के मेहनत कर लीजीये फिर इस की बरकतें आप को आखों से महसूस होगी

किसी शायर ने कहा:

नूर में हो या नार में रहना
हर जगह ज़िकरे यार में रहना
चंद झोंके खेज़ाँ के बस सह लो
फिर हमेशा बहार में रहना

बस यह चंद दिन मेहनत के गुज़ारें फिर इसकी बरकतें आप आखों से देखेंगे इनशाल्लाह आज जिस चीज़ की कमी है हमारे अन्दर वह

यह कि हम सुनते तो हैं सुन सुन के सुन हो जाते हैं अमल नहीं करते, तो सुनना और सुन के अमल करना यह आज वक़्त की ज़रुरत है।

पाँच चीज़ों की क़दर करें

नबी अलैहिस्सलाम इस बात पर सहाबए किराम से बैअत लिया करते थे (اسمعوا واطيعوا) कि तुम जो सुनोगे उस पर अमल करोगे उस पर मेरे हाथों पर बैअत करो الله اكبر। इसलिए जो लोग सुनते हैं और अमल करते हैं अल्लाह तआला ऐसे लोगों को पसनद फ़रमाते हैं ﴿الذين يستمعون القول فيتبعون احسنه﴾ तो सुनने की नियत यानी अमल की नियत से बैठ कर सुनेगे, एक जगह इरशाद फ़रमाया ﴿ان فى ذالك لآيات لقوم يسمعون﴾ इसमें निशानी है उस कौम के लिए जो सुनते हैं और एक जगह फ़रमाया ﴿ولو اراد الله فيهم خيرالاسمعهم﴾ अगर अल्लाह उनके साथ ख़ैर का इरादा करता तो उन को बात सुनवा देता, इस लिए हर बन्दा बात नहीं सुना करता हमारे हज़रत मजमा को फ़रमाते थे ओह! सुन रहे हो फिर फ़रमाया करते थे तुम नहीं सुन रहे हो, तो वाक़ई सुनने का भी अपना दरजा होता है जहन्नमी जहन्नम में जायेंगे तो फ़रिशते उनसे पूछेंगे कि तुम लोग क्यों जहन्नम में आए तुम्हें कोई समझाने वाला नहीं था? तो जहन्नमी आगे से जवाब देगें ﴿لو كنا نسمع او نعقل ما كنا فى اصحاب السعير﴾ ऐ काश! अगर हम सुन लेते या हमारे अन्दर अक़्ल की रत्ती होती तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते तो इस लिए ईमान वाले सुनते हैं और अपनी अक़्ल समझ से उस को सोचते हैं और उस को अमली जामा पहनाते हैं आज कल तो इनसान अपने ज़मीर की आवाज़ खुद नहीं सुनता जब भी कोई इनसान गुनाह करता है तो अल्लाह तआला ने उसके अन्दर एक ज़मीर की नेमत बनाई है वह ज़मीर चीख़ता है चिल्लाता है वह बताता है मलामत करता है कई नहीं सुनते सुनी अन सुनी कर देते हैं हालांकि वह हमारा सच्चा साथी है

कभी कभी इनसान अपने आप को ज़मीर की अदालत में कटहरे में खड़ा करके अपने बारे में राय ले कि मैं क्या हूँ? बिल्कुल सहीह फैसला मिलेगा इस लिए कहते हैं अपने आप की हक़ीक़त मालूम करनी हो तो अपनी हक़ीक़त अपने दिल से पूछो वह गवाह है जो कभी रिशवत क़बूल नहीं करता, सच्ची गवाही देता है दिल हमेशा बताएगा कि तुम कितने पानी में हो दुनिया के सामने हम जो बनते फिरें ﴿بل الانسان على نفسه بصيرة ولو القى معاذيرة﴾

आज के दौर की पाँच ख़ामियां

आज के ज़माना में पाँच ख़ामियां आम हैं:

(1).....पहली बात कि हम इल्म तो हासिल कर लेते हैं अमल में इतनी कोशिश नहीं करते इसलिए जिस से बात करो वह कहता है कि जी मुझे पता है भई जानते तो सब हैं अल्लाह तआला तो यह देखते हैं कि मानते कितना हैं? अगर निमट इल्म के ऊपर मग़्फ़िरत होनी होती तो शैतान की तो हम से पहले हो जाती, उसके इल्म में तो हमें कोई शक नहीं है तो निमट इल्म के ऊपर मग़्फ़िरत नहीं होगी जिस तरह चिराग़ जलाये बग़ैर फ़ाइदा नहीं देता उसी तरह इल्म अमल के बग़ैर फ़ाइदा नहीं देता

(2).......दूसरी बात कि हम अल्लाह तआला की नेमतें तो मांगते हैं इस्तेमाल भी करते हैं मगर उन नेमतों का शुकरिया अदा नहीं करते हमारे ऊपर अल्लाह तआला अन गिनत नेमतें भेजते हैं ﴿وان تعدو انعمة الله لا تحصوها﴾ अगर तुम अल्लाह तआला कि नेमतों को गिनना चाहो तुम शुमार भी नहीं कर सकते इतनी अन गिनत नेमत हैं मगर हम अल्लाह तआला का शुकरिया अदा नही करते, कोई शरबत पिला दे तो उसका भी शुकरिया और जो परवरदिगार दस्तरख़ान पे इतनी नेमतें खिलाता है पेट भर कर उठने के बाद खाने की दुआ भी याद नहीं रहती इस लिए एक बुजुर्ग फ़रमाते थे ऐ दोस्त अल्लाह

तआला की नेमतें खा खा कर तेरे दाँत तो घिस गए उसका शुक्र अदा करते हुए तेरी ज़बान तो नहीं घिसी–

(3)........तीसरी बात कि हम गुनाह कर बैठते हैं मगर इस्तिग़फ़ार नहीं करते बाज़ तो इस वजह से कि वह सोचते हैं कर लेगें यानी नियत होती है गुनाह छोड़ने की मगर कहते हैं हाँ अभी छोड़ेगें अकमालुलशीम में अजीब बात लिखी है वह फ़रमाते हैं ऐ दोस्त तेरा तौबा की उम्मीद पर गुनाह करते रहना और ज़िन्दगी की उम्मीद पर तौबा को मोअख़्ख़र करते रहना तेरी अक्ल का चिराग़ गुल होने की दलील है, राबिया बसरिया फ़रमाया करती थीं استغفارنا يحتاج الى استغفار कि हम लोग जो इस्तिग़फ़ार करते हैं इतनी ग़फ़लत से कि इस्तिग़फ़ार पर इस्तिग़फ़ार करने की ज़रुरत है।

(4).......बात यह कि हम मय्यत को तो दफ़न करते हैं मगर इबरत नहीं पकड़ते एक साहब अजीब वाक्या सुनाने लगे कहने लगे मेरे हमसाया में एक साहब थे उन की वफ़ात हो गई तो हमें भी सदमा हुआ तो मैं ने अपने घर में बच्चों को बता दिया कि भई अब एक महीना कम अज़ कम टी वी नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे सामने वाले पड़ोसी से हमारा इतना अच्छा तअल्लुक है तो उन को इतना सदमा हुआ और उन वालिद जवानुलउम्र थे और अच्छा कारोबार था तो मेरे घर के बीवी बच्चों ने मेरे साथ वादा कर लिया कि हम चालीस दिन तक टीवी को ऑन नहीं करेगें, कहने लगे चौथा दिन गुज़रा तो जिस घर में वफ़ात हुई थी उस घर से टीवी की आवाज़ आ रही थी इसका मतलब है उन बच्चों ने बाप को दफ़न तो किया इबरत नहीं पकड़ी तो हम मय्यत को दफ़न तो करते हैं इबरत नहीं पकड़ते कि हम ने भी आना है, हसन बसरी रह0 के बारे में आता है कि कब्रस्तान जाने के बाद इस क़दर उन पर ग़म तारी होता था कि कई मरतबा जिस चारपाई पर मुर्दे को ले जाया जाता उस चारपाई पर लिटा कर वापस लाया करते थे ऐसी हालत हो जाती थी और अल्लामा अब्दुलवहाब शेरानी की किताबों में

लिखा है कि सल्फ़ सालिहीन जब जनाज़ा ले कर चलते थे तो जनाज़े के पीछे हर बन्दे की आँख से आंसू टपकते थे बाहर वाले बन्दे के लिए पहचानना मुशकिल हो जाता था कि जनाज़े का वली कौन है मौत को याद कर के सारे रोते नज़र आ रहे होते थे आख़िरत को याद कर के गुनाहों को याद कर के, वह जनाज़े से इबरत पकड़ते थे।

(5).......और पाँचवी चीज़ कि आज के दौर में दोस्त व अहबाब फ़ुक़रा की नसीहत तो सुनते हैं उसकी पैरवी नहीं करते बस सुनने तक ही काम रखते हैं और फिर आपस में तकाबुल करते हैं यह एक नई मुसीबत कि फ़लां का बयान ऐसा होता है और फ़लां का ऐसा होता है ओ! खुदा के बन्दे बजाए इसके कि हम इस में पड़ें हम यह क्यों नहीं सोचते जो हमें बताया गया है इस में हमारे लिए अमल का क्या पैग़ाम दिया है।

क़ल्बे सलीम किसे कहते हैं?

तो हमें अपनी ज़िन्दगी में क़ल्बे सलीम हासिल करना है इस लिये कि क़यामत के दिन इनसान के यही काम आयेगा अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं ﴿يوم لا ينفع مال ولا بنون الا من اتى الله بقلب سليم﴾ क़यामत के दिन न माल काम आयेगा न बेटे काम आयेंगें जो संवारा हुआ दिल लायेगा वह दिल उसे काम आयेगा, तो इस आयत से मालूम होता है अल्लाह तआला दिलों के ब्योपारी हैं बन्दे से दिल चाहते हैं ऐ बन्दे अपना दिल मुझे दे दे बन्दा अपने दिल में अपने रब को बसा ले ऐसी मेहनत करे कि अल्लाह तआला दिल में आ जाए अल्लाह तआला दिल में समा जाए बल्कि अल्लाह तआला दिल में छा जाये उसको क़ल्बे सलीम और क़ल्बे मुनीर कहते हैं।

लुक़मान अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को नसीहत की यह उसी मुल्क अफ़रीक़ा के रहने वाले थे गुलाम थे मगर हिकमत ने उन को सरदार बना दिया था तो उन्होंने अपने बेटे को नसीहत की कि ऐ बेटे! मैं

सुरज और चाँद की रौशनी में परवरिश पाता रहा मगर दिल की रौशनी से मैं ने किसी चीज़ को फ़ायदा मन्द नहीं देखा।

तसख़ीर मेहरो माह मुबारक तुम्हें मगर
दिल में अगर नहीं तो कहीं रौशनी नहीं
ढ़ूढ़ने वाला सितारों की गुज़र गाहों का
अपने अफ़कार की दुनिया में सफ़र कर न सका
जिस ने सूरज की शुआओं को गिरिफ़्तार किया
ज़िन्दगी की शबे तारीक सहर कर न सका

सारे जहां को कुमकुमों से रौशन करने वाला अपने मन में अंधेरा लिये फिरता है तो अगर मन में अंधेरा है तो फिर क़यामत के दिन क्या काम आएगा याद रखना कि दिल सियाह हो तो चमकती आखें कोई फ़ायदा नहीं दिया करतीं, एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि तुम अपने दिल के मालिक बन जाओगे अल्लाह तआला तुम्हें जहान का मालिक बना देगा तुम अपने दिल के मालिक बन जाओ फिर देखिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तुम पर कैसी मेहरबानियां फ़रमाते हैं

दिल गुलिसतां था तो हर शए से टपकती थी बहार
यह बयाबां किय हुआ आलम बयाबां हो गया

यह दिल अहलुल्लाह की महफ़िल में संवंरते हैं हम यहाँ इकट्ठे हैं अपने दिलों को संवारने के लिये तो बस यह आप ज़ेहन में रखिये. कि हम ने जो यह दस दिन हैं कोई भी गुनाह नहीं करना न आँख से न ज़बान से न कान से न दिलो दिमाग़ से न हाथ से न शर्म गाह से।

एक सुनहरी बात

हमारे सिलसिलए आलिया नक़्शबन्दिया के एक बुज़ुर्ग थे अबुलहसन ख़िरक़ानी रह0 एक अजीब बात फ़रमाया करते थे सोने की सियाही से लिखने के क़ाबिल है, फ़रमाते थे कि जिस शख़्स ने जो दिन गुनाहों के बग़ैर गुज़ारा ऐसा ही है जैसे उसने वह दिन नबी ﷺ की सुहबत में

गुज़ारा तो हमारे दिल में यह भी तमन्ना हो कि हम दस दिन गुनाहों के बग़ैर गुज़ारें, इस लिए हर वक़्त ज़िक्र व इबादत में मशगूल रहें मोतकिफ़ को हर वक़्त इबादत में मशगूल रहना यह ज़्यादा पसन्दीदा अमल है, आम तौर पर बात ख़ैर ख़ैरियत से शुरू होती है और फिर कारोबार के तज़किरे शुरू हो जायेंगे और अगर नौजवान है तो अपनी शादी की पलानिंग के तज़किरे शुरू हो जायेंगे।

बात पहुंची तेरी जवानी तक।

इस लिए मोतकिफ़ीन हज़रात एक दूसरे से बस काम की गुफ़्तगू करें और तफ़सीलात बाद में ऐतकाफ़ के बाद, ज़रूरी जो गुफ़्तगू हो बस वह करें इस से ज़्यादा नहीं।

हज़रत थानवी का तरीक़ए इलाज

हज़रत अक़दस थानवी की ख़ानक़ाह पर बड़े बड़े उलमा आते थे अपनी तर्बियत के लिए और उनकी खूब तर्बियत होती थी हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब ने जब दारूल उमूल देवबन्द का निज़ाम संभाला तो जवानी भी थी और अल्लाह ने हुस्न व जमाल भी खूब दिया था और इल्म व कमाल भी खूब दिया था और लोगों के दिलों में मुहब्बत भी बहुत दी थी तो उन्होंने हज़रत अक़दस थानवी को ख़त लिखा कि हज़रत कभी कभी मेरे दिल में खुद पसन्दी आ जाती है खुद पसन्दी का क्या मतलब? अपने आप को पसन्द करना कि भई मेरे अन्दर बड़ी सिफ़ात हैं जवानी में मैं दारूल उलूम का मुहतमिम भी हूं अल्लाह ने इतना इल्म भी दिया कि लोग वअज़ सुनते हैं तो सर घुसते हैं और खूबसूरती भी अल्लाह ने इतनी ज़्यादा दी और माल व मनाल भी दिया, इज़्ज़त भी दी, हर बन्दा बिछता चला जा रहा है तो इस वजह से मेरे दिल में कभी कभी खुद पसन्दी पैदा हो जाती है हज़रत थानवी ने ख़त लिखा कि अच्छा आप सब कुछ किसी के हवाले कर दो और एक महीना के लिए यहां हमारे पास आ जाओ तो एक महीना के लिए

फ़ौरन गए थाना भवन जब वहां पहुंचे तो हज़रत ने फ़रमाया कि बस आप अपना दिन गुज़ारें जैसे गुज़ारते हैं एक काम करना है कि ज़ब लोग मस्जिद में आते हैं उनके जूते सीधे कर देना, बस इतनी सी डयूटी लगा दी कि आप का काम यही है कि जूतों के पास बैठे रहें और जो मस्जिद में आयें जायें उनके जूते सीधे करते रहना, क़ारी मोहम्मद तय्यब" खुद लिखते हैं कि मैं ने चन्द दिन जूते सीधे किए मेरे अन्दर से खुद पसन्दी और तकब्बुर का हमेशा के लिए इज़ाला हो गया चन्द दिन जूते सीधे किए अपनी औक़ात का पता चल गया, उन हज़रात के पास ऐसे नुस्ख़े थे कि वह तकब्बुर खुद पसन्दी और ऐसी बीमारियों को जड़ से उखाड़ कर फैंक दिया करते थे।

चुनांचे एक दफ़ा उनके पास उस ख़ानक़ाह में हज़रत मुहम्मद शफ़ीअ" भी पहुंच गए और मौलाना बिन्नौरी" भी पहुंच गए अब दोनों हज़रात जवान, नये नये पढ़ कर फ़ारिग़ हुए और शौक़ शौक़ में गए कि भई हमने दारूल उलूम में तो पढ़ लिया अब कुछ बुज़ुर्गों की भी सुहबत इख़्तियार कर लें ईशा की नमाज़ हुई तो पुराने लोग थे वह सब अपने अपने कमरों में चले गऐ छोटे छोटे कमरे बने हुए थे अब भी जा कर देखें तो ऐसे ही हैं उसी हाल में बाक़ी हैं अब यह हज़रात एक कमरा उन को दिया गया था तो यह अपने कमरे में गए तो किसी मौज़ू पर बात चल पड़ी, दोनों आलिम थे और चीज़ें अज़बर थीं और बड़े ज़हीन और फ़ित्तीन थे अब आपस में खूब बहस चलनी शुरू हो गई दलायल चलने शुरू हो गए अभी दलायल चल ही रहे थे कि एक बड़े मियां जो निगरान थे वह आ गए और कहने लगे कि शहज़ादो पहले दिन आए हो तो तुम्हें अभी पता नहीं यहां ईशा के बाद कोई बात नहीं कर सकता, करनी है तो अपने दिल में अपने रब से बातें करो। चूंकि पहला दिन है लिहाज़ा आज मैं आपको तंबीहन कह रहा हूँ आज के बाद फिर मैं ने आप दोनों को बात करते देखा तो दोनों के बिस्तर ख़ानक़ाह से उठा कर बाहर रख दिए जायेंगे यह हज़रात खुद फ़रमाया करते थे कि

उस बड़े मियां की बात ने हमारा दिमाग़ सीधा कर दिया फिर हम सही आदाब के साथ रहे और फिर अल्लाह ने हमें "चुप" के मज़े अता फ़रमा दिए चुप के भी तो मज़े होते हैं, इस मज़े से हर बन्दा वाक़िफ़ नहीं है, आज कल खाने के मज़े से लोग वाक़िफ़ हैं और फ़ाक़ा के मज़े से वाक़िफ़ नहीं हैं, बोलने के मज़े से वाक़िफ़ हैं चुप के मज़े से वाक़िफ़ नहीं हैं, सोने के मज़े से वाक़िफ़ हैं जागने के मज़े से वाक़िफ़ नहीं हैं, चुप का अपना मज़ा है इसी लिए जो जितना बड़ा आलिम होगा आप उसको देखेंगे वह अक्सर ज़्यादा ख़ामोश होगा।

कह रहा है शोर दरिया से समन्दर का सुकूत
जितना जिस का ज़र्फ़ है उतना ही वह ख़ामोश है

नमाज़ कैसे पढ़ें?

जो नमाज़ें पढ़नी हैं उन दस दिनों में वह भाई बना संवार कर पढ़ें तादीले अरकान के साथ नमाज़ पढ़ें, यानी रूकू सुजूद जम कर करें, पंजाबी में कहते हैं टिका के नमाज़ पढ़ना, तो उन दस दिनों में हम अपनी नमाज़ें खूब तवज्जोह इलल्लाह के साथ पढ़ने की कोशिश करें खुशू व खुज़ू के साथ पढ़ने की कोशिश करें तसल्ली से नमाज़ पढ़ें अपने रब के सामने इसकी मश्क़ करें और मश्क़ कीजिएगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इंशाअल्लाह रहमत फ़रमायेंगे।

एक वाक़िया

हज़रत शाह इस्माईल शहीद" एक दफ़ा गए अपने शैख़ सय्यद अहमद शहीद" से मिलने के लिए शाह साहब ने पूछ लिया कि शहज़ादे मियां क्या चाहते हो? तो कहते हैं कि आगे से मेरे दिल में क्या आया तो मैं ने कह दिया कि हज़रत मुझे सहाबी जैसी कोई नमाज़ ही पढ़ा दें हम होते तो कारोबार की अच्छाई की दुआ मंगवाते या नेक खूबसूरत बीवी मिलने की दुआ मंगवाते, उन्होंने दुआ क्या मंगवाई? कि हज़रत कोई सहाबा जैसी नमाज़ ही हमें पढ़ायें सुन कर ख़ामोश हो गए, रात

होई तो तहज्जुद में मैं उठा तो मुझे फ़रमाने लगे भई उठ गए? कि जी उठ गया, फ़रमाने लगे जाओ अल्लाह के लिए वुज़ू करो, फ़रमाते हैं उन अल्फ़ाज़ में पता नहीं क्या बिजली भरी हुई थी कि अल्लाह के लिए वुज़ू करो कि मेरे दिल पर एक अजीब अल्लाह की हैबत, अज़मत तारी हो गई और मैं ने जो वुज़ू किया तो मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे अल्लाह तआला मुझे देख रहे हैं और मैं उनके सामने वुज़ू कर रहा हूँ कहने लगे वुज़ू करके आया तो फ़रमाने लगे वुज़ू कर लिया मैं ने कहा जी कर लिया, फ़रमाने लगे अल्लाह के लिए दो रकअत पढ़ो असल वह तवज्जोह बातनी भी साथ मिल रही थी तो यह दो रकअत जो मैं ने सुनी अल्लाह के लिए पढ़ो तो बस अब तो मैं ने दो रकअत की निय्यत बांधी और मेरे ऊपर गिरया तारी हो गया और मैं दो रकअत पढूं मेरे दिल में ख़्याल आया मैं ने तो भई सही नहीं पढ़ी फिर अगली दो रकअत फिर अगली दो रकअत करते करते उस रात मैंने सौ नफ़्ल पढ़े और मेरी दो रकअत पर भी तसल्ली न हुई बाद में फिर शैख़ ने बताया कि सहाबा ऐसी नमाज़ें पढ़ा करते थे कि अपनी तरफ़ से टिका के पढ़ते थे और पढ़ने के बाद कहते थे। ما عبدناك حق عبادتك و ما عرفناك حق معرفتك यह सहाबा की नमाज़ थी तो भई इन दिनों में हम भी तादीले अरकान के साथ इस तरह नमाज़ पढ़ें।

अल्लाह का हाथ जमाअत पर

यह ज़ेहन में रखना दिलों के इज्तिमा को अल्लाह के यहां क़बूलियत में बड़ा दख़ल है अब आप सुनिए कि हर रोज़ पूरी दुनिया में अपने अपने घरों में लाखों इंसान बल्कि करोड़ों मुसलमान रोज़ाना दुआ मांगते हैं मगर वह अपने अपने घरों में मांगते हैं अल्लाह की तरफ़ से उनकी क़बूलियत का वादा कोई नहीं है और चन्द लाख मुसलमान मैदाने अरफ़ात में इकट्ठे हो जाते हैं अब उन के दिल जमा हो गए एक जगह पर तो क़बूलियत देखें कि अरफ़ात के मैदान में हदीसे पाक के

मुताबिक़ जो मांगते हैं अल्लाह तआला उन की दुआओं को क़बूल फ़रमाते हैं बल्कि हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह तआला के नज़दीक सब से बड़ा गुनहगार वह होता है जो अरफ़ात में वक़ूफ़े अरफ़ा में दुआ मांगे और फिर कहे कि मेरी दुआ क़बूल नहीं हुई सबसे बड़ा गुनहगार वह है उतने अल्लाह तआला नाराज़ होते हैं तो मालूम हुआ कि मिल के जब कोई अमल करते हैं तो (يد الله على الجماعة) तो जमाअत के ऊपर अल्लाह तआला की रहमत का हाथ होता है लिहाज़ा जब मिल कर दुआ मांगते हैं परवरदिगार दुआओं को जल्दी क़बूल करते हैं।

अल्लाह की मेहरबानी

हदीस पाक में है कि नबी ﷺ ने एक दफ़ा वअज़ फ़रमाया ऐसा पुर तासीर वअज़ था कि एक सहाबी फूट फूट कर रोने लगे जब नबी ﷺ ने महफ़िल मुकम्मल की तो नबी ﷺ ने फ़रमाया उनका रोना अल्लाह तआला को इतना पसन्द आया उन की वजह से पूरी महफ़िल के लोगों की मग्फ़िरत फ़रमा दी गई, तो भई इतने लोग जो हर महफ़िल में दुआ मागेंगे तो कोई एक तो अल्लाह का मक़बूल बन्दा होगा ऐसा, हम गुनहगार सही पता नहीं कैसे कैसे दिल में तक़वा वाले लोग बैठे हुए हैं तो इस लिए इस वक़्त को ग़नीमत समझें और इसमें हम खूब अल्लाह तआला से दुआयें मागें एक उसूल याद रखें कि जो इंसान दुनिया में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दोस्ती करने की नियत करेगा कोशिश करेगा, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसको दुश्मनों की सफ़ों में कभी खड़ा नहीं फ़रमाएगा, उस मालिक की रहमत गवारा नहीं करेगी यह दुनिया में मुझ से दोस्ती की कोशिशें करता था और मुझ से दोस्ती की दुआयें मांगता था इसको मैं दुश्मनों की सफ़ में खड़ा कर दूं, इस लिए इसमें यह दुआ मांगिये (اللهم انى اسئلك منك) ऐ परवरदिगार मैं आप से आप ही को तलब करता हूँ आप ही को चाहता

हूँ, अल्लाह तआला की मुहब्बत मांगिए फिर देखिए इस मुहब्बत में अल्लाह तआला हमें कैसी बरकत अता फ़रमायेंगे यह हमारी खुश नसीबी है कि हमें अल्लाह तआला ने एक मौक़ा और दे दिया रमज़ानुल मुबारक का, वरना हक़ीक़त तो यही है कि हमारे गुनाहों को देखा जाए तो चेहरे ही मस्ख़ हो जाते ज़मीन में ही धंस जाते पता नहीं क्या क्या अज़ाब आने के क़ाबिल थे मगर उस परवरदिगार ने फिर मेहरबानी की अपने गुनहगार बन्दों को अपने दर पर दहलीज़ पकड़ कर बैठने का एक मौक़ा और अता फ़रमा दिया तो अल्लाह तआला का इरादा ख़ैर का है वह देना चाहता है वह परवरदिगार अपने आने वालों को ख़ाली नहीं भेजा करता, सख़ी दुनिया का नहीं सुनना चाहता कि लोगों की महफ़िल में कोई फ़क़ीर कहे ओ जी मैं ने आप के दर से मांगा था मुझे मिला नहीं था अरे दुनिया का सख़ी सुनना गवारा नहीं करता कि लोगों में बैठ कर कोई फ़क़ीर कहे मैं उसके दरवाज़े पर गया मांगा मुझे नहीं मिला परवरदिगार कैसे पसन्द फ़रमायेंगे कि रोज़े महशर कोई बन्दा कहे अल्लाह मैं आपके दर पर यह रो रो कर मांगता था मुझे आपके दर से न मिला अल्लाह तआला कभी सुनना गवारा नहीं करेंगे, जो मांगेगा परवरदिगार अता फ़रमा देगा, ज़रूर अता फरमायेंगे। इस लिए अल्लाह तआला देकर खुश होते हैं और बन्दा लेकर खुश होता है तो इस लिए हम खूब मांगे अपने परवरदिगार से उन दस दिनों में तहज्जुद की पाबन्दी करें तस्बीहात ज़िक्र मुराक़बा मजालिस की पाबन्दी करें और मुझे उम्मीद है कि इंशाअल्लाह आप जब यह दस दिन यहां गुजारेंगे ना तो दस दिनों के बाद उठते हुए हम महसूस करेंगे कि हम किसी और मक़ाम पर चले गए थे अब वापस अपने घरों में दोबारा आ गए हैं इंशाअल्लाह दिलों की कैफ़ियत ऐसी होगी।

फ़िक्रे दुनिया करके देखी फ़िक्रे उक़बा करके देख
छोड़ कर अब फ़िक्र सारे ज़िक्रे मौला करके देख
कौन किसके काम आया कौन किस का है बना

सबको अपना करके देखा अब रब को अपना करके देख

बड़े दुनिया से दिल लगाए अब इन दस दिनों में रब से दिल लगा के देखें कि वह परवरदिगार कितनी मेहरबानियां फ़रमाता है इंशाअल्लाह हम आदाब के साथ वक़्त गुज़ारेंगे तो रब्बे करीम हम पर मेहरबानी फ़रमायेंगे रब्बे करीम हम आप सब का यहां हाज़िर होना क़बूल फ़रमा ले आमीन

و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

﴿ افحسبتم انما خلقناكم عبثا و انكم الينا لا ترجعون ﴾

रोज़े जज़ा

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी ज़ैद मजदहू

﴿एम ऐरूडल लोसका काज़ामबिया में बहालत ऐतकाफ़ हुए﴾

1424 हि0 मुताबिक़ 2003 ई0

रह के दुनिया में बशर को नहीं ज़ेबा ग़फ़लत
मौत का ध्यान भी लाज़िम है कि हर आन रहे
जो भी बशर आता है दुनिया में यह कहती है क़ज़ा
मैं भी पीछे चली आती हूं ज़रा ध्यान रहे

(ख़्वाजा मज़्जूब)

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد .....!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ . بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

﴿اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ﴾

و قال الله تعالى فى مقام آخر

﴿اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَ هُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ﴾

و قال الله تعالى فى مقام آخر

﴿اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ﴾

و قال الله تعالى فى مقام آخر

﴿و اتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ﴾

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّم
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّم

अक़ाइदे इस्लाम

दीने इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ाइद हैं।

(1)...... एक अक़ीदा है तौहीद का कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है जिस ने इस काइनात को पैदा किया उसकी ज़ात में या उसकी सिफ़ात में कोई भी शरीक नहीं, वह वहदहू ला शरीक है।

(2)...... दूसरा अक़ीदा है रिसालत का कि नबी ﷺ रब्बुल इज़्ज़त के सच्चे रसूल हैं और खातमुन्नबीईन हैं

(3)...... और तीसरा अक़ीदा है आख़िरत का कि इस ज़िन्दगी के बाद एक और भी ज़िन्दगी है जिस को आलमे आख़िरत कहा जाता है जो कुछ इंसान इस दुनिया में करेगा उसे अल्लाह तआला के सामने खड़े होकर जवाब देना पड़ेगा और यह अक़ीदा सब अंबिया किराम का

रहा इस लिए कि दीन का तसव्वुर इसके सिवा अधूरा होता है, एक बन्दा अगर इस दुनिया में ख़्वाहिशात को छोड़ता है अच्छाई की ख़ातिर कुरबानियां देता है तो अक़्ल तक़ाज़ा करती है कि उसे इसका बदला मिलना चाहिए एक आदमी अगर ख़्वाहिशात का बन्दा बनता है दूसरों के हुकूक को पामाल करता है उनको तकलीफ़ देता है ईज़ा पहुंचाता है अक़्ल तक़ाज़ा करती है कि उस बन्दे को सज़ा मिलनी चाहिए, तो दुनिया अमल की जगह है। क़ियामत के दिन उसके बदले की जगह है इसलिये दुनिया की ज़िन्दगी एक महदूद ज़िन्दगी है (وما جعلنا لرجل من قبلك الخلد) महबूब आप से पहले भी हम ने किसी के लिए दुनिया में हमेशा रहना नहीं लिखा, तो हम एक महदूद वक़्त गुज़ारेंगे और बिल आख़िर अपने रब के पास पहुंचेंगे, दुनिया में जो किया होगा उसका हिसाब देना पड़ेगा, इसलिए इरशाद फ़रमाया ﴿واتقو يوما ترجعون فيه الى الله﴾ तुम डरो उस दिन से जिस दिन तुम्हें अल्लाह के पास जाना है उस दिन मोमिन के लिए ज़िन्दगी का फ़ैसला होगा, कामियाबी और नाकामी का फ़ैसला होगा, यह क़ियामत का तसव्वुर इंसान की परेशानियों को कम कर देता है, इंसान को खुशियों में बद मस्त नहीं होने देता क़ाबू में रखता है, जो इंसान जैसा करेगा, वैसा भरेगा, अदले का बदला।

जैसी करनी वैसी भरनी न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख़ भी है न माने तो मर के देख

अक़ीदए आख़िरत की मिसाल

दरिया में एक मछली तैर रही थी उससे दूसरी बड़ी मछली ने कहा कि यहां शिकारी कांटा लगाते हैं तू ज़रा संभल कर रहना, अगर तुम ने हिर्स की और फंस गई तो शिकारी तुम्हें अपनी तरफ़ खींचेगा, फिर वह छुरी से तुम्हारे टुकड़े करेगा उसकी बीवी तुम्हें नमक मिर्च लगाएगी, आग के शोलों पर पकाएगी, दस्तरख़ान पर सजाएगी, फिर मेहमानों को

बुलाएगी, फिर वह सब तुम्हें बत्तीस दांतों में खूब चबा चबा कर खायेंगे, अब वह छोटी मछली कहने लगी कि अच्छा मैं ज़रा देखती हूं कि यह सब चीज़ें कहां हैं वह अगर सारी उम्र दरिया में चक्कर लगाती रहे, तब भी न छुरी देखेगी, न आग देखेगी, न बत्तीस दांत देखेगी। इसलिए कि वह पानी में है ही नहीं। यह तो ऐतबार करने वाली बात है, मान जाए तो उसका अपना फ़ायदा नहीं मानेगी तो जैसे ही वह शिकारी के कांटे में फंसेगी उसके हाथों में आते ही यह सब मन्ज़र अपनी आँखों से देखेगी पूरा प्रोसेस उसके साथ होगा।

अब पछताए क्या हुवत जब चिड़िया चुक गई खेत

मानने में फ़ायदा है

अण्डे के अन्दर मुर्ग़ी का बच्चा है पैदा होने से चन्द लम्हे पहले अगर उसको कोई बताए कि तुम एक ऐसे जहान में जा रहे हो, जहां छ फ़िट का इंसान होता है और सौ सौ मंजिला बिल्डिंगें होती हैं और पचास फ़िट ऊंचे दरख़्त होते हैं, पहाड़ होते हैं, समुन्दर होते हैं, दरिया होते हैं, वह कहे अच्छा मैं देखता हूँ तो अण्डे के अन्दर तो उसको कुछ नज़र नहीं आ सकता, मान जाए तो बेहतर नहीं मानेगा तो जैसे ही अण्डे से बाहर निकलेगा वह इंसान को भी देखेगा, वह दरख़्तों को भी देखेगा और पहाड़ों को भी देखेगा वह दरियाओं को भी देखेगा।

बिल्कुल यही हाल इंसान का है कि नबी ﷺ ने मेराज की रात में जन्नत और जहन्नम के हालात को देखा, अल्लाह तआला के महबूब ने दुनिया में आकर उसकी गवाही दी, समझाया, कि एक दिन आने वाला है, जब तुम्हारा हिसाब होगा, लोगों उस दिन की तय्यारी कर लो अब हम अगर उसको मान लें तो यह हमारी खुश नसीबी है कि हम उसके लिए तय्यारी कर लेंगे और अगर नहीं मानेंगे तो अपना ही नुक़सान करेंगे।

एक दहरिया

एक दहरिया हज़रत अली रज़ि. के पास आया कहने लगा कि मैं तो कहता हूँ कि दुनिया को किसी ने नहीं पैदा किया और आप कहते हैं कि खुदा ने पैदा किया क्यों कहते हैं? हज़रत अली रज़ि. ने देख लिया कि यह दलायल से समझने वाला बन्दा नहीं है, किसी और तरीक़ा से इसके ख़ाना में बात बैठेगी तो उसे बुला कर कहा कि देखो भई तुम कहते हो कि खुद बखुद काइनात पैदा हुई हम कहते हैं कि अल्लाह तआला ने पैदा किया? लिहाज़ा हम आख़िरत की तय्यारी कर रहे हैं अगर मान लिया कि तुम्हारी बात ठीक है तो हमारी मेहनत तो हो ही रही है हमारा नुक़्सान कोई नहीं और अगर हमारी बात ठीक निकल आए तो बच्चू तुम्हें धर लिया जाएगा, अब बताओ एहतियात किस में है? तो वह कहने लगा बात ठीक है कि अगर हमारी बात ठीक निकले तो इनको फ़र्क़ नहीं पड़ता और इनकी ठीक निकल आई तो जो हमारी गत बनेगी वह फिर दुनिया देखेगी, तो मोमिन को तो उस पर यक़ीन है हम तो मान चुके, ईमान ला चुके कि नबी ﷺ अल्लाह तआला की तरफ़ से जो लेकर आए वह सब कुछ सच है, हम उसकी तस्दीक़ करते हैं, लिहाज़ा उस दिन की तय्यारी करें।

आख़िरत की तय्यारी दुनिया में

आपने देखा होगा कि दुनिया में जब बच्चे के पेपर होते हैं तो वह चन्द दिन बहुत मसरूफ़ रहता है सारी मसरूफ़ियत तर्क कर देता है न कहीं खेलों में हिस्सा लेता है न कहीं दोस्तों की बर्थ-डे पार्टियों में हिस्सा लेता है, वह कहता है जी मेरा इम्तिहान है, मां बाप को भी कहता है जी मुझे डिस्टर्ब न करें, थोड़ा खाता है, थोड़ा पीता है, थोड़ा सोता है, ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त अपनी पढ़ाई में लगाता है, वह समझता है कि आज मैं मेहनत करूंगा एक दिन आएगा कि मुझे कामियाबी पर फूलों के हार पहनाए जायेंगे, फिर जब इम्तिहान का दिन आता है तो एक उसका ऐ पेपर होता है और एक उसका बी पेपर होता है इसके

बाद उसका रिज़ल्ट निकलता है।

मोमिन के साथ यही मामला है कि मोमिन दुनिया में उस इम्तिहान के लिए तय्यारी कर रहा है वह इस दुनिया में अपनी ख़्वाहिशात को घटाता है ज़रूरियात पूरी करता है इसलिए कि ज़रूरियात की इंतिहा होती है और ख़्वाहिशात को पूरी नहीं करता इसलिए कि ख़्वाहिशात की कोई हद नहीं होती और आख़िरत को हर वक़्त सामने रखता है कि उस दिन मेरा क्या बनेगा? उसकी तय्यारी करता है अब जब इस दुनिया से फ़ौत हो जाता है तो क़ब्र में उसका ए पेपर होता है इस ए पेपर में हर बन्दे से तीन सवाल पूछे जायेंगे, दुनिया में लोग मुमकिना सवालात के पेपर जारी करते हैं कि हम अन्दाज़ा लगाते हैं कि क्या सवालात आयेंगे अल्लाह तेरी करीमी पर कुरबान जायें कि आप ने अपने महबूब के ज़रिया पेपर पहले ही आऊट कर दिया, भई तुम्हें बता देते हैं सवालात क्या हैं, तो तुम उनकी तय्यारी कर लेना, छोटे छोटे तीन सवाल होंगे, तीनों लाज़मी।

(1)...... पहला सवाल من ربك तेरा रब कौन है? मगर इसका जवाब हर बन्दा नहीं दे सकेगा, जवाब वह देगा कि जिस ने दिल में इस यक़ीन को बिठाया होगा कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है और अगर वह समझेगा कि मुझे दफ़्तर पालता रहा दुकान पालती रही लोग पालते रहे तो वह रब का नाम कैसे ले सकेगा, वह चीज़ ज़बान से निकलेगी जो दिल में होगी, एक साहब ने तोता पाला उसको अल्लाह अल्लाह का ज़िक्र सिखाया लोग दूर दूर से उसको देखने आते उसकी बातें सुनने आते, अल्लाह तआला की शान कि एक बिल्ली उस तोते को पकड़ कर ले गई, पिंजरा खुला रह गया था, वह जब ले जा रही थी तो तोता टें टें कर रहा था, उसको दुख तो बड़ा हुआ मेरी मेहनत बेकार गई, एक अल्लाह वाले के सामने तज़किरा हुआ तो वह कहने लगा हज़रत चलो सदमा जो था सो था यह बात समझ में नहीं आई कि मैं ने उसको अल्लाह अल्लाह सिखाया हज़रत बिल्ली पकड़ कर ले जा रही थी

बेचारा टें टें करता जा रहा था उन बुज़ुर्ग ने कहा कि बात यह है उसकी ज़बान पर कलमा था उसके दिल में टें टें थी, जब मौत का वक़्त आता है वह निकलता है जो दिल में होता है, इसलिए तुम्हारे तोते ने टें टें की तो भई हमारी ज़बान पे वैसे तो कलमा रहे और दिल में दुनिया की मुहब्बत बसी हो तो फिर मौत के वक़्त जवाब क्या निकले गा? इसलिए इस यक़ीन को दिल में बिठाने की ज़रूरत है कि हम नौकरी से नहीं पल रहे हम कारख़ाना से नहीं पल रहे दफ़्तर से नहीं पल रहे, बिज़नेस से नहीं पल रहे हमें पालने वाला परवरदिगार है? अल्लाह भला करे हमारे यह जमाअत के दोस्त यही आवाज़ लगाते हैं इसी को सीखने के लिए आप सब हज़रात को दावत देते हैं कि यह दिल में पहले से हम बिठा लें, इस पर मेहनत करनी पड़ती है तब दिल में यह यक़ीन बैठता है वरना तो जहाँ नज़रें लगी होती हैं, बस वही इंसान को यक़ीन होता है।

(2)...... दूसरा सवाल होगा مــن نبيك तेरे नबी कौन हैं? अब इस का जवाब सहीह तो वही देगा, जिस ने क़दम क़दम पर नबी के मुबारक तरीक़ा पर पैरवी की होगी, जिस ने नबी के ज़ेरे क़दम रह कर ज़िन्दगी गुज़ारी होगी, खाने में पीने में लिबास में, तआम में, क़ियाम में, हर चीज़ में जिस ने नबी के तरीक़ा को अपनाया होगा तो वह इंसान कहेगा, कि मेरे नबी अल्लाह के महबूब हैं।

(3)...... और तीसरा सवाल होगा مــا دينك तेरा दीन कौन सा था? अल्लाह वालों ने मेहनत की होती है उनकी मौत भी शान से आती है, हदीस पाक में आता है कि जो बन्दा बाक़ायदगी के साथ मिस्वाक करता है अल्लाह तआला मल्कुल मौत को भेजते हैं वह उससे शैतान को मार भगाता है और उस बन्दे को बता देता है कि तेरा वक़्त क़रीब है तू कलमा पढ़ ले। अब यह कितनी बड़ी नेमत है कि शैतान को मार कर दूर भगायें और कलमा याद दिलायें, चुनांचे अल्लाह वालों को मौत के वक़्त ऐसी बशारतें हो जाती हैं, उनके आगे के मसले भी अल्लाह

आसान कर देता है इसलिए कि उनका दिल मख़लूक़ में नहीं अटका होता उनका दिल ख़ालिक़ के साथ जुड़ा होता हैं

एक वाक़िया ने ज़िन्दगी बदल दी

"तज़किरतुल औलिया" के मुसन्निफ़ ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार" की इत्र की दुकान थी जवानुल उम्र थे, आम ज़िन्दगी थी, दिल मख़लूक़ में खूब इधर उधर लगा हुआ था एक दिन एक बा खुदा बन्दा उनकी उस दुकान पर आया और उनकी शीशियों को बड़े ग़ौर से देखने लगा, तो यह कहने लगे, कि बड़े मियां क्या देख रहे हो, बड़े मियां कहने लगे कि मैं देख रहा हूँ कि इतनी शीशियों में आपकी जान अटकी हुई है, यह कैसे निकलेगी? तो उन्होंने गुस्सा में आकर कहा कि बड़े मियां जैसे तुम्हारी निकलेगी वैसे मेरी निकलेगी, उसने कहा अच्छा, फिर मेरी तो ऐसे निकलेगी, उसके पास कपड़ा था वह वहीं दुकान में फ़र्श पर लेट गया, कपड़ा ऊपर किया, कहा لا اله الا الله यह समझे कि कोई बहाना और ड्रामा कर रहा है, थोड़ी देर के बाद जब कपड़ा हटाया देखा तो वाक़ई वह अल्लाह को प्यारा हो चुका था, दिल पर चोट लगी कि वाक़ई यह हैं बा खुदा लोग कि जो दुनिया से दिल नहीं लगाते, अपने रब से दिल लगाते हैं और फिर कलमा पढ़ कर दुनिया से रूख़सत हो जाते हैं फिर बाद में चल कर यह बड़े औलिया में शामिल हुए।

एक अजीब वाक़िया

सिर्री सिक़ती" फ़रमाते हैं कि हम लोग एक जगह बैठे थे एक दरवेश बन्दा आया कहता है कोई अच्छी सी जगह है जहां कोई मर सके हम हैरान हो गए उसकी बात सुन कर मैं ने कहा वह सामने कुंआ है, वह गया वहां कुएं पर उसने वुज़ू किया और दो रकअत नफ़्ल पढ़े और जाकर लेट गया, हम समझे सोया हुआ है, नमाज़ का वक़्त अया हम ने भी वुज़ू किया जब उसको जगाने गए देखा वह तो अल्लाह को प्यारा

हो चुका था, यह अल्लाह वाले इस तरह दुनिया से चले जाते हैं और आगे का मामला भी उनका ऐसा ही होता है।

बा यज़ीद बुस्तामी ख़्वाब में किसी को नज़र आए तो उसने पूछा कि जनाब आगे क्या बना? तो कहने लगे कि जब मैं क़ब्र में गया तो फ़रिश्ते कहने लगे ऐ बूढ़े क्या लाए हो? तो मैं ने जवाब दिया कि जब बादशाह के दरबार में आते हैं तो यह नहीं पूछते क्या लाया है? हमेशा पूछते हैं तू क्या लेने के लिए आया है? मेरी बात सुन कर फ़रिश्ते मुस्कुरा पड़े और कहने लगे इसका यक़ीन पक्का है और वह वहां से चले गए।

मलाइका को अल्लाह वालों के जवाबात

(1)...... जुनैद बग़दादी ख़्वाब में नज़र आए किसी ने कहा जी आगे क्या बना? उन्होंने कहा फ़रिश्ते आए थे कहने लगे من ربك तेरा रब कौन है? मैं ने उनको इतना बता दिया कि मेरा रब वही है जिस ने तुम्हें हुक्म दिया था कि आदम عليه السلام को सज्दा करो तो वह आपस में कहने लगे कि यह तो आगे से होकर मिला।

(2)...... शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी को किसी ने देखा, हज़रत आगे क्या बना? कहने लगे क़ब्र में फ़रिश्ते आए थे फिर पूछने लगे من ربك तेरा रब कौन है? तो मैं ने उन्हें कहा कि देखो तुम अर्श पर से फ़र्श पर आए हो इतना सफ़र करके और रब को नहीं भूले तो ज़मीन के ऊपर से मैं दो गज़ नीचे आकर अपने रब को भूल जाऊंगा।

(3)...... राबिया बसरिया अल्लाह की नेक बन्दी ख़्वाब में नज़र आई किसी ने पूछा कि आगे क्या बना? कहने लगीं फ़रिश्ते आए थे तो पूछ रहे थे कि तेरा रब कौन है? मैं ने कहा जाकर अल्लाह तआला को कह दो अल्लाह तेरी इतनी खरबो मख़लूक़ है, इतनी मख़लूक़ में से तू एक मुझ बुढ़िया को नहीं भूला, मेरा तेरे सिवा है ही कौन? मैं तुझे भला कैसे भूल जाऊंगी।

तो यह जवाब बन्दा कब दे सकता है? जब दिल का यक़ीन बना हुआ होता है, जब अल्लाह से तअल्लुक़ होता है, वरना तो इंसान उस वक़्त परेशान होता है कि मैं क्या कहूं तो यह ए पेपर क़ब्र में होगा, फिर अगर जवाब ठीक दे दिए तो क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना देंगे, न दिए तो जहन्नम का गढ़ा बना देंगे यह अभी ट्रान्ज़िट होगा। क़ियामत के दिन सबको उठाया जाएगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने खड़े होंगे और वहां पर पांच सवालों के जवाब सब को देने पड़ेंगे, बनी आदम के पांव अपनी जगह से हिल नहीं सकते जब तक वह उन सवालों के जवाब न देदें, तो वह सवाल हमारी ज़िन्दगी का बी पेपर होगा उसमें भी सब जवाब देने ज़रूरी हैं और वह बी पेपर अल्लाह तआला ने अपने महबूब के ज़रीआ आऊट करवा दिया है, पूछा जाएगा

ऐ बन्दे तू ने ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी?
तू ने जवानी कैसे गुज़ारी?
माल कहां से कमाया कहां पर ख़र्च किया?
अपने इल्म पर कितना अमल किया?

अब उस वक़्त उन सवालों का जवाब देना यह बहुत मुश्किल काम होगा, ताहम जो लोग नेकी करके दुनिया से जायेंगे, परवरदिगार उनके साथ रहमत का मामला फ़रमायेंगे और जो लोग दुनिया में ईमान से महरूम रहेंगे और महरूम ही अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुंचेंगे तो उनके लिए जहन्नम ठिकाना होगा इसलिए अल्लाह तआला फ़रमायेंगे ﴿و امتازوااليوم ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमों! आज के दिन मेरे नेक बन्दों से अलाहेदा हो जाओ, दो अलग अलग रास्ते होंगे एक तरफ़ जन्नती लोगों को भेजा जाएगा और दूसरी तरफ जहन्नमी लोगों को भेजा जाएगा, तो यह क़ियामत का तसव्वुर इस्लाम के बुन्यादी अक़ाइद में से है, यह जितना इंसान के दिल में रासिख़ होगा उतना उसकी ज़िन्दगी सहीह लाइन पर होगी, इसलिए आप क़ुरआन पाक का

मुतालआ करें एक तो पूरी सूरत इसी नाम से मिलेगी القيامة और दूसरा यह कि हर दूसरे सफ़हा पर आपको किसी न किसी अंदाज़ में क़ियामत का तज़किरा मिलेगा, इतना अहम यह मसला है, कि कुरआन पाक के हर सफ़ह या हर दूसरे सफ़ह पर आख़िरत की याद दिलाई गई कि तुम्हें अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होना है।

क़ियामत के मुख़तलिफ़ नाम कुरआन व हदीस में वारिद हैं जैसे अल्लाह तआला अज़मत वाले हैं उनके बे इन्तिहा नाम हैं

जिसके नामों की नहीं है इंतिहा
इब्तिदा करता हूँ उसके नाम से

रोजे क़ियामत के नाम

नबी ﷺ की शान बड़ी उनके भी निन्नानवे नाम, कुरआन मजीद के भी साठ के क़रीब नाम मुफ़स्सिरीन ने लिखवाए हैं इसी तरह क़ियामत के भी बहुत सारे नाम कुरआन व हदीस में आए हैं, मिसाल के तौर पर उसका एक नाम है يوم القيامة क़ियामत का दिन, लैलतुल क़ियामा नहीं कहा गया क़ियामत की रात क़ियामत का दिन कहा क्यों? क्योंकि जब बन्दे की मौत आती है तो रात हो जाती है रात में ही सोता है, तो मोमिन क़ब्र में रात में सोएगा और सुबह बेदार होता है और यह क़ियामत की सुबह बेदार होगा और फिर अपने मालिक से मुलाक़ात करेगा उसको يوم الحسرة भी कहा गया, हसरत का दिन, कुछ लोग होंगे जो धोखे में रहेंगे और तय्यारी नहीं कर सकेंगे, तो क़ियामत के दिन उनको हसरत होगी हम बड़े स्मार्ट थे हम बड़े चलते पुर्ज़े थे, हम बड़े काम निकाल लेते थे, ओहो इसमें हम मार खा गए, قال رب ارجعون कहेंगे अल्लाह एक चांस और देदे फ़रमाया जाएगा हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं, अब वह हाथ मलेंगे कि हमने दुनिया में इसको सीरियस क्यों न लिया इसलिए क़ियामत का एक नाम हसरत का दिन और एक नाम यौमे हिसाब ﴿رب اجعلني مقيم الصلوة و من ذريتي

ربنا و تقبل دعاء ربنا اغفرلی و لوالدی و للمومنين يوم يقوم الحساب﴾ तो उस दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हिसाब लेंगे और यह हिसाब देना कोई आसान नहीं होगा, जैसे मौलाना हबीबुल्लाह साहब फ़रमा रहे थे कि जिस का सब काम ठीक हो ऑडिट वालों का नाम सुन कर उसको भी पसीना आ जाता है पता नहीं क्या निकाल दें, हम ठीक समझ रहे हैं और ग़लती हो तो इसलिए क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के हुजूर हिसाब देना है, जब यह बात इंसान सुनता है तो फिर उसको डर लगता है इसलिए कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿و كفى بنا حاسبين﴾ कि हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं, हमें हिसाब लेना आता है हम तुम्हें हिसाब लेकर दिखायेंगे ﴿ونضع الموازين القسط ليوم القيامة﴾ क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अद्ल क़ायम करके दिखायेंगे, उसका नाम يوم الندمة भी है नदामत का दिन शरमिन्दगी का दिन कि दुनिया में इंसान लोगों के सामने नेक बन कर रहेगा और अन्दर रंग कुछ और होगा, तो क़ियामत के दिन उसका ढोल का पोल खुल जाएगा अब नदामत होगी लोग कहेंगे जी तुम्हारी बातें सुन कर ही तो हम नेक बने हाँ भई औरों को नसीहत खुद मियां फ़ज़ीहत, हम तुम्हें नसीहत करते थे खुद छिप छिप कर गुनाह करते थे, इसलिए आज हमें परेशानी हुई, इसलिए एक रिवायत में आता है कि हसरत वालों में से एक वह बन्दा भी होगा कि जो मालिक होगा और अपने गुनाहों की वजह से जहन्नम में जाएगा और उसकी आंखों के सामने उसका गुलाम अपनी नेक नामी की वजह से जन्नत में जा रहा होगा, तो मालिक को हसरत होगी यह दुनिया में मेरा ग़ुलाम था मुझ से तो यह भला निकला, मैं मन मानी की वजह से जहन्नम में जा रहा हूँ और यह फ़रमाबरदारी की वजह से जन्नत में जा रहा है इसी लिए नदामत की वजह से क़ियामत के दिन मुजरिम लोग अल्लाह तआला के सामने आंख उठा नहीं सकेंगे। कुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿ولو ترى اذ المجرمون ناكسو رؤوسهم عند ربهم﴾ अगर तुम मुजरिम लोगों

को देखो कि उनके चेहरे अल्लाह तआला के सामने झुके हुए होंगे अपनी निगाहें नहीं उठा सकेंगे, शर्म की वजह से शर्मिन्दा होंगे, उसको ज़लज़ला का दिन भी कहा गया ﴿اذازلزلت الارض زلزالها﴾ आज इस दुनिया में ज़लज़ला आता है ना الله اكبر आधे मिनट में अपनी हक़ीक़त मालूम हो जाती है, उस दिन तो ऐसा ज़लज़ला आएगा कि न उससे पहले आया न कभी बाद में आएगा, ज़मीन को हिला कर रख दिया जाएगा, उसका एक नाम " कड़क का दिन" आज बारिश के वक़्त जब बिजली चमक रही थी, बादल कड़क रहे थे, तो कैसे दिल हिल रहे थे तो क़ियामत के दिन का नाम कड़क का दिन भी है, ऐसी आवाज़ पैदा होगी जो दिलों को दहला कर रख देगी कलेजे मुंह को आयेंगे, इसी लिए तो कहा ﴿يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما ارضعت﴾ दूध पिलाने वाली दूध पीने वाले को भूल जायेंगी, एक उसका नाम "खड़खड़ाने" का दिन यह भी उसी आवाज़ से मुतअल्लिक़ा एक उसका नाम है "रोज़े वाक़िया" ﴿اذا وقعت الواقعة﴾ तो वह दिन अजीब दिन होगा कि जब इंसान का एक नया मामला पेश आएगा एक नाम है उसका " छा जाने वाला दिन" एक है "दिलों को दहला देने वाला दिन" बड़ों बड़ों के पित्ते पानी हो जायेंगे एक है " रोज़े बरहक़" ऐसा दिन जिस में कोई शक नहीं एक उसका नांम है " हंग़ामा का दिन" अजीब हंगामा होगा, सब भाग रहे होंगे, नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया आइशा सिद्दीक़ा को कि लोग क़ब्रों से उठेंगे जिस हालत में दफ़न किए गए होंगे और भाग रहे होंगे उन्होंने हैरान होकर पूछा ऐ अल्लाह के महबूब क्या उनके सतर छिपे हुए नहीं होंगे, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया नहीं तो कहने लगीं अल्लाह के नबी फिर मर्द और औरतें इकट्ठे कैसे होंगे तो अल्लाह के नबी ने फ़रमाया उस दिन दिल ऐसे दहला दिए जायेंगे कि आदमी को दूसरे की तरफ़ ध्यान करने का मौक़ा ही नहीं होगा सब को अपनी पड़ी होगी, नफ़सा नफ़सी का आलम होगा ﴿ولا تزر وازرة وزرا خرى﴾ कोई किसी का बोझ नहीं

उठाएगा, एक उसका नाम है "चीख़ व पुकार का दिन" कि इंसान उस दिन की सख़्ती को देखेंगे तो चीख़ेंगें, चिल्लायेंगे, रोयेंगे, मगर उसका नतीजा नहीं होगा। एक उसका नाम है "मुलाक़ात का दिन" कि लोग अपने रब से मुलाक़ात करेंगे जिस ने फ़रमाबरदारी की होगी वह दोस्त की शक्ल में मुलाक़ात करेगा और जिसने ना फ़रमानी की होगी वह दोस्त की शक्ल में मुलाक़ात करेगा और जिसने नाफ़रमानी की होगी वह मुजरिम की शक्ल में अल्लाह के सामने पेश किया जाएगा, एक उसका नाम है "बाहम पुकारने का दिन" एक दूसरे को मदद के लिए पुकारेंगे, मगर कोई किसी के काम नहीं आएगा ﴿الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو الا المتقين﴾ दोस्त एक दूसरे के साथ दुश्मन के साथ हो जायेंगे, एक उसका नाम है "बदला का दिन" अल्लाह तआला हर एक के अमल का बदला उसको दिलवायेंगे, जुल्म किया होगा तो बदला मिलेगा अच्छाई की होगी तो अज्र मिलेगा, बदला ज़रूर मिलेगा एक उसका नाम है "डरावे का दिन" डराने वाला दिन, एक नाम है "पेशी का दिन" कि अल्लाह तआला के हुज़ूर पेशी होगी, बन्दों की। एक नाम है "आमाल के वज़न होने का दिन" और एक नाम है "फ़ैसला का दिन" कि इंसान के लिए जन्नत या जहन्नम का फ़ैसला होगा ऐ इंसान या तू ज़िन्दगी की बाज़ी जीत जाएगा या ज़िन्दगी की बाज़ी हार जाएगा, एक नाम है "जमा होने का दिन" अव्वलीन और आख़िरीन को अल्लाह एक जगह जमा फ़रमा देंगे। एक नाम है "दोबारा उठने का दिन" एक नाम है "रूसवाई का दिन" यक़ीनी बात है कि आख़िरत की रूसवाई बहुत बड़ी और बहुत बुरी है। एक नाम है इसका "सख़्ती का दिन" कि अर्श के साया के सिवा कोई और साया नहीं होगा और बन्दा अपने गुनाहों के बक़द्र पसीना में शराबोर होगा, एक नाम है "फ़ैलने का दिन" और एक है "इंसाफ़ का दिन" और एक फ़रमाया कि वह दिन जब कोई किसी के काम नहीं आएगा ﴿يوم يفر المرء من اخيه و امه و ابيه و صاحبته و بنيه﴾ भागेंगे माँ बाप भी अपने बेटे से दूर,

दुनिया में मुहब्बत का इज़हार करने वाली माएं अंजान बन जायेंगी, बड़े शफ़ीक़ बाप अंजान बन जायेंगे, बहन भाई की मुहब्बतों के दावे करने वाले सब एक दूसरे से अंजान होंगे, इंसान उस दिन हसरत करेगा ﴿ياليتني اتخذت مع الرسول سبيلا﴾ ऐ काश मैं रसूल के बताए हुए रास्ता पर चलता या ﴿ياليتني لم اتخذ فلانا خليلا﴾ ऐ काश मैं ने फ़लां क़ो दोस्त न बनाया होता ﴿لقد اضلني عن الذكر بعد اذجائني وكان الشيطان للانسان خذولا﴾ इसी लिए क़ुरआन मजीद में इस क़ियामत के वाक़िया को बहुत बड़ी ख़बर कहा गया।

बड़े की बड़ी ख़बर

देखें भाई एक होता है मेरा और आपका किसी को बड़ा कह देना, एक होता है किसी बड़े का किसी को बड़ा कहना, अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी" लिखते हैं जब बड़े किसी को बड़ा कहें वह चीज़ वाक़ई बहुत बड़ी होती है सब बड़ों के बड़े ने रब्बे करीम ने इस चीज़ को इस ख़बर को बड़ी ख़बर कहा ﴿عم يتساءلون عن النبأ العظيم﴾ यह आप से बड़ी ख़बर के बारे में पूछते हैं तो जब अल्लाह करीम किसी चीज़ को बड़ा कह रहे हों तो वह कितनी बड़ी बात होगी मालूम हुआ कि हम ने क़ुरआन मजीद में जो क़ौमे नूह عليه السلام के सैलाब की ख़बर सुनी वह छोटी, जो क़ौमे आद के मरने की ख़बर सुनी वह छोटी, जो क़ौमे समूद पर कड़क की बात सुनी वह छोटी, जो क़ौमे लूत पर पत्थरों की ख़बर सुनी वह छोटी, जो फ़िरऔन के डूबने की ख़बर सुनी वह छोटी, जो यूसुफ़ عليه السلام के बिकने की ख़ुबर सुनी वह छोटी, जो ईसा عليه السلام को अर्श पर उठाने के ख़बर सुनी वह छोटी, यह सब चीज़ें छोटी हैं एक ख़बर उन सबसे बड़ी ख़बर है जिसको परवरदिगार फ़रमाते हैं ﴿عن النبأ العظيم﴾ बड़ी ख़बर जिस को क़ियामत के दिन की बात कहते हैं वह बहुत बड़ी बात है इसी लिए इस ख़बर को बड़ी ख़बर कहा और उस दिन के वाक़िया को बड़ा वाक़िया कहा गया ﴿يا

﴿ايها الناس اتقوا ربكم ان زلزلة الساعة شئى عظيم﴾ अल्लाह तआला खुद अज़ीम है وهو العلى العظيم उस अज़ीम परवरदिगार ने उसको نبأ عظيم भी कहा और شئى عظيم भी कहा तो मालूम हुआ यह कोई छोटी बात नहीं है हम समझते हैं दूर है ﴿ان هم يرونه بعيد ونراه قريبا﴾ " यह उसे दूर समझते हैं और हम उसे क़रीब कहते हैं" चुनांचे उस दिन हर बन्दा अपने आमाल के हिसाब से गिरवी होगा ﴿كل امرء بما كسب رهين﴾ अपने अमलों के बक़द्र गिरवी होगा जैसे गिरवी चीज़ को छुड़ाना पड़ता है अमल होंगे तो छूटेगा वरना नहीं छूटेगा।

सरकारी ग्वाह

और क़ियामत के दिन अल्लाह तआला चार गवाह पेश करेंगे

(1)...... एक तो नामए आमाल पेश होगा इंसान के गुनाहों पर ﴿ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه﴾ जब किताब पेश होगी तो मुजरिम लोग उसमें जब अपने करतूतों को देखेंगे तो डरें और कांपेंगे और ज़बान से कह भी देंगे ﴿ويقولون ياويلتنا مالهذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة الا احصاها﴾ कोई छोटा कोई बड़ा अमल ऐसा नहीं जो इसमें दर्ज न कर दिया गया हो ﴿ووجدو ما عملوا حاضر او لا يظلم ربك احدا﴾

(2)...... और दूसरे फ़रिश्ते गवाही देंगे ﴿ان عليكم لحافظين كراما كاتبين يعلمون ما تفعلون﴾

(3)...... और तीसरे जिस्म के आज़ा गवाही देंगे जिन से इंसान गुनाह करता है। ﴿يوم تشهد عليهم السنتهم و ايديهم و ارجلهم بما كانوا يعملون﴾

(4)...... और चौथा अल्लाह तआला की ज़मीन गवाही देगी ﴿يومئذ تحدث اخبارها بان ربك اوحى لها﴾ जैसे फ़ाइलें मेन्टेन की जाती है अब दुनिया में वीडियो कैमरे के ज़रीआ लोग मन्ज़र को सेव कर लेते हैं

कैच करते हैं पेश करने के लिए, ऐसे ही यह ज़मीन का वीडिया कैमरा यह सब के फ़ोटो ले रहा है और क़ियामत के दिन यह अपनी ख़बरें नश्र करेगा, इसने मेरी उस जगह पर यह किया, मेरी उस जगह पर यह किया, मेरी उस जगह पर यह किया, और इंसान के आज़ा यह अल्लाह तआला की खुफ़िया पुलिस है इन्हीं से बन्दा गुनाह करता है और यही क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने गवाही देंगे, गुनाहों की, फिर क्या बनेगा? इसलिए मोमिन को चाहिए कि हर वक़्त क़ियामत का ख़्याल रखे और यह सोचे कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुझे देखते हैं और मैं अल्लाह तआला की नज़र से ओझल नहीं हो सकता, जब दिल में यह यक़ीन बैठ जाए तो अब बन्दे के लिए गुनाहों से बचना आसान हो जाएगा इसलिए नबी ﷺ ने इस यक़ीन को खूब बिठाया था, सहाबए किराम का ऐसा यक़ीन बन गया था कि उनको यूँ महसूस होता था कि जैसे हम हर वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अर्श के सामने हैं, चुनांचे हदीस पाक है नबी ﷺ ने हारिसा रजि. से पूछा كيف اصبحت يا حارثه ऐ हारिसा तुमने कैसे सुबह की? उन्होंने जवाब में कहा ऐ अल्लाह के नबी इस हाल में सुबह की कि मुझे यूँ लगता है मैं अपने रब के अर्श के सामने खड़ा हुआ हूँ, ऐसा उनका कामिल यक़ीन बन गया था, चुनांचे जब यह यक़ीन हो कि अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होना है तो फिर बन्दा अपने नफ़्स को क़ाबू करता है।

गुनाह से बचने पर अल्लाह की रहमत

किताबों में एक बांदी का वाक़िया लिखा है कि एक क़स्साब उस पर बद निय्यत हो गया था, मौक़ा की तलाश में था वह किसी काम के लिए बाहर निकली तो उसने मौक़ा ग़नीमत पाया तो उसके सामने अपने बुरे ख़्याल का इज़हार किया कि मैं तुझ से बुराई करना चाहता हूं, समझदार थी उसने आगे से कहा कि देखो जितनी मुहब्बत तुम मुझ से करते हो उससे ज़्यादा मुहब्बत मेरे दिल में है मगर मैं अल्लाह

तआला से डरती हूँ इसलिए मैं गुनाह नहीं करना चाहती उस ख़ुदा की बन्दी ने जो अल्फ़ाज़ कहे ना कि मैं अल्लाह से डरती हूँ तो उन अल्फ़ाज़ की वजह से उस नौजवान के दिल पर असर हुआ और उसने गुनाह से सच्ची तौबा कर ली उसने दिल में सोचा कि चलो मैं अब चला जाता हूँ कहीं जब शहर से बाहर निकला तो उसको एक बड़े मियां मिले कोई बुज़ुर्ग थे वह भी जा रहे थे एक दूसरे से सलाम दुआ हुई कहां जाना है कहा उस बस्ती में जाना है, आप ने कहां जाना है? उसके क़रीब दूसरी बस्ती में जाना है, अच्छा तो फिर इकट्ठे सफ़र करते हैं, तीन दिन इकट्ठे चले, गर्मी का मौसम था जब दोनों चले तो उनके सरों पर बादल ने साया किया हुआ था, क़स्साब भी समझता रहा कि इस बुज़ुर्ग की वजह से अल्लाह की यह रहमत और वह बुज़ुर्ग भी समझते थे कि यह मुझ पर अल्लाह की मेहरबानी है, लैकिन अल्लाह तआला की शान देखें कि जब तीन दिन के बाद उनका रास्ता जुदा हुआ तो बादल क़स्साब के सर पर था, तो वह बड़े मियां फिर आए और उन्होंने कहा भाई बता तेरा कोई राज़ है, कोई तेरा अमल अल्लाह को बड़ा पसन्द आया, तो वह क़स्साब रोया कहने लगा बड़ा गुनहगार हूँ, ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़र चुकी, मैं तो अपनी ज़िन्दगी का कोई अमल पेश करने के क़ाबिल नहीं हूँ, वह कहने लगे कोई न कोई अमल हुआ ज़रूर है जो तुझ पर अल्लाह का यह करम है, ज़रा सोच तब उस क़स्साब ने बताया कि मैं ने तो गुनाह की निय्यत की थी, लेकिन अल्लाह का नाम सुन कर मेरे दिल पर हैबत तारी हुई मैं ने अल्लाह के ख़ौफ़ से गुनाह छोड़ दिया, बुज़ुर्ग ने कहा उसकी यह बरकत है कि अल्लाह ने गर्मी के मौसम में तुझे बादल का साया अता फ़रमाया, वह परवरदिगार इतना करीम है कि कोई बन्दा एक गुनाह से बचता है अपने उस बन्दे के साथ रहमत का बादल कर देते हैं।

"बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी"

कहते हैं कि शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी ने बहाउद्दीन ज़करया मुलतानी को तीन दिन में ख़िलाफ़त दे दी थी वह अपनी तेल बत्ती संवारने के लिए आए थे, शैख़ ने बस उसको आग दिखा दी जलने लग गई, जो पुराने पुराने लोग वहां रहते थे उनके दिल में ख़याल आया कि देखो जी इसको तीन दिन में इजाज़त मिल गई और हम मुद्दतों हो गए रस्ते में पड़े हुए हैं तो उन्होंने हज़रत से कहा हम भी तो पड़े हैं राहों में, हज़रत ने कहा अच्छा मैं फिर तुम्हें बताऊंगा, चुनांचे अगले दिन मेहमान आ गए तो उन्होंने कुछ मुर्ग़ियां ज़िबह करवानी थीं उन्होंने बुलाया उन दो चार बन्दों को और हर एक को मुर्ग़ी और छुरी देकर कहा कि भई इसको ज़िबह करो मगर ऐसी जगह करना जहां कोई न देखता हो उन्होंने कहा बहुत अच्छा एक ने दीवार की ओट में ज़िबह कर ली, दूसरे ने दरख़्त की ओट में ज़िबह कर ली, थोड़ी देर में सब ज़िबह कर के आ गए हज़रत ने देखा कि बहाउद्दीन ज़करया छुरी हाथ में मुर्ग़ी हाथ में रोते हुए आ रहे थे, भई रो क्यों रहे हो हज़रत आप ने हुक्म दिया था मैं पूरा ही न कर सका, भई क्यों नहीं पूरा कर सके सब ने पूरा कर दिया, हज़रत इसलिए कि मैं जहां जाता हूँ अल्लाह मुझे हर जगह देखते हैं हज़रत ने फ़रमाया देखो इसका यक़ीन पहले से बना हुआ था इसलिए इसको इजाज़त तीन दिन के अन्दर मिल गई, तो हर वक़्त दिल में यक़ीन रखिए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें देखते हैं।

बच्चा का यक़ीन

एक बाप अपने बेटे के साथ जा रहा था रास्ता में उनको अंगूर का बाग़ नज़र आया तो वालिद का दिल ललचाया कि भई अंगूर खाते हैं, उसने बच्चे को खड़ा किया बाहर और कहा कि देखो जब कोई आए ना तो मुझे आवाज़ दे देना, मैं जाकर ज़रा अंगूर तोड़ता हूँ अब वह गया और जैसे ही अंगूर तोड़ने के लिए उसने हाथ बढ़ाया तो बच्चे ने शोर मचा दिया अब्बू अब्बू हमें कोई देख रहा है, तो बाप समझा कि

कोई बन्दा आ गया तो वह उतर कर सहम कर आगे गया इधर उधर देखा तो कोई नहीं था कहने लगा कौन देख रहा है यहां तो कोई बन्दा नहीं, बच्चे ने कहा अब्बू बन्दा नहीं देख रहा है बन्दों का परवरदिगार देख रहा है, हमारा तो यक़ीन उस बच्चे जैसा भी न बन सका।

औरत का इस्तिहज़ार

एक आदमी ने किसी ग़रीब औरत की मजबूरी से फ़ाइदा उठाया और उसको बुराई पर मजबूर कर दिया वह फ़ाक़ों से तंग आई हुई थी बच्चों की ख़ातिर उसने उसकी बात मान ली अब जब यह घर आया उसको ले के तो कहने लगा कि अच्छा ज़रा दरवाज़े सब बन्द कर दो वह बन्द करती रही मगर सुस्त सुस्त जैसे कोई बन्दा बे दिली से करता है तो उसने उसको कहा कि अभी तक दरवाज़े बन्द नहीं हुए वह कहने लगी बस एक दरवाज़ा बन्द नहीं होता बाक़ी तो हो गए, तो यह उसे कहता है कौन सा दरवाज़ा बन्द नहीं होता तो जब उसने यह कहा? तो उस औरत ने जवाब दिया कि जिन दरवाज़ों से मख़लूक देखती है उन सब दरवाज़ों को मैं ने बन्द कर दिया, जिस दरवाज़े से परवरदिगार देखता है मैं वह दरवाज़ा बन्द नहीं कर सकी, तो जो नेक लोग होते हैं उनके दिल पर हर वक़्त यह इस्तेहज़ार होता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें देखते हैं हमारे साथ हैं ﴿وهو معكم اينما كنتم﴾ तुम जहां भी हो अल्लाह तुम्हारे साथ है इसलिए सहाबए किराम का बड़ा यक़ीन बना हुआ था।

हज़रत उमर ؓ का वाक़िया

उमर ؓ का वाक़िया है तवज्जोह से सुनिए, अपने दौरे ख़िलाफ़त में तहज्जुद के बाद ज़रा हालात मालूम करने के लिए गलियों में चक्कर लगा रहे थे एक मकान से दो औरतों की आवाज़ आई एक ज़रा बड़ी उम्र की थी एक छोटी लड़की थी मां ने बेटी से पूछा बकरी ने दूध दे दिया? कितना दिया है? कि ज़रा थोड़ा दिया है कहने लगी मांगने वाले

तो पूरा मागेंगे तुम इसमें थोड़ा पानी मिला दो, उसने कहा कि अमीरूल मोमिनीन ने एलान नहीं करवाया कि कोई दूध में पानी न मिलाए उसने कहा कौन सा अमीरूल मोमिनीन इस वक़्त न उमर देख रहा है और न मुनादी देख रहा है तो आगे से जवान बच्ची ने जवाब दिया ऐ अम्मा, उमर नहीं देखता तो उमर का परवरदिगार तो देखता है उमर ﷺ ने बात सुनी वापस आ गये अगले दिन तय्यार होकर जब उमूरे मम्लेकत संभालने के लिए काम काज निपटाने के लिए बैठे तो उन दोनों को बुला भेजा, पता चला कि एक बड़ी है और एक उसकी बेटी जवानुल उम्र है, मगर शादी नहीं हुई उमर ﷺ के दिल में ख़याल आया कि मेरा भी बेटा जवान है अगर शादी करनी हो तो बहू तो ऐसी होनी चाहिए जिस के दिल में ऐसा यक़ीन हो तो उस बुढ़िया से कहा कि देखो तुम्हारी बेटी जवान है मेरा बेटा जवान है क्यों न दोनों का निकाह कर दें, चुनांचे दोनों का निकाह किया यह वह लड़की थी जो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की नानी बनी उसको बेटी मिली और वह मां बनी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की अब शादी तो हो गई उमर ﷺ ने उसको एक दिन बुलाया और उस लड़की को कहा कि देखो बेटी मैं तुम्हारी एक डयूटी लगाना चाहता हूँ उसने कहा जी हुक्म फ़रमाएं, फ़रमाने लगे डयूटी यह है कि जब मैं रोज़ाना तय्यार होकर उमूरे ख़िलाफत के लिए घर से निकलना चाहूं तो तुम्हारी डयूटी है कि रस्ते में आकर मेरे क़रीब तुम ने मुझे वही सबक़ याद दिला देना है उसने कहा कौन सा सबक़? कहने लगे जो तुम ने मां के सामने कहा था? "उमर नहीं देखता तो उमर का खुदा तो देखता है" हज़रत उमर ﷺ को यह फ़िक़रा इतना अच्छा लगता था कि उस बच्ची को फ़रमाते थे कि तू बार बार यह कलमा मेरे सामने दोहरा, चुनांचे हर दिन वह बच्ची आप को जाते हुए याद दिलाती क़रीब आकर कहती "अगर उमर नहीं देखता तो उमर का खुदा तो देखता है" किताबों में लिखा है उमर ﷺ के दिल पर ऐसी छाप लग गई थी उस फ़िक़रे की कि तन्हाई में बैठे हुए खुद बखुद

कभी कह उठते थे, उमर नहीं देखता तो उमर का ख़ुदा तो देखता है ऐसा दिल पर वह फ़िक़्रा पेवस्त हो गया था।

चरवाहे का इस्तिहज़ार

अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि. रास्ते में जा रहे थे तो एक जगह एक चरवाहा मिला, चरवाहे को कहा कि भई कुछ हमें दूध ही दे दो, उसने कहा कि जी मेरी बकरियां नहीं हैं इजाज़त नहीं है, भई हम कुछ बनाएंगे, खाना पकाएंगे तुम्हें भी खिलाएंगे उसने कहा जी मेरा तो रोज़ा है, तो बड़े हैरान हुए कि जंगल में देखने वाला कोई नहीं गर्मी की शिद्दत और फिर बकरियां चराने वाला अल्लाह तौबा इतना भागना पड़ता है इनके पीछे कि बन्दे का हश्र हो जाता है और इस हालत में चरवाहा रोज़े से है तो दिल में ख़याल आया कि उसको आज़माते हैं तो उसको मशवरा दिया आज़माने की ख़ातिर भई एक बकरी हमें बेच दो हम इसको पकाएंगे तुम भी इफ़तारी कर लेना हम भी खा लेंगे उसने कहा जी मैं मालिक तो नहीं हूं फ़रमाया भई तुम मालिक को कह देना कि एक बकरी को भेड़या ले गया वह नौजवान मुस्कुराया और कहता है कि अच्छा अगर मैं उसको कहूंगा कि बकरी को भेड़िया ले गया तो فاين الله तो अल्लाह तो देखता है अल्लाह भी तो है, अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि. के दिल पर ऐसा असर हुआ कि बाद में लोगों के सामने यह वाक़िया सुना कर कहा करते थे कि इस क़ौम का हाल देखो कि इतना कामिल यक़ीन कि चरवाहा भी तन्हाईयों में रोज़े की शिद्दतें बरदाश्त करता है और जब कहा ज़ाता है कोई अमल ख़िलाफ़े शरअ कर लो तो कहता है فاين الله फिर अल्लाह कहां है।

हज़रत उमर रज़ि. की फ़िक्र

चुनांचे उमर रज़ि. का यक़ीन ऐसा था क़ियामत के बारे में कि जब आप की वफ़ात होने लगी आप ने वसियत फ़रमाई कि मुझे जल्दी नहला दें और जल्दी दफ़ना दें तीन दफ़ा इसको दोहराया तो एक सहाबी ने कहा

कि अमीरूल मोमिनीन हम जल्दी दफ़नाएंगे जल्दी आपको कफ़ना देंगे लेकिन इतनी जल्दी आप क्यों कर रहे हैं तो जब यह कहा, उमर᳚ की आंखों में आंसू आ गए फ़रमाने लगे मैं जल्दी इस लिए कर रहा हूँ कि अगर अल्लाह तआला मुझ से राज़ी हुए तो तुम मुझे अल्लाह से जल्दी मिला देना और अगर अल्लाह मुझ से ख़फ़ा हुए तो मेरा बोझ कंधे से जल्दी हटा देना और उमर के अंजाम को तो अल्लाह बेहतर जानता है, अशरये मुबश्शरा में से थे, मुरादे मुस्तफ़ा थे لو كان بعدی نبیا لكان عمر यह फ़ज़ाइल थे मगर फिर भी कहते हैं उमर के अंजाम को तो अल्लाह ही बेहतर जानता है।

राबिया बसरिय्या का ख़ौफ़

राबिया बसरिय्या अल्लाह की नेक बन्दी, किसी ने उनको खाने के लिए भुना हुआ मुर्ग़ ला कर दिया उन्होंने जब भुना हुआ मुर्ग़ देखा तो रोने लग गईं वह लाने वाला आदमी परेशान हो गया कि पता नहीं क्या बात हुई तो कहने लगा अम्मां आप क्यों रो रही हैं फ़रमाने लगीं कि मुझ से तो यह मुर्ग़ अच्छा पूछा वह कैसे? फ़रमाने लगीं इस लिए कि मुर्ग़ को पहले ज़िबह किया गया जब इसकी जान निकल गई इसको आग पर डाला गया अगर क़ियामत के दिन राबिया के गुनाह माफ़ न किये गये तो इसे तो ज़िन्दा हालत में जहन्नम भूना जाएगा, मुझ से तो मुर्ग़ अच्छा है इसकी रूह पहले निकली बाद में भूना गया और राबिया को तो ज़िन्दा हालत में जहन्न्म में भूना जाएगा।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़᳚

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़᳚ के पास एक बुढ़िया आई उसने कहा कि जी पहले लोग तो अपनी औलादों के लिए इतना छोड़ गये तुम भी कुछ जागीरें वक़्फ़ कर दो, कहने लगे मैं नहीं कर सकता वह ज़रा नाराज़ होने लगीं कि मैं बड़ी हूँ तुम किसी की बात मानते नहीं ज़िद्दी हो, उन्होंने ग़ुलाम को कहा कि भई कोई सिक्का हो तो लाओ, वह एक

दीनार का सिक्का लाया कहने लगे एक गोश्त का टुकड़ा भी लाओ तो दीनार को आग में डलवा दिया जब दीनार लाल सुर्ख़ हो गया तो उसको गोश्त पर रखवाया तो गोश्त जलने लगा अब जब गोश्त जलता है तो बू आती है तो वह बुढ़िया कहने लगी कि क्या बदबू आ रही है कहने लगे अम्मां आप को मनज़र दिखाया है कि आप उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को कहने आई हैं कि क़ियामत के दिन तुम्हारा इसी तरह हश्र किया जाए, तुम बैतुल माल के पैसा को अपने बच्चों के लिए वक़्फ़ कर दो, मैं ने तुम्हें नमूना दिखाया है कि कल मेरे साथ यूं ही होगा, तो इतना यक़ीन उनके दिलों में बैठा हुआ था इसी लिए भाई क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के सामने पेश होना छोटी बात नहीं।

आख़िरत के फ़िक्रमन्दों के अक़वाल

अल्लाह के महबूब कभी कभी कहते थे हदीसे पाक में आता है يا ليت رب محمد لم يخلق محمدا ऐ काश कि मुहम्मद ﷺ का परवरदिगार मुहम्मद ﷺ को पैदा ही न करता, सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ फ़रमाते थे ياليتني كنت عصفورا ऐ काश कि मैं कोई परिन्दा होता, मोमिन के बदन का बाल होता, मुझे मेरी मां ने जना ही न होता, चुनांचे अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद एक सहाबी हैं उनके पास एक आदमी आया और कहने लगा ياليتني اكون من اصحاب اليمين "ऐ काश मैं अस्हाबे यमीन में से होता, तो इस बात को सुन कर अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ने फ़रमाया ياليتني كنت اذا مت لم ابعث ऐ काश कि अगर मैं मरता तो मैं दोबारा उठाया ही न जाता ऐसे बड़े बड़े जलीलुल क़द्र सहाबा उस क़ियामत के दिन की पेशी से इतना डरते थे।

रोज़े हिसाब

इस लिए अहादीस में आया है कि उस दिन नफ़्सा नफ़्सी का आलम होगा अंबिया थर्राते होंगे, सब लोग इकट्ठे होकर आदम अलैहिस्सलाम के पास जायेंगे कि ऐ इंसानों के बाप आप अल्लाह के

हुज़ूर अर्ज़ कीजिए कि हमें इस मुसीबत से नजात दीजिए, हिसाब शुरू कर लीजिए, हज़रत आदम ﷺ कहेंगे कि मैं अल्लाह के हुजूर हाज़री नहीं दे सकता इस लिए कि मैं ने दरख़्त का फल खाया था मुझे आज उस दिन की दहशत नाकी की वजह से अल्लाह के सामने बात करते डर लगता है लोग हज़रत नूह ﷺ के पास जायेंगे हज़रत नूह ﷺ भी इंकार फ़रमायेंगे कि मैं ने बद्दुआ मांगी थी जिस की वजह से सारी क़ौम को गर्क़ कर दिया गया अब मैं अल्लाह के हुजूर पेश होते हुए डरता हूँ लोग हज़रत मूसा ﷺ के पास आयेंगे वह फ़रमायेंगे कि मुझ से एक क़िब्ती मारा गया था मैं अल्लाह के हुजूर पेश होते हुए डरता हूँ हज़रत ईसा ﷺ के पास आयेंगे कहेंगे कि भई नहीं लोगों ने तो मुझे अल्लाह का शरीक बना लिया था और मुझे तो अल्लाह के हुजूर पेश होते हुए डर लगता है सब इंकार कर देंगे बिल आख़िर सारी इंसानियत नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होगी हदीस पाक में आता है कि नबी ﷺ मक़ामे महमूद पर पहुंच कर सज्दे में जायेंगे नबी ﷺ ने फ़रमाया मैं उस दिन अल्लाह तआला की ऐसी हम्द बयान करूंगा न पहले किसी ने की न कोई बाद में ऐसी हम्द बयान करेगा और फिर नबी ﷺ सज्दे की हालत में रोना शुरू कर देंगे अल्लाह अपने महबूब को फ़रमायेंगे मेरे महबूब आप दुनिया में भी रोते रहे सज्दों में और आज भी सज्दे में रो रहे हैं। सज्दे से सर उठाईये (سل تعط) आप मांगिये जो मागेंगे हम आप को अता करेंगे तो अल्लाह के महबूब फ़रमायेंगे ऐ अल्लाह अपने बन्दों का हिसाब लीजिए उनकी इस मुसीबत से जान छुड़ाईये फ़रमायेंगे अच्छा किसी को पेश करो।

सय्यदना अबू बकर॰ का हिसाब

किताबों में लिखा है कि जब अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि किसी को पेश करो तो नबी ﷺ सय्यदना सिद्दीक़े अकबर को कहेंगे कि तुम पेश हो जाओ जब कहेंगे तो सिद्दीक़े अकबर रोना शुरू कर देंगे, ऐ

अल्लाह के नबी मैं अपने रब के सामने पेश नहीं हो सकता ऐ अल्लाह के नबी मैं उम्र के आख़िरी हिस्सा में आकर मुसलमान हुआ ज़्यादा अर्सा मेरा इस्लाम से पहले का है मेरी उम्र इस क़ाबिल नहीं कि मैं अल्लाह के हुज़ूर पेश हो जाऊं इंकार करेंगे नबीﷺ फ़रमायेंगे अबू बक्र तुझे अल्लाह के सामने पेश होना है जब अबू बक्र सिद्दीक़ को नबीﷺ हुक्म देंगे तो अबू बक्र सिद्दीक़ एक क़दम आगे बढ़ायेंगे हदीस में आता है वह भी रोना शुरू कर देंगे अल्लाह मैं पेश होने के क़ाबिल नहीं हूँ मैं हिसाब देने के क़ाबिल नहीं हूँ अल्लाह तआला फ़रमायेंगे ओ मेरे महबूब के यारे ग़ार तूने मेरे महबूब पर ऐसे एहसानात किए हुए हैं कि उसका बदला हम ने अपने ज़िम्मा लिया हदीस पाक में आता है ان الله يتجلى للخلق عامة ولكن لابى بكر خاصة अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मख़लूक़ के लिए आम तजल्ली फ़रमाएगा मगर अबू बक्र के लिए ख़ास तजल्ली फ़रमाएगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुस्कुरा कर देखेंगे अबू बक्र सिद्दीक़ की तरफ़ तुम रोते हो तुम्हारे तो एहसानात हैं मेरे महबूब पर और एहसानात का बदला मैं ने देना है नबीﷺ ने फ़रमाया मैं ने दुनिया में सब के एहसानात के बदले दे दिया अबू बक्र तेरे एहसानात का बदला अल्लाह देगा कैसी ज़िन्दगी होगी कि एहसान का बदला देने वाले अल्लाह के महबूब फ़रमाते हैं अबू बक्र तेरे एहसानात का बदला अल्लाह देगा ﷻ चुनांचे सय्यदना सिद्दीक़ अकबरؓ आगे होंगे अल्लाह तआला उनका नामए आमाल देखेंगे मुस्कुरा कर फ़रमायेंगे कि हम ने तो कहा था﴿ولسوف يرضى﴾ अबू बक्र हम तुम्हें खुश कर देंगे।

सय्यदना उमरؓ का हिसाब

फिर जब उनका हिसाब हो जाएगा तो सय्यदना उमरؓको पेश किया जाएगा सय्यदना उमरؓभी रोयेंगे मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत जोश में आएगी नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हज़रत सिद्दीक़ؓको कि आसमान के सितारों के बराबर अगर किसी की

नेकियां देखनी हों तो उमर फ़ारूक़ की नेकियों को देखे मुरादे मुस्तफ़ा थे अल्लाह तआला उनको भी मुस्कुरा कर पास फ़रमा देंगे।

सय्यदना उस्मान ग़नी का हिसाब

फिर सय्यदना उस्मान ग़नी पेश होंगे हदीस पाक में आता है कि उनका हिसाब बहुत आसानी से लिया जाएगा चूंकि नबी अलैहिस्सलाम ने दुआ दी थी एक मर्तबा ईद का दिन था नबी ﷺ ईद पढ़ाने के लिए तशरीफ़ ले जाने लगे तो उम्मुल मोमिनीन ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी आप ईद पढ़ाने जा रहे हैं हमें कुछ दीजिए कि हम कुछ मंगवायें और पकायें यतीम आयेंगे बेवायें आयेंगी ताकि उनको भी आज ईद के दिन दे सकें नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मेरे पास तो कुछ नहीं वह ख़ामोश हो गईं नबी ﷺ ने ईद की नमाज़ पढ़ाई जब ईद की नमाज़ पढ़ा कर वापस गये तो देखा कि घर में बहुत कुछ पका हुआ है और यतीम बेवायें आ रही हैं और वह भी ले ले कर जा रहे हैं तो नबी ﷺ बड़े हैरान हुए पूछा कि यह सब कुछ कैसे हुआ अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी जब आप ईद की नमाज़ पढ़ाने के लिए तशरीफ़ ले गए तो सय्यदना उस्मान इब्ने अफ़्फ़ान ने आप की हर ज़ौजा के घर सामान से लदा हुआ एक एक ऊंट हदिया के तौर पर भेजा सब अज़वाज को हदिया भेजा तो सब अज़वाज ने खाना पकाया और अल्लाह के रास्ते में दे रही हैं तो नबी ﷺ ने जब यह सुना तो फ़रमाया (يارحمن سهل الحساب على العثمان) ऐ रहमान अब तू उस्मान के लिए क़ियामत के दिन का हिसाब आसान फ़रमा दे। चुनांचे क़ियामत के दिन जब उस्मान ग़नी रजि. पेश होंगे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनका हिसाब आसान फ़रमा देंगे फिर अली रजि. पेश होंगे हदीस पाक में आता है (اسرع المحاسبة يوم القيامة حساب على) क़ियामत के दिन सबसे जल्दी हिसाब अल्लाह तआला सय्यदना अली रजि. का लेंगे जब चारों का हिसाब देंगे उनका हिसाब देकर अल्लाह

रब्बुल इज़्ज़त को इतनी खुशी होगी महबूब के यारों को देख कर कि अल्लाह तआला का जलाल अल्लाह के जमाल में बदलेगा बाक़ी सारी मख़लूक़ का हिसाब अल्लाह तआला आसानी के साथ लेंगे रहमत के साथ हिसाब होगा हर एक का, फिर तो रहमत का वह नुज़ूल होगा क़ारी मुहम्मद तय्यब" लिखते हैं कि इतना अल्लाह तआला की रहमत का नुज़ूल होगा कि एक वक़्त आएगा शैतान भी सर उठा कर देखेगा शायद आज मेरी भी मग्फ़िरत कर दी जाए, वाह मेरे मौला उसकी रहमत का कितना ज़ुहूर होगा तो भई उस दिन की इब्तिदा की शिद्दत बड़ी ज़्यादा है इसलिए उस दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर पेश होने से हमारे अस्लाफ़ डरते थे अल्लामा इक़बाल ने अजीब अशआर कहे फ़रमाते हैं

तू ग़नी अज़ हर दो आलम मन फ़क़ीर
रोज़े महशर उज़्र हाए मन पज़ीर

(ऐ अल्लाह तू दो आलम से ग़नी है और मैं मुहताज हूँ क़ियामत के दिन मेरे उज़रों को क़बूल कर लेना)

गर तू मी बीनी हिसाबम ना गुज़ीर
अज़ निगाहे मुस्तफ़ा पिन्हा बगीर

और अल्लाह अगर तू फ़ैसला कर ले कि हिसाब लेना लाज़मी है तो मालिक मेरी फ़रयाद है फिर मेरा हिसाब मुस्तफ़ा करीम की निगाहों से ओझल लेना मुझे उनके सामने शरमिंदगी न हो जाए कि महबूब तो रातों को रोते रहे और हम ने उनके आंसुओं की क़दर न की उस दिन की पेशी से हमारे अकाबिर इतना घबराया करते थे, आसान काम नहीं है अल्लाह के हुज़ूर पेश होना।

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक" का ख़ौफ़

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक" का आख़िरी वक़्त आया हज़ारों शागिर्दों के उस्ताद थे, शागिर्दों से कहा कि मुझे इस चारपाई से उतार कर नीचे

ज़मीन पे लेटा दो الامر فوق الادب शागिर्दों ने नीचे लिटा दिया मगर उनकी चीख़ निकल गई क्या देखा इतने बड़े मुहद्दिस वह अपने रूख़सार को ज़मीन पर रगड़ने लगे और अपनी दाढ़ी को पकड़ कर रो कर कहने लगे ऐ अल्लाह अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम कर कोई अमल अल्लाह के हुज़ूर पेश नहीं किया अल्लाह मैं ने हदीस की ख़िदमत की मैं ने लाखों बन्दों को नसीहत की तेरे बन्दों की ज़िन्दगियां बदलीं अल्लाह मैं ने दिन रात क़ुर्बानियां दीं इल्म सीखा, कोई अमल अल्लाह के हुज़ूर पेश नहीं किया, बस अपनी दाढ़ी को पकड़ कर सिर्फ़ इतना कहने लगे अल्लाह अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमा वह डरते थे इसी लिए क़ियामत के दिन की तय्यारी करते थे।

ख़्वाजा उस्मान ख़ैराबादी

ख़्वाजा उस्मान ख़ैराबादी के बारे में आता है उनकी बक़ाला (सब्ज़ी फ़रोशी) की दुकान थी जो बन्दा उनके पास सौदा लेने आता तो कुछ के पास खोटे सिक्के होते उस ज़माना में चांदी के सिक्के होते थे जब घिस जाते थे तो उनको खोटा सिक्का कहते थे तो वह ले कर रख लेते सौदा दे देते सारी उम्र यही हाल रहा जब उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया आख़िरी लम्हा क़रीब था टेक लगाई हुई थी उठ कर बैठ गये और अल्लाह से दुआ करने लगे ऐ अल्लाह मैं सारी ज़िन्दगी तेरे बन्दों से खोटे सिक्के क़बूल करता रहा तू भी मेरे खोटे अमलों को क़बूल कर ले, वह लोग उस दिन की तय्यारी करते थे अब हम सोचें हम ने उस दिन के लिए क्या तय्यार कर रखा है तो फिर हमें एहसास होगा कि हम ने उस दिन के लिए कुछ तय्यारी नहीं की वह दिन बड़ा मुश्किल है।

मुहम्मद शाह का इज्ज़

मुहम्मद शाह मकरान का बादशाह गुज़रा है एक दफ़ा यह जंगल में गया शिकार खेलने के लिए एक बुढ़िया की गाय थी उसके पुलिस

वालों ने उसकी गाय का ज़िबह करके उसके कबाब भून कर खा लिए बुढ़िया ने उन से कहा कि मुझे कुछ पैसे दे दो कोई और गाय ले लूंगी इसी के दूध पर मेरा गुज़ारा था, उन्होंने बात ही न सुनी बड़ी परेशान, किसी शख़्स से मशवरा किया मैं क्या करूं उसने कहा बादशाह नर्म दिल आदमी है तुम बादशाह को अपनी बात पहुंचाओ वह तुम्हें इसका मुआवज़ा दे देगा उसने कहा पुलिस वाले तो जाने ही नहीं देते उसने कहा मैं तुम्हें तरीक़ा बताता हूँ बादशाह ने दो दिन के बाद वापस जाना है और उसके घर के रास्ता में दरिया है और दरिया पर एक ही पुल है यह उस पुल से गुज़रेगा तुम पुल पर पहुंच जाओ और मुहम्मद शाह से अपनी बात कर लेना, बुढ़िया वहां पहुंच गई, जब मुहम्मद शाह वहां पहुंचा बुढ़िया आगे बढ़ी उसने सवारी की लगाम को पकड़ लिया, मुहम्मद शाह कहने लगा अम्मा क्या बात है? सवारी क्यों रोकी? कहने लगी मुहम्मद शाह मेरा तेरा एक मुकद्दमा है यह पूछना चाहती हूँ इस पुल पर हल करना चाहता है या क़ियामत के दिन पुल सिरात पर हल करना चाहता है बस उसने यह अलफ़ाज़ कहे कहते हैं बादशाह को पसीना आ गया कहने लगा अम्मां मैं इस क़ाबिल नहीं हूं कि पुल सिरात पर फ़ैसला चुकाऊं चुनांचे बुढ़िया ने उसको सारा मामला सुनाया, मुहम्मद शाह ने उस बुढ़िया को सत्तर गायों की क़ि़मत दी और माफ़ी मांगी और कहा अम्मां माफ़ कर देना मैं क़ियामत के दिन पुल सिरात पर कोई मुकद्दमा पेश नहीं कर सकता, आसान काम है कि कोई बन्दा कहे कि मैं क़ियामत के दिन पेश होने के क़ाबिल हूं, मां ने कोई लाल नहीं जना जो दम मारे कि मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होने के क़ाबिल हूं, वह ऐसा दिन होगा कि अंबिया थर्राते होंगे।

हज़रत ईसा عليه السلام का ख़ौफ़

किताबों में लिखा है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन हज़रत ईसा عليه السلام से पूछेंगे ﴿أانت قلت للناس اتخذونى و امى الهين من دون

اللہ क्या आप ने कहा था लोगों को मुझे और मेरी मां को अल्लाह के साथ माबूद बना लो शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी" अपनी किताब में लिखते हैं कि जब अल्लाह तआला उनसे पूछेंगे तो, जैसे बन्दे को एक दम पसीना आ जाता है हज़रत ईसा عليه السلام को पसीना आएगा और जिस्म के हर मसाम में से खून का क़तरा निकल आएगा डर और ख़ौफ़ की वजह से, अल्लाहु अकबर कबीरा इस लिए जो आदमी क़ियामत के दिन का डर रखे और फिर अपने नफ़्स को गुनाहों से बचाए वह इंसान क़ियामत के दिन कामियाब होने वाला इंसान है।

अजीब वाक़िया

इमाम शाफ़ई" के ज़माना में वक़्त का हाकिम एक परेशानी का शिकार हुआ कि बीवी रूठ गई अब वह चाहता थ कि मनाए बीवी गुस्सा कर गई थी एक दिन उसको उसने ज़्यादा मनाने की कोशिश की वह जितना मनाता वह और उससे नाराज़ होती हत्ता के उस औरत ने उसको कह दिया कि जहन्नमी मैं तेरी शक्ल नहीं देखना चाहती जब उसने जहन्नमी का लफ़्ज़ कह दिया तो वह भी हाकिम था उसने गुस्स में कह दिया अगर मैं जहन्नमी तो तुझे तीन तलाक़ अब जब गुस्सा दोनों का ठंडा हुआ तो बादशाह भी सोचने लगा कि पूरे मुल्क में ऐसी खूबसूरत लड़की तो और है नहीं, मैं भी नहीं उसको अपने से जुदा करना चाहता और बीवी का दिमाग़ ठंडा हुआ तो वह भी सोचने लगी कि जो इज़्ज़त बादशाह की वजह से मेरी है उसके बग़ैर तो नहीं होगी अब दोनों चाहते थे कि भई ज़रा सुलह हो जाए मगर तलाक़ मशरूत थी तो अब बादशाह से बीवी ने पूछा पता करें कि तलाक़ वाक़ेय हो गई कि नहीं हुई, उसने उलमा से पूछा उलमा ने कहा कि जी हम तो जवाब नहीं दे सकते इस लिए कि तलाक़ मशरूत है, अगर मैं जहन्नमी तो तुझे तीन तलाक़ तो कौन फ़ैसला करेगा कि आप जहन्नमी हैं या नहीं, अब तमाशा बन गया अब जिसको यह मसला पता चले वह कहे

जी कोई इसका जवाब नहीं दे सकता अजीब कैफ़ियत है किसी ने इमाम शाफ़ई" को बताया वह कहने लगे हां मैं इसका जवाब दे सकता हूँ चुनांचे किसी ने बादशाह को ख़बर दी कि फ़लां बुज़ुर्ग हैं उसने दावत दी उनको और कहा जी मैं इस मुसीबत में हूं मुझे निकालें उन्होंने कहा हां मैं इसका जवाब दे सकता हूँ मगर मुझे आप से एक बात पूछनी पड़ेगी तन्हाई में, उसने इन्तिज़ाम कर दिया तन्हाई का उन्होंने बादशाह से पूछा कि यह बताओ आप की पूरी ज़िन्दगी में कोई ऐसा मौक़ा आया कि आप किसी गुनाह को करने की कुदरत रखते हो मगर अल्लाह के डर से आपने गुनाह को छोड़ दिया बादशाह ने सोच सोच कर कहा हां एक वाकि़या पेश आया वह कैसे? बादशाह ने कहा कि मैं एक मर्तबा अपने काम से ज़रा जल्दी फ़ारिग़ हो गया ख़िलाफ़े मामूल जल्दी मैं अपनी आरामगाह में आ गया तो मैं ने क्या देखा कि महल में काम करने वाली नौजवान लड़की वह अभी बिस्तर वग़ैरा संवार रही थी मैं कमरे में आ गया उसके चेहरे पर नज़र पड़ी तो मुझे वह बहुत खूबसूरत लगी तो मेरी निय्यत बदली मैं ने कुन्डी लगा दी अब जैसे ही मैं ने कुन्डी लगाई वह लड़की पहचान गई कि बादशाह की निय्यत ठीक नहीं मैं ने उसकी तरफ़ क़दम उठाया तो वह बच्ची मुझे देख कर कहने लगी يا مالك اتق الله ऐ बादशाह अल्लाह से डर इतनी तक़ीया नक़ीया ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाली वह बच्ची थी उसने ऐसे अंदाज़ से कहा اتق الله अल्लाह से डर कि अल्लाह की हैबत मेरे दिल पर तारी हो गई और मेरे रौंगटे खड़े हो गये और मैं ने दरवाज़ा खोल दिया अच्छा जा चली जा अगर मैं दरवाज़ा न खोलता मैं उसके साथ अपनी ख़्वाहिश पूरी कर सकता था, बादशाह था, मुझे कौन पूछने वाला था मगर अल्लाह के डर से मैं ने गुनाह न किया जब उन्होंने यह वाकि़या सुनाया तो उन्हों ने उसको कहा कि मैं फ़तवा लिख कर देता हूँ कि आप की बीवी को तलाक़ वाक़े नहीं हुई अब जब यह फ़तवा उलमा के सामने आया तो सब उलमा ने उनसे पूछा कि जी आप कैसे

कहते हैं यह तो मशरूत तलाक़ थी तो आप कैसे फ़ैसला कर सकते हैं कि यह जन्नती हैं या जहन्नमी तो उन्होंने कहा कि जनाब यह फ़ैसला मैं ने नहीं किया यह फ़ैसला खुद कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने किया यह फ़तवा मैं ने नहीं दिया यह फ़तवा परवरदिगार ने दिया है अल्लाह तआला भी तो हाफ़िज़ क़ारी हैं मौलाना हैं और मुफ़्ती भी हैं माशाअल्लाह सब कुछ हैं हम नहीं पढ़ते ﴿فالله خير حافظا﴾ तो हाफ़िज़ भी हुये ﴿سنقرئك فلاتنسى﴾ तो क़ारी भी हुये ﴿انت مولانا﴾ तो मौलाना भी हुये ﴿الله يفتيكم فى الكالالة﴾ अल्लाह कलाला के बारे में तुम्हें फ़तवा देता है मुफ़्ती भी हुए माशाअल्लाह यह सब कितने मज़े के अलफ़ाज़ हैं अल्लाह की शान उलमा की खुशनसीबी यह अलफ़ाज़ लोग उनके लिए इस्तेमाल करते हैं वाह मेरे मौला ﴿تخلقوا باخلاق الله﴾ इसका नमूना देखो परवरदिगार ने फ़रमाया अल्लाह के अख़लाक़ से अपने आप को मुज़य्यन करो यह उलमा वह खुशनसीब लोग हैं दुनिया में जो अलफ़ाज़ अल्लाह के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं वह इन उलमा के लिए इस्तेमाल कर लिए जाते हैं कैसे खुशनसीब हैं तो उन्होंने कहा जनाब फ़तवा मैं ने नहीं दिया फ़तवा कुरआन ने दिया, उन्होंने कुरआन पाक की आयत पढ़ी कि अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में फ़रमाया ﴿واما من خاف مقام ربه و نهى النفس عن الهوى فان الجنة هى المأوى﴾ और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डर गया और उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात में पड़ने से बचा लिया बस उसका ठिकाना जन्नत है तो भई क़ियामत के दिन की पेशी को याद रखें गुनाहों से बचना यह जन्नत में जाने का ज़रीआ है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें अपनी मईयत का इस्तिहज़ार नसीब फ़रमाये और क़ियामत के दिन की छाप हमारे दिलों में लगाए ताकि गुनाहों से बचना हमारे लिए आसान हो जाए।

و آخر دعوانا ان الحمد الله رب العلمين

﴿ظهر الفساد فى البر و البحر بما كسبت ايدى الناس﴾

गुनाहों पर दुनिया में सज़ा

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी ज़ैद मजदहु

लोसा का मस्जिद नूरज़ामबिया

﴿एम ऐस्डल 1424 हि0 मुताबिक़ 2003 ई0﴾

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

जो इंसान अल्लाह तआला की नाफ़रमानियां करता है अल्लाह तआला इसी दुनिया में उसको कुछ नक़द सज़ा दे देते हैं और आख़िरत में तो मिलेगी ही सही इसको कहते हैं अदले का बदला, यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी केकर का दरख़्त बोए और उसके ऊपर फल लगने लग जायें जो केकर बोएगा उसे कांटे मिलेंगे जो गुनाह करेगा उसे सज़ा मिलेगी

अदल व इंसाफ़ फ़क़त हश्र पे मौक़ूफ़ नहीं
ज़िन्दगी खुद भी गुनाहों की सज़ा देती है

(हज़रत पीर ज़ुल फ़ेक़ार अहमद साहब मद्दा ज़िल्लहू)

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفَى وَ سَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَى اما بعد .....!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ـ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ-

﴿ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِى النَّاس﴾

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّم

इंसानी ज़िन्दगी एक मक़सद के लिए अता की गई है इरशादे बारी तआला है ﴿افحسبتم انما خلقناكم عبثا و انكم الينا لا ترجعون﴾ क्या तुम यह गुमान करते हो कि तुम बे फ़ाइदा पैदा किये गये हो और क्या तुम हमारी तरफ़ लौटाए नहीं जाओगे, तो मालूम हुआ कि इंसान के पैदा होने का एक मक़सद है और उसने एक दिन अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटना है लिहाज़ा जो कुछ हम दुनिया में करते हैं, उसका हमें बदला मिलना है, नेक कामों का अच्छा बदला मिलता है और बुरे कामों का बुरा बदला मिलता है, अब यह इंसान के ऊपर मुन्हसिर है कि वह कैसी ज़िन्दगी गुज़ारता है।

क़ानून जज़ा और सज़ा

अल्लाह तआला के यहां मुस्तकिल एक क़ानून है जो भी नेकी करेगा वह अच्छा अज्र पाएगा और जो भी बुराई करेगा वह उसकी सज़ा को भुगत के रहेगा यह नहीं हो सकता कि इंसान दुनिया में रह कर मंन मानी करे और उसको पूछने वाला कोई न हो, लोग कहते हैं रहना दरिया में और मगरमछ से बैर तो दरिया में रह कर मगरमछ से बैर नहीं चलती तो दुनिया में रह कर परवरदिगार से बैर कैसे चलेगी।

किन किन पर दुनिया में पकड़ आई?

जो इंसान अल्लाह तआला की नाफ़रमानियां करता है अल्लाह तआला इसी दुनिया में उंसको कुछ नक़द सज़ा दे देते हैं और आख़िरत में तो मिलेगी ही सही इसको कहते हैं अदले का बदला, यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी केकर का दरख़्त बोए और उसके ऊपर फल लगने लग जायें जो केकर बोएगा उसे कांटे मिलेंगे जो गुनाह करेगा उसको सज़ा मिलेगी

अद्ल व इंसाफ़ फ़क़त हश्र पे मौक़ूफ़ नहीं
ज़िन्दगी खुद भी गुनाहों की सज़ा देती है।

इस दुनिया में भी इंसान को गुनाहों की सज़ा मिल कर रहती है चुनांचे कितने लोग थे कितनी क़ौमें थीं जिन्होंने मन मानी की और फिर उन पर अल्लाह तआला का अज़ाब आया, उसके तज़किरे कुरआन करीम में मौजूद हैं क्या इबरत के लिए यह काफ़ी नहीं कि इबलीस जो एक वक़्त में बड़ा इबादत गुज़ार था, बड़ा नेकोकार था, ताऊसुल मलाइक कहलाता था उसने ज़मीन के हर हर चप्पे पे सज्दे किए थे इतना इबादत गुज़ार था अर्श तक उसकी परवाज़ थी उसने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी ﴿ابی و استکبروکان من الکافرین﴾ उसने सज्दे से इंकार किया काफ़िरों में से हुआ, चुनांचे रब्बे करीम ने फ़रमाया ﴿فاخرج منها فانك رجيم﴾ निकल जा मेरे दरबार से, अपने दरबार से निकाल दिया और साथ परवरदिगार ने यह भी कह दिया ﴿وان عليك لعنتى الى يوم الدين﴾ अब तुझ पर क़ियामत तक मेरी लानतें बरसेंगी, कहां रहमतों का मुस्तहिक़ था कहां लानतों का मुस्तहिक़ हो गया जब इबादत गुज़ार था तो रहमतें बरसती थीं और जब गुनहगार बना तो लानतों का मुस्तहिक़ बन गया कितना बुरा अंजाम है।

क़ौमे नूह عليه السلام का अंजाम

क़ौमे नूह عليه السلام के साथ क्या हुआ वह सय्यदना नूह عليه السلام के साथ मज़ाक़ उड़ाते थे जब आप को हुक्म हुआ ﴿واصنع الفلك بأعيننا ووحينا﴾ " आप कश्ती बनाईये हमारी आंखों के सामने वही के मुताबिक" तो जब वह कश्ती बनाते थे उनकी क़ौम वाले उनको कश्ती बनाते देख कर कहते क्यों बना रहे हो? फ़रमाते थे कि तूफ़ान आने वाला है, वह कहते थे यहां तो रेत उड़ती है हर तरफ़ सहरा है हम तो यहां चाहते हैं कि यहां पानी जल्दी आए, मज़ाक़ उड़ाते थे ﴿قال ان تسخروا منا فانا نسخر منكم كما تسخرون﴾ मज़ाक़ उड़ाते थे बस फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का जब फ़ैसला आ गया तो परवरदिगार ने हज़रत नूह عليه السلام को फ़रमाया ﴿ولاتخاطبني في الذين ظلموا انهم مغرقون﴾ अब आप ने मुझ से उन ज़ालिमों के बारे में गुफ़्तगू नहीं करनी, मेरे पैग़म्बर! हो सकता है आप का दिल पसीज जाए आप का दिल नर्म हो जाए, आप उन पर मेहरबान हो जायें अब मुझ से उनके बारे में कलाम मत कीजिए, अब उन्होंने ग़र्क़ होकर रहना है, चुनांचे ऐसा तूफ़ान आया कि पूरी दुनिया में सेवाए वह लोग जो नूह عليه السلام की कश्ती में थे बाक़ी सब ग़र्क़ हो गये।

क़ौमे आद

क़ौमे आद दुनिया में गुज़री है मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि साठ हाथ चौड़े उनके सीने होते थे लम्बे लम्बे क़द होते थे ﴿وتنحتون من الجبال بيوتا﴾ "पहाड़ों को खोद कर घर बनाते थे" और आज भी दुनिया में ऐसे मक़ामात मौजूद हैं कि पहाड़ के अन्दर जायें तो आप को अजीब व ग़रीब अन्दर मकान बने हुए महसूस होते हैं जो आज के इंसान के बस से भी बाहर हैं उनको अपनी ताक़त पे बड़ा नाज़ था कहते थे ﴿من اشد منا قوة﴾ "कौन है हम से ज़्यादा ताक़त वाला? और अल्लाह तआला ने भी तस्दीक़ कर दी ﴿لم يخلق مثلها في البلاد﴾ उन जैसी क़ौम फिर शहरों में पैदा नहीं हुई तो ताक़त पर नाज़ था

घमंड था वक़्त के नबी ﷺ की बात न मानी अल्लाह तआला ने उन पर तेज़ हवा का अज़ाब भेजा और वह तेज़ हवा भी कैसी कि मोमिन को लगती तो इतनी अच्छी कि दिल खुश होता कहता कि यह हवा तो चलनी चाहिए, लेकिन काफ़िर के लिए वह इतनी तेज़ कि वह उनको पटख़ कर ज़मीन पर मारती हत्ता कि उनकी लाशें ऐसी बिखरी थीं ﴿كأنهم اعجاز نخل خاوية﴾ जैसे कि खजूर के तने बिखरे हुए पड़े हों, पूरी क़ौम को ख़त्म करके रख दिया।

हज़रत सालेह ﷺ

"क़ौमे समूद" हज़रत सालेह ﷺ की क़ौम कहने लगी कि आप हमें कोई मोजज़ा दिखाइये उन्होंने दुआ की चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने पहाड़ में से एक ऊंटनी निकाल दी ناقة الله उसको एक बच्चा भी था दूध इतना देती थी कि सारे गावं वाले उसको पीते थे मगर उसकी खुराक भी इतनी थी कि एक दिन गावं वाले पानी भर सकते थे और एक दिन वह ऊंटनी पानी पी लेती थी, हज़रत सालेह ﷺ ने फ़रमाया कि इसको तुम कुछ न कहना यह अल्लाह की निशानी है मगर एक बदकार औरत के पीछे कुछ लोगों ने आकर उस ऊंटनी की टांगे काटीं और बिल आख़िर उसे मारा नतीजा क्या हुआ कि एक तेज़ आवाज़ आई हज़रत सालेह ﷺ से फ़रमाया था ﴿فلا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب اليم﴾ इस ऊंटनी को कुछ न कहना दर्दनाक अज़ाब मिलेगा जब बात न मानी ﴿فاخذتهم الرجفة فاصبحوا فى دارهم جاثمين﴾ एक कड़क आवाज़ आई जैसी बिजली कड़कती है अगले दिन सब अपने घरों के अन्दर मुर्दे पड़े हुए मिले।

हज़रत लूत ﷺ

क़ौमे लूत ग़ैर फ़ितरी अमल करते थे हज़रत लूत ﷺ ने उन्हें बहुत समझाया उलटा मज़ाक करते ﴿انهم اناس يتطهرون﴾ यह बड़े पाक लोग हैं, नतीजा क्या हुआ अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को भेजा फ़रमाते

हैं ﴿فلما جاء امرنا جعلنا عاليها سافلها﴾ ज़मीन के टुकड़े को हज़रत जिबरईल عليه السلام ने उखाड़ा और उखाड़ कर आसमान की बुलन्दियों तक ले गये हत्ता कि उस बस्ती के मुर्गों की अज़ानें पहले आसमान के फ़रिश्तों ने सुनीं और वहां जाकर उलट दिया और उनके ऊपर पत्थर बरसाये ﴿وامطرنا عليها حجارة من سجيل﴾

हज़रत शुऐब عليه السلام

हज़रत शुऐब عليه السلام की क़ौम, ताजिर लोग थे मगर नाप तौल में कमी बेशी करते थे, डंडी मारते थे उनको बहुत समझाया कि नाप तौल में कमी मत करो लेकिन बाज़ नहीं आए कुरआन मजीद में है ﴿واخذت الذين ظلموا الصيحة﴾ उन पर भी एक ज़ोरदार आवाज़ ऐसी आई बिजली की चमक जैसी, उस क़ौम को भी ख़त्म कर दिया।

फ़िरऔन बेऔन

फ़िऔन दुनिया में कितना मुतकब्बिर बादशाह था अपनी क़ौम को कहता था ﴿اليس لى ملك مصروهذه الانهار تجرى من تحتى﴾ देखो यह मुल्के मिस्र, यह मेरा है और इसका निज़ामे आबपाशी कैसा बड़ा मज़े का है नहरें बहती हैं दरिया बहते हैं, मैं बेहतर हूँ मेरी यकताई देखो और यह मूसा عليه السلام जो सहीह तरह बोल भी नहीं सकते। ऐसा तकब्बुर करता था, कहता था ﴿انا ربكم الاعلى﴾ मैं बड़ा परवरदिगार हूँ बस फिर अल्लाह तआला की पकड़ आई फ़रमाते हैं ﴿فاغرقنا آل فرعون وانتم تنظرون﴾ बस जब अज़ाब आ जाता है ना फिर बन्दा पीछे हटना भी चाहे तो नहीं हट सकता कहते हैं जब फ़िरऔन दरिया के किनारे पहुंचा तो उसने देखा कि हज़रत मूसा عليه السلام तो पार उतर गए तो यह घबराया डरा कि मैं नहीं अन्दर जाता तो जब यह ज़रा घबराया तो जिबरईल عليه السلام एक घोड़ी पर सवार होकर आए और उन्होंने अपनी उस घोड़ी को पानी में डाल दिया अब फ़िरऔन के घोड़े ने जब घोड़ी को देखा तो वह उसके पीछे भागा अब उसके बस में नहीं था तो यहां

से मुफ़स्सिरीन ने नतीजा निकाला कि जब अल्लाह तआला का अज़ाब आ जाता है अब बन्दा पीछे भी हटना चाहे परवरदिगार पीछे हटने नहीं देते बच्चू किधर जाता है, तू ने मेरे अज़ाब को दावत दी गुनाहों के ज़रीआ से अब भाग कर कहां जाओगे।

क़ारून

क़ारून को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने माल इतना दिया था कि उसके ख़ज़ानों की कुंजियां कई ऊंटों पर लादी जाती थीं आप में से कोई बड़े से बड़ा बिज़नेसमैन होगा तो उसकी दुकानों की कुंजियां भी जेब में आ जायेंगी अल्लाह की शान इतना अमीर बन्दा कि उसके ख़ज़ानों की कुंजियां ऊंटों पे लादी जाती थीं मगर उसने उसको अल्लाह की नेमत न समझा कहने लगा यह तो मेरे खून पसीना की कमाई है जो मैं ने अपने इल्म से हासिल की अब वह कहता था कि किसी तरह मुझे इसकी ज़कात न देनी पड़े चुनांचे उसने हज़रत मूसा عليه السلام पर इलज़ाम लगाने की कोशिश भी की बस फिर अल्लाह तआला का अज़ाब आया इरशाद फ़रमाया ﴿وفخسفنا به و بداره الارض﴾ अल्लाह तआला ने उसको भी ज़मीन में धंसा दिया और उसके मकान को भी ज़मीन में धंसा दिया धंसता ही चला जा रहा है।

बनी इस्राईल

बनी इस्राईल पर अल्लाह तआला की कितनी नेमते थीं ﴿واذقال موسى لقومه يقوم اذكروانعمة الله عليكم﴾ जब मूसा عليه السلام ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ क़ौम! अल्लाह की नेमतों का तज़किरा करो, याद करो अल्लाह तआला की नेमतों को ﴿اذجعل فيكم انبياء و جعلكم ملوكا و آتاكم مالم يوت احدا من العلمين﴾ अल्लाह तआला ने तुम से अंबिया भी बनाए और तुम में से बादशाह भी बनाए और परवरदिगार ने तुम्हें वह कुछ दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया मगर इतनी नेमतों के बावजूद यह गुनाहों में पड़ गए ख़्वाहिशात के पीछे पड़ गए

नतीजा क्या हुआ कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उन पर अज़ाब भेजा ﴿وضربت عليهم الذلة و المسكنة و باؤوابغضب من الله﴾ ज़िल्लत और मस्कनत अल्लाह तआला ने उन पर फैंक दी और अल्लाह तआला का उन पर ग़ज़ब हो गया ऐसा ज़ालिम बादशाह उन पर मुसल्लत हुआ जिस ने उनको ज़लील और रूसवा कर दिया उनको सर छिपाने की कहीं जगह नहीं मिली।

तो यह सब वाक़ियात बताते हैं कि जिसने भी दुनिया में अपनी मनमानी की अपने रब की नाफ़रमानी की बिल आख़िर उस पर अल्लाह तआला की पकड़ आ गई जल्द या देर किसी को मौक़ा मिल जाता है किसी पर जल्दी पकड़ आती है, आती ज़रूर है, गुनाहों की सज़ा आख़िरत में तो मिलेगी ही दुनिया में भी मिल कर रहती है बकरे की मां कब तक ख़ैर मनाएगी।

क़ुरआन मजीद में तज़किरे

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अज़ाब का तज़किरा किया और वाज़ेह तौर पर कहा कि यह अज़ाब इसलिए कि वह अमल ऐसा करते थे मस्लन लफ़्ज़ (ان) के ज़रीआ अल्लाह तआला ने कुछ बातों का तज़किरा किया ﴿ان تتقوا الله يجعل لكم فرقانا﴾ ऐ ईमान वालो! अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे तो हम तुम्हें फ़ुरक़ान अता करेंगे एक नूर अता करेंगे जो तुम्हारे सीनों को रौशन करेगा, तुम्हें हक़ व बातिल की पहचान नसीब होगी, तो मालूम हुआ कि यह नूर कैसे मिला? ﴿ان تتقوا الله﴾ के ज़रीआ तो देखो नेक अमल का अज्र दुनिया में बन्दे को मिला दूसरी जगह फ़रमाया ﴿ما يفعل الله بعذابكم﴾ अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा? जैसे हम आपस में बातें करते कहते हैं कि तुम्हें अज़ाब दे कर अल्लाह के हाथ क्या आएगा ﴿ان شكرتم و آمنتم﴾ अगर तुम ईमान लाओ और शुक्र अदा करो तो अल्लाह तआला तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा? तो देखो अमल

के ऊपर ईमान और शुक्र के ऊपर फ़रमाया कि हम तुम्हें अज़ाब नहीं देंगे ﴿ان تطيعوه تهتدوا﴾ अगर तुम रसूलﷺ की पैरवी करोगे तो हिदायत पाओगे, तो लफ़्ज़ (ان) के ज़रीआ से भी बताया कि देखो तुम्हारे आमाल का तुम को अज्र मिलेगा।

कहीं (فلما) के ज़रीया बताया चुनांचे फ़रमाया ﴿فلما عتوا عما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين﴾ "जब उन्होंने वही काम नाफ़रमानी के किए जिस से मना कर दिए गए थे हमने उनको कहा बन जाओ फटाकरे हुए बन्दर तो यह बन्दर बनने का हुक्म क्यों दिया? उनकी नाफ़रमानी की वजह से चुनांचे एक जगह फ़रमाया ﴿فلما آسفونا انتقمنا منهم و اغرقناهم اجمعين﴾ " जब उन्होंने हमें मुतअस्सिफ़ किया यानी हमारी बात को पूरा न किया हमें अफ़सोस दिलाया, हमने भी उन से इन्तिक़ाम लिया" तो अब देखो क़ुरआन मजीद से सबूत मिल रहा है कि इंसान अमल ऐसे करता है कि परवरदिगार उसके गुनाहों का उससे इन्तिक़ाम लेते हैं इसलिए एक जगह फ़रमाया ﴿انا من المجرمين منتقمون﴾ हम मुजरिमों से इन्तिक़ाम लेकर रहेंगे।

तीसरा कहीं पर (لو) के ज़रीया से इन बातों का तज़किरा किया ﴿و ان لو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء غدقا﴾ अगर यह इस्तिक़ामत हासिल करते रास्ते पर तो उनको पीने के लिए अच्छा पानी मिल जाता" एक जगह फ़रमाया ﴿ولو انهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم﴾ "अगर उन्होंने किया होता वह काम जो उनको नसीहत की गई थी उनके लिए बेहतर होता" तो इस लफ़्ज़ के ज़रीया से भी इस बात को खोला गया।

चौथा कहीं पर (ذلك) का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया ﴿ذالك بما قدمت ايديكم﴾ यह जो तुम्हें बदला मिला यह इसलिए कि जो तुमने अपने हाथों से जो कुछ आगे भेजा उसका नतीजा था" कहीं पर फ़रमाया ﴿ذالك بانهم كفروا بآياتنا﴾ "यह उनके साथ मामला

इसलिए पेश आया उन्होंने हमारी आयतों का इंकार किया।

पांचवा कहीं पर (ف) का इस्तेमाल हुआ हर्फ़ "ف" होता है ना इसको सबब के तौर पर बताया इसको "ف" सईया कहते हैं चुनांचे फ़रमाया ﴿فان تابوا واقاموا الصلوة و اتوا الزكوة فاخوانكم فى الدين﴾ देखिए अब यह "ف" सबब बन रही है "अगर यह तौबा करें, नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा रकें, तो यह दीन में तुम्हारे भाई हैं, एक जगह फ़रमाया ﴿فعصوا رسول ربهم فاخذهم اخذة الر﴾ एक जगह फ़रमाया ﴿فكذبوا هما فكانوا من المهلكين﴾ और उन्होंने उन दोनों का इंकार किया जिस का नतीजा यह हुआ कि वह सारे के सारे हलाक होने वालों में से हो गए तो इन सब बातों से एक नतीजा सामने आता है कि जो कुछ भी इंसान के ऊपर यह हालात आते हैं यह उसके अपने आमाल का नतीजा होता है जैसे आमाल करेंगे वैसे हालात होंगे, अच्छे आमाल करेंगे तो हालात अच्छे होंगे और बुरे आमाल करोगे तो हालात बुरे होंगे रिवायत में आता है कि फ़रिश्ते बन्दों के आमाल लेकर अल्लाह के हुजूर जाते हैं अल्लाह तआला उन आमाल को देख कर उन जैसे हालात उन बन्दों पर नाज़िल फ़रमा देते हैं।

जब कहा मैं ने कि या अल्लाह तू मेरा हाल देख
हुक्म आया मेरे बन्दे नामए आमाल देख

तो यह हमारे अपने करतूत होते हैं जिसकी हमें सज़ा मिलती है।

अदले का बदला

हदीसे पाक में फ़रमाया गया इब्ने माजा की रिवायत है अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजि. रावी हैं फ़रमाते हैं कि जब पांच चीज़ें तुम में आयेंगी तो पांच चीज़ें होकर रहेंगी यह लाज़िम और मलजूम है।

(1)...... जब उम्मत में बेहयाई और फ़हाशी आएगी तो अल्लाह तआला ऐसी मुहलिक बीमारियां भेज देंगे जिन का नाम भी नहीं सुना होगा, और अब तो इस बात से सब वाक़िफ़ हैं कि बेहयाई और फ़हाशी

का क्या नतीजा निकल रहा है, कहीं चालीस फ़ीसद मुस्बत है कहीं पचास फ़ीसद, शरीअत ने पहले बता दिया था चौदह सौ साल पहले जब ऐसे अमराज़ का किसी साइंसदां को भी नहीं पता था अल्लाह तआला के महबूब ने बताया जब फ़हाशी और बेहयाई आम हो जाएगी ऐसी मुहलिक बीमारियां पैदा होंगी कि जो आलए पैमाइश पर लोगों को मार डालेगी, आज घर तो क्या मुल्क परेशान हैं।

(2)...... एक बात यह फ़रमाई कि जो क़ौम नाप तौल में कमी करेगी अल्लाह तआला उसके ऊपर ज़ालिम हुक्काम को मुसल्लत फ़रमा देंगे।

(3)...... और फ़रमाया जो क़ौम ज़कात को तावान समझेगी बोझ समझेगी अल्लाह तआला उसको क़हत साली अता फ़रमायेंगे।

(4)......और फ़रमाया जो क़ौम अहद शिकनी करेगी, अपने वादे को तोड़ेगी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके ऊपर दुश्मन को नाज़िल फ़रमा देंगे।

(5)......और जो क़ौम क़ानूने खुदा की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करेगी, क़ानूने खुदा के खिलाफ़ हुक्म जारी करेगी अल्लाह तआला उन में ना इत्तेफ़ाक़ी और ख़ाना जंगी की कैफ़ियत पैदा फ़रमा देंगे।

आज हम मुसलमानों के हुक्काम अपनी मन मर्ज़ी के क़ानून बनाते फिरते हैं नतीजा क्या है कि एक की दूसरे से नहीं बनती, एक खुदा एक रसूल एक कुरआन एक काबा, एक दीन, एक का रूख मशरिक़ की तरफ़ है दूसरे का मग़रिब की तरफ़ है।

यूं तो सय्यद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफ़ग़ान भी हो
तुम सभी कुछ हो बाताओ तो मुसलमान भी हो
फ़िर्क़ा बन्दी है कहीं और कहीं ज़ातें हैं
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं।

इसलिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नेमतें देते हैं और जो बन्दा नाक़द्री करता है उनसे वापस ले लेते हैं।

फ़तह के वक़्त सहाबी का रोना

इमाम अहमद" ने रिवायत नक़्ल की कि जब क़बरस फ़तह हुआ तो जुबैर बिन नुज़ैर रजि. ने अबु दरदा रजि. को रोते हुये देखा तो बड़े हैरान हुए अबु दरदा रजि. से कहा कि हज़रत अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह अता फ़रमाई इस शानदार फ़तह के दिन आप रो रहे हैं? वह फ़रमाने लगे कि मैं इबरत की वजह से रो रहा हूँ उस क़ौम को देखो अल्लाह ने दुनिया में कितनी इज़्ज़तें दी थीं और कितने उनको इनआमात दिए थे उन्होंने नाक़द्री की आज अल्लाह ने उनको दुनिया में मग़लूब कर दिया जो परवरदिगार देना जानता है वह परवरदिगार लेना भी जानता है।

एक हदीस में है जब अल्लाह तआला किसी क़ौम से इंतिक़ाम लेना चाहते हैं तो फिर उस क़ौम के बच्चे बकस्रत मरते हैं और उसकी औरतों को अल्लाह तआला बांझ कर दिया करते हैं।

और एक रिवायत में है कि जब अल्लाह तआला किसी क़ौम से नाराज़ होते हैं तो अल्लाह तआला उन पर लानत भेजते हैं और अल्लाह तआला की लानत का असर सात पुशतों तक बाक़ी रहता है, इसलिए गुनाह की सज़ा दुनिया में भी मिलती है आख़िरत में भी मिलती है।

सज़ा के तीन तरीक़े

इरशादे बारी तआला है ﴿من يعمل سوء ايجزبه﴾ "जो भी कोई गुनाह करेगा उसे उसकी सज़ा मिल कर रहेगी"

सज़ा मिलने के तीन तरीक़े हैं, यह तो हो ही नहीं सकता कि एक बन्दा मन मानी करे शरीअत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे और उस पर अज़ाब न आए मगर अज़ाब आने के पकड़ के तीन तरीक़े हैं।

(1)...... पहले को कहते हैं "نكير" तंबीह, कि बन्दे ने गुनाह किया परवरदिगार ने कोई मुसीबत भेज दी तो जब ग़म आता है परेशानी

आती है, मुसीबत आती है तो बन्दा फिर गुनाह करते हुए डरता है, हमें एक साहब मिले कहने लगे जी जब भी मैं अपनी बीवी को नाराज़ करता हूँ, दुख देता हूँ तो मैं महसूस करता हूं कि मुझे कारोबार में कोई न कोई ग़म मिलता है, अब वह बेचारा कारोबार के ग़म से बचने के लिए बीवी को खुश रखता था, हम ने कहा क़िस्मत वाली बीवी है।

एक आदमी झूठ नहीं बोलता था, हालांकि उसकी ज़िन्दगी कोई तक़वा वाली भी नहीं थी बात सच्ची करता था, तो हमने उस से पूछा भई आप में यह सिफ़त कैसे आई, कहने लगा हज़रत सच्ची बात है जब मैं झूठ बोलता हूं कहीं न कहीं कोई बन्दा मुझ से धोका कर जाता है लिहाज़ा मैं सच बोलता हूँ, तो अल्लाह तआला बाज़ लोगों का मामला ऐसा कर देते है नक़द का मामला कोई उल्टा काम करेंगे अगले दिन कोई बुरी ख़बर सुनेंगे तो डर के मारे फिर वह ऐसा उलटा सीधा काम नहीं करते।

एक नौजवान मुझे कहने लगा कि मैं एक ख़ास गुनाह करता था जब गुनाह करता चौबीस घंटे के अन्दर में कोई न कोई ना पसन्दीदा ख़बर ज़रूर सुनता था, कहता है मैं ने ऐसे कई साल आज़माया अब मैं ने अपने रब से सुलह कर ली, सच्ची तौबा कर ली परवरदिगार ने मुझे परेशानियों से नजात अता फ़रमा दी है, इसको नकीर कहते हैं।

और ऐसा क्यों होता है अल्लाह तआला बन्दे पर मेहरबान हैं अगर बन्दा ग़फ़लत करता है अल्लाह तआला उसको जगाने के लिए ऐसी परेशानियां फ़ौरन भेज देते है, याद रखना खुशियां सुलाती हैं और ग़म जगाते हैं।

सुख दुखा तूं दीवां वार दुखा आन मलायम यार

(मैं सुखों को दुखों पर क़ुरबान कर दूं कि दुखों ने मुझे मेरे यार से मिला दिया)

तो जब दुख पड़ते हैं तो रब याद आता है इसको नकीर कहते हैं नक़द का मामला।

(2)...... और कभी कभी सज़ा में "تاخیر" होती है, कि गुनाह तो बन्दा कर लेता है अल्लाह तआला थोड़ा उसको मुहलत दे देते हैं रस्सी ढीली कर देते है। नाराज़गी की वजह से अच्छा भई तुम कर लो जो करना है, फिर हम तुम्हारा बन्दोबस्त करते हैं और यह बड़ा ख़तरनाक होता है जब बन्दा अल्लाह तआला की नाफ़रमानियां कर रहा हो और उस पर अल्लाह तआला की नेमतें बरस रही हों तो वह समझ ले कि मुझे अच्छी तरह बांधा जा रहा है तो कभी कभी जल्दी सज़ा नहीं होती।

चुनांचे जुनैद बग़दादी का एक शागिर्द था उसने बुरी नज़र कहीं डाली नतीजा क्या निकला कि बीस साल के बाद कुरआन मजीद का हिफ़्ज़ भूल गया, कुरआन मजीद के हिफ़्ज़ से महरूम कर दिया गया, बहुत डरने की बात है गुनाह जवानी में किए अल्लाह तआला ने बीवी को बुढ़ापे में ना फ़रमान बना दिया औलाद मां के साथ हो गई, और जब औलाद मां के साथ हो जायें और बीवी ख़ाविन्द की नाफ़रमान बन जाए उस बन्दे की ज़िन्दगी जो ख़राब होती है वह बता नहीं सकता, बुढ़ापे में बीवी का ना मुवाफ़िक़ हो जाना यह बहुत बड़ी सज़ा है।

एक वाक़िया

हमने एक आदमी को देखा अपनी ज़िन्दगी में बड़ा अफ़सर था उसने सारी ज़िन्दगी अपनी बीवी को बहुत दबा कर रखा, बच्चे उसके पढ़ लिख कर बड़े अफ़सर बन गये उन्होंने मां को देखा कि उसने बहुत मज़लूमियत का वक़्त गुज़ारा है वह सारे मां के साथ हो गए अब इधर यह साहब बूढ़े हो गए तो एक दिन बीवी ने कहा कि जनाब घर पर से छुट्टी, बेटों ने भी कह दिया जो अम्मी कह रही हैं वही होगा अब तक आपने जो मर्ज़ी आई वह किया, अब अम्मी की मरज़ी चलेगी, घर से उसको निकाल दिया गया, कुछ दिन वह मस्जिद में रहा न कोई उसका खाना पकाने वाला न कोई उसको पास बिठाने वाला

इतना उसका बुढ़ापा ख़राब होते हम ने अपनी आंखों से देखा हम कांपा करते थे उसे देख कर, धक्के खाता था रोता था बैठ बैठ कर, गुनाह जवानी में किए अल्लाह तआला ने उसकी सज़ा बुढ़ापे में दी।

इसी तरह बे परदगी औरत ने जवानी में की, हालात ऐसे बने बुढ़ापे में तलाक़ हो गई अब जिस औरत को बुढ़ापे में तलाक़ हो उस औरत की इस से ज़्यादा ज़िन्दगी और क्या ख़राब हो सकती है अब न बाप ज़िन्दा न मां ज़िन्दा न कोई भाई ज़िन्दा न बहन ज़िन्दा कोई अपना नहीं हम ने एक औरत को देखा ऐसे वक़्त में उसको तलाक़ हुई कि अब दुनिया में उसका अपना कोई नहीं अब औरत कहां जाए, है भी बूढ़ी धक्के खाती थी, बेचारी रोती थी बैठ बैठ कर तो कभी तो सज़ा नक़द तो कभी सज़ा ताख़ीर से दे दी जाती है।

(3)...... और एक इस से भी ज़्यादा मुहलिक सज़ा है उसको कहते हैं "خفیہ تدبیر" कि अल्लाह तआला ऐसी तरह से सज़ा देते हैं कि बन्दे को पता भी नहीं चलता कि सज़ा मिल रही है या नहीं, ऐसी खुफ़िया, यह सबसे ख़तरनाक चीज़ होती है मस्लन ज़ाहिर में यह अपनी मन मानियां कर रहा है, गुनाह कर रहा है, ख़िलाफ़े शरीयत काम कर रहा है और अल्लाह तआला नेमतें और ज़्यादा कर देते हैं, कारोबार भी बढ़ रहा है और वाह वाह भी हो रही है इज़्ज़तें भी मिल रही हैं तो यह अल्लाह तआला की ख़ुफ़िया तदबीर होती है सुनिए कुरआन अज़ीमुश्शान, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं ﴿فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم ابواب كل شيئ حتى اذا فرحوا بما اوتوا اخذناهم بغتة﴾ "जब वह क़ौम के लोग भूल गये जो हम ने उनको नसीहत की थी हम ने हर नेमत के दरवाज़े उन पर खोल दिये, हत्ता कि जब बड़े खुश हो गए कि हमें यह सब कुछ मिल गया हम ने अचानक उन लोगों को पकड़ लिया" यह जो अल्लाह की अचानक पकड़ होती है ना यह बड़ी दर्दनाक होती है अल्लाह तआला अपनी पकड़ से बचाए ﴿ومن يهن الله فماله من مكرم﴾ जिसे अल्लाह

ज़लील करने पर आता है उसे इज़्ज़तें देने वाला कोई नहीं मिलता।

सबक़ आमोज़ क़िस्सा

हमारे एक दोस्त थे अपनी बेटी का वाक़िया वह सुनाया करते थे अल्लाह ने उनको बेटी दी जो चांद जैसी खूबसूरत थी, ज़हीन इतनी कि मेडिकल डाक्टर बन गई, सैंकड़ों रिश्ते उसके आए देखने में हूर परी थी और एम.बी.बी.एस. ऊपर से बन गई, बड़े बड़े रिश्ते आए मगर उसमें तकब्बुर था जो आता हिक़ारत से ठुकरा देती उसकी कहीं नज़र जमती ही नहीं थीं नेक रिश्ते भी आए माल वाले रिश्ते भी आए, ज़रा मां बाप ने रिशते की बात की वह उस में दस ऐब निकालती कि यह भी कोई रिश्ता है, आ जाते हैं टके टके के लोग, हमेशा तकब्बुर की बात करती, मां बाप उसे समझाते बेटी नेमत की नाक़द्री न करो इतने रिश्ते हैं जहां तुम्हारा दिल मुतमईन होता है, बताओ हम तुम्हारा रिश्ता कर देंगे, उसे कोई पसन्द ही न आया खूबसूरत से खूबसूरत नौजवान, नेक से नेक नौजवान बड़ी इज़्ज़त वाली फ़ैमली के नौजवान, हर एक को वह हिक़ारत से ठुकरा देती वह खुद कहते थे मेरी बेटी पर अल्लाह की पकड़ आ गई, अल्लाह की पकड़ कैसी आई कि एक मर्तबा उसने कोई ऑपरेशन किया तो उस आपरेशन थेटर में पता नहीं क्या हुआ कि उसके हाथ की उंगलियों की जिल्द मुर्दा होनी शुरू हो गई, एक दो महीना के अन्दर यह दोनों हाथ की जिल्द बिल्कुल मुर्दा होकर बूढ़ों जैसी हो गई अब ऐसी हूर परी लेकिन हाथ देखो तो बूढ़ों वाले हर वक़्त हाथ छिपाये रखती थी दसताने पहने रखती थी, अब रिश्ते भी आने बन्द हो गये, जो औरत आती उसे देखती उसके हाथ देखती कहती मुझे अपने बेटे के लिए यह नहीं लेना, इन्तिज़ार करते करते उम्र बत्तीस साल हो गई अब उसको पता चला कि अब मेरा रिश्ता कोई नहीं ला रहा अब वह चाहती कि अब मेरा कहीं रिश्ता हो जाए और रिश्ता करने के लिए कोई तय्यार नहीं होता, जितना तकब्बुर करती थी

अल्लाह ने उतनी ही नाक रगड़वाई, अब नमाज़ें पढ़ती है अब सज्दे करती है अब रोती है अब दुआयें मांगती है अब उसका रिश्ता करने वाला कोई नहीं उसके वालिद कोई अमल पूछने आए और आकर उन्होंने यह खुद तफ़सील बताई कहने लगे इतनी परेशान है कहती है कि दुनिया में अल्लाह ने मेरी ज़िन्दगी को जहन्नम बना दिया, अल्लाह तआला ने हुस्न व जमाल दिया था दिमाग़ ख़राब हो गया, जब अल्लाह तआला नेमत दे तो इंसान नेमत की क़दर करे, झुके अल्लाह के सामने, देखिए अल्लाह तआला ने उसके साथ क्या मामला किया, तो कई मर्तबा सज़ा ऐसे मिलती है कि बन्दे को पता भी नहीं चलता।

बनी इस्राईल के एक आलिम का वाक़िया

चुनांचे बनी इस्राईल का एक आलिम मगर किसी गुनाह में मुलव्विस हो गया अब इल्म तो था उसे पता था कि गुनाह की क्या सज़ा मिलती है, गुनाह भी करता था ऊपर से डरता भी था कि कुछ न कुछ मेरे साथ होना ज़रूर है, कुछ अरसा गुज़र गया तो एक दिन उस ने तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी और तहज्जुद के बाद दुआ मांगने लगा, अल्लाह तू कितना करीम और कितना मेहरबान है कि मैं तो तेरी नाफ़रमानी कर रहा हूँ और तू ने मुझ पर अपनी नेमतें सलामत रखी हैं, जब उसने यह बात कही अल्लाह तआला ने उसके दिल में इलक़ा फ़रमाया मेरे बन्दे नेमतें सलामत नहीं तू महरूम है तुझे महरूमी का पता नहीं चल रहा तो वह हैरान हुआ ऐ अल्लाह मैं किस नेमत से हमरूम हूं अल्लाह तआला ने दिल में बात डाली कि तू सोच जिस दिन तू ने पहली मर्तबा यह कबीरा गुनाह का इरतेकाब किया था उस दिन से हम ने रात के आख़िरी पहर की मुनाजात की लज़्ज़त से तुझे महरूम कर दिया, तब उसको एहसास हुआ कि वाक़ई जब से गुनाह करना शुरू किया मुझे आख़िरी पहर का रोना कभी नसीब नहीं हुआ, हम इसको सज़ा ही नहीं समझते हम सोचें क्या पता हम तहज्जुद से

इसी लिए महरूम होते हों तकबीर औला से महरूम होते हों, ईमाने हक़ीक़ी की हलावत से महरूम होते हों हम इसे सज़ा ही नहीं समझते तो इसको कहते हैं अल्लाह तआला की खुफ़िया तदबीर ﴿فلا يامن مكر الله الا القوم الكافرون﴾

तीन अहम बातें

तीन बातें बहुत अहम हैं ज़रा तवज्जोह फ़रमाइयेगा

(1)...... कुरआन करीम में फ़रमा दिया गया ﴿انما بغيكم على انفسكم﴾ "तुम्हारी बग़ावतें तुम्हारी अपनी जानों पर" यानी तुम जितने गुनाह करोगे बग़ावत करोगे उसका असर तुम पर लौट कर रहेगा, क्या मतलब? हम अल्लाह तआला की अगर नाफ़रमानी करेंगे अल्लाह तआला मख़लूक़ को हमारा नाफ़रमान बना देंगे और यह आम दसतूर है कहते हैं, हज़रत दुआ करें मेरे बच्चे तो अफ़लातून बन गये, सुनते ही नहीं किसी की, भाई जैसे तुम रब की नहीं सुनते वैसे बच्चे तुम्हारी नहीं सुनते, फ़ुज़ैल बिन अय्याज़ फ़रमाते थे मैं ने जब भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की मैं ने उसका असर फ़ौरन या अपनी बीवी में देखा या अपने ग़ुलाम में देखा या सवारी के जानवर में देखा जो मेरे मातेहत थे उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की, तो हम अगर चाहते हैं कि मख़लूक़ हमारी फ़रमाबरदार बने तो हमें चाहिए कि हम अपने रब के फ़रमांबरदार बनें।

(2)...... दूसरी बात ﴿ولا يحيق المكر السيء الا باهله﴾ अगर कोई आदमी किसी के ख़िलाफ़ तदबीर करेगा तो वह तदबीर उसके अहल पर लौटेगी, किसी का बुरा सोचेंगे आप के अपने अह्ले ख़ाना के साथ बुरा होगा, यह अल्लाह का बनाया हुआ क़ानून है और इसको आज़माया है लोगों ने, मिसाल के तौर पर ज़िना एक ऐसा गुनाह है कि जो बन्दा मुरतकिब होता है और तौबा नहीं करता तो उसके अहले ख़ाना में से कोई न कोई इसका मुरतकिब होता है, इसको क़िसास कहते हैं यह

क़िसास कोई न कोई देता है।

सुनार का वाक़िया

मशहूर वाक़्या है इब्ने जौज़ी ने यह लिखा है फ़रमाते हैं कि एक सुनार था उके घर एक नौजवान अठारा बीस साल से पानी भरा करता था एक दिन जब वह पानी देने के लिए आया और उसकी बीवी ने दरवाज़ा खोला तो उसने पानी तो भरा मगर उसकी बीवी का हाथ पकड़क कर शहवत से दबाया, जब दोपहर के वक़्त वह घर आया उस ने देखा कि बीवी रो रही है पूछा क्या हुआ? कहने लगी यह सतरह अठ्ठारा साल से काम कर रहा था इतना हमें इस पर ऐतमाद था, यह ऐसा बद बख़्त निकला कि आज उसने मेरा बाज़ू पकड़ कर शहवत के साथ दबाया तो उस सुनार की आंखों से आंसू आ गये बीवी ने पूछा आप क्यों रो रहे हैं? वह कहने लगा कि यह उस का क़ुसूर नहीं यह मेरा क़ुसूर है आज मेरे पास एक औरत ज़ेवर खरीदने आई थी उसने चूड़ियां ख़रीदीं कहने लगी मुझे ज़रा पहना दो, मदद करो, मुझे उसके हाथ खूबसूरत लगे पसन्द आए मैं ने उसके हाथों को शहवत से दबाया, उसके नतीजा में मेरी बीवी के हाथों को शहवत से दबाया गया, फिर वह कहने लगा आज मैं सच्ची तौबा करता हूँ और वादा करता हूं कि आज के बाद ऐसी कोताही नहीं करूंगा यह कह कर वह चला गया थोड़ी देर के बाद वही पानी भरने वाला आया दरवाज़ा खटखटाया बीवी ने पूछा कौन हो कहने लगा पानी भरने वाला माज़रत करने आया हूँ मुझे माफ़ कर दें मैं आज के बाद ऐसा कभी नहीं करूंगा, इब्ने जौज़ी यह भी लिखते हैं कि एक आलिम ने यह बात किसी बादशाह को सुनाई बादशाह नेकोकार था अच्छा था वह कहने लगा इसमें क़िसास का मामला है? कहा जी हां शरीअत यह एक क़ानूने खुदावन्दी है, ग़ैबी क़ानून है वह इसी तरह चलता है बादशाह ने कहा मैं आज़माता हूं उसकी अपनी बेटी थी जवानुल उम्र थी उसने अपनी बेटी से कहा कि

बेटी जाओ ज़रा बाज़ार का चक्कर लगा कर आओ और उसके साथ एक और औरत को पीछे पीछे भेज दिया कि बच्ची अकेली न हो कोई न कोई पीछे ज़रूर हो, अब वह लड़की बाज़ार में से गुज़री, नौजवान थी, खूबसूरत थी वक़्त की शहज़ादी थी मगर जो बन्दा उसकी तरफ़ आंख उठाता वह चेहरा हटा लेता, किसी ने उसको आंख भर कर भी नहीं देखा, वह लड़की चलती चलती अपने घर वापस आई जब अपने घर दाख़िल हुई महल के अन्दर से गुज़र रही थी एक कमरे में कोई मर्द था जो महल में काम करता था, उसने उसको देखा तो उसने तंहाई जान कर उस लड़की के क़रीब आकर गले से लगाया और उसका बोसा लेकर भाग गया, लड़की ने आकर यह बात सारी बाप को बता दी उस औरत ने भी बता दी बादशाह सर पकड़ कर बैठ गया, कहने लगा मैं ने सारी ज़िन्दगी गैर महरम से अपनी आंख को बचाया मेरी बेटी के साथ वही मामला पेश आया, मगर एक मरतबा मैं ने भी शहवत में एक औरत को गले लगा कर बोसा लिया था, जितना मैं ने क़िया किसी ने मेरी बेटी के साथ उतना ही किया, तो नौजवान क्या समझते हैं हम अगर दूसरों की इज़्ज़तों पर ग़लत नज़रें उठायेंगे तो क्या कोई हमारी इज़्ज़त पर ग़लत नज़र नहीं उठाएगा? कोई बीवी पर उठाएगा कोई बेटी पर उठाएगा कोई बहू पर उठाएगा, घर में से कोई न कोई उसकी सज़ा भुगतेगा, और इसकी दलील हदीस पाक से मिलती है एक सहाबी नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए अर्ज़ करने लगे ऐ अल्लाह के नबी मुझे अपनी बीवी की तरफ़ से इतमीनान नहीं है कि उस का किरदार अच्छा है या नहीं, नबी ﷺ ने फ़रमाया तुम दूसरों की बीवियों के साथ परहेज़गारी का मामला करो दूसरे तुम्हारी बीवी के साथ परहेज़गारी का मामला करेंगे, हम अगर चाहते हैं कि हमारे घर की औरतें पाकदामन रहें पाकीज़ा रहें तो हमें चाहिए कि हम भी अपनी निगाहों को पाकीज़ा रखें अपने सीनों को पाक रखें, जो गुनाह कर चुके कर चुके, अगर आज सच्ची माफ़ी मंग लेंगे तो रब्बे करीम आइन्दा

हमारे घरों में भी हया और पाकदामनी के माहौल को पैदा फ़रमा देंगे और यह ज़रूरी नहीं होता कि बन्दा तौबा न करे और कहे कि जी नहीं मेरे यहां तो कुछ भी नहीं नाक के नीचे दिया जलता है न ख़ाविन्द को पता चलता है न किसी और को अल्लाह का क़ानून सच्चा है इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने आप को ऐसे गुनाहों से बचायें।

जैसी करनी वैसी भरनी न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख़ भी है न माने तो मर के देख

जो गुनाह हम कर चुके उसकी हम सच्ची माफ़ी मांगे इसलिए कि जब इंसान अपनी कोताही की माफ़ी मांगता है परवरदिगार बड़े करीम हैं जल्दी माफ़ फ़रमा देते हैं सय्यदना नूह عليه السلام ने कहा था ﴿وان لا تغفرلى وترحمنى كن من الخاسرين﴾ हज़रत यूनुस عليه السلام ने फ़रमाया ﴿لااله الا انت سبحانك انى كنت من الظالمين﴾ हमें भी चाहिए कि हम भी उन पाकीज़ा हस्तियों की इत्तिबा करते हुए अपनी ज़िन्दगी की हर छोटी बड़ी ग़लतियों से माफ़ी मांगे रब्बे करीम मेहरबान हैं और फ़िर रमज़ानुल मुबारक की आज तेईस रात है तेईसवी की रात ताक़ रातों में से है, क्या मालूम कि आज ही शबे क़दर हो तो यह चन्द रातें ही तो हैं इक्कीस, तेईस, पच्चीस, सत्ताईस, उनतीस अल्लाह तआला हमें इन रातों की क़द्रदानी नसीब फ़रमाए और हम आज अपने रब से उन तमाम गुनाहों की सच्ची पक्की मांफी मांग लें ऐसा न हो कि परवरदिगार की पकड़ आए उसकी पकड़ आने से पहले पहले हम अपने परवरदिगार से माफ़ी मांग लें और मेरे दोस्तों हम पकड़ के क़ाबिल नहीं हैं हम आज़माइशों के क़ाबिल नहीं हैं हम किस खेत की गाजर मूली हैं क्या औक़ात है हमारी उसकी पकड़ आती है बड़ों बड़ों को ठगनी का नाच नचा दिया करते हैं, आदमी की घर बैठे बिठाए इज़्ज़त ख़त्म हो जाती है सर से पगड़ियां उछल जाती हैं, दुपट्टे उतर जाते हैं, आदमी किसी को चेहरा दिखाने के क़ाबिल नहीं रहता, इसलिए अल्लाह तआला की पकड़ से हमेशा डरना चाहिए, माफ़ियां

मांगनी चाहिए और उस परवरदिगार से उम्मीद रखनी चाहिए कि वह हम पर मेहरबानी फ़रमायें हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमायें।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العلمين

मुनाजात

हवा व हिर्स वाला दिल बदल दे	मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे
बदल दे दिल की दुनीया दिल बदल दे	खुदाया फ़ज़्ल फ़रमा दिल बदल दे
गुनहगारी में कब तक उम्र काटूं	बदल दे मेरा रास्ता दिल बदल दे
सुनूं मैं नाम तेरा धड़कनों में	मज़ा आ जाए मौला दिल बदल दे
करूं कुरबान अपनी सारी खुशियां	तू अपना ग़म अता कर दिल बदल दे
हटा लूं आंख अपनी मा सिवा से	जियूं मैं तेरी ख़ातिर दिल बदल दे
सहल फ़रमा मुसलसल याद अपनी	खुदाया रहम फ़रमा दिल बदल दे
पड़ा हूं तेरे दर पर दिल शिकस्ता	रहूं क्यों दिल शिकस्ता दिल बदल दे
तेरा हो जाऊं इतनी आरज़ू है	बस इतनी है तमन्ना दिल बदल दे
मेरी फ़रियाद सुन ले मेरे मौला	बना ले अपना बन्दा दिल बदल दे

हवा व हिर्स वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे

﴿من یعمل سوء یجزبه﴾

गुनाहों के दुनिया में नुक़्सानात

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ जुल फ़क़ार अहमद दामत बरकातहुम (नक़्शबन्दी मुजद्दिदी)

दर हालत ऐतकाफ़ मस्जिद नूर लोसाका ज़ामबिया

﴿बाद नमाज़े ईशा 2003 ई०﴾

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

गुनाह के अपने असरात होते हैं चाहे जितना कामियाबी से गुनाह करे कोई उसे पूछने वाला नहीं कोई उसको समझाने वाला दुनिया में नहीं गुनाह उसके इख़्तियार में है तो भी उसकी सज़ा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसे देंगे आख़िर यह बड़े बड़े मालदार पैसों वाले जो अपनी मन मर्ज़ी का खाते हैं, मन मर्ज़ी के घरों में सोते हैं उनको क्या मुसीबत होती है कि उनको नींद की गोलियां खानी पड़ती हैं, अगर अपनी ख़्वाहिशात पूरी करने पर इंसान को खुशी होती, सुकूने क़ल्ब होता, तो यह लोग दुनिया के बड़े खुश नसीब लोग होते।

हज़रत पीर जुल फ़क़ार अहमद साहब
नक़्शबन्दी मद्दा जिल्लहु

بسم الله الرحمن الرحيم
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد .....!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
﴿مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءً يُّجْزَ بِهٖ﴾
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّم
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّم

गुनाह के अपने असरात होते हैं चाहे जितना कामियाबी से गुनाह करे कोई उसे पूछने वाला नहीं कोई उसको समझाने वाला दुनिया में नहीं गुनाह उसके इख़्तियार में है तो भी उसकी सज़ा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसे देंगे आख़िर यह बड़े बड़े मालदार पैसों वाले जो अपनी मन मर्जी का खाते हैं, मन मर्ज़ी के घरों में सोते हैं इनको क्या मुसीबत होती है कि इनको नींद की गोलियां खानी पड़ती हैं अगर अपनी ख़्वाहिशात पूरी करने पर इंसान को खुशी होती, सुकूने क़ल्ब होता, तो यह लोग दुनिया के बड़े खुश नसीब लोग होते, जबकि ऐसा नहीं है परेशान हाल होते हैं, डिपरेशन का शिकार होते हैं, तो गुनाह के अपने असरात हैं जो गुनाह करेगा असरात को रोक नहीं सकेगा, यह दोनों लाज़िम व मलज़ूम हैं।

गुनाह के असरात

जहां गुनाह होगा वहां उसका बद असर ज़रूर होगा ताहम कुछ असरात ऐसे हैं जो वाज़ेह नज़र आते हैं अब उनकी एक तफ़सील है हज़रत अक़दस थानवी ने जज़ाउल आमाल जो छोटा सा किताबचा है इसमें उसकी बड़ी तफ़सील दी है उसी को मद्दे नज़र रखते हुए हम

उन असरात को एक एक करके देखते जायेंगे

इल्म नाफ़ेअ से महरूमी

☆...... गुनाह का एक असर तो यह होता है कि आदमी इल्म नाफ़ेअ से महरूम हो जाता है, एक होता है इल्म और एक होता है मालूमात, इन दोनों में फ़र्क़ होता है, मालूमात तो हर बन्दे को होती हैं, चाहे मोमिन हो चाहे काफ़िर हो हमें कितने पादरी ऐसे मिले जो दीने इस्लाम की इतनी मालूमात जानते हैं कि इंसान हैरान हो जाता है ऐसे पादरी भी मिले जो अरबी में गुफ़तगू करते थे आप कुरआन की आयत पढ़ें वह कुरआन पाक का तर्जमा आप को बतायेंगे उन के पास जो है वह इल्म नहीं मालूमात हैं।

पिकथाल ने जब कुरआन मजीद का तर्जमा अंग्रेज़ी में किया तो वह उस वक़्त तक काफ़िर था तो एक काफ़िर ने ज़बान दानी के ज़ोर पर कुरआन का तर्जमा किया ना यह तो ऐजाज़े कुरआन था कि अल्लाह ने बाद में उसको हिदायत अता फ़रमा दी तो मालूमात तो काफ़िर के पास भी हो सकती हैं, फिर आख़िर फ़र्क़ क्या है मालूमात में और इल्म में। हज़रत मुफ़ती मुहम्मद शफ़ीअ ने एक मरतबा तलबा से पूछा कि बताओ इल्म किसे कहते हैं? किसी ने कहा जानना किसी ने कहा पहचानना हज़रत ख़ामोश रहे कुछ मुख़तलिफ़ जवाब देने के बाद बच्चे चुप हुए तो एक ने कहा हज़रत आप ही बता दीजिए तो उन्होंने फ़रमाया इल्म वह नूर है जिस के हासिल होने के बाद उस पर अमल किए बग़ैर चैन नहीं आता, अगर ऐसा है तो इल्म है वरना मालूमात है तो इसको इल्मे नाफ़े कहते हैं नफ़ा देने वाला इल्म और अगर ऐसा नहीं तो ﴿كمثل الحمار يحمل اسفارا﴾ गधा है जिस के उपर बोझ लदा हुआ है, बनी इसराईल के जो बे अमल उलमा थे उनको गधे से तशबीह दी गई तो इल्म और चीज़ है और मालूमात और चीज़ है, इसी लिए जब मालूमात होती है तो इल्म के बावजूद बन्दा गुमराह हो जाता है देखने में इल्म

होता है उसके पास मगर वह नाम का इल्म है हक़ीक़त में मालूमात होती है, अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फ़रमाते हैं ﴿افرأيت من اتخذالهه هواه و اضله الله على علم﴾ "क्या देखा आप ने उसे जिस ने अपनी ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लिया अल्लाह तआला ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया" तो यह असल में मालूमात थीं यह इल्मे नाफ़ेअ नहीं था अगर होता तो उसे नफ़ा देता इल्म के बावजूद गुमराह हो गया यह क्या बात है।

एक मिसाल

इल्म के बावजूद गुमराह होना इसकी मिसाल समझ लें कि सिगरेट इंसान की सेहत के लिए मुज़िर है, कई मरतबा सिगरेट पीने वाला छोटे बच्चों को नसीहत भी करता है भई हम ने तो ज़िन्दगी बर्बाद कर ली बच्चो तुम इस बुरी आदत में न पड़ना, इसका मतलब है वह जानता है और सिगरेट बनाने वाली कम्पनी ऊपर लिख भी देती है "सिगरेट नोशी मुज़िर सेहत है" अब पीने वाला भी जानता है बनाने वाले भी उसको बता रहे हैं, लेकिन उस बन्दे के दिल में ऐसी तलब पैदा होती है वह फिर घुटने टेक देता है और सिगरेट पीनी शुरू कर देता है, इसको कहते हैं इल्म के बावजूद गुमराह होना वह बन्दा जानता है मैं कर क्या रहा हूं, नफ़्स के हाथों मजबूर होता है ﴿وجعل على قلبه و سمعه و جعل على بصره غشاوة و ختم على قلبه و سمعه فمن يهده من بعد الله افلا تذكرون﴾ उसके दिल पर उसके कानों पर मुहर लगा देते हैं, उसकी आंखों पर पट्टी बांध देते हैं, तो इस लिए इल्म नाफ़ेअ हमेशा मांगना चाहिए, नफ़ा देने वाला इल्म, तो गुनाहों की वजह से इंसान इल्म नाफ़ेअ से महरूम हो जाता है, सिर्फ़ मालूमात रह जाती है, शैतान का धोका होता है तालिब इल्म कहता है, जी मैं इकट्ठा पढ़ लूं फिर इकट्ठा अमल करूंगा, जवाब पढ़ कर दिल नहीं कर पा रहा, जब पढ़े हुए मुद्दत गुज़र जाएगी, फिर अमल कहां कर पाएगा, शैतान का

धोका है तो गुनाहों की ज़ुलमत इंसान को इल्मे नाफ़ेअ से महरूम कर देती है।

मासियत से हाफ़िज़ा में कमी

इमाम शाफ़ई ने अपने उस्ताज़ ईमाम वकीय से पूछा कि भूल जाता हूं उन्होंने कहा कि भई गुनाह न किया करो तो इमाम शाफ़ई की तबीयत में कुछ शाइराना मिज़ाज भी था उन्होंने इसको शेअर में ढाल दिया।

شکوت الی وکیع سو حفظی
فاوصانی الی ترک المعاصی
فان العلم نورم من الـه
ونور اللـه لا یعطی لعاص

"मैं ने इमाम वकीय से अपने हाफ़िज़ा की कोताही की शिकायत की उन्होंने वसीयत की कि तुम गुनाह न करना इसलिए कि इल्म अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नूर है और अल्लाह तआला का यह नूर गुनहगारों के दिल में अता नहीं किया जाता, तो ज़ुलमत और अंधेरा एक जगह तो नहीं रहते ना, इल्म नूर है गुनाह अंधेरा है, नतीजा क्या होगा? एक जगह बदमाश और शरीफ़ इकट्ठे हों तो फिर शरीफ़ ही जगह छोड़ कर चला जाता है, तो जब दिल में ज़ुलमत होगी गुनाहों की तो फिर इल्म रूख़सत हो जाएगा।

इमाम मालिक ने एक मरतबा इमाम शाफ़ई को नसीहत फ़रमाई (انی اری اللـه تعالی قد القی علی قلبك نور افلا تطفئه بظلمة المعاصی) "मैं देखता हूं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐ नौजवान तुम्हारे दिल में एक नूर को इलक़ा फ़रमा दिया है और तुम गुनाहों की ज़ुलमत से उसे बुझा न देना" तो इल्म की हैसियत अगर चिराग़ की सी है तो गुनाह की हैसियत हवा के थपेड़ों की सी है, अगर हवा के थपेड़े लगते रहेंगे तो कब तक चिराग़ जलेगा, बिल आख़िर बुझ जाएगा

तो इल्म नाफ़ेअ से इंसान महरूम हो जाता है, इसलिए तलबा शिकायत करते हैं, कि हज़रत याद नहीं होता कई कहते हैं जी याद हो जाता है भूल जल्दी जाते हैं, याद रखना "जहां इसयान होगा वहां निसयान होगा" क्यों नहीं आज हाफ़िज़ुल हदीस बनते, एक वक़्त था कि लाखों हदीसें एक एक बन्दे को याद हो जाती थीं, आज तो सैकड़ों भी नहीं हैं, हज़ारों की बात तो दूर की है, ऐसा कुव्वते हाफ़िज़ा था कि तलबा सुनते चले जाते थे, उन्हें याद होता चला जाता था, आज गुनाहों की ज़ुलमत की वजह से याद करते हैं और फिर भूल जाते हैं उसताद के दर्स में बैठते हैं बस हर हर्फ़ से, हर लफ़्ज़ से सलाम करते चले जाते हैं हर लफ़्ज़ के साथ सलाम रूख़सत, इल्म रूख़सत हो जाता है।

रिज़्क़ में तंगी

☆...... एक गुनाह का असर यह कि इंसान के रिज़्क़े हलाल में तंगी कर दी जाती है, हराम तो बड़ा खुला होता है, हलाल में तंगी ﴿ومن اعرض عن ذكرى فان له معيشة ضنكا﴾ "जो हमारी याद से कुरआन से ऐराज़ करे हम उसकी मईशत को तंग कर देते हैं" मईशत को तंग करने का क्या मतलब कि देखने में कारोबार भी लाखों में है और क़र्ज़ा भी लाखों से ऊपर है, परेशान है बैंक का लोन कहां से दूं फ़लां का लोन कहां से दूं, बन्दों को लोन कहां से दूं, केरेडिट कार्डों का लोन कहां से दूं, देखने में बड़ा स्टैटस होता है और जितना बड़ा स्टैटस होता है दिल के अन्दर उतना गहरा ज़ख़्म होता है दुख अपना बता भी नहीं सकता किसी को, रिज़्क़ को तंग कर देते हैं, ग़रीब आदमी सुकून की नींद सोता होगा यह अमीर आदमी रात को चैन की नींद नहीं सो सकता, कहते हैं जी गोलियां खाए बग़ैर नींद नहीं आती इसीलिए यूरोपी ममालिक में मशहूर है कि हर आदमी महीना के पहले अठ्ठारा दिन तो बिलों के लिए काम करता है हर महीना के पहले अठठारा दिन उसको बिल देने हैं फिर जाकर जो बाक़ी दिन होंगे उस

में वह कमाता है जो खाता है और अपने ऊपर लगाता है।

(1)......वाक़िया

एक सहाबी क़ज़ाए हाजत के लिए बाहर गए तो क़रीब ही एक सूराख़ था उसे उर्दू में बिल कहते हैं, जिसमें हशरातुल अर्ज़ रहते हैं कहते है कि बिल में मैं घुस गया, तो क्या देखते हैं कि एक चूहा आया और उसने एक अशरफ़ी निकाली और फिर अन्दर चला गया फिर थोड़ी देर के बाद अशरफ़ी निकाली फिर चला गया, जितनी देर यह अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुए उसने कोई सतरह के क़रीब अशरफ़ियां निकाल कर बाहर डालीं और अन्दर चला गया, उन्होंने अशरफ़ियां उठाईं और लेकर नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए सहाबा किराम की बड़ी खूबसूरत आदत थी कि जो भी नई चीज़ पेश आती तो नबी ﷺ की ख़िदम में पेश करते थे और पूछते थे अब हमारे लिए हुक्म क्या है? तो उन्होंने नबी ﷺ की ख़िदमत में गुज़ारिश की कि यह वाक़िया पेश आया मैं ने पैसे उठाए आप की ख़िदमत में पेश हैं अल्लाह तआला के महबूब ने फ़रमाया कि यह तो रिज़्क़ है जिसका अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इन्तिज़ाम फ़रमा दिया, तो सहाबा किराम की ज़िन्दगियां ऐसी थीं कि उनको बिलों से रिज़्क़ मिलता था और हमारी ज़िन्दगी ऐसी है सारे महीना की कमाई बिलों में चली जाती है, यह बिजली का बिल, गैस का बिल, यह टेलीफ़ोन का बिल, यह इन्शयुरेन्स का बिल, बिल ही जान नहीं छोड़ते तौबा तौबा, तो रिज़्क़ में तंगी का क्या मतलब, रिज़्के हलाल में तंगी आ जाती है, कहते हैं जी हज़रत क्या करें एक वक़्त था मिट्टी को हाथ लगाते थे सोना बन जाती थी, किसी ने कुछ कर दिया है, सोने को हाथ लगाते हैं मिट्टी बन जाता है, भई किसी ने नहीं किया आप के अपने नफ़्स ने किया है, यह गुनाहों का वबाल होता है, चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़ुरआन मजीन में एक मिसाल देते हैं फ़रमाते हैं ﴿وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة

يأتيها رزقها رغدا من كل مكان فكفرت بانعم الله فاذاقها الله لباس الجوع و الخوف بما كانو ايصنعون﴾ "और एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है उन बस्ती वालों के पास अमन भी था इतमिनान भी था, (देखो हुस्ने कुरआन, एजाज़े कुरआन दो लफ़्ज़ इस्तेमाल किए उनके पास अमन भी था इतमीनान भी था। अमन कहते हैं कि बाहर के दुश्मन का डर न हो और इतमीनान कहते हैं अन्दर का भी कोई रोग न हो, न उनको कोई अन्दर का रोग था न कोई बाहर का ख़ौफ़ और डर था, ऐसी मज़े की ज़िन्दगी चारों तरफ़ से उन पर रिज़्क़ की बारिश होती थी) उन्होंने अल्लाह की नेमतों की नाक़द्री की नाशुक्री की (नतीजा क्या निकला) अल्लाह ने उनको भूक और नंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया, काम जो ऐसे करते थे, यहां भी एजाज़े कुरआन देखिए यह भी तो कह सकते थे कि उनको भूख आई ख़ौफ़ आ गया, नहीं उसका लिबास पहना दिया इसकी वजह क्या? कि जब खाने को नहीं मिलता तो सारा बदन फिर पीला पड़ता है अनीमा होता है खाने को जो कुछ न मिला तो वह लिबास की मानिन्द जो पूरे जिस्म को अपनी लपेट में ले लेता है, इसी तरह जब ख़ौफ़ हो तो यकदम बन्दा का रंग पीला पड़ जाता है कुरआन मजीद का एजाज़ देखो लफ़्ज़ क़ैसा इस्तेमाल किया कि वाक़ई उसका असर जिस्म के एक हिस्सा पर नहीं सर से लेकर पावं तक इंसान को महसूस होता है, यह क्या होता है? यह गुनाहों का वबाल होता है, चुनांचे हदीस पाक में आता है (ان الرجل ليحرم الرزق بذنب يصيبه) बेशक बन्दा उस रिज़्क़ से गुनाहों के सबब महरूम कर दिया जाता है जो उसको मिलने वाला होता है।

(2)...... वाक़िया

हमारे यहां क़रीब की एक बस्ती में वाक़िया पेश आया मियां बीवी में कुछ खट पट हुई अल्लाह की शान कि उसी वक़्त एक मेहमान नाज़िल

हो गया, ख़ैर ख़ाविन्द ने उसको बिठाया और बीवी को आकर बताया कि मेहमान आया है उसने कहा छुट्टी न तुम्हारा खाना बनना है न उसका बनना है, होम गावर्नमन्ट का यह फ़ैसला था, ख़ैर यह बड़ा परेशान अब मेहमान के पास आकर बैठा उसके ज़ेहन में ख़्याल आया कि भई मेहमान को खाना न खिलाया तो यह तो बहुत बदनामी होगी रिशतेदार है, क़रीबी है तो चलो मैं सामने वाले हमसाया को कह देता हूं वह सामने वाले हमसाया के दरवाज़ा खटखटाकर, उनको कहने लगा जी एक मेहमान है और मेरी बीवी की तबीयत ख़राब है, हालांकि उसकी तो नियत ख़राब थी तो उसने कहा जी उसकी तबीयत ख़राब है आप हमारे मेहमान का खाना बना दें उन्होंने कहा जनाब आप क्या बात कर रहे हैं, हम दस बन्दों का खाना बना देते हैं आप फ़िक्र न करें खाना अभी पहुंच जाएगा, पुराना तअल्लुक़ था, क़रीब के पड़ोसी तो रिशतेदारों की तरह गहरा तअल्लुक़ रखते हैं और शरीयत ने भी इस कुर्ब के तअल्लुक़ को तस्लीम किया है, उसको इतमिनान हो गया, यह आ कर उसके पास बैठ गया बातें करने लगा इतने में उसको ख़्याल आया कि मेहमान को मैं ठंडा पानी या लस्सी वग़ैरा पिलाऊं, यह पानी लस्सी वग़ैरा लेने जब अन्दर गया तो क्या देखता है कि बीवी बैठी ज़ारो क़तार रो रही है, बड़ा हैरान हुआ कि यह शेरनी रोने वाली तो नहीं थी आज कैसे बैठी रो रही है, जब ज़रा आगे हुआ तो जनाब वह रोती हुई उठी और कहने लगी बस आप मुझे माफ़ कर दीजिए, उस शौहर के लिए तो यह अनोखा दिन था कि बीवी माफ़ी मांग रही है, उसने कहा अच्छा अच्छा मैं तुझे माफ़ कर दूंगा तू बता तो सही हुआ क्या? वह कहने लगी बात यह पेश आई कि जब मैं ने तुम्हें मेहमान के खाने पकाने से इंकार कर दिया और आप चले गए तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि लड़ाई मेरी और आप तक है मेहमान का क्या कुसूर खाना तो बनाना ही है तो मैं उठी कि चलूं खाना बनाती हूं, जब मैं अपने किचेन में दाख़िल हुई हैरान रह गई कि एक सफ़ेद रेश कोई

बूढ़ा था वह हमारे आटे की बोरी में से कुछ आटा निकाल रहा था मैं ने देखा तो घबरा गई वह मुझे कहता है बेटी घबरा नहीं यह मेहमान का हिस्सा था जो यहां भेजा गया था अब यह सामने वाले घर में जा रहा है, जी हां मेहमान बाद में आता है अल्लाह तआला उसका रिज़्क़ पहले बन्दे के पास पहुंचा देता है, तो इसलिए यह ज़ेहन में रख लीजिए कि गुनाहों के सबब मिलने वाला रिज़्क़ बन्दे से वापस कर लिया जाता है।

अल्लाह से दूरी

☆...... तीसरा असर यह कि गुनाह करने वाले बन्दे को अल्लाह तआला से वहशत सी हो जाती है, वह जो उन्स होता है, प्यार होता है, मुहब्बत होती है वह सब ख़त्म, दिल नहीं लगता, अल्लाह के ज़िक्र में, अल्लाह के तज़किरे में, अल्लाह की बातों में न अल्लाह वालों के पास लगता है न अल्लाह वाली महफ़िलों में लगता है, मस्जिद आने को दिल नहीं करता, नमाज़ पढ़नी एक मुसीबत लगती है, मस्जिद में बैठना एक मुसीबत नज़र आती है वही बात है कि मछली ख़रीदी किसी ने उठाने वाले को कहा कि भई घर ले चलो उसने कहा जनाब रास्ते में नमाज़ का वक़्त हुआ तो नमाज़ पढ़ूंगा अच्छा भई पढ़ लेना अब जब वक़्त हो गया तो वह नमाज़ के लिए मस्जिद में पहुंचा वह बाहर खड़ा इन्तिज़ार करता रहा जब लोग निकलने लगे और वह न निकला तो कहता है अरे मियां तुझे कौन नहीं निकलने देता उस लड़के को इस अंदाज़ में बुला रहा था, अरे मियां तुझे कौन नहीं बाहर निकलने देता अन्दर से जवाब दिया जनाब जो आप को अन्दर नहीं आने देता वह मुझे बाहर नहीं आने देता।

हमने देखा एक बन्दा मस्जिद की किराए की दुकान में रहता था और पांच नमाज़ों का तारिक था, मस्जिद के दरवाज़े के साथ दुकान है और उसको नमाज़ की तौफ़ीक़ नहीं है ﴿وما توفيقى الا بالله﴾ अल्लाह तआला से वहशत होती है उसको तज़किरा अच्छा नहीं लगता,

बातें अच्छी नहीं लगतीं, आप उसके साथ बात करने लगें उसका सीना घुटने लग जाता है यह हमारे जमाअत वाले भाई जब गश्त में जाते हैं ना तो इस क़िस्म के तजरबे उनको बहुत होते हैं लोग पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के साथ वहशत का होना यह गुनाह के असरात में से एक असर है अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं ﴿كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون﴾ "क्यों नहीं उनकी बद आमालियों की वजह से उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया जाता है" एक शख़्स ने किसी आरिफ़ से शिकायत की कि जी मुझे यादे इलाही से बहुत वहशत सी महसूस होती है उन्होंने कहा ﴿اذا كنت قد وحشت بالذنوب فدع اذا شئت واستعنه﴾ कि अगर तुझे गुनाहों की वजह से वहशत सी महसूस होती है तो गुनाहों को छोड़ दे उसके दर पर आ जा तुझे उसकी मुहब्बत नसीब हो जाएगी"।

इंसानों से वहशत

☆...... एक असर यह कि उस बन्दे को लोगों से भी वहशत होती है एक अंजाना सा ख़ौफ़ होता है उसके दिल में, लोगों से मिलना जुलना भी उसको मुसीबत नज़र आता है वह अलाहदा ही रहना पसन्द करता है, तबीयत ऐसी हो जाती है।

बनते कामों का बिगड़ना

☆......और एक असर यह होता है कि उस बन्दे के लिए कामियाबी के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं कोई काम उसका अंजाम तक नहीं पहुंचता कई लोगों को देखा है कहते हैं कि हज़रत बस होते होते काम रह जाता है काम नहीं चल रहा, वजह क्या है? कि तक़वा को इख़्तियार करने से अल्लाह तआला ख़ुद बन्दे के वकील बन कर उसके काम को संवारते हैं और जब गुनाह करता है अल्लाह तआला निगाहें फेर लेते हैं फिर बनते काम बिगड़ जाया करते हैं।

यह ख़िज़ां की फ़सल क्या है फ़क़त उसकी चश्म पोशी

वह अगर निगाह कर दें तो अभी बहार आए

उसकी रहमत की नज़र होती है तो बहार आ जाती है और रहमत की नज़र हट जाती है तो बस ख़िज़ां होती है, भागता है, एक रिवायत में आता है "ऐ बन्दे एक तेरी मर्ज़ी है एक मेरी मर्ज़ी है अगर तो चाहे कि वह पूरा हो जो तेरी मर्ज़ी है तो मैं तुझे थका भी दूंगा और तेरी मर्ज़ी भी पूरी नहीं होने दूंगा, तो वही होता है थकते भी हैं और मर्ज़ी भी पूरी नहीं होती भाग भाग कर जूते घिस जाते हैं, काम नहीं होते और तू अगर यह चाहे कि वह पूरा हो जो मेरी मर्ज़ी है ऐ मेरे बन्दे मैं तेरे कामों में तेरी किफ़ायत भी करूंगा और तेरी मर्ज़ी को भी पूरा करूंगा, तो गुनाहों की वजह से इंसान पर कामियाबी के दरवाज़े बन्द, तक़्वा से यह दरवाज़े खुलते हैं, इसलिए कुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا و يرزقه من حيث لا يحتسب﴾ "जो तक़्वा इख़्तियार करता है परहेज़गारी इख़्तियार करता है अल्लाह तआला रास्ते उसके लिए खोल देते हैं और ऐसी तरफ़ से रिज़्क़ देते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता, इसी लिए फिर कुछ कहते हैं कि जी किसी ने कुछ कर दिया है भई इस चक्कर में पड़ गए तो फिर क़भी नहीं निकलोगे और औरतों को अगर कोई कह दे कि लगता है कि आप पर किसी ने कुछ कर दिया तो आगे की स्टोरी बनी बनाई पहले से तय्यार होती है, हां मेरी नन्द ने कुछ कर दिया है, हां मेरी देवरानी ने कुछ किया होगा, यह हालत है, भई अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त हो तो कोई कुछ नहीं कर सकता, याद रखना अल्लाह तआला देना चाहें सारी दुनिया अगर तुल जाए कि न मिले दुनिया उसका रास्ता रोक नहीं सकती, और अगर अल्लाह तआला न देना चाहें तो सारी दुन्यिा तुल जाए कि बन्दे को दे दे दुनिया उसे कुछ दे नहीं सकती, देना और लेना परवरदिगार का काम है, इतना कमज़ोर यक़ीन और ईमान किसी ने कुछ कर दिया है, छोटे छोटे ख़ुदा बना लेते हैं, परवरदिगार फ़रमाते हैं ﴿نحن قسمنا بينهم معيشتهم﴾ "उनके

दरमियान मईशत (रिज़्क़) को हम ने तक़सीम किया है" उस तक़सीम को कोई बन्दा रोक नहीं सकता? इतना कमज़ोर ईमान हमारा क़ुरआन पर तो इसलिए चक्कर में पड़ने की कोई ज़रूरत नहीं न कोई बांध सकता है न कोई बन्दा रोक सकता है बन्दों से कोई डरने की ज़रूरत नहीं अपने गुनाहों से डरने की ज़रूरत है उसको हम ने ही बांधा हुआ होता है अपने गुनाहों के ज़रीया से वह गठ्री बंधी हुई होती है वह गड्डी गुनाह की खुल जाए तो बस रहमत के दरवाज़े खुल जायेंगे,

हम इलज़ाम उनको देते थे क़ुसूर अपना निकल आया

तो यह गुनाहों की बे बरकती होती है गुनाहों के बुरे असरात होते हैं बन्दे के ऊपर।

लज़्ज़ते क़ल्बी से महरूमी

☆...... गुनाहों की वजह से बन्दे को अपने क़ल्ब के अन्दर कोई हलावत महसूस नहीं होती, गुनाह करे तो बुरा नहीं लगता नेकी करे तो अच्छा नहीं लगता, कोई कैफ़ियत ही नहीं, पत्थर पर जैसे कोई असर ही नहीं होता फिर कहते हैं कि जी क्या करें हज़रत लोग रोते हैं हमें रोना ही नहीं आता, कैसे रोना आएगा गुनाहों ने आँखों के सोते और आंखों के चश्मा को जो खुश्क कर दिया है, यह चश्मा खुश्क हो चुका, ख़ौफ़े खुदा दिल में आएगा यह चश्मा दोबारा हरा भरा हो जाएगा, लिहाज़ा नेकी का नूर भी बन्दे के चेहरे पर नज़र आता है और गुनाहों की ज़ुलमत भी बन्दे के चेहरे पर नज़र आती है शराबी आदमी को आप देखें आप उसके चेहरे पर एक ख़ास क़िस्म की तारीकी महसूस करेंगे, ज़ानी के चेहरे पर महसूस करेंगे, झूठे के चेहरे पर महसूस करेंगे, हमें अल्लाह ने अगर वह आंखें नहीं दीं तो यह हमारा क़ुसूर है जो बा खुदा लोग होते हैं वह शक्ल देख कर पहचानते हैं कि यह किस तरह की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, तो बुराई करने से और गुनाह करने से चेहरे पर ज़ुल्मत और बदन में सुस्ती होती है, सुस्ती से क्या मुराद? दीन का

काम करने के बारे में बोझल होता है बदन उसका नमाज़ के लिए भी उठना चाहे तो नहीं उठ पाता, कुरआन मजीद में फ़रमाया नमाज़ के बारे में ﴿وانها لكبيرة الا على الخاشعين﴾ "सेवाए ख़ाशिईन के यह नमाज़ अपने पढ़ने वालों पर भारी होती बोझ होता है" उनको नमाज़ पढ़ना एक मुसीबत नज़र आती है और जिसके दिल में नूर होता है उसको नमाज़ के बग़ैर चैन नहीं आता, तो गुनाह इंसान के बदन को बोझल कर देता है और उसके दिल को सियाह कर देता है।

नेकी इंसान के चेहरे पर नूर बना कर सजा दी जाती है इसी लिए नबी ﷺ से किसी ने पूछा कि अल्लाह वालों की पहचान क्या है? तो उन्होंने जवाब में फ़रमाया "الذين اذا رئوا ذكر الله" कि वह लोग जिन को देखो तुम्हें अल्लाह याद आए वह लोग अल्लाह के वली होते हैं, यहां आप कभी फ़र्क़ किया करें अल्लाह वालों के चेहरे को भी देखा करें, उनके चेहरे पर आप को बहार की ताज़गी नज़र आएगी और यह जो पाप स्टार होते हैं उर्दू में पाप गुनाह को कहते हैं गुनाहों के स्टार तो यह बेचारे पाप स्टार होते हैं उनके चेहरे को देखें तो बिखरे हुए बाल और चेहरा ऐसे निचुड़ा हुआ कि जैसे किसी ने और आम को निचोड़ कर उस का रस निकाल लिया हो तो जो बाक़ी बचा होता है बेचारों का चेहरा होता है, ज़ुल्मत आप खुद महसूस कर सकते हैं उनके चेहरों पर। हज़रत अक़दस कशमीरी" के हाथ पर चन्द हिन्दुओं ने इस्लाम क़बूल किया दूसरे हिन्दुओं ने कहा कि तुम ने यह क्या किया मुसलमान बन गए तो उन्होंने हज़रत कशमीरी" के चेहरे की तरफ़ इशारा करके कहा कि इस चेहरे को देखो यह चेहरा हमें किसी झूटे इंसान का नज़र नहीं आता तो अल्लाह वालों के चेहरे बताते हैं कि यह झूठों के चेहरे नहीं हैं।

सलाहुद्दीन अय्यूबी"

कहते हैं कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी सलीबी जंगों में मशग़ूल थे

इत्तिला मिली कि दुश्मन का बहरी बेड़ा आ रहा है कमक आ रही है तो सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बड़ी फ़िक्र हुई कि मुसलमानों की तादाद पहले थोड़ी है अब ऊपर से अगर दुश्मनों का बहरी बेड़ा आ गया तो मुसलमानों के लिए मुश्किल बनेगी, बैतुल मक़दिस में पहुंचे सारी रात अल्लाह के हुजूर मुनाजात में गुज़ारी रूकू व सज्दे में गुज़ारी फ़जर हो गई फ़जर पढ़ कर निकले घर जाने के लिए, तो सारी मस्जिद के दरवाज़े पर किसी अल्लाह वाले से मुलाक़ात हुई उसका चेहरा पुर नूर था देख कर दिल में सुरूर आ गया दिल ने गवाही दी कि यह भी कोई मसीहा नज़र आ रहा है तो सलाहुद्दीन क़रीब हुए और क़रीब होकर उनसे कहा कि हज़रत दुआ कीजिए दुश्मन का बहरी बेड़ा आ रहा है वह भी कोई बा खुदा बन्दे थे वह भी माद्दे के पार देखना जानते थे बसीरत नसीब थी उनको उन्होंने सलाहुद्दीन के चेहरे को देखा पता चल गया कि उसकी रात कैसे गुज़री फ़रमाने लगे सलाहुद्दीन अय्यूबी तेरे रात के आसुओं ने दुश्मन के बहरी बेड़े को डुबो दिया है और वाक़ई तीसरे दिन इत्तिला मिली दुश्मन का बहरी बेड़ा समुन्द्र में डूब चुका था तो अल्लाह वालों के चेहरे पर एक नूर होता है।

अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रजि. यहूदियों के आलिम थे यहूदियों ने भेजा था सवाल पूछने के लिए चुन कर सवाल पूछ कर आओ जब आकर नबी ﷺ का चेहरा देखा तो कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गए दूसरों ने कहा जी भेजा किस लिए था और कर क्या दिया, कहने लगे मैं ने उस महबूब का चेहरा देखा वह चेहरा किसी झूटे का नज़र नहीं आता था।

क़ल्ब व जिस्म की कमज़ोरी

☆...... गुनाहों का एक असर यह कि गुनाह करने से बन्दे का बदन और दिल अन्दर से कमज़ोर हो जाते हैं, देखने में आप को बड़े नज़र आयेंगे, अन्दर बुज़दिली होगी, गुनाहों की वजह से बहादुरी उनसे छीन ली जाएगी अन्दर ख़ौफ़ होता है उनके दिल में तो उमूर ख़ैर में

उनकी हिम्मत घट जाती है दिल में उनके रोब और वहन आ जाता है, वहन सुस्ती को कहते हैं दिल मरऊब हो जाते हैं।

ताअत से महरूमी

☆...... गुनाहों का एक असर यह होता है गुनाह करने वाला बन्दा ताअत से महरूम हो जाता है यानी आज एक गुनाह किया एक नेकी से महरूम हुआ, कल दूसरी नेकी से परसों तीसरी नेकी से, पहले जमाअत में जाता था वक़्त लगाता था आहिस्ता आहिस्ता चिल्ला छूटा फिर सेह रोज़ा छूटा फिर शब जुमा छूटी और फिर ज़ाहिरी सुन्नत भी छूटी तब जाकर पता चलता है कि गुनाहों का असर क्या निकलता है, ज़िक्र अज़कार करने वाला है तो सबसे पहले शैख़ से राबता छूटा, मामूलात छूटे, तहज्जुद छूटी, फिर आहिस्ता आहिस्ता ज़ाहिर भी सब कुछ छूट जाता है तो ताआत से इंसान वक़्त के साथ साथ महरूम होता चला जाता है एक एक करके महरूम हो जाता है और एक हदीस पाक में है कि गुनाह करने से इंसान की उम्र को घटा दिया जाता है जैसे हदीस पाक में है कि ज़िना करने वाले बन्दे की उम्र को घटा दिया जाता है इसके उलमा दो मानी लिखे हैं

(1) कभी तो अल्लाह तआला मिक़दार में उम्र घटा देते हैं कि अगर नेकी करता तो उम्र नव्वे साल होती अब अपने हाथों से जवानी तबाह की तो अब सत्तर साल में ही चला गया तो ज़ाहिर में भी उम्र घटा देते हैं चूंकि यह उम्र अल्लाह तआला लिख देते हैं मगर बाज़ औक़ात मशरूत होती है जैसे हदीस पाक में आता है सदक़ा से उम्र बढ़ा दी जाती है और गुनाहों से उम्र घटा दी जाती है।

(2) और दूसरा इसका माना उलमा ने यह लिखा है कि अल्लाह तआला मिक़दार अगर न भी घटाए तो जो उसमें इफ़ेक्टीव लाइफ़ है बन्दे की वह बन्दे की घटा देते हैं मसलन चालीस साल में ही हार्ट अटैक होना शुरू होता है चालीस साल में ही बलड परेशर हो गया,

चालीस साल में ही शुगर हो गई, चालीस साल में ही अल्सर हो गया न खा सकता है न कुछ कर सकता है न कहीं जाने का ज़िन्दगी ही क्या ज़िन्दगी दूसरों की मुहताजी पड़ गई तो उम्र तो सत्तर ही साल रही जो थी उसकी मगर उसमें से जो इफ़ेक्टीव उम्र थी प्रोडक्टिव उम्र थी अल्लाह उसको घटा देता है और नेकी का असर यह होता है कि अगर सत्तर साल उसने रहना है या नव्वे साल रहना है अल्लाह ज़िन्दगी के सारे स्पेस तक उन नेमतों को महफ़ूज़ रखेगा।

एक नेक बन्दे की सेहत

हमारे हज़रत मुरशिद आलम नव्वे साल उम्र थी और उनको शूगर की बीमारी भी थी एक मर्तबा उन्होंने हमारे सामने इफ़तार किया और इफ़तारी के बाद वहीं पर इशा की नमाज़ हो गई उसके बाद तरावीह शुरू हो गई तरावीह में कुर्रा आए हुए थे मुख़तलिफ़ जगहों से उन्होंने पढ़ना था तो हज़रत भी खड़े हो गए पीछे सहरी का वक़्त हो गया सहरी का वक़्त हुआ तो हम हैरान कि हज़रत ने वुज़ू ही ताज़ा नहीं किया नव्वे साल की उम्र शुगर का मरीज़ और मग़रिब से लेकर सहरी का वक़्त हो गया अब उन लोगों ने सहरी का इन्तिज़ाम मस्जिद में ही किया हुआ था तो हज़रत ने मस्जिद में ही वहीं सहरी खा ली अब सहरी के बाद जवान बन्दे को भी वुज़ू करने की ज़रूरत पड़ती है तो हम ज़रा क़रीब हाज़िर हुए हज़रत आप वुज़ू ताज़ा फ़रमायेंगे फ़रमाने लगे क्यों मेरा वुज़ू कोई कच्चा धागा है, अल्लाहु अकबर हैरान हो गए हज़रत ने उसी वुज़ू के साथ फिर फ़जर की नमाज़ पढ़ाई और फ़जर की नमाज़ पढ़ाने के बाद उसी वुज़ू के साथ बैठ कर दरसे क़ुरआन दिया और उसी वुज़ू के साथ इश्राक़ की नमाज़ पढ़ी हैरान हैं हम आज तक इस करामत को देख कर कि इफ़तारी के वुज़ू से इशराक़ की नमाज़ पढ़ी और फिर कमरे में तशरीफ़ लाकर वुज़ू की तय्यारी फ़रमाई नव्वे साल की उम्र में भी उनके दांत बिल्कुल ठीक थे एक दांत गिरा

हुआ नहीं था सारे दांत ठीक थे मैं एक मर्तबा ज़रा नर्म सी रोटी ढूंढने लगा पूछने लगे क्या कर रहे हो मैं ने कहा जी नर्म रोटी ढूंढ रहा हूं फ़रमाया क्यों मेरे दांत नहीं हैं? मुझे सख़्त निकाल कर दो मैंने तन्नूर की बनी हुई सख़्त रोटी निकाल कर दी हज़रत ने उसको खाया जब ख़त पढ़ते थे, नव्वे साल की उम्र में तो उस वक़्त ऐनक उतार कर ख़त पढ़ते थे हम कहते थे, हज़रत लोग पढ़ने के लिए ऐनक लगाते हैं आप पढ़ने के लिए ऐनक उतारते हैं फ़रमाते हैं यह दूर की ऐनक है क़रीब की ऐनक नहीं है अल्लाहु अकबर तो नव्वे साल में कोई कोने में बैठ के खुसुर पुसुर करते तो हज़रत सुन लिया करते थे समाअत ठीक थी बसारत ठीक थी दांत ठींक थे वुज़ू का यह हाल था और सेहत ऐसी थी हम लोग उनके सामने चूज़े नज़र आते थे ऐसे कभी हमारे कन्धे पर हाथ रख देते तो हम दोहरे हुए चले जाते थे, हमें कहते थे चूंज़े कहीं के अब बताओ यह क्या चीज़ थी।

मुरशिद आलम और ईसाई

एक दफ़ा पूछ लिया हज़रत! यह आप की सी सेहत तो हम ने और कहीं नहीं देखी फ़रमाने लगे हां एक मर्तबा एक ईसाइ था उसने लोगों को वरग़लाना शुरू किया तो मैंने कहा कि मैं उससे मुनाज़िरा करता हूं मैं क़ुरआन लेकर पहुंच गया वह पहलवान था उसने शादी भी नहीं की हुई थी तो उसने जब मुलाक़ात के लिए हाथ में हाथ लिया तो मेरे हाथ को हिलाने की कोशिश की और मैंने उसको वहीं पर जाम कर लिया तो हाथ हिल ही न सका जब हाथ ही न हिल सका तो वह पीछे हट कर बैठ गया कहने लगा कि जी मुनाज़िरा तो बाद में करेंगे यह बतायें कि आप कौन से कुशते खाते हैं कि इतनी अच्छी सेहत है, मैंने कहा दाल साग खाता हूं उसने कहा नहीं मैं पहलवान हूं मैं रोज़ाना इतना दूध पीता हूं इतना मक्खन इस्तेमाल करता हूं इतना गोश्त खाता हूं और उस पहाड़ पर इतनी दफ़ा चढ़ता उतरता हूं इतनी वरज़िश करता

हूं फिर जाकर मेरी ऐसी सेहत है और मैं आप के हाथ को हिला ही न सका, मैंने शादी भी नहीं की अपनी जवानी को बहाल रखने के लिए तो आप में यह ताक़त कैसे आई?

हज़रत फ़रमाने लगे भई मैं तो दाल साग खाता हूं और मेरी तीसरी शादी है फिर मैंने उसे बताया कि मेरे अन्दर दो खूबी है एक मैंने लोहे का लंगूट बांधा कभी कोई जवानी से मुतअल्लिक़ा गुनाह नहीं किया, (लोहे का लंगूट समझते हैं ना जैसे अन्डर वियर कपड़े का पहनते हैं तो लोहे का अन्डर वियर पहनना यानी कोई भी जिन्सी गुनाह न करना), तो फ़रमाने लगे कि मैं ने उसे कहा कि देखो एक तो मैंने लोहे का लंगोट बांधा और दूसरी मेरी तहज्जुद की नमाज़ कभी क़ज़ा नहीं हुई इन दो अमलों की वजह से अल्लाह ने मुझे यह जिस्मानी सेहत अता फ़रमाई फिर बात लम्बी होती गई तो बाद में फ़रमाने लगे कि वजह यह भी थी कि एक मर्तबा मुझे लैलतुल क़द्र नसीब हुई यह राज़ की बात ज़रा बाद में बताने लगे कहने लगे कि मुझे लैलतुल क़द्र मिल गई मैंने लैलतुल क़द्र में उम्र में बरकत की दुआ मांगी।

तो अल्लाह तआला कभी उम्र में बरकत की वजह से टाइम स्पेस बढ़ा देते हैं और कभी उम्र में बरकत की वजह से जितनी ज़िन्दगी होती है वह तो इतनी ही रहती है मगर अल्लाह तआला जवानी की सेहत को आख़िरी उम्र तक बक़ा अता फ़रमा देते हैं तो गुनाहों की वजह से इंसान की उम्र कम हो जाती है या उम्र का प्रोडकटिव हिस्सा इन ऐक्टिव हिस्सा कम हो जाता है दूसरों की मुहताजी होती है आख़िरी उम्र में आकर और नेकी की वजह से अल्लाह तआला आख़िरी उम्र तक ग़ैर की मुहताजी से महफ़ूज़ फ़रमा देते हैं।

गुनाहों का तसलसुल

☆...... एक असर यह भी है गुनाहों का कि एक गुनाह की वजह से दूसरे गुनाह का दरवाज़ा खुलता है, बन्दा समझता है बस मैं एक

दफ़ा यह काम कर लूं फिर नहीं करूंगा वह एक दफ़ा का काम करना अगले गुनाह का दरवाज़ा खोल देता है, दोस्त ने कहा चलो भई एक दफ़ा यहं गुनाह करते हैं उसने ऐसी बुरी औरत का तआर्रुफ़ करवा दिया अब गुनाहों का दरवाज़ा ही खुल गया, किसी से ना जाइज़ तअल्लुक़ात हो गए अब झूठ का दरवाज़ा ही खुल गया, बाप के सामने झूठ तो अम्मी के सामने भी झूठ, भाई के सामने भी झूठ हर एक के सामने झूठ हर वक़्त झूठ और फिर इतने झूठों को छिपाने के लिए मज़ीद झूठ, नतीजा क्या निकलता है रिवायत में आता है बन्दा इतना झूठ बोलता है इतना झूठ बोलता है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म दे देते हैं कि इस बन्दे को कज़्ज़ाब (झूठे) लोगों के दफ़्तर में नाम लिख दिया जाए।

तौबा की तौफ़ीक़ का छिन जाना

☆...... गुनाह का एक इसका असर यह होता है कि तौबा की तौफ़ीक़ छीन ली जाती है आज कल करता रहता है हां मैं तौबा करूंगा तौबा करूंगा तौबा की तौफ़ीक़ नहीं मिलती, कर नहीं पाता तो अगर किसी बन्दे को तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाए तो यह भी अल्लाह की इनायत समझो कि अल्लाह तआला की ख़ास रहमत है तौबा को टालना नहीं चाहिए इसलिए एक बुजुर्ग लिखते हैं अकमालुशशेम में कि "ऐ दोस्त तेरा तौबा की उम्मीद पर गुनाह करते रहना और ज़िन्दगी की उम्मीद पर तौबा को मुअख़्ख़र करते रहना तेरा अक़्ल का चिराग़ गुल होने की दलील है यह इस बात की दलील है कि तेरी अक़्ल का चिराग़ गुल हो चुका"

गुनाह को कुछ न समझना

☆...... और एक गुनाह का असर यह होता है कि गुनाह की बुराई का एंहसास दिल से निकल जाता है एक होता है कि बन्दा गुनाह करता है और गुनाह की बुराई महसूस करता है वह जो बुराई का

एहसास है ना जो गुनाह से नफ़रत है वह निकाल ली जाती है, गुनाह गुनाह नज़र ही नहीं आता जैसे जो लोग फ़हश कलामी करते हैं गालियां निकालते हैं मां बहन की उनको बुरा ही नहीं लगता अजीब बात है कि यह एहसास इतना ख़त्म हो जाता है कि बन्दा फिर अपने गुनाहों को फ़ख़रिया अंदाज़ में लोगों को बताता है, गुनाह भी किया बताया भी बड़ा स्मार्ट बन रहा होता है, देखो जी मैं ने उसको बेवकूफ़ बनाया वह बेवकूफ़ नहीं उसको धोका दिया अपना धोका बता रहा है खुदा छिपाता है और यह अपने ऐबों को खोलता है, हत्ता कि जब गुनाह का एहसास ख़त्म हो जाता है तो कई मर्तबा उसकी ज़बान से कलमाते कुफ़्र का भी सुदूर हो जाता है और ईमान सल्ब हो जाता है, इसलिए एक बुजुर्ग फ़रमाते थे कि तुम गुनाह से डरते हो मैं ईमान के सल्ब होने से डरता हूं, तो आहिस्ता आहिस्ता बन्दे का ईमान ही सल्ब हो जाता है।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमाए और हमें सच्ची तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

गुनाह गुनहगारों की मीरास

☆...... एक यह भी है कि गुनाह करना दुश्मनाने ख़ुदा के साथ मुशाबिहत है जिन को अल्लाह तआला ने अपना दुश्मन फ़रमाया हर गुनाह किसी न किसी दुश्मने ख़ुदा की मीरास है मसलन तकब्बुर क़ौमे आद की मीरास है, नाप तौल में कमी करना क़ौमे शुऐब की मीरास है, लूती अमल क़ौमे लूत की मीरास है और इसी पर क़ियास कर लीजिए हर नाफ़रमानी किसी न किसी दुश्मने ख़ुदा की मीरास है इसलिए जो बन्दा गुनाह कर रहा होता है वह किसी न किसी दुश्मने खुदा के साथ मुशाबिहत कर रहा होता है और हमें मना किया गया दुश्मनाने ख़ुदा के साथ छोटी से छोटी भी मुशाबिहत इख़्तियार न करें, फ़रमाया (مــــن تشبـه بـقوم فهو منهم) जो जिस क़ौम की मुशाबिहत इख़्तियार करेगा

वह उन्हीं में से है।

एक वाकिया

इंडिया का वाकिया किताबों में लिखा है कि एक बड़े मियां जा रहे थे हिन्दुओं का होली का दिन था उनकी वफ़ात हो गई थी तो उनको किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा कि क्या बना? कहने लगे मेरी क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बना दिया उन्होंने पूछा वजह क्या बनी? तो उन्होंने यह वाकिया सुनाया कि होली का दिन था और मैं पान खाता हुआ जा रहा था मुझे थूक फैकने की ज़रूरत थी तो सामने गधा था ऐसे ही पता नहीं क्या दिल में आया मैं ने वह थूक पान वाली गधे पर डाली और कहा ऐ गधे तुझे रंगने वाला कोई नहीं था पता नहीं मेरे दिल में क्या फ़ुतूर आया कि मैंने भी थूक उस गधे पर फेंकी और कहा कि तुझे रंगने वाला कोई नहीं कहने लगे इस बात पर मुझ से सवाल किया गया कि तुम ने दुश्मनों के साथ जो यह मुशाबिहत इख़्तियार की इस वजह से तुम्हारी क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बना दिया इतनी सी भी मुशाबिहत परवरदिगार पसन्द नहीं करते और आज तो मुसलमानों के बच्चे लिबास में, तआम में, क़ियाम में, रफ़्तार में, किरदार में हर चीज़ में फ़िरंगियों की मुशाबिहत इख़्तियार करते हैं ﴿انكم اذا مثلهم﴾ फ़रमाया तुम ऐसा करोगे तुम उन्ही में से होगे उसका असर मौत के वक़्त ज़ाहिर होता है, यह फ़रमाया गया ना कि वह उन्हीं में से होगा, इसका मतलब क्या होता है कि ज़िन्दगी भर उसका नाम मुसलमानों की फ़ेहरिस्त में रहता है, जब मरने लगता है तब उसको ईमान से महरूम कर दिया जाता है तो ईमान से महरूमी होती है अगर दुश्मनाने खुदा के साथ मुशाबिहत इख़्तियार की इससे बहुत बचना चाहिए, जब दिल एक होते हैं तब लिबास एक होते हैं लिबास एक होने से पहले दिल एक हो चुके होते हैं यह अन्दर का एक रोग होता जो फिर फ़िरंगियों के लिबास अच्छे लगते हैं, इस मुशाबिहत से बचना चाहिए जितना भी बच सकें।

अल्लाह के यहां बे इज़्ज़त

☆...... गुनाहों का असर यह भी है कि इंसान अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नज़रों से गिर जाता है, कितनी बड़ी यह सज़ा है कि शहंशाहे हक़ीक़ी की निगाहों से बन्दा गिर जाए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं ﴿ومن يهن الله فماله من مكرم﴾ "जिसे हम ज़लील करने पर आते हैं उसे फिर इज़्ज़त देने वाला कोई नहीं होता है" अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की पकड़ बहुत बड़ी और बहुत बुरी होती है।

एक सच्चा वाक़िया

एक साहब थे गवर्नमन्ट आफ़िसर, रिश्वत का पैसा खूब लेते थे और कुदरतन उन्होंने कोठी ऐसी जगह ली जहां मस्जिद बिल्कुल साथ थी, सुबह के वक़्त मस्जिद में अज़ान हुई, वह शराबी कबाबी बन्दा उसकी आंख खुल गई उसको बड़ा गुस्सा आया उसने मुअज़्ज़िन को अगले दिन बुला कर कहा कि फ़जर में मेरी नींद में ख़लल होता है अज़ान स्पीकर में मत दिया करो, उसने आकर नमाज़ियों को बताया, नमाज़ियों ने कहा यह कौन नए साहब आ गए भई, तुम्हारी नींद में ख़लल आता है तुम जाओ जहां तुम्हारा दिल चाहे क्यों मस्जिद के साथ घर लिया, बूढ़ों ने कहा हम तो इन्तिज़ार में होते हैं हमारी नज़र कमज़ोर हम घड़ियों के वक़्त नहीं देख सकते अज़ानें सुन कर हम मस्जिद में आते हैं मुसलमानों की आबादी है, तुम मियां अज़ान दो, उस मुअज़्ज़िन ने अगले दिन फिर अज़ान दी उसकी आंख खुली उसको गुस्सा आया उसी वक़्त मस्जिद में आकर उसने मुअज़्ज़िन के दो थप्पड़ लगा दिए, बस अल्लाह तआला की उस पर पकड़ आ गई हुआ यह कि उसके आधे धड़ पर फ़ालिज हुआ, और दोनों हाथ उसके सीने के साथ लग गए, बेकार, अब जब दफ़्तर के काम का न रहा तो अगलों ने छुटटी कराके घर बैठा दिया, छुटटी हो गई इलाज पर भी पैसा खूब लग रहा था, उसकी चूंकि अफसराना तबीअत थी हाकिमाना तबीअत थी तो घर

में भी डांट डपट ज़रा ज़रा सी बात पर करता, कभी नौकरों को डांट रहा है कभी बच्चों को डांट रहा है कभी बीवी को डांट रहा है, एक दफ़ा की डांट तो बर्दाश्त कर लेते हैं, मगर रोज़ रोज़ की डांट डपट तो बर्दाश्त नहीं होती, बच्चों ने मां से कहा यह क्या मुसीबत है हमारे लिए यह तो लगता है कोई थानेदार आ गया घर में, बीवी ने कुछ कहा बीवी को डांटने लगा, वक़्त गुज़रने के साथ साथ रोज़ बीवी को डांट पड़ती रोज़ गन्दी गालियां ज़बान से निकलतीं, कुछ दिन तो वह बर्दाश्त करती रही कुछ दिन के बाद उसने अपने बच्चों को लिया कहने लगी मैं मैके जा रही हूं तू जाने तेरा काम जाने, वह उसी बीमार हालत में छोड़ कर चली गई उसने भाई को फ़ोन किया कि बीवी मुझ से बेवफ़ाई कर गई, तुम आओ मेरी ख़िदमत करो, ख़ैर भाई आया वह उसे घर ले गया मगर तबीअत तो हर जगह एक ही होती है, अब उसके बच्चों को डांट डपट उसकी बीवी को कुछ कह देता, अब जब उनके घर में यह होने लगा तो बच्चों ने बाप से कहा कि अब्बू यह क्या मुसीबत आ गई एक दिन भाई ने उसे समझाया कि भाई तुम क्यों लोगों के साथ ऐसी बुरी ज़बान इस्तेमाल करते हो, वह उसको भी डांटने लग गया तू ज़न मुरीद बन गया है और यह और वह, अब बच्चों ने देखा कि हमारे अब्बू को भी डांट रहा है तो उन्होंने पलान बनाया, जवान बच्चे थे उन्होंने अगले दिन सुबह उठा कर चारपाई से उसको बाहर लाकर सड़क पर डाल दिया उस दौरान हुआ क्या था? कि उसके निचले वाले धड़ के ऊपर फ़ालिज भी हुआ और दोनों टांगें भी सीना के साथ लग गई अब ज़िन्दा लाश न हाथ हिलता है न पावं हिलता है अब जब भाई के बच्चों ने सड़क पर डाल दिया गर्मी का मौसम नौ बजने लगे तो ज़मीन भी गर्म होने लगी और अच्छी भली गर्मी होती है, अब भूका भी था, पियासा भी था, ज़मीन भी गर्म, पसीना भी आ रहा है, अब सोचने लगा कि कौन है मेरा कि जिस को मैं कहूं, चुनांचे अफ़सर साहब ने आने जाने वाले मुसाफ़िरों से अल्लाह के नाम पर भीक मांगनी शुरू कर दी

अल्लाह के नाम पर देदो एक नौजवान बच्चे को तर्स आया उसने पांच रुपये देने चाहे कहने लगा मैं इनका क्या करूंगा? मुझे तो भूख लगी हुई है, खाना लाओ पानी लाओ उसने क़रीब होटल से रोटी लाकर दे दी कहने लगा मुझे खिला दो उसने कहा मेरे पास इतना वक़्त नहीं है, भई वह रख कर जाने लगा तो उसने सोचा कि भई ऐसा न हो कि यह रख कर चला जाए तो कोई कुत्ता ही उठा कर ले जाए, मैं तो कुछ कर भी नहीं सकता कहने लगा मुझे पकड़ा दो, अब पकड़े कहां या तो मुंह में पकड़े हाथ की उंगलियां हिलती नहीं सोच सोच कर उसका जो पांव उसके सीना पर आया हुआ था उसने अंगूठे और उंगली के दरमियान रोटी को पकड़ा और उसको चबा कर कुत्ते की तरह खाने लग गया ﴿ومن يهن الله فما له من مكرم﴾ जिसे अल्लाह ज़लील करने पर आता है उसे इज़्ज़त देने वाला फिर कोई नहीं होता, अल्लाह की पकड़ में न आए बन्दा, जब इंसान अल्लाह तआला की नज़रों से गिर जाता है तो मख़लूक़ की नज़रों से खुद बखुद गिर जाता है, लोग दिल से इज़्ज़त नहीं करते, अब यह जो वक़्त के हुक्काम होते हैं उनके सामने तो सब झुकते फिरते हैं उनकी दिल से इज़्ज़त कोई नहीं करता, सामने उनके बिछ रहे होंगे जब वहां से हटेंगे तो बड़ी सी गालियां निकाल देंगे।

अक़्ल की कमी

☆...... एक नुक़सान गुनाहों का यह है कि इंसान की अक़्ल में फ़साद आ जाता है, अक़्ल ठीक नहीं रहती बन्दा सहीह फ़ैसला नहीं कर पाता, जजमेन्ट उसकी ठीक नहीं होती, जो चीज़ उसके लिए नुक़सान देह होती है वही वह फ़ैसला कर रहा होता है अक़्ल में फ़ुतूर आ जाता है, फ़ितरत के ख़ेलाफ़ सोचता है, अब बताओ कुछ औरतों को पर्दा बुरा लगता है।

चुनांचे एक मर्तबा हमारे मुल्क की असम्बली में एक ऐसी औरत

पहुंच गई थी, वहां एक आलिम थे और उन आलिम को बहुत उसने तंग किया हुआ था ज़रा सी कोई बात होती तो बस उन पर वह तन्क़ीद करती थी, उनको कहती थी पर्दा क्या है और यह क्या है और वह क्या है वह बड़े आलिम थे मुत्तक़ी थे परहेज़गार थे,

उससे बड़े तंग थे जितना वह उससे बचने की कोशिश करते उतना जान बूझ कर खुद तंग करती थी ऐसा लगता था दहरिया ज़हन की थी शायद कई मर्तबा ऐसा होता कि वह मौलाना खड़े होते लोगों से बात कर रहे होते और यह गुज़र रही होती तो जान बूझ कर कहती अस्सलामु अलैकुम मौलाना, हाथ बढ़ाती और वह फ़ख़्र समझती थी उसको ख़ैर मौलाना भी फिर मनतिक़ पढ़े हुए थे तंग आकर एक दिन खड़े थे बात कर रहे थे तो यह कहीं से वहां आ टपकी तो उसने मुसाफ़ा के लिए हाथ बढ़ाया अस्सलामु अलैकुम, मौलाना कहने लगे बेगम तो आइए आज फिर मुआनिक़ा करने को दिल करता है, अब सुनकर भागी, तो अक़्ल ठीक नहीं रहती इंसान फ़ैसले कैसे करता है, जो फ़ितरत के ख़िलाफ़ होते हैं अब बताइए मर्द की मर्द से शादी कोई अक़्ल में आने वाली बात है अक़्ल का फ़ुतूर है।

मोरिदे लानत

☆...... एक असर इसका यह होता है कि इंसान दूसरी मख़लूक़ात की लानत का मोरिद बन जाता है मख़लूक़ात उस पर लानत करती है उसकी वजह यह कि गुनाहों की वजह से रहमतें और बरकतें रूकती हैं बारिशें रूकती हैं रिज़्क़ में कमी आती है क़हत आ जाता है तो मख़लूक़े ख़ुदा पर भी इसका असर पड़ता है लिहाज़ा दूसरी मख़लूक़ भी अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाले बन्दे पर लानत करती हैं कि तुम्हारी नाफ़रमानियों की वजह से हम भी प्यासे से मर रहे हैं। अल्लाहु अक्बर

लानत किन लोगों पर

☆...... और एक गुनाहों का असर यह कि इंसान रसूल ﷺ की

लानत का मुस्तहिक़ बन जाता है नबीﷺने बाज़ गुनाह करने वालों पर हदीसे पाक में लानत फ़रमाई है मस्लन:

...... जो औरत ग़ैर औरत के बालों को अपने बालों में मिला कर लम्बा करे, इस तरह का फ़ैशन करे कि शो पीस बन जाए तो नबीﷺने हदीसे पाक में ऐसी औरत के ऊपर लानत फ़रमाई है।

...... हदीसे पाक में नबीﷺने सूद लेने वाले पर देने वाले पर लिखने वाले पर गुवाह बनने वाले पर उन सब के ऊपर लानत फ़रमाई है सूद की इतनी बे बरकती होती है कि बता नहीं सकते मैं ने अपनी ज़िन्दगी में कम अज़ कम दर्जनों लोगों को सूद की वजह से डूबते हुए देखा है, सूद से जो जितना बचेगा उतना ही वह दुनिया के अन्दर खुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेगा कुरआन मजीद में है कि अगर कोई बन्दा सूद लेना बन्द नहीं करता अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿فاذنوا بحرب من الله ورسوله﴾ "अल्लाह तआला और उसके रसूल के साथ जंग के लिए तैयार हो जाओ" अब बताओ जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के साथ जंग करेगा तो फिर क्या बनेगा? इसलिए हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि अगर किसी बन्दे का सूद बनता भी हो तो वह उसको लेकर कहीं लैटरीनें बनती है वहां लगा दे और उस पर अज्र का दिल में इरादा भी न करे यह भी न सोचे कि मुझे अज्र मिलेगा नहीं यह तो मुसीबत से जान छुड़ा रहा हूं।

...... इसी तरह बिला वजह तस्वीर बनाने वाले पर अल्लाह के महबूब ने लानत फ़रमाई यह जो तफ़रीहन तस्वीर बनाते हैं ना यह शरीअत में नाजाइज़ है एक है शिनाख़ती कार्ड के लिए तस्वीर बनाना उलमा ने इसको मजबूरी कहा है पास्पोर्ट बनवाना है कार्ड बनवाना है मुल्कों के सफ़र हैं हज उमरे का सफ़र है तो यह वक़्त की मजबूरी है, लेकिन शादी बियाह के फ़ोटो बनवाने या औरत मर्द के तफ़रीहन तस्वीरें बनवाना हराम है और जिस घर में तस्वीरें हों उस में अल्लाह की रहमत का फ़रिशता नहीं आता।

...... इसी तरह जो मशरूत हलाला करे यानी निकाह से पहले निय्यत हो या पहले से ही तय हो जाए कि निकाह कर लेते हैं इतने दिनों बाद मैं तिलाक़ दे दूंगा।

...... और एक हदीस पाक में फ़रमाया कि जो मुसलमान पर लोहे के साथ इशारा करे हमला का इशारा चाकू का इशारा तीर का इशारा बन्दूक़ का इशारा सिर्फ़ इशारा करने वाले पर भी अल्लाह के महबूब ने लानत फ़रमाई है इशारा करने वाले पर भी और अगर मुसलमान को ज़ख़्म पहुंचाए या क़त्ल कर दे अल्लाहु अकबर जितना नाराज़गी का इज़हार अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस गुनाह पर किया उतना नाराज़गी का इज़हार किसी गुनाह पर नहीं किया अब देखिए ﴿ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاء ه جهنم﴾ जिसने जान बूझ कर मोमिन को क़त्ल कर दिया उसकी सज़ा जहन्नम है इतनी बात कर दी जाती तो बहुत था कि जहन्नम में पहुंच गया नहीं ﴿خالدافيها﴾ हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा अब भई इतना ही कह दिया जाता तो भी बहुत था (وغضب الله عليه) उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और इतना ही कह दिया जाता तो भी बहुत था नहीं ﴿ولعنه﴾ और अल्लाह की लानतें होंगी ﴿واعدلهم عذابا اليما﴾ इतने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने गुस्सा का इज़हार किसी गुनाह पर नहीं फ़रमाया और आज इसको मामूली बात समझते हैं महफ़िल में बैठते हुए बात करते हुए जेब से कोई चीज़ निकाल कर रख देते हैं यह मोमिन की तरफ़ इशारा करने के मुतरादिफ़ है।

नबी ﷺ ने लानत फ़रमाई शराब पीने वाले पर पिलाने वाले पर निचोड़ने वाले पर बेचने वाले पर ख़रीदने वाले पर और लाद कर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने वाले पर यह उम्मुल ख़बाइस है यह एक गुनाह नहीं होती यह गुनाहों का दरवाज़ा खोल देती है जो लोग समुन्द्र में नहीं डूबते वह बोतल में डूब जाते हैं बहुत बुरी आदत है और अक्सर यह बुरे दोस्तों से पड़ती है और एक दफ़ा टेस्ट करवाते हैं टेस्ट तो

करो और इसी में बन्दे की ज़िन्दगी तबाह हो जाती है इसी लिए लैलतुल क़द्र में बड़े बड़े गुनाहों की मग़फ़िरत हो जाती है, शराब पीने वाला जब तक तौबा न करे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसकी मग़फिरत नहीं फ़रमाते, नशा आवर बाक़ी चीज़ें वह भी इसी पर क़ियास कर लेनी चाहिए क्योंकि आज के दौर में फ़क़त शराब का नशा ही नहीं बहुत सी चीज़ों का नशा आ गया है।

...... नबी ﷺ ने चोर पर लानत फ़रमाई है अपने वालिद को बुरा भला कहने वाले पर गुस्सा में बाप को गालियां निकालने वाले पर लानत फ़रमाई है, बे मक़सद जानदार को मारना एक तो होता है किसी मक़सद की वजह से शिकार किया यह जाइज़ है लेकिन बे मक़सद मारना किसी जानदार को नबी ﷺ ने लानत फ़रमाई ग़ैर अल्लाह के नाम पर जानवर को ज़िबह करने वाले पर अल्लाह के महबूब ने लानत फ़रमाई, वह मर्द जो औरतों की मुशाबिहत करें और वह औरतें जो मर्दों की मुशाबिहत करें अल्लाह के महबूब ने उन पर भी लानत फ़रमाई जो शख़्स दीन में कोई नई बात निकाले बिदअत कोई पैदा करे उसका ज़रीआ बने अल्लाह के महबूब ने उस बन्दे पर लानत फ़रमाई जो शख़्स बीवी के साथ ग़ैर फ़ितरी अमल करे अल्लाह के महबूब ने उस पर भी लानत फ़रमाई जो लूती अमल करे उस पर भी लानत फ़रमाई है जो जानवर से जिमा करे उस पर भी लानत फ़रमाई है जो इंसान मुसलमान को धोखा दे अल्लाह के महबूब ने उस पर भी लानत फ़रमाई है और एक बड़ी अहम बात कि जो शख़्स बीवी को ख़ाविन्द के ख़िलाफ़ भड़काए या ग़ुलाम को आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काए अल्लाह के महबूब ने उस पर भी लानत फ़रमाई है और इसमें बड़े बड़े शरीफ़ शामिल हैं हो जाते हैं वह कैसे कि दामाद पसन्द नहीं आया बेटी रहना भी चाहती है ना तो बाप समझाएगा छोड़ दो, मां समझाएगी छोड़ दो, बहन समझाएगी छोड़ दो, यह सब इसी हदीस में शामिल हैं जब बीवी रहना चाहती है किसी को हक़ नहीं पहुंचता कि वह उस बीवी को

अपने ख़ाविन्द से दूर करने की कोशिश करे और यह गुनाह बहुत आम है आज कल सहेली के हालात से ज़रा तबीअत के मुताबिक़ नहीं थे उसको मशवरा दिया तुम कुछ और सोचो भाई की तबीअत बहनोई के साथ नहीं मिली बहन के सामने आकर उसके ख़ाविन्द की ऐसी बुराईयां कीं कि बहन का दिल उचाट हो जाता है, कोई बन्दा जो ऐसी बात करेगा जिससे दो मियां बीवी के दरमियान फ़ासला आ जाएगा उस पर अल्लाह तआला के महबूब की लानत होती है, और यह ऐसा गुनाह है कि उसको गुनाह ही नहीं समझा जाता, याद रखें मियां बीवी को मिल कर रहना अल्लाह तआला को इतना पसन्दीदा है कि देखने में झूठ कबीरा गुनाह है मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मियां बीवी के मिलाप की ख़ातिर अपने उस हक़ को भी माफ़ कर दिया फ़रमाया जो नाराज़ मियां बीवी में सुलह करवाने के लिए अगर कोई झूठ की बात भी कर देगा मैं परवरदिगार उस झूठ को भी माफ़ कर दूंगा, तो मियां बीवी का मिल कर रहना अल्लाह तआला को इतना पसन्द है कि परवरदिगार ने अपना हक़ माफ़ कर दिया, हम कौन होते हैं मियां बीवी के दरमियान फ़ासला करने वाले, इसी तरह जो औरतें क़ब्र पर जायें सज्दा करें चिराग़ जलायें रूसूमात करें अल्लाह तआला के महबूब ने उन औरतों पर भी लानत फ़रमाई है इसी तरह जो बीवी अपने ख़ाविन्द से नाराज़ होकर अलग सोए अल्लाह तआला के महबूब ने फ़रमाया कि अल्लाह के फ़रिश्ते उस वक़्त तक लानत करते रहते हैं जब तक वह ख़ाविन्द के पास नहीं आ जाती, अब आज की औरतों को मसाइल का पता नहीं होता यह मियां बीवी के मामले को टैक्स के तौर पर इस्तेमाल करती हैं मर्द मिलना चाहता है ना ना करके उसको मजबूर कर देती हैं अपनी बातें मनवा कर फिर उसकी बात मानती हैं यह कबीरा गुनाह है, यह ज़रा सी घर की किसी बात पर मुंह बना कर अलाहदा होकर सो जाना अल्लाह तआला के फ़रिश्तों की लानत होती है इसी तरह जो बन्दा ज़मीन में फ़साद मचाएगा अल्लाह के महबूब ने उस पर लानत फ़रमाई,

जो सहाबए किराम को बुरा कहे अल्लाह के महबूब ने उस पर भी लानत फ़रमाई जो रिशतेदारों को तोड़ता फिरे मामूली मामूली बात पर मैंने बहन से नहीं बोलना, मैंने भाई से नहीं बोलना, मैंने अब चचा से नहीं बोलना मैंने अब फूफी से नहीं बोलना ﴿ويقطعون ما امر الله به ان يوصل﴾ जिन रिशतेदारियों को अल्लाह तआला ने जोड़ने का हुक्म दिया जो उनको तोड़ेगा अल्लाह तआला के महबूब की उस पर लानत होगी, बल्कि महबूब ने फ़रमाया (صل من قطعك) जो तुझ से तोड़े तू उससे जोड़, वह आमिल हो अहकामे खुदावन्दी को छुपाए उसका इज़हार न करे अल्लाह के महबूब ने उस पर भी लानत फ़रमाई वह मुसलमान जो मुसलमानों के मुक़ाबले में काफ़िरों का साथ दे अल्लाह तआला के महबूब ने उस पर भी लानत फ़रमाई, और वह आदमी जो नेक लोगों पर तुहमत लगाए यह भी आज कल आम गुनाह है ज़रा सी बात पर तुहमत लगा दी जाती है तो गुनाहों के असरात में यह देखिए कि इतने गुनाहों पर अल्लाह तआला के महबूब ने लानत फ़रमाई है तो जो बन्दा इनमें से कोई गुनाह करेगा तो नबी ﷺ की लानत का मुस्तहिक होगा।

फ़रिश्तों की दुआओं से महरूमी

☆...... एक गुनाहों का असर यह होता है कि वह बन्दा फ़रिश्तों की दुआ से महरूम हो जाता है अल्लाह तआला के फ़रिश्ते उम्मते मुहम्मदिया के लिए हर वक़्त दुआयें करते हैं ﴿الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمده ربهم ويؤمنون به و يستغفرون للذين آمنوا﴾ और इस्तिग़फ़ार करते हैं ईमान वालों के लिए ﴿ربنا وسعت كل شئى رحمة و علما فاغفر للذين تابوا﴾ अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमा दीजिए उनके लिए जो तौबा करने वाले हैं, तो गुनाह करने वाला चूंकि तौबा नहीं करता इसलिए यह इस मग़फ़िरत से बाहर निकल जाता है ﴿واتبعو اسبيلك﴾ "जो तेरे महबूब के रास्ते की पैरवी करते हैं।

पैदावार में कमी

गुनाहों के असरात में से एक असर यह कि पैदावार में कमी आ जाती है ﴿ظهر الفساد فی البر و البحر بما کسبت ایدی الناس﴾ खुशकी और तरी में जो फ़साद नज़र आता है यह इंसानों के हाथों की कमाई है चुनांचे हज़रत ईसा عليه السلام जब तशरीफ़ लायेंगे उस वक़्त एक ऐसा वक़्त होगा कि दुनिया में कोई भी अल्लाह का नाफ़रमान नहीं होगा, हदीस पाक में है इतनी बरकतें होंगी इतनी बरकतें होंगी एक गाए का दूध पूरे के पूरे ख़ानदान वालों के लिए काफ़ी हो जाएगा और एक रिवायत में है कि एक अनार बड़ी जमाअत की भूख मिटाने के लिए काफ़ी हो जाएगा और बाज़ ने कहा कि अंगूर के ख़ोशे इतने बड़े होंगे कि ऊंट एक ख़ोशे को उठा कर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाएगा।

एक बादशाह की बदनिय्यती

एक बादशाह सफ़र कर रहा था कहीं सैर के लिए जंगल में वापसी में उसको बहुत प्यास लगी हुई थी उसे एक जगह अनार का बाग़ नज़र आया उसने बाग़ के मालिक को बुलाया और कहा कि भाई मुझे कुछ प्यास लगी है कुछ पिलाओ उस मालिक ने कहा कि बादशाह सलामत हैं तो मैं उनको पानी के बजाए क्यों न अनार का जूस पिलाऊं उसने एक अनार तोड़ा और उसने उसको जो निचोड़ा तो एक गिलास पूरा एक अनार के रस से भर गया जब उसने लाकर बादशाह को पीने के लिए दिया और बादशाह ने पिया तो लज़ीज़ भी बड़ा था दिल भी बहुत खुश हुआ तो बादशाह ने कहा कि भई फिर एक गिलास और भी पिला दो और साथ ही दिल में ख़्याल आया कि ऐसे ज़बर्दस्त अनारों का बाग़ तो शाही कंट्रोल में होना चाहिए अब वह बन्दा गया उसने जाकर एक अनार तोड़ा ऐसे ही उसको निचोड़ा तो गिलास का तीसरा हिस्सा भरा फिर दूसरा निचोड़ा फिर तीसरा निचोड़ा तब जाकर तीन से गिलास भरा और वह ले कर आया अब जब पिया तो ज़ाइक़ा भी वह

नहीं तो बादशाह ने पूछा कि भई यह किसी और दरख़्त से लाए हो उसने कहा जी लाया तो उसी दरख़्त से हूं बिल्कुल उसी जैसे उसने कहा कि नहीं कोई फ़र्क़ है मुझे ज़ाइक़ा में भी फ़र्क़ लगता है और पहले एक अनार से गिलास भर गया था अब तीन अनारों से भरा उसने कहा जी दरख़्त के अनारों में फ़र्क़ नहीं, लगता है कोई बादशाह की निय्यत में फ़र्क़ आ गया है, उसकी बे बरकती ज़ाहिर हुई है तो बादशाह ने गुनाह से तौबा की कि वाक़ई मेरी निय्यत में यह बात आ गई थी, कि इस बाग़ को मैं अपने लिए ले लूं मैं इस निय्यत से तौबा करता हूँ, तो अगर देखिए इतनी सी बद निय्यती पर इतने असरात होते हैं तो जहां ऊपर नीचे बद निय्यती ही जमा हो जायें फिर बरकतें कहा जायेंगी एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के बारे में बद निय्यत बन जाए बरकतें कहा जायेंगी? घर के सारे के सारे अफ़राद इसी क़माश के हों बद निय्यत हों तो क्या बनेगा।

शर्म व हया रूख़सत

☆...... गुनाहों के असरात में से एक असर यह भी है कि इंसान के अन्दर से शर्म और ग़ैरत रूख़सत हो जाती है ऐसे बन्दे को शर्म नहीं आती, चुनांचे कितने लोग हैं बेटियों को पास बिठा कर ड्रामे देख रहे होते हैं, बेटियों को पास बिठा कर फ़िल्में देख रहे होते हैं एक लड़के ने कहा जी अम्मी अब्बू के पास बैठ कर हम फ़िल्म देखते तो हैं लेकिन जब कोई ऐसा सीन आने लगता है अम्मी कहती हैं आंख बन्द कर लो तो बस हम आंख बन्द कर लेते हैं और उससे जब पूछा कि झूठ मत बोलो साफ़ बताओ बन्द करते हो? कहता है अम्मी को दिखाने के लिए बन्द करते हैं देख हम भी रहे होते हैं, अब जहां बेटी भी है, बेटा भी है और मां बाप ऐसी फ़हश फ़िल्में देख रहे होते हैं तो फिर शर्म व हया का जनाज़ा नहीं निकलेगा तो क्या होगा, इसी लिए फ़िरंगी मुल्कों में एक फ़ेक़रा सुनने में आता है "शर्म व हया एक बीमारी है" दीने इस्माल

ने शर्म व हया को खूबी कह दिया (الحياء شعبة من الايمان) हया ईमान का शोबा है लेकिन कुफ़्र ने क्या कहा? शर्म एक बीमारी है इनके यहां जिस में ज़्यादा शर्म होती है इतना वह बन्दा ज़्यादा बीमार होता है तो हम कह सकते हैं कि यह बे शर्मों की क़ौम है, यह किस लिए यह उन गुनाहों का वबाल होता है अकबर इलाहाबादी ने कहा कि

खुदा के फ़ज़्ल से बीवी मियां दोनों मुहज़्ज़ब हैं
इन्हें ग़ैरत नहीं आती उन्हें गुस्सा नहीं आता
ख़ाविन्द को गुस्सा नहीं आता बीवी को ग़ैरत नहीं आती।

अज़मते इलाही का दिल से निकलना

☆...... एक असर गुनाहों का यह भी कि इंसान के दिल से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की अज़मत निकल जाती है वह जो एक हैबत होती है अज़मत होती है दिल के अन्दर गुनाह के बार बार करने से वह अल्लाह तआला की अज़मत दिल से निकल जाती है। और यह बहुत बड़ी महरूमी है।

मुसीबतों के घेरे में

☆...... और एक असर गुनाहों का यह भी है कि उस बन्दे को परेशानियां मुसीबतें और बलायें अपने घेरे में ले लेती हैं वह लंगोट बांध बांध कर निकलता है इस परेशानी को ख़त्म करूंगा उस परेशानी को ख़त्म करूंगा एक ख़त्म नहीं होती दूसरी ऊपर से, वह ख़त्म नहीं होती तीसरी ऊपर से कोई तस्बीह टोटती है कि दाने गिरते ही चले जाते हैं, इसलिए अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿ما اصابكم من مصيبة فبما كسبت ايديكم﴾ "तुम्हें जो भी मुसीबत पहुंचती है वह तुम्हारे हाथों की कमाई है" देखिए एक होती है इम्तिहान बन कर आनी एक होती है सज़ा के तौर पर आनी जो इम्तिहान बन कर आती है उसमें बन्दे के लिए ज़िल्लत नहीं होती, जो सज़ा के तौर पर बन कर आती है उसमें बन्दे के लिए ज़िल्लत होती है तो जब भी आप देखें कि

किसी पर मुसीबत आई ज़िल्लत के साथ तो यह गुनाहों का वबाल होता है।

बुरे अल्क़ाब का मुस्तहिक़

☆...... एक गुनाहों का असर यह होता है कि वह इंसान अल्लाह के यहां बुरे अल्क़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है नेकी करने से वह अच्छे अल्क़ाब का मुस्तहिक़ बनता है मसलन नेक बन्दे को कहते हैं मोमिन, मुतीअ, मुनीब, वली, आबिद, आरिफ़, साबिर, शाकिर, यह सब के सब अच्छे अच्छे नाम नेक बन्दे के लिए और जो गुनाहों में पड़ जाता है उस के लिए बुरे अल्क़ाब फ़ासिक़, फ़ाजिर, आसी, मुफ़सिद ख़बीस, काज़िब, ख़ाइन, मुतकब्बिर, ज़ालिम, यह सब अल्फ़ाज़ जो कुरआन में इस्तेमाल हुए हैं यह गुनहगारों के लिए इस्तेमाल हुए।

शैतानों का तसल्लुत

☆...... गुनाहों के असरात में से एक यह है कि गुनाहों की वजह से उस बन्दे पर शयातीन मुसल्लत रहते हैं हर वक़्त शैतानी शहवानी सोचें दिमाग़ में भरी हुई है शैतान चिमटे हुए होते हैं उसके साथ ﴿استحوذ عليهم الشيطان فانساهم ذكر الله﴾ एक जगह फ़रमाया ﴿ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيد له شيطانا فهو له قرين﴾ जो रहमान की आंख से आंख चुराए हम उस पर शैतान को मुसल्लत कर देते हैं और शैतान उसका साथी बन जाता है" अब ज़िन्दगी में अगर शैतान साथी है तो फिर मौत के वक़्त क्या हाल होगा? मौत के वक़्त तो शैतान पूरे ज़ोर लगा देता है।

सुकुन दिल से महरूमी

☆...... एक असर गुनाहों में से यह है कि उस बन्दें के दिल में सुकून नहीं होता इतमिनान नहीं होता माल होता है कारोबार होता है, अफ़सर होता है सारा कुछ उसके पास होता है मगर उसके पास दिल का सुकून नहीं होता दिल के सुकून से अल्लाह तआला उस बन्दे को

महरूम कर देते हैं।

कबीरा पर इसरार

☆...... और एक असर गुनाहों का यह भी है कि वह बन्दा अक्सर औक़ात कबीरा का बार बार मुरतकिब होने से अल्लाह तआला की रहमत से मायूस हो जाता है उसके दिल में यह होता है कि मैं यह करता हूं अब मैं नमाज़ पढूंगा तो क्या बनना है बस अल्लाह माफ़ कर देगा बस जी अल्लाह माफ़ कर देगा तौबा भी नहीं करता और समझता ि कि तौबा किए बग़ैर अल्लाह तआला खुद माफ़ कर देंगे अल्लाह तआला को क्या ज़रूरत है माफ़ करने की इसी तरह जब तक हम तौबा नहीं करेंगे तौबा हमारी ज़रूरत है अगर नहीं करेंगे तो परवरदिगार फिर सज़ा देंगे।

कलमा से महरूमी

☆...... और एक असर यह कि गुनाहों का इसरार करने की वजह से बार बार गुनाह करने की वजह से इंसान के लिए आख़िरी लमहा में कलमा पढ़ना मुश्किल होता है जितने ज़्यादा गुनाह करेगा उतना ज़बान ज़्यादा बोझल हो जाएगी, एक डाक्टर हैं पाकिस्तान में उन्होंने किताब लिखी है मौत के लमहात के बारे में नेक आदमी है जमाअत में भी उनका बहुत वक़्त लगा, बड़े हस्पताल के बड़े डाक्टरों में से हैं उन्होंने तक़रीबन एक सौ बन्दों के आख़िरी लमहात के हालात को क़लम बन्द किया है यह खुद उनका मुशाहिदा है अल्लाहु अकबर वह कहते हैं कि मैं ने कितने लोगों को कलमे की तलक़ीन की चूंकि मैं पास होता था पढ़ ही नहीं सकते थे मैं पूछता था कि तुम यह क्यों नहीं पढ़ रहे कहते हैं चन्द एक ने मुझे बताया कि हमारी ज़बान ऐसी हो गई है जैसे फ़ालिज ज़दा हम बोलना चाहते हैं हम बोल नहीं सकते लिख कर दिया कि आप पढ़ा रहे हो हम पढ़ना चाहते हैं ज़बान ऐसी हो गई कि उस पर हमारा कन्ट्रोल नहीं रहा अब हम अपनी ज़बान से कलमा पढ़ने

के क़ाबिल नहीं तो उन सौ वाक़ियात में से उन्होंने कहा है कि चन्द ऐसे थे जिन्होंने कलमा पढ़ा और बाक़ी सारे के सारे बग़ैर कलमा पढ़े दुनिया से चले गए एक देहाती को कहा कि कलमा पढ़ो कहता है मेरी भैंस का चारा डाल दिया या नहीं डाला, एक को कहा कलमा पढ़ो कहता है आलू प्याज़ आलू प्याज़ वह मन्डी में काम करता था, इस तरह के वाक़ियात कि मैं कलमा याद दिलाता था और वह जो दुनिया में करते थे वही उनकी ज़बान से निकलता था, तो गुनाहों का यह कितना बड़ा वबाल है कि इंसान आख़िरी वक़्त में कलमा से महरूम कर दिया जाता है तो कबीरा गुनाहों पर इसरार करते रहना बिल आख़िर ईमान के सलब होने का ज़रीआ बन जाता है, मुस्तहब की हिफ़ाज़त करेंगे सुन्नत की हिफ़ाज़त खुद हो जाएगी, सुन्न्त की पाबन्दी करेंगे वाजिब खुद बखुद अदा हो जाएगी वाजिब की पाबन्दी करेंगे फ़र्ज़ खुद बखुद अदा हो जाएगी, तो जो इंसान कबीरा को बे धड़क कर लेता हो तो फिर उसके असरात में से यह है कि मौत के वक़्त उसके लिए कलमा पढ़ना मुश्किल हो जाता है, किताबों में लिखा है उलमा ने कि आख़िरी वक़्त में शैतान पूरा ज़ोर लगा देता है।

नुकता की बात

अब मेरे दोस्तो ज़रा एक नुकता समझना, हम अपने बारे में सोचें कि जब जीते जागते होश व हवास में शैतान हमें बहका देता है तो मौत के वक़्त जब होश भी पूरे नहीं होंगे , पता नहीं फिर उस वक़्त हमारा क्या हाल होगा इसलिए हुस्ने ख़ातमा का ग़म बहुत बड़ा है, हर वक़्त उसके लिए मुतफ़क्किर रहे कि आख़िरी वक़्त में कलमा नसीब हो जाए ऐसा न हो कि महरूम कर दिए जायें इमाम अहमद बिन हंबल इतनी अज़ीम शख़्सियत आख़िरी वक़्त में तलबा ने तलक़ीन की पढ़ना शुरू किया لا اله الا الله तो इमाम साहब कहते لا फ़िर फ़रमाया لا फ़िर कहा ला لا तलबा हैरान हम कलमा पढ़ रहे हैं और इमाम साहब कलमा पढ़ने के

बजाए सिर्फ़ لا कह रहे हैं यह क्या बला अल्लाह की शान उनकी तबीअत संभल गई तो जब संभल गई तो शागिर्दों ने पूछा हज़रत यह आप फ़क़त لا का लफ़्ज़ क्यों कह रहे थे फ़रमाने लगे उस वक़्त शैतान मेरे सामने आया और कहने लगा अहमद बिन हंबल तू ईमान बचा कर दुनिया से चला गया मैं उस मरदूद को कह रहा था لا नहीं नहीं जब तक मेरे जिस्म से सांस निकल नहीं जाती मरदूद मैं उस वक़्त तक तेरे मक्र से अमन में नहीं अब वह अहमद बिन हंबल" जिन के बारे में हज़रत शैखुल हदीस" ने लिखा है कि उनको सौ मर्तबा ख़्वाब में अल्लाह तआला का दीदार नसीब हुआ, जिन को अल्लाह तआला का दीदार हुआ जो मुहद्दिस भी हैं फ़क़ीह भी हैं इतने बड़े आलिम हैं कि उन्होंने कुरआन मजीद की ख़ातिर ऐसी ऐसी कुरबानियां दीं कि तारीख़ में ऐसी कुरबानी की मिसाल नहीं मिलती, इतनी इस्तिक़ामत वाले अगर मौत के वक़्त शैतान उन पर भी इतना पुर ज़ोर हमला करता है तो मेरे दोस्तो हम सोचें कि फिर आख़िर वक़्त में हमारा क्या हाल होगा? यह मामूली बात नहीं है, यह बहुत बड़ी बात है, अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिए अल्लाह से माफ़ी मांगनी चाहिए।

नेकी का असर

जब नेकी करेंगे अल्लाह की रहमत होगी चुनांचे जो आदमी पाबन्दी के साथ मिस्वाक करे हदीस पाक में आता है कि पाबन्दी से मिस्वाक करने की वजह से बरकत होती है कि मल्कुल मौत आते हैं और शैतान को मार कर उस बन्दे से दूर भगा देते हैं और बन्दे को कलमा याद दिला देते हैं ताकि वह अपनी रूह क़ब्ज़ होने से पहले कलमा पढ़ लें हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि जो आदमी अकसर ज़िन्दगी में बा वुज़ू रहने की कोशिश करे, फ़रमाते हैं कि हमारा तजर्बा है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस अमल की बर्कत से उसको कलमा पर मौत अता फ़रमाते हैं।

हज़रत मौलाना अहमद अली" का क़ौल

मौलाना अहमद अली लाहौरी" फ़रमाते थे कि बन्दा कितने ही काम में मशगूल क्यों न हो अगर अज़ान हो जाए तो अल्लाह तआला की अज़मत की वजह से वह उस काम को छोड़ दे और अज़ान का जवाब दे फिर मस्नून दुआ पढ़े तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के नाम की अज़मत की वजहं से हज़रत यह फ़रमाया करते थे कि मेरा यह मुशाहिदा है अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को कलमा पर मौत अता फ़रमाते हैं तो भाई कलमा पर मौत अता हो जाना (من كان آخر كلامه لا اله الا الله دخل الجنة) जन्नत में दाख़िल हो गया तो हम अल्लाह तआला से यह दुआ हमेशा मांगा करें, तनहाईयों में अल्लाह तआला के हुज़ूर दामन फैला कर, ऐ मालिक! आख़िरी वक़्त में हमारी मदद फ़रमा देना शैतान के मुक़ाबले में, और अल्लाह हमें ईमान पर मौत अता फ़रमा देना, तो गुनाहों का वबाल कलमा से महरूमी होता है और किताबों में लिखा है कि यह उस वक़्त कभी बाप की शक्ल में आता है कभी मां की शक्ल में कभी दोस्त की शक्ल में, जिस से ज़्यादा तअल्लुक़ होता है उसकी शक्ल में आता है और आकर कहता है कि देखो बेटा हमारी बात मानो हम से ज़्यादा तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह कोई नहीं तो शक में डाल देता है दीन के बारे में अल्लाह तआला के बारे में फिर बन्दा ईमान से महरूम हो जाता है, तो इसलिए कबीरा गुनाहों से सच्ची तौबा करना यह इन्तिहाई ज़रूरी है वगरना उसके दुनिया के अगर आप नुक़सान देखें तो उनको देख कर ही दिल से आवाज़ निकलती है कि इंसान को चाहिए कि सब गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें, यह दुनिया के अज़ाब हैं ﴿كذالك العذاب ولعذاب الاخرة اكبر﴾ यह तो दुनिया के मसले हैं, जो बताए गए आगे के मसले तो फिर उससे भी बड़े हैं तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें अल्लाह तआला आख़िरी वक़्त में कलमा पढ़ कर दुनिया से जाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين

﴿مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءً ا يُّجْزَبِه﴾

गुनाहों के आख़िरत में नुक़सानात

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल फ़क़ार अहमद दामत बरकातहुम (नक़्शबन्दी मुजद्दिदी)

दर हालत ऐतकाफ़ मस्जिद नूर लोसाका ज़ामबिया

﴿बाद नमाज़े इशा 2003 ई0﴾

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

अल्लाह तआला की ज़मीन यह वीडियो कैमरा है इसकी पीठ पर क्या हो रहा है वह महफ़ूज़ हो रहा है, जिस ने सज्दे किए वह भी महफ़ूज़, जिसने गुनाह किए वह भी महफ़ूज़ और क़ियामत के दिन फिर यह अपनी ख़बरें नश्र करेगी, अल्लाह तआला के हुज़ूर अपनी रिपोर्ट पेश करेगी, इसलिए जब नेक आदमी दुनिया से फ़ौत होता है तो ज़मीन के वह टुकड़े रोते हैं जहां वह बैठ कर अल्लाह तआला की इबादत किया करता था, आसमान भी रोता है ज़मीन भी रोती है

﴾हज़रत पीर जुल फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी मद्दा ज़िल्लहु﴿

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيۡنَ اصۡطَفٰى اما بعد .....!

اَعُوۡذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطَانِ الرَّجِيۡمِ ۔ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ۔

﴿مَنۡ يَّعۡمَلۡ سُوۡءًا يُّجۡزَبِه﴾

سُبۡحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ وَ سَلَامٌ عَلٰى الۡمُرۡسَلِيۡنَ وَ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعَالَمِيۡنَ

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَ سَلِّمۡ

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَسَلِّم

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَ سَلِّم

क़ानून जज़ा व सज़ा

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है

इंसान जैसा अमल करता है वैसा उसके साथ अल्लाह तआला का मामला होता है, नेक अमल करेगा तो अज्र व सवाब का मुस्तहिक़ बनेगा, गुनाह करेगा तो सज़ा का मुस्तहिक़ बनेगा, उसको क़ानून जज़ा व सज़ा कहते हैं, यह अहकमुल हाकिमीन का बनाया हुआ एक निज़ाम है इसी लिए इंसान दुनिया में जो करता है उसका रिकार्ड तैयार हो रहा है, दुनिया वाले विडियो फ़िल्म बनाते हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़रिश्ते उसके नामए आमाल में उसका पूरा रिकार्ड लिख रहे हैं, और अल्लह तआला की ज़मीन उस बन्दे की सारी ज़िन्दगी के मनाज़िर को महफ़ूज़ कर रही है, आज कल विडियो कैमरे भी तो ऐसे ही हैं छोटे से होते हैं दूर से देख कर मन्ज़र को कैच कर लेते हैं, तो यह अल्लाह तआला की ज़मीन यह वीडियो कैमरा है इसकी पीठ पर क्या हो रहा है वह महफ़ूज़ और क़ियामत के दिन फिर यह अपनी ख़बरें नश्र करेगी, अल्लाह तआला के हुज़ूर अपनी रिपोर्ट पेश करेगी, इसलिए जब नेक

आदमी दुनिया में फ़ौत होता है तो ज़मीन के वह टुकड़े रोते हैं जहां वह बैठ कर अल्लाह तआला की इबादत किया करता था, आसमान भी रोता है ज़मीन भी रोती है।

हज़रत सअद رضي الله عنه की वफ़ात

हज़रत सअद رضي الله عنه की वफ़ात हुई नबी ﷺ उनके जनाज़े के पीछे पन्जों के बल चल रहे थे सहाबा ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब हम ने तो कभी ऐसे चलते हुए नहीं देखा? फ़रमाया इतने फ़रिश्ते सअद की नमाज़े जनाज़ा में शिरकत के लिए उतरे कि मुझे पावं रखने की जगह नहीं मिल रही थी फिर उनको दफ़न करने के बाद नबी ﷺ ने फ़रमाया कि सअद की मौत पर अल्लाह तआला का अर्श भी तीन दिन तक रोता रहा, तो नेक लोगों की जुदाई पर आसमान और ज़मीन रोते हैं और बुरा बन्दा उसके लिए ज़मीन कहती है जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे सबसे ज्यादा अदावत मुझे तुझ से थी आज तू मेरे काबू में आया है, देख मैं तेरा क्या हश्र करती हूं, इसी लिए अल्लाह तआला ने नाफ़रमान जिन्नों और इंसानों को ज़मीन का बोझ कहा ﴿سنفرغ لكم ايها الثقلان﴾ "ओ मेरी ज़मीन के बोझो, हम अपने आप को तुम्हारे लिए अन्करीब फ़ारिग़ कर रहे हैं" यह ऐसा ही है जैसे मां धमकाती है बच्चे को कि मैं अभी आती हूं उसका यह मतलब नहीं कि वह आ नहीं सकती तंबीह मक़सूद है तो हम अपने आप को फ़ारिग़ करते हैं, तुम्हारे लिए यह तंबीह मक़सूद है कि तुम कब तक मन मानी करोगे, बकरे की मां कब तक ख़ैर मनाएगी, हम तो गढ़े की मछली से भी गए गुज़रे हैं गढ़े की मछली को पकड़ने में भी कुछ वक़्त लगता है हमें तो पकड़ने में इतना भी वक़्त नहीं लगता, इसलिए फ़रमाया ﴿يا معشر الجن والانس ان استطعتم ان تنفذوا من اقطار السموات والارض فانفذوا لا تنفذون الا بسلطان﴾ ऐ इंसान और जिन्नात की जमाअत! अगर तुम ज़मीन व आसमान के कुर्रों से बाहर निकल सकते हो तो

ज़रा निकल कर दिखाओ, निकलोगे किसी दलील से निकलोगे, तुम कहां जा सकते हो, इसलिए अच्छा इंसान वही है जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाफ़रमानी से बचे नाफ़रमानियों का कुछ असर तो इसी दुनिया में ज़ाहिर होता है, वह हमने मुस्तक़िल दो दिनों में सुना कि गुनाहों की वजह से इंसान की ज़िन्दगी में क्या क्या मुसीबतें और परेशानियां आती हैं आज यह देखेंगे कि इन गुनाहों का आख़िरत में मामला क्या होगा?

जैसी करनी वैसी भरनी

एक मोटा सा उसूल यह है कि जैसा गुनाह होगा वैसी उसकी सज़ा होगी, जैसी इबादत वैसा उसका इनाम, इसकी दलील सुनिए कुरआन मजीद से कि जो लोग रातों को जागते हैं तहज्जुद पढ़ते हैं, शब ज़िन्दा दार होते हैं रात के आख़िरी पहर में रब के सामने मुनाजात करते हैं, वह अपनी नींद कुरबान करते हैं उनकी आंखें नींद को तरसती हैं काम काज की वजह से थके हुए होते हैं, नींद ग़ालिब होती है अपने आप पर जब्र करके ज़बर्दस्ती अपने आप को उस वक़्त जगाते हैं और अल्लाह तआला के हुज़ूर नमाज़ पढ़ते हैं उनके लिए अल्लाह तआला ने जन्नत में बहुत इनाम तैयार कर रखा है लेकिन जहां इनाम तैयार करने का तज़किरा वहां यह नहीं कहा कि उन लोगों के दिलों के सुकून के लिए हम ने क्या बना रखा है उनकी लज़्ज़त के लिए हम ने क्या बना रखा है बल्कि यूं फ़रमाया ﴿فلا تعلم نفس ما اخفى لهم من قرة اعين﴾ कोई यह नहीं जानता उनकी आंखों की ठंढक के लिए हम ने क्या तैयार कर रखा है तो आंखों का तज़किरा किया इसलिए कि कुरबानी आंखों की होती है नींद भरी होती है, तकना मुश्किल होता है अपने आप को जगाते हैं वरना तो कह सकते थे कि दिल के सुकून के लिए वहां बहुत कुछ है बदन की लज़्ज़त के लिए भी वहां बहुत कुछ है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुछ भी फ़रमा सकते थे मगर नहीं जैसी इबादत

वैसा अज्र चूंकि इबादत करने में आंखें जागीं, इसलिए अल्लाह तआला ने वह नेमतें तैयार फ़रमाईं कि जिनके बारे में फ़रमाया कि उनको देख कर उनकी आंखें ठंढी हो जायेंगी तो जैसा अमल वैसा अज्र जैसा गुनाह वैसी सज़ा यह अल्लाह तआला का एक बनाया हुआ निज़ाम है।

दुनिया आख़िरत की खेती

एक तो यह दुनिया है ना एक क़ब्र की ज़िन्दगी जिसको आलमे बरज़ख कहते हैं और एक हश्र का दिन जिसको आलमे आख़िरत कहते हैं अब देखिए कि यह जो टेप रिकार्डर होता है उसमें एक तो आवाज़ होती है दूसरा होता है आवाज़ का टेप रिकार्ड के अन्दर महफ़ूज़ हो जाना और तीसरा होता है कि टेप को चालू करके आवाज़ का दोबारा सुनना, यही मिसाल तीनों जहान की भी है इस ज़िन्दगी की मिसाल आवाज़ के मानिन्द है, बरज़ख़ की मिसाल आवाज़ के टेप महफ़ूज़ हो जाने की है, और आख़िरत की मिसाल उसके सुनाए जाने की है, अल्लाह तआला उसी को री–प्ले कर देगा, आज नहीं देखते कि जो खिलाड़ी खेल खेलता है कैसी शार्ट लगाई उसको री–प्ले करके दिखाते हैं स्पीड भी कन्ट्रोल करते हैं ज़रा आहिस्ता री–प्ले करके दिखाते हैं ऐक्शन का पता चलता है तो अल्लाह रब्बुल इज्ज़त भी क़ियामत के दिन उसको री–प्ले करके दिखाएंगे यह जो कहा जाएगा न ﴿اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا﴾ पढ़ अपना नामए आमाल उसका मतलब यही है तू ज़रा आकर देख, जैसे किसी बन्दे ने चोरी की हो तो फिर उस बन्दे को वीडियो कैमरे पर दिखाते हैं कि देख, फिर किसी और सबूत की ज़रूरत नहीं होती वह तस्लीम कर लेता है, इसी तरह इंसान के सामने उसकी ज़िन्दगी को री–प्ले कर दिया जाएगा, किसी सबूत की ज़रूरत ही नहीं होगी, ﴿يومئذ لا يسئل عن ذنبه انس و لا جان﴾ देखा कुरआन कैसी सच्ची सच्ची गवाहियां दे रहा है "वह ऐसा दिन होगा किसी इंसान और जिन्नात से

उसके गुनाह के बारे में पूछा ही नहीं जाएगा" क्यों? ﴿يعرف المجرمون بسيماهم﴾ वह अपने चेहरों से ही पहचान लिए जायेंगे ﴿فيؤخذ بالنواصي والاقدام﴾ बालों से पकड़ेंगे और पावं में उनके बेड़िया डाल दी जायेंगी, इसलिए फ़रमाया (الدنيا مزرعة الآخرة) दुनिया आख़िरत की खेती है जो बोयेंगे वही काटेंगे

गन्दुम अज़ गन्दुम बरवीद जोज़ जौ
अज़ मुकाफ़ाते अमल ग़ाफ़िल मशौ

जो गन्दुम बोता है वह गन्दुम काटता है जो जौ बोता है वह जौ काटता है आज जो बोयेंगे कल वही काटेंगे, कभी नहीं होता कि केकर बोयें और सेब लग जायें हम अगर गुनाह के आज पौधे बोयेंगे तो क़ियामत के दिन कल नेकियों के फल नहीं काट सकते इसलिए फ़रमाया ﴿فمن يعمل مثقال ذرة خير ايره﴾ जिसने ज़र्रा के बराबर भी ख़ैर का अमल किया होगा वह भी उसको वहां पाएगा और जिसने ज़र्रा के बराबर भी शर का अमल किया होगा वह भी उसको पाएगा और यह बात समझ में आती है देखें आप को एक मिसाल से समझायें, साइंस ने इस वक़्त ऐसे स्टार (सितारे) ढूंढ लिए हैं जो ज़मीन से तीन सौ साल नूरी साल के फ़ासला पर हैं, "नूरी साल" एक पैमाना है जैसे मीटर, मील, किलो मीटर, रौशनी एक साल के अन्दर जितना फ़ासला तय करती है उसको "नूरी साल" कहते हैं अब जब एक सिकंड के अन्दर लाखों मील कर जाती है तो फिर एक साल में कितना करती होगी तो ऐसे सितारे ढूंढ लिए हैं साइंसदानों ने जो ज़मीन से तीन सौ साल के फ़ासला पर हैं मगर फ़र्क़ क्या है फ़र्क़ यह है कि इस सितारे से जो रौशनी चली थी उसको ज़मीन में आने पर तीन सौ साल लग गए तीन सौ साल पहले चली थी, आज ज़मीन पर आई और आज ही वह नज़र आने लगा क्या मतलब? कि आज अगर यह महफ़िल यहां मौजूद है तो यह लाइट रेफ़्लेक्ट होकर अगर ऊपर जाए तो उस सितारे पर उसे पहुंचने में तीन सौ साल लगेंगे यानी अगर वहां कोई बन्दा बैठा

देख रहा हो तो तीन सौ साल के बाद वह देखेगा कि मस्जिदे नूर के अन्दर यह महफ़िल सजी हुई है, अब इसका यह मतलब हुआ कि आज अगर कोई बन्दा वहां पर बैठा हो तो आज से तीन सौ साल पहले ज़मीन पर जो कुछ हुआ वह उसको आज नज़र आ रहा होगा, तो अगर यह तीन सौ साल बाद नज़र आ सकता है तो उसी किलोज़ सरकिट को अल्लाह तआला ऐसा कर देंगे कि क़ियामत के दिन सब की लाइफ़ जिन्दगी) उनके सामने होगी तो अपनी ज़िन्दगी का री-प्ले खुद देखेंगे कि नहीं देखेंगे, अपनी आंखों से सब कुछ देखेंगे कह नहीं सकेंगे कि यह झूठ है।

आलमे रूया में आलमे बाला की सैर

नबी ﷺ की आदते मुबारका थी कि फ़जर की नमाज़ के बाद तशरीफ़ रखते तो सहाबा किराम से पूछते कि भई किसी ने ख़्वाब देखा तो नबी ﷺ कभी खुद भी ख़्वाब देखते तो आप बताया करते थे अंबियाए किराम के ख़्वाब भी सच्चे होते हैं एक मर्तबा नबी ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने ख्वाब देखा एक शख़्स लेटा हुआ है और दूसरा शख़्स उसका सर पत्थर से कुचल रहा है फिर एक और शख़्स को देखा कि वह भी सीधा लेटा हुआ है और दूसरा शख़्स एक ज़ंबूर से चाकू से उसके चेहरे के एक तरफ़ से चीरता है और अभी वह ठीक नहीं होता कि फिर दूसरी तरफ से चीरता है, फिर मैंने एक आग का एक तन्नूर देखा उसमें बहुत सारे मर्द और औरत जल रहे थे मगर सब के सब नंगे थे, उससे आगे मैंने एक खून की नहर देखी उसमें एक आदमी डुबकियां खा रहा है तैर रहा है किनारे पर आना चाहता है जब वह क़रीब आता है तो एक आदमी पत्थर उसके सर पर दे मारता है सर पर पत्थर लगते ही वह पीछे चला जाता है और फिर डुबकियां खाता हुआ फिर आने लगता है फिर यह पत्थर मारता है, आगे एक जगह बहुत ज़्यादा आग देखी मैंने देखा एक शख़्स है जिसकी शक्ल बहुत

डरावनी है देख कर बन्दे को डर लगे ऐसी डरावनी शक्ल कभी देखी नहीं, वह आग जला रहा है और आग के गिर्द घूम रहा है, उसके चेहरे पर कोई हमदर्दी का निशान नहीं अजनबिय्यत है, जब उससे आगे गए तो मैंने देखा कि एक बहुत बड़ा बाग़ है उसमें एक लम्बे क़द का आदमी है जिस के गिर्द बहुत सारे बच्चे बैठे हुए हैं, फिर आगे जाकर देखा बहुत ऊंचे और खूबसूरत दरख़्त को देखा तो जो दो शख़्स मुझे दिखा रहे थे वह कहने लगे इस दरख़्त पर चढ़ जाइए मैं दरख़्त पर चढ़ा तो चढ़ते चढ़ते ऊपर जाकर मैंने एक शहर आबाद देखा ऐसा शहर कि जिस के मकान की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों से बनी हुई थीं शहर के दरवाज़े पर पहुंचे तो उसे खोला गया अन्दर चन्द आदमी मिले एक का बदन आधा खूबसूरत है और आधा जला हुआ है, तो जो ले जा रहे थे उन्होंने उसको कहा कि मियां तुम गुस्ल कर लो उन्होंने गुस्ल किया तो उनका जला हुआ हिस्सा भी ठीक हो गया ऊपर देखा तो सफ़ेद बादल की तरह एक महल नज़र आया मैंने पूछा यह क्या है उन्होंने कहा "जन्नते अदन" है और वह देखो कि वह तुम्हारा घर है, मैंने अपना घर देखना चाहा तो उन्होंने कहा कि अभी वक़्त नहीं आया, आप इसमें कुछ अर्सा के बाद जायेंगे फ़रमाते हैं मैंने उनसे पूछा भई यह सारे मनज़र मैंने क्या देखे? तो उन्होंने कहा कि :

☆ जिस बन्दे को आप ने सबसे पहले देखा कि लेटा हुआ है और उसका सर पत्थर से कुचला जा रहा है यह वह बन्दा था कि जो सुबह को सोया रहता था और नमाज़ को क़ज़ा कर देत था इसलिए उसके सर को कुचला जाता है।

☆ दूसरे जिस शख़्स को आपने देखा कि उसके रूख़सार को चीरा जा रहा है यह झूठ बोलने वाला इंसान था और एक फ़रिश्ता उसके मुंह को चीरता था इसलिए कि यह झूठ बोलता था

☆ तीसरे जिस बन्दे को देखा कि वह खून की नहर में है यह सूद खाने वाला बन्दा था जो डुबकियां ले रहा था और दूसरा बन्दा उसके

सर पर पत्थर मार रहा था उसको सज़ा देने के लिए।

☆ फिर आगे आपने जिसको देखा कि वह आग जला रहा है तो वह जहन्नम का दारोग़ा "मालिक" था जो फरिश्ता है और जब से वह पैदा हुआ और जहन्नम पर उसकी डयूटी लगी है वह कभी हंसा नहीं है, इसलिए आपने उसके चेहरे के ऊपर बहुत हैबत देखी।

☆ आगे जो आपने बाग़ देखा तो वह जहन्नम थी

☆ लम्बे क़द के आदमी को देखा वह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عليه السلام थे

☆ बच्चों को जो देखा तो वह ईमान वालों की छोटी छोटी औलाद जो बचपन में फ़ौत हो गए उनके गिर्द बैठे हुए थे।

☆ यह जो शहर आपने देखा यह जन्नते अदन था

☆ और महल जो देखा यह आपका है मगर आप इसमें कुछ अर्सा के बाद दाख़िल होंगे तो मैंने पूछा वह जो ख़ूबसूरत बदन वाले और आधे जले हुए वह कौन थे तो बताया गया कि यह आपकी उम्मत के गुनहगार बन्दे होंगे यह पुल सिरात से गुज़रेंगे तो उनके जिस्म के कुछ हिस्सा को जहन्नम की आग जलाएगी तो यह नहरे हयात है जब यह उसमें गुस्ल कर लेंगे तो अल्लाह तआला उनके जिस्मों को फिर सलामत फ़रमा देंगे नबी ﷺ ने गो उस ज़िन्दगी के नमूना को ख़्वाब में भी देखा मेराज में भी देखा।

गुनाह और सज़ा में मुनासिबत

ज़कात न देने वाला

चुनांचे नबी ﷺ ने मेराज में देखा कि एक आदमी होगा सोने और चांदी की बनी हुई गरज़ें होंगी और फ़रिशते उनको जहन्नम की आग के अन्दर गर्म करेंगे और उनकी पेशानियों पर उनके पहलुओं पर और उनकी पीठ के ऊपर दाग़ लगा रहे होंगे, यह कौन लोग होंगे? यह वह लोग होंगे जो दुनिया में ज़कात नहीं दिया करते थे, सज़ा में और गुनाह में एक मुनासिबत अल्लाह ने रखी हुई है चुनांचे पेशानी से शुरू

करेंगे कि ज़कात अदा करने में उसकी पेशानी पर शिकन आती थी।

अहद तोड़ने वाला

फिर आपﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने एक बन्दे को देखा जो खड़ा था दूसरा एक बन्दा आया उसने उसको रूकु में झुकाया और उसकी गर्दन के अन्दर एक गुर्ज़ गाड़ दिया जिसके ऊपर झंडा बना हुआ था फ़रमाते हैं मैंने उसे देखा बड़ी तकलीफ़ की हालत में था, पूछा कौन था? तो बताया गया यह अहद तोड़ने वाला वादा खिलाफ़, ज़बान से फिर जाने वाला शख़्स था, कई लोग कारोबार में ज़बान दे कर फिर जाते हैं तो उसकी पीठ के अन्दर गुर्ज़ इसलिए गाड़ा कि फिर जाने वाला असल में दूसरे की पीठ में छुरा घोंपता है दूसरे को धोका देता है इसलिए उसको सज़ा ऐसी दी जा रही है।

चोरी की सज़ा

एक आदमी को देखा कि कुछ सोना चांदी की क़िस्म की चीज़ थी वह जहन्नम की आग में गर्म हुई और उछली और उस बन्दे के साथ आकर चिपक गई जैसे बदन पर कोई चीज़ आकर लग जाती है, पूछा यह क्या था? जवाब दिया यह चोर था जो माल चुराता था उस माल को जहन्नम में गर्म करके उसके जिस्म के साथ लगा दिया।

चुनांचे ग़ीबत करने वाले बन्दे की मिसाल जैसे कोई मुर्दार है और उस मुर्दार का यह आदमी गोश्त खा रहा है।

ना–इंसाफ़ी करने वाला

क़ियामत के दिन एक आदमी फ़ालिज ज़दा हालत में उठाया जाएगा एक तरफ़ के हाथ और पावं नाकारा होंगे, वह तवाज़ुन बरक़रार नहीं रख सकेगा, खड़ा होगा गिर जाएगा, फिर खड़ा होगा फिर गिर जाएगा, पूछा गया कि यह कौन? बताया जाएगा कि जो दुनिया में इंसाफ न करने वाला था इस हालत में उसको खड़ा किया गया बच्चों में इंसाफ न करना, लोगों में इंसाफ न करना, दो बीवियां हैं दोनों में इंसाफ न

करना, ना इंसाफ़ी करने वाला बन्दा वह क़ियामत के दिन इस हालत में होगा।

मुतकब्बिर बन्दा

जो बन्दा दुनिया के अन्दर मुतकब्बिर बनता होगा ऊंचे बोल बोलता होगा उसको अल्लाह तआला क़ियामत के दिन चयूंटी जैसी जसामत अता करेंगे क्यों? ताकि यह चले और दूसरे लोग अपने पावं के नीचे उसको मसल मसल कर जायें अल्लाह तआला उसको लोगों के पावं में पामाल करेंगे उसके गुरूर और तकब्बुर को तोड़ने के लिए अल्लाह तआला दिखायेंगे देख हम तेरा दिमाग़ कैसे सीधा करते हैं, कभी दुनिया में तकब्बुर करने वाले के सर पर जूते लगवाते हैं वाह मेरे मौला तेरे लशकर भी बड़े अजीब हैं नमरूद की नाक में एक लंगड़ा मच्छर अन्दर चला गया था अब नमरूद साहब को जो मिलने आता था वह सलूट मारने की बजाए जूता सर में मारता था यूं अल्लाह तआला बन्दे के तकब्बुर को तोड़ देते हैं।

ऐब गो व ऐब जू

एक आदमी होगा जिसको जहन्नम के अन्दर आग के बने हुए एक सुतून के साथा बांध दिया जाएगा यह कौन होगा? यह वह बन्दा होगा जो दुनिया में दूसरों के ऐब ढूंढता था और लोगों को ऐब बताया करता था यह दो अलग अलग गुनाह हैं एक को कहते हैं ऐब गो और दूसरे को कहते हैं ऐब जू, ऐब को तलाश करने वाला, जिसने खुर्दबीन फ़िट की हुई होती है ढूंढ रहा होता है इसमें क्या? उसमें क्या और कुछ ऐसे होते है बस उनके कान में कुछ पड़ जाए तो वह उसको लोगों तक फैला देते हैं किसी की इज़्ज़त का ज़रा ख़्याल नहीं रखते, तो यह दो अलग अलग गुनाह और कुछ ऐसे होते हैं जिन में दोनों गुनाह होते हैं ऐब जू भी होते हैं ऐब गो भी होते हैं, अब चूंकि यह लोगों के दिल दुखाते हैं उनकी रूसवाई करके इसलिए उनको सज़ा भी वैसी दी जा

रही है पहले तो उनको आग के सुतून के साथ बांध देंगे ﴿نار الله الموقدة التى تطلع على الافئدة﴾ फिर अल्लाह की जलाई हुई आग जो उनके दिल को निशाना बनाएगी जैसा कि आज कल लेज़र गाइडेड राकिट होते हैं उनमें प्रोग्राम भरा हुआ है उड़ते हैं सीधे निशाने पर जाते हैं यह खुदाई राकिट है, एक एक शोला उठेगा और सीधा उस बन्दे के दिल को निशाना बनाएगा क्यों? इसलिए कि उसका हर बोल दूसरों के दिल जलाता था, आज हर उठने वाला शोला उसके दिल को तकलीफ़ पहुंचाएगा जैसा गुनाह वैसा सज़ा में रब्त है।

शहवत परस्त की सज़ा

जिस बन्दे के दिमाग़ में हर वक़्त ही गन्दी सोचें शैतानी शहवानी हर वक़्त दिमाग़ में रहती होंगी जहन्नम में जब उसको डालेंगे तो उसके सर पर गर्म पानी डालेंगे ﴿يصب من فوق رئووسهم الحميم﴾ "उसके सर पर खौलता हुआ पानी डालेंगे" तेरे दिमाग़ में भुस भरा था, तेरी खोपड़ी को अब सीधा करते हैं तो जैसा गुनाह वैसी ही उसकी सज़ा अब इससे आप खुद समझ लीजिए कि हम दुनिया में जो गुनाह करेंगे कुछ सज़ा तो इसी दुनिया में मिलेगी और बक़िया सज़ा फिर आख़िरत में मिलेगी जैसा गुनाह होगा वैसी सज़ा होगी।

ज़िना की सज़ा

एक गुनाह की ज़रा तफ़सील आप के सामने खोलते हैं इस आजिज़ को किताब लिखने की ज़रूरत पेश आई "हया और पाकदामनी" उसके एक बाब में हमें ज़िना की सज़ा अहादीस की रौशनी में क्या होगी उसको ढूंढना पड़ा हमने बिला शुबहा सैंकड़ों अहादीस ढूंढ लीं तो कुदरतन हमने इसकी एक तरतीब बनाई कि इसकी सज़ा दुनिया में क्या है आख़िरत में क्या है? चूंकि नौजवानों का मजमा है और यह गुनाह वैसे भी आम हैं इसलिए यह मिसाल आज की इस महफ़िल के लिए ज़्यादा मोज़ू है, तो यह आएगी तो इस किताब में मगर आप से

मौक़ा की मुनासिबत से ज़रा उसकी तफ़सील कर देनी ज़्यादा ज़रूरी है ताकि बात खुल जाए कि जैसा गुनाह वैसी सज़ा अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿بئس ما قدمت لهم انفسهم ان سخط الله عليهم وفى العذاب هم خالدون﴾ "उन पर अल्लाह का गुस्सा होगा हमेशा हमेशा अज़ाब में रहेंगे" अब ज़ाहिर देखने में अजीब सी बात लगती है कि भई ज़िना क्या यह तो महदूद वक़्त का गुनाह है और हमेश हमेशा की सज़ा? इसमें क्या मनासिबत है? जी इसमें मुनासिबत है पहली बात तो यह कि

दुनिया में इसके तीन नुक़्सानात होते हैं

(1)...... एक नुक़सान यह कि चेहरे की रौनक़ ख़त्म हो जाती है चुनांचे ज़ानी इंसान के चेहरे के ऊपर नूर नहीं रहता वहशत सी रहती है।

(2)......दूसरी बात इंसान के रिज़्क़ में तंगी आ जाती है रिज़्क़ हलाल में हराम की बात नहीं हराम तो जहन्नम में जाने का सबब है रिज़्क़ हलाल में तंगी आ जाती है।

(3)......और तीसरा इससे बन्दे की इफ़ेक्टिव उम्र घट जाती है, जवानी में बूढ़ा हो जाता है जैसे बाज़ नौजवान अभी तीस साल उम्र नहीं होती कहते हैं जी कमर में दर्द रहता है तीस साल की उम्र बूढ़ों की तरह फिर रहे होते हैं

आख़िरत के नुक़सान

(1)...... कि उस बन्दे का हिसाब सख़्त लिया जाएगा

(2)...... अल्लाह तआला उससे नाराज़ होंगे

(3)...... और वह हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेगा, अब इस हमेशा हमेश से मुराद यह कि इतना लम्बा रहेगा कि यूं महसूस होगा हमेशा हमेश यहां रहना है, इतना लम्बा अर्सा अज़ाब होगा, अब उसकी सज़ा जो अहादीस में बताई गई ज़रा वह सुन लीजिए जैसा गुनाह वैसी सज़ा सबसे पहली बात कि यह आदमी दुनिया में गैर महरम के लिए अपना

चेहरा सजाता था औरत है तो वह मर्द के लिए सजाती है, मर्द हो तो वह औरत के लिए सजाता है क्योंकि यह एक दूसरे के लिए चेहरे को सजाते थे लिहाज़ा क़ियामत के दिन उनको कुछ अलामती सज़ायें मिलेंगी :

☆ पहली सज़ा यह मिलेगी कि यह अल्लाह के सामने सियाह चेहरों के साथ उठाए जायेंगे ﴿وهم فيها كالحون﴾ जहन्नम में भी चेहरे काले क़ियामत के दिन भी काले तो सब से पहला गुनाह जिस दिन﴿يوم تبيض وجوه وتسود وجوه﴾ " जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ चेहरे सियाह होंगे तो यह जहन्नमी उस दिन सियाह चेहरे के साथ अल्लाह तआला के सामने खड़े हो जायेंगे

☆ दूसरी निशानी कि यह ग़ैर महरम के चेहरे को मुहब्बत की नज़र से देखते थे हवस की नज़र से देखते थे नतीजा क्या निकलेगा? कि क़ियामत के दिन एक तो चेहरे सियाह होंगे और दूसरे चेहरे को नोच लिया जाएगा।

☆ तीसरा यह कि दुनिया में ग़ैर महरम के चेहरे को देख कर चेहरे खिल जाते थे तअल्लुक़ जो ऐसा था उसकी सज़ा क्या मिलेगी? कि क़ियामत के दिन उनके चेहरों को ख़ास तौर पर जहन्नम की आग के अन्दर जलाया जाएगा, हदीसे पाक में यह मुस्तक़िल बात लिखी है कि जहन्नमी तो वैसे ही आग में जलेगा मगर आग उस बन्दे के चेहरे को खुसूसन जलाएगी और उसको मुशतइल कर देगी।

☆दुनिया में ग़ैर महरम के साथ दिल लगी की बातें करता था उसकी सज़ा क्या होगी? कि यह क़ियामत के दिन रोता हुआ उठेगा।

☆ दुनिया में ग़ैर महरम से मज़ाक़ किया करता था सज़ा क्या होगी? क़ियामत के दिन सर पीटता हुआ उठेगा दो अलाहदा अलाहदा सज़ायें इसलिए कि यह बातें भी करता था मज़ाक़ भी करता था दिल लगी की बाते थीं उस हंसने के बदले आज उसको रोना पड़ा।

☆ चुनांचे ग़ैर महरम से मुलाक़ात करके या देख कर उसको खुशी

होती थी नतीजा क्या होगा कि यह क़ियामत के दिन ग़म ज़दा हालत में खड़ा किया जाएगा, उधर ख़ुशी थी दुनिया में इधर ख़ुशी के बदले उसको ग़म दे दिया जाएगा।

☆ दुनिया में ग़ैर महरम के हाथों में हाथ डाले थे लिहाज़ा क़ियामत में उसके हाथों में आग की हथकड़ियां पहना दी जायेंगी।

☆ दुनिया में ग़ैर महरम की मुलाक़ात के लिए चल कर गया था, क़ियामत के दिन आग की बेड़ियां डाल दी जायेंगी।

☆ग़ैर महरम को आंखों से शहवत के साथ देखता था नतीजा क्या होगा? क़ियामत के दिन पिघला हुआ सीसा उसकी आंखों में डाला जाएगा, पिघले हुए सीसा का सुरमा उसकी आंखों में डाला जाएगा तो दुनिया में भी सुर्मा डालती थी ग़ैर महरम के लिए आज भी तेरी आंखों में सुर्मा डालते हैं मगर वह पिघला हुआ सीसा होगा।

☆ ग़ैर महरम की तरफ़ सबसे पहले चेहरे को देखता है बन्दा क़रीब होता है तो चूंकि इस अमल की इब्तिदा चेहरे को देखने से होती है लिहाज़ा क़ियामत के दिन चेहरे के बल घसीट कर जहन्नम में डाला जाएगा, दुनिया में ग़ैर महरम की गर्दन में हाथ डाले लेहाज़ा क़ियामत के दिन उसकी गर्दन में ज़ंजीर आग की बनी हुई डाल दी जाएगी, अब देखिए पांव में बेड़िया हाथों में हथकड़ियां, गले में आग की ज़ंजीर होगी।

☆ग़ैर महरम के सामने अपने पोशीदा आज़ा को खोला था नतीजा क्या होगा क़ियामत के दिन उसको तारकोल का गर्म लिबास पहना दिया जाएगा तारकोल जिससे सड़कें बनती हैं यह गर्म हो और लग जाए कहीं पर तो उस जगह को जला के रख देता है।

☆ चुनांचे दुनिया में ग़ैर महरम से उसने अपनी जिन्सी प्यास बुझाई उसकी सज़ा क्या होगी? कि यह क़ियामत के दिन प्यासी हालत में उठाया जाएगा प्यास लगी हुई होगी उसको, जिन्सी प्यास बुझाता था आज प्यासा खड़ा किया जाएगा।

☆ दुनिया में ग़ैर महरम की वजह से उसके पोशीदा आज़ा में जिंसी तूफ़ान उठते थे शहवत उभरती थी क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनकी शर्मगाहों को जहन्नम की आग में धकायेंगे।

☆ दुनिया के अन्दर ज़िना के ज़रीया उसने अपने जिस्म के अन्दर से जो शहवत वाला माद्दा निकाला था उसकी सज़ा क्या मिलेगी कि उनकी शर्मगाहों से जहन्नम में इतनी बदबूदार हवा निकलेगी कि दूसरे जहन्नमी भी तंग आ कर उन पर लानतें करेंगे।

☆ दुनिया में ग़ैर महरम के बालों में उंगलियां फेरी थीं क़ियामत के दिन बालों के ज़रीया पकड़ के उनको जहन्नम में लटका दिया जाएगा।

☆ चुनांचे बाज़ रिवायात में है कि ग़ैर महरम ने पिसतान पर हाथ लगाए ऐसी फ़ाहिशा औरत को जहन्नम में पिसतानों के बल लटका दिया जाएगा यह हदीस पाक में है ग़ैर महरम को क्यों इख़्तियार दिया इस जगह पर।

☆ चुनांचे दुनिया में ग़ैर महरम के जिस्म की महक सूंघी थी नतीजा क्या होगा कि जहन्नमी आदमी के जिस्म से बदबू आ रही होगी।

☆ ग़ैर महरम के साथ बे लिबास एक जगह पर इकट्ठे जमा हुए थे सज़ा मिलेगी जहन्नम में आग के तन्नूर में नंगे मर्द और नंगी औरतों को इकट्ठा कर दिया जाएगा।

☆ ग़ैर महरम के साथ बन्द जगहों पर मुलाक़ात होती थी, बन्द कमरे में बन्द मकान में उसकी सज़ा यह मिलेगी कि जहन्नम में एक बन्द घाटी है जिसका नाम "اثاما" है ﴿يلقون اثاما﴾ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके अन्दर उनको डाल देंगे।

☆ जब यह उस अमल के लिए जाते थे तो ख़ुश होकर दाख़िल होते थे उस जगह पर इसकी सज़ा यह मिलेगी कि जितने जहन्नमी जहन्नम में जायेंगे हदीस पाक में है सबसे ज़्यादा मायूस हालत में ज़ानी को जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा, मायूसी तारी होगी उस पर।

☆ आम तौर पर इस गुनाह की इब्तिदा बोसा से की जाती है हदीस पाक में है अल्लाह तआला उन पर ऐसे सांप मुसल्लत करेंगे जो उनके होंटों से काटना शुरू करेंगे हम हैरान हो गए हदीस पाक पढ़ते हुए ऐसा सांप मुतअय्यन करेंगे जो उनके जिस्म को होंटों से काटना शुरू करेगा।

☆ दुनिया में यह लोगों से छिप छिप कर यह अमल किया करते थे मां बाप को पता न चले बीवी को पता न चले दुनिया में लोगों से छिप छिप कर गुनाह करते थे इसकी सज़ा होगी अल्लाह तआला ज़ानी को क़ियामत के दिन सब लोगों के सामने खुले आम रूसवा करेंगे, बताया जाएगा यह ज़ानी है सब लोगों को बताया जाएगा यह मुनादी क्यों की जाएगी? दुनिया में छिप कर करते थे हम ज़रा सब के सामने खोल देते हैं, सारी मख़लूक़ के सामने बे इज़्ज़त कर देंगे।

☆ दुनिया में लोगों को झूठ बोलकर मुतमईन कर देते थे किसी को पता चल पाता था भाई को पता चल गया उसने समझाने की कोशिश की झूठ बोला नहीं नहीं बीवी को पता चल गया उसने कहने की कोशिश की कि हां तुम्हें वैसे ही वहम हो गया, तो झूठ बोलकर दुनिया में लोगों को मुतमईन करने की कोशिश करता था इसकी सज़ा क्या होगी? हदीसे पाक में आता है अल्लाह तआला उसकी ज़बान पर मुहर लगा देंगे और उसके आज़ा को कहेंगे कि तुम गवाही दो फिर उसके जिस्म के आज़ा सारे के सारे उसके गुनाह पर गवाही देंगे अल्लाह तआला मख़लूक़ के सामने उसको रूसवा करेंगे देख तुम्हारा झूठ हम ने कैसे खोला तो दुनिया में तो झूठ से हम मुतमईन कर लेते हैं लोगों को अल्लाह तआला के सामने तो झूठ नहीं चल सकेगा।

☆ दुनिया के अन्दर ग़ैर महरम के हुस्न व जमाल की तारीफ़े करते थे यह गुनाह तारीफ़ों के बग़ैर नहीं चलता तारीफ़ों से ही काम बनता है ऐसी तारीफ़ें कि दूसरे के जिस्म से गन्दी हवा भी ख़ारिज हो तो कहते हैं कि मुश्क की खुशबू आ रही है तो चूंकि ना जाइज़ तारीफ़ें करते थे

इसकी सज़ा यह मिलेगी कि क़ियामत्त के दिन उनके ऊपर जहन्नमी लोग लानतें करेंगे, वह हुस्न व जमाल की तारीफ़ों की बजाए सारे जहन्नमी लानतें बरसायेंगे।

☆ चुनांचे यह ग़ैर महरम को सलाम भेजा करते थे तुहफ़ा भेजा करते थे हदीस पाक में आता है इसकी सज़ा होगी अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको लानत के तुहफ़े आया करेंगे अल्लाह तआला भी लानत भेजेंगे।

☆ और एक अजीब बात कि यह ज़िना ऐसा जुर्म है कि हर हर अंग में इसका मज़ा इंसान महसूस करता है लिहाज़ा इसकी सज़ा यह होगी कि क़ियामत के दिन एक वादी में बिछ्छुओं को जमा फ़रमायेंगे उस बन्दे को उसमें धक्का दे दिया जाएगा वह बिच्छू उसके ऊपर इस तरह चिमटेंगे जैसे शहद के छत्ते पर शहद की मख्खियां होती हैं हर हर बिच्छू जिस्म के हर हर उज़्व के अन्दर डंक मारेगा एक एक अंग ने मज़ा पाया था आज एक एक अंग को ज़हर के साथ दर्दनाक अज़ाब दिया जाएगा।

☆ चुनांचे दुनिया में उसने ग़ैर महरम के जिस्म पर इख़्तियार पाया था तो ज़िना का मुरतकिब हुआ, उसके जिस्म पर इख़्तियार पाया इसका नतीजा क्या होगा? कि क़ियामत के दिन उस ग़ैर महरम के शौहर को अल्लाह तआला उसकी नेकियों पर इख़्तियार अता फ़रमा देंगे, चुनांचे उसके शौहर को कहेंगे तू जितना चाहता है अब इसकी नेकियों में से लेले और उस दिन कोई नेकियों को पीछे नहीं रहने देगा, लिहाज़ा अगर किसी की बीवी ने गुनाह किया तो उसका ख़ाविन्द उसके पूरे के पूरे नेक आमाल लेगा, और अपने गुनाह उसके सर के ऊपर रख देगा, उसने ग़ैर महरम पर सवारी की नतीजा क्या होगा? कि उसके शौहर के गुनाहों का बोझ उसके सर के ऊपर लाद दिया जाएगा।

☆ और एक सज़ा यह कि ग़ैर महरम से हमेशा की दोस्ती के वादे

किए हम हमेशा दोस्त रहेंगे सारी ज़िन्दगी निभायेंगे, चूंकि वादे हमेशा की दोस्ती के निभाने के थे इस निय्यत की वजह से उनको जहन्नम का हमेशा हमेश का अज़ाब दिया जाएगा। समझ में बात आई कि क्यों कहा गया कि خالدين فيها हमेशा रखेंगे जहन्नम में यह भी वादे करते थे हम हमेशा के दोस्त हैं सारी ज़िन्दगी निभायेंगे।

☆ और फिर आख़िरी सज़ा यह कि दुनिया में ग़ैर महरम से हम कलामी के मज़े लेते थे उसकी सज़ा यह मिलेगी क़ियामत के दिन अल्लाह तआला ज़ानी के साथ हम कलामी से इंकार फ़रमा देंगे अल्लाह तआला फ़रमायेंगे मैं इस बन्दे से बात ही नहीं करना चाहता इससे बड़ा अज़ाब और क्या हो सकता है कि बन्दा ऐसा गुनाह करे कि क़ियामत के दिन परवरदिगार उससे बात ही करना पसन्द न करें الله اكبر देखिए जैसा गुनाह था उसकी सज़ा बिल्कुल वैसी ही मिली।

इसी पर बाक़ियों का भी क़ियास कर लीजिए।

आलमे मिसाल और आलमे दुनिया

एक तो जिस्म हम देखते हैं यह मिसाल कहलाता है सुनिए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं ﴿وما من دآبة فى الارض ولا طائر يطير بجنا حيه الاامم امثالكم﴾ "ज़मीन पर चलने वाला कोई चौपाया नहीं और हवा में उड़ने वाला परों से कोई परिन्दा नहीं मगर यह कि उनमें उम्मतें हैं तुम्हारी मिसाल" यानी इंसानों को इनमें अपनी मिसाल मिल सकती है चौपायों में या परिन्दों में तो बातिनी तौर पर अपने अमलों की वजह से अगर नेक अमल है तो यह बातिनी तौर पर इंसान है और अगर उसके बुरे अमल हैं तो यह किसी न किसी जानवर के साथ मिसाल रखता है मुशाबिहत रखता है, मिसाल के तौर पर जिस बन्दे को या औरत को बनाओ सिंगार का चस्का ज़्यादा हो तो आलमे मिसाल में मोर के साथ उसकी तशबीह होती है, बे अमल आलिम जो जानता तो हो मानता न हो तो आलमे मिसाल में गधे की सी उसकी

मिसाल होती है, जैसे उसने बोझ लादा हुआ होता है ऐसे ही गधे ने बोझ उठाया हुआ होता है जो खुद परवर होता है अपने खाने की फ़िक्र हर वक़्त अपनी ज़ात के गिर्द धूमता है आलमे मिसाल में उसकी मिसाल मुर्ग़ी के मानिन्द होती है मुर्ग़ी में भी खुद परवरी होती है, जो कीना परवर होगा जिस के दिल में दूसरों के बारे में नफ़रत अदावत, बुग्ज़ कीना छुपा हुआ होगा यह आदमी आलमे मिसाल में ऊंट की शक्ल में नज़र आता है, जिस आदमी के अन्दर बेहयाई और फ़हाशी होगी आलमे मिसाल में उसकी शक्ल सूअर के मान्निद नज़र आएगी, चूंकि जानवरों में से सूअर ही एक ऐसा जानवर है कि जब उसकी मादा पर वक़्त आता है तो कितने ही नर होते हैं जो उसके साथ जुफ़ती करते हैं और उसको परवाह ही नहीं होती तो यह बेहयाई करने वाला बन्दा आलमे मिसाल में सुअर के मानिन्द होता है, जिस इंसान के अन्दर हिर्स और तमा बहुत हो आलमे मिसाल के अन्दर वह कुत्ते के मानिन्द नज़र आएगा, कुत्ते में तमा बहुत होती है अगर इतना बड़ा जानवर हो कि पचास कुत्ते उसके गोश्त को खा सकते हों मगर यह दूसरे को क़रीब भी नहीं आने देगा, अकेला खाना चाहेगा शेर शेर को मार तो देगा शेर को खाएगा नहीं, जानवर हम जिन्स को मार तो देता है खाता नहीं, सिवाए कुत्ते के, कुत्ता मरे हुए कुत्ते को भी खा लेता है, ऐसा हिर्स होता है और दुनियादार भी इसी तरह इसी लिए जिसमें तमा ज़्यादा होगी यह बन्दा आलमे मिसाल में कुत्ते की शक्ल में नज़र आएगा, जो बन्दा दूसरों को ईज़ा पहुंचाता हो ख़्वाह मख़्वाह दूसरों का दिल दुखाना, दिल जलाना, यह बन्दा आलमे मिसाल में सांप और बिच्छू की मानिन्द नज़र आएगा, और जिस बन्दे के अन्दर अय्यारी हो आज जिस के लिए यह खूबसूरत लफ़्ज़ है बड़ा स्मार्ट समझा जाता है तो यह मिस्टर स्मार्ट आलमे मिसाल में लोमड़ी की शक्ल में नज़र आते हैं और जो दूसरों के ऐब चुनता रहता हो ढूंढ़ता रहता हो, आलमे मिसाल में मक्खी की मानिन्द नज़र आएगा, आपने देखा यह गन्दी

मक्खी हर वक़्त गन्द ढूढ़ती है, सारे ख़ूबसूरत घर को छोड़ कर बाथरूम में, सारी खूबसूरत अच्छी जगहों को छोड़ कर टरेशकीन के ऊपर बैठी होती है, इतना ख़ूबसूरत बन्दे का जिस्म होता है उसको छोड़ के जहां फोड़ा होता है वहां बैठती है, जहां पीप होती है वहां बैठती है, तो चूंकि यह भी हर वक़्त गन्दगी की तलाश में होती है और ऐब जू भी हर वक़्त गन्द की तलाश में होता है, तो उसकी सूरते मिसाल मक्खी नज़र आती है।

महबूब का रोना

और इसी तरह इंसान को क़ियामत के दिन फिर जहन्नम के अन्दर सज़ा दी जाएगी चुनांचे अल्लामा ज़हबी ने अलकबाइर में एक हदीस लिखी है काफ़ी तफ़सील के साथ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा और सय्यदना अली करमल्लाह वज्ह नबी ﷺ को मिलने के लिए हाज़िर हुए तो क्या देखते हैं कि अल्लाह के महबूब ज़ारो क़तार रो रहे हैं, रेश मुबारक आंसुओं से तर हो चुकी तो जब इस तरह से देखा तो दोनों हैरान हो गए पूछा ऐ अल्लाह के महबूब ما يبكيك आप को क्या चीज़ रूला रही है क्यों आप रो रहे हैं? नबी ﷺ ने फ़रमाया या फ़ातिमा मैं जब मेराज पर गया था तो जहन्नम में मैंने कुछ औरतों को अज़ाब होते हुए देखा मुझे याद आ गई मेरी उम्मत की औरतों की तो मैं उनकी वजह से रो रहा हूं तो वह पूछती हैं ऐ अल्लाह के महबूब आप ने क्या देखा उन औरतों को तो नबी ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा!

बे पर्दा औरत की सज़ा

मैंने पहली औरत को देखा कि वह जहन्म के अन्दर अपने बालों के ज़रीया से लटकी हुई है उसका जिस्म जल रहा है और उसका दिमाग़ हंडिया की तरह उबल रहा है अब बताओ भई बालों से अगर किसी नौजवान को पकड़ लेना तो उसके भी आंसू आ जाते हैं औरतों के बाल

वैसे भी ज़रा लम्बे होते हैं हम ने देखा कि मासूम बच्चा भी मां के बाल खींचे तो तकलीफ़ की वजह से मां के आंसू निकल आते हैं तो जब खींचने की तकलीफ़ इतनी होती तो अगर पूरा बदन बालों पर होगा और उस पर लटकाया जाएगा तो फिर क्या बनेगा और फिर जहन्नम की आग में जलेगा आप ने देखा होगा यह रोस्ट कैसे होता है मशीन लगी होती है और आग में घूम रहा होता है मुझे तो वही मन्ज़र नज़र आता है अल्लाह तआला भी बालों के बल लटकायेंगे और नीचे से आग जला के जिस्म का रोस्ट करेंगे पूछा ऐ अल्लाह के नबी किस लिए यह सज़ा हो रही थी तो नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि यह वह औरत थी कि जो अपने बालों को कटवाती थी और बे पर्दा घूमती थी नंगे सर घूमती थी।

पर्दे में कोताही

आज कल नौजवान बच्चियों को दुपट्टे बोझल नज़र आते हैं पर्दा उनको सज़ा महसूस होता है क़ियामत के दिन अल्ला तआला बालों के ज़रीया जहन्नम में लटकाएगा ज़रा अपने हाथों से अपने बाल खींच कर बन्दा देख ले कि क्या तकलीफ़ होती है तो जिन को बन संवर के निकलने का शौक़ होता है उनके ज़ेहन में शैतान डालता है क्या होता है अभी तो उम्र थोड़ी है छोटी सी है अताउल्लाह शाह बुखारी ने देखा एक आदमी की जवानुल उम्र लड़की मगर बेपर्दा जाती थी उन्होंने उसको समझाया कि भाई बच्ची को तुम पर्दा कराओ उसने कहा जी छोटी है अभी तो मुंह से दूध की बू आती है उन्होंने कहा अच्छा भई दूध फटने से पहले ख़्याल कर लो फट गया तो कोई उसका ख़रीदार नहीं बनेगा, दूध फट भी तो जाता है।

पर्दे के तीन दर्जे

पहला दर्जा : कुरआन पाक में बताया गया ﴿وقرن فی بیوتکن﴾ यह चहार दीवारी का पर्दा अपने घरों में बैठी रहे गोया शरई

ज़रूरत के बग़ैर औरत को घर से बाहर निकलने से मना फ़रमाया गया, औरत की ज़िन्दगी घर में ﴿وقرن فی بیوتکن﴾ बैठी रहो अपरे घर में क़रार पकड़ो, तो औरत घर में रहेगी शरई ज़रूरत होगी तो घर से बाहर आएगी, यह चहार दीवारी का पर्दा है और अगर घर में भी रहते हुए ग़ैर महरम से कलाम करना पड़ जाए मसलन कोई बन्दा पूछने आया, कोई मिलने आया, कोई चीज़ देने आया, तो वह ज़रूरत है घर की, बच्चे घर में नहीं तो औरत क्या करे तो इसके लिए।

दूसरा दर्जा : ﴿فاسئلوا هن من وراء حجاب﴾ हेजाब के पीछे से उनसे सवाल करें, अगर ज़रूरत है तो, बेज़रूरत गुफ़्तगू से तो वैसे ही मना कर दिया हां अगर ज़रूरत है और कोई चीज़ मांगनी भी है तो पर्दे के पीछे से मांगो ﴿ذالك اطهر لقلوبكم و قلوبهن﴾ जो कोई बड़ा नेक पाक बने कि हमें कुछ नहीं होता अल्लाह तआला फ़रमाते हैं और उस वक़्त के मुख़ातिब तो सहाबए किराम थे, और इस आयत की मुख़ातिब नबीﷺकी बीवियां थीं उनको फ़रमाया कि यह उनके दिलों के लिए और उनकी पाकीज़गी के लिए बहुत अच्छा है।

तीसरा दर्जा : कि अगर बिल फ़र्ज़ बाहर निकलना पड़ जाए डाक्टर के पास जाना पड़ा मजबूरी में, बच्चे को डाक्टर के पास ले जाना पड़ा या कोई ऐसी शरई ज़रूरत पेश आ गई तो ऐसी सूरत में अगर औरत निकले तो शरीयत ने उसको हुक्म दिया ﴿يدنين عليهن من جلابيبهن﴾ तो यह फिर अपनी चादर अपने सीनों पर चेहरों पर डाल ले ﴿ولا يبدين زينتهن﴾ अपनी ज़ीनत को दिखाती न फिरे, अब कुछ लोग कहते हैं या औरतें कहती हैं ज़ी चेहरे का क्या पर्दा? भई ज़ीनत अगर चेहरे में नहीं होती तो किस जगह पर होती है आप बतायें? जो रिश्ता पसन्द करते हैं वह चेहरा देख कर पसन्द करते हैं या सर देख कर पसन्द करते है? अगर चेहरे से फ़र्क़ नहीं पड़ता तो चेहरे पर अगर हम सियाही लगा दें और बाक़ी तस्वीर भेज दें तो पसन्द कर लोगे? फ़ैसला तो चेहरे से ही होता है और जिस्म में सबसे

ज़्यादा ज़ीनत होती भी चेहरे में ही है तो जब ज़ीनत को छिपाने का हुक्म तो चेहरा छुपाने का हुक्म नहीं? कहते हैं जी चेहरा छुपाने से क्या होता है पर्दा तो आंखों का होता है हां भई पर्दा आंखों पर भी पड़ जाता है, तो इसलिए शरीयत ने यह हुक्म दिया कि औरत अपनी ज़ीनत को छुपाए ताकि न ही ग़ैर महरम देखे और न इस गुनाह का रास्ता हमवार हो, आज जो मर्द बद किर्दार हैं उनकी इस बद किर्दारी में औरतों की बे पर्दगी का बहुत ज़्यादा दख़ल है, यह हुस्न है दीने इस्लाम का कि मर्द को कहा कि आंखें नीची रखो, औरत को कहा कि अपनी ज़ीनत को छिपाओ, ताकि गुनाह का मौक़ा ही न मिले, मौक़ा से ही बचा लिया आंख देखती है दिल चाहता है और फिर शर्मगाह उसकी तस्दीक़ कर देती है, इसमें एक ख़ास बात ज़ेहन में रखिए कि कई मर्तबा क़रीबी रिश्तेदार आ जाते हैं कज़िन है क़रीबी रिशतेदार है वह भी घर में आ गए अब रिशतेदारी भी बहाल रखनी पड़ती है तो कुछ लोग कहते हैं जी उनसे क्या पर्दा? भई पर्दा उनसे भी है, रिशतेदारी भी रखनी है और पर्दा भी रखना है, औरत समझदार हो तो वह पर्दे में रह कर घर के काम भी कर सकती है।

एक बा हिम्मत बेटी का

हमारे जामिया में एक मर्तबा एक बच्ची पढ़ने आई तो उसने दुपट्टा अपनाया हुआ था दसवीं का इम्तिहान शायद पास करके आई थी उसने घर वालों को बताया कि मैं ग़रीब घर की बच्ची हूँ, मैंने हज़रत का बयान सुना मेरे दिल में बात आई कि मैं दीन का इल्म पढ़ूं मेरे वालिद की हैसियत तो इतनी भी नहीं कि वह मुझे किताब ख़रीद कर दे सकें, अलबत्ता मैं उनसे इजाज़त ले सकती हूं कि मैं आगे स्कूल पढ़ने के बजाए मदरसा पढ़ूंगी घर वालों ने मुझे बताया, हमने उनसे कहा कि फ़ौरन दाख़िला देदें उन्होंने कहा जी वह तो पर्दा ही नहीं करती हमने कहा इंशाअल्लाह जामिया में आएगी तो पर्दा भी करेगी, क्यों नहीं

करेगी? हम ने उसे दाख़िला भी दे दिया और उसे एक दो दिन ज़रा समझाया और एक बुर्क़ा उसको तुहफ़ा में भी दे दिया हदिया भी दे दिया अब एक दो दिन के अन्दर बच्ची की तबीयत भी दीन पर लग गई थी और उसने बाक़ी बच्चियों को भी देखा कि सब पर्दे में आती हैं तो अब उसने बुर्क़ा में भी आना शुरू कर दिया, अल्लाह की शान, ऐसी ज़ेहीन बच्ची निकली कि चार साल हमारे पास पढ़ी चार सालों में हर साल वह जामिया में फ़र्स्ट आती रही उम्र में सबसे छोटी होती थी और नम्बर में सबसे बड़ी होती थी, ऐसी फ़ोटो ग्राफ़िक मेमरी मैंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत कम लोगों की देखी है ऐसी बला कि ज़ेहीन थी वह बच्ची हैरान कर दिया उसने ख़ैर वह बड़ी तक़िया नक़िया थी उसने दीनदारी परहेज़गारी की ज़िन्दगी अपना ली, ज़िक्र व अज़कार करने लग गई, बैअत हुई उसकी ज़िन्दगी दीन पर बहुत लग गई, अब अल्लाह तआला की शान देखें कि उसने जब बुरक़ा करना शुरू कर दिया तो मां बाप को फ़िक्र लग गई कि हमारी बेटी तो हम ने पढ़ने भेजी थी मौलवन बनने के लिए तो नहीं भेजी थी उन्होंने जामिया में पैग़ाम भेजवाया कि जी हम ने अपनी बच्ची को पढ़ने के लिए भेजा था इसलिए तो नहीं भेजा था कि उसको मौलवी बना दें, ख़ैर हम ने सुन ली यह बात, अब मामला चलता रहा अब उस बच्ची ने अलहमदो लिल्लाह सब ग़ैर महरमों से पर्दा कर लिया वह क़रीबी रिशतेदार थे या दूसरे थे अब उस पर और तिलमिलाए उन्हीं दिनों में उसकी एक कज़िन की शादी थी तो उसके वालिदैन ने कहा कि तुमने भी हमारे साथ जाना है वह आई छुटटी लेने के लिए तो अहलिया ने पूछा उससे भई आप वहां जा रही हो तो फिर आप के लिए तो मुश्किल बन जाएगी वह कहने लगी जी मैंने दिल से पर्दा कर लिया फ़िक्र मत करें, मैं शादी भी अटेन्ड करूंगी सब कामों में हिस्सा भी लूंगी और बे पर्दगी भी नहीं होने दूंगी अल्लाहु अकबर।

फिर वापसी में आकर उसने बताया कि मैं बुर्क़ा में गई सात दिन

उस घर में मैं बुर्क़ा की हालत में रही उतारा ही नहीं, कहने लगी मैंने बुर्क़ा ही में रह कर बर्तन भी धोए, किचन के काम भी किए, घर में मेरे कज़िन फिरते थे किसी को जुरअत नहीं थी मुझ से बात करने की डरते थे मुझ से और मैं अपने बुर्क़ा में अपने काम भी कर रही होती, कहने लगी इस तरह मेरे कज़िन जो मेरे साथ हंसी मज़ाक़ पहले करते थे उन्होंने बड़ी कोशिश की कि किसी न किसी तरह उसको देखें सात दिन न देख सके, तो मेरी अम्मी को कहने लगे कि लगता है कि तेरी बेटी को बुर्क़ा में ही मौत हो जाएगी, तो वह कहने लगी अम्मी भी मुझ से खुश मैंने वहां वक़्त गुज़ारा मैंने वहां काम किया जब मैं लड़कियों में होती तो चेहरे से पर्दा हटा लेती और जब मैं इधर उधर होती तो मैं अपने चेहरे पर पर्दा करके आंखें खुली होती तो मैं अपना काम करती अब अगर एक बच्ची दिल से पर्दा को अपनाती है तो वह ऐसे जश्न में भी अपने आप को ग़ैर महरम से बचा सकती है तो कैसे कोई कह सकता है कि जी पर्दा करने से रिशतेदारों में फ़र्क़ पड़ जाता है।

नतीजा क्या हुआ उसके वालिद गर्मी के मौसम में बर्फ़ बेचते थे मामूली हैसियत के आदमी थे, अल्लाह की शान उस शादी में उनका दूर का कोई रिशतेदार आया था जो लाखों पती था, उस बच्ची की दीनदारी उसको इतनी पसन्द आई वापस जाकर उसने मां से बात की उधर बच्ची की तालीम मुकम्मल हुई अगले दिन उन्होंने रिशता भेज दिया, कारों वाले थे, कोठियों वाले थे, अल्लाह की नेमतों वाले थे, मां बाप ने कहा हमारी बच्ची के नसीब खुल गए, अल्लाह की शान कि अल्लाह ने दीन की बर्कत से उसको बेहतरीन घर भी अता फ़रमा दिया, जो डरते थे कि बेटी का क्या बनेगा बिरादरी में उनकी बेटी का सबसे पहले रिशता हो गया, कहने लगे हैरान होते हैं हमारे रिशतेदार कि भई उस बच्ची का इतना अच्छा रिशता हो कैसे गया? हमने कहा कि यह दीन की बरकत है, अल्लाह ने उसके नसीब खोल दिए, तो भई जो अन्दर से दीन को अपनाता है, फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके लिए

दुनिया में मामलात भी आसान फ़रमा देते हैं।

नाफ़रमान औरत की सज़ा

दूसरी औरत नबीﷺने इरशाद फ़रमाया कि मैंने देखा कि वह ज़बान के बल लटकी हुई है अब बताइए कि ज़बान खींचे तो क्या हाल होता है और अगर पूरा बदन ज़बान पर हो और ज़बान पर लटका दिया जाए फिर क्या होगा पूछा गया यह कौन औरत थी तो फ़रमाया गया कि यह मुंह फट औरत थी, जो शौहर के सामने बद तमीज़ी करती थी, जवाब देती हैं आगे से हट धर्मी की वजह से बात नहीं मानती शौहर ने कुछ कहा आगे से कुछ कहा फिर अगर उसने कोई और बात कह दी तो आगे से कोई और बात कह दी चुप नहीं होती इसलिए तो कहते हैं मर्द का हाथ क़ाबू में नहीं रहता औरत की ज़बान क़ाबू में नहीं रहती बोलती रहती है, कुछ न कुछ कहती रहती है कहती रहती हैं आगे से टर टर होती रहती है चुप नहीं होती तो यह शौहर के सामने टर टर करने वाली उसको ज़बान के ज़रीया जहन्नम के अन्दर लटका दिया जाएगा।

झूटे आदमी की सज़ा

जो झूटा आदमी होगा जो ज़बान का ग़लत इस्तेमाल करता होगा एक और हदीस पाक में आया अल्लाह उसकी ज़बान को बहुत लम्बा कर देंगे जब वह चलेगा तो ज़बान पीछे घिसट रही होगी और लोग उस पर पांव रख रख कर गुज़र रहे होंगे उसको जहन्नम में यह सज़ा मिलेगी।

ज़िनाकार औरत की सज़ा

फिर नबीﷺने इरशाद फ़रमाया कि मैंने तीसरी औरत को देखा कि वह जहन्नम में अपने पिस्तानों के बल लटकी हुई थी पूछा गया कि यह कौन? नबीﷺने इरशाद फ़रमाया कि यह ज़िना की मुर्तकिब होने वाली थी ग़ैर महरम को अपने जिस्म को हाथ लगाने का मौक़ा देती थी

उसको पिस्तानों के बल लटका दिया जाएगा आज के दौर में इस गुनाह का जो सबसे बड़ा ज़रीया है वह सेल फ़ोन है यानी एक ज़माना था कि मौसीक़ी इसका ज़रीया था फिर एक ज़मना आ गया कि टी वी इसका ज़रीया बन गया आज वह ज़माना है कि सेल फ़ोन इसका ज़रीया बन गया है, शरीफ़ों के घर में बच्चे और बच्चियां इस सेल फ़ोन की वजह से नाजाइज़ तअल्लुक़ में गिरफ़्तार हो जाते हैं, क्योंकि हमसे नौजवान मसाइल पूछते रहते हैं फंसते हैं तो आते हैं, आदमी परेशान होता है तो पीर को बताता है या हकीम को बताता है जिस्मानी इलाज के लिए और पीर को बताता है रूहानी इलाज के लिए हमने कम अज़ कम एक सौ बच्चों से इन्टरव्यू किए यह हया और पाकदामनी किताब जो लिखी है, उसको हमने हक़ीक़त पर मबनी बनाया है एक सौ बच्चे जो उन गुनाहों में मुलव्विस रहे थे, उनको हम ने पूछा कि बताओ भई वजूहात क्या होती हैं? बाक़ाइदा इन्टरव्यू किया, मुख़तलिफ़ मुल्कों में यह बात सामने आई कि इस वक़्त इस गुनाह का सबसे बड़ा ज़रीया इंसान का सेल फ़ोन है S.M.S. मैसेज भेजते हैं ख़र्चा भी कोई नहीं और बेडरूम में कंबल के अन्दर से एस एम एस पहुंचे हुए हैं मां बाप को क्या पता कि बेटा मैसेज सुन रहा है या बेटी मैसेज सुन रही है एक दूसरे को सुबह के वक़्त जगाते हैं वह उसको जगा रहा है वह उसको जगा रही है और सेल फ़ोनों में बजाए बेल के ऊपर से वाइब्रेशन आ गई यह एक नई मुसीबत कि अगर किसी के पास है भी तो भी पता नहीं चलता इसलिए अपने घरों में सेल फ़ोन का इस्तेमाल लिमिटेड रखिए, फ़क़त काम की हद तक, फ़क़त बिज़नेस की हद तक और आज कल तो मदरसा में आने वाले छोटे छोटे बच्चे के हाथ में सेल फ़ोन है, अभी मैं एक मुल्क से आया हूं तो वहां एक आलिम कहने लगे मैंने अपनी क्लास के बच्चों की अचानक तलाशी ली तो नौ छोटे बच्चों की जेबों से सेल फ़ोन निकले, इसलिए यह छिपा हुआ दुशमन है आज बहाने बड़े हैं अब्बू मैं स्कूल में होती हूं तो फिर बताना पड़ता है मैं

कहां पर हूं, यह सब बहाने होते हैं सब झूठ है। मक़सद कोई और होता है लिहाज़ा कोई ज़रूरत नहीं नये नये मॉडल के फ़ोन लेकर देने की और हमारे सामने तो ऐसे केस भी आए कि जो बद किरदार नौजवान होते हैं वह खुद सेल फोन लेकर उस बच्ची तक पहुंचा देते हैं, मां बाप को पता ही नहीं होता कि सेल फ़ोन है या नहीं हालांकि उसके हाथ में पहुंचा हुआ होता है बिल भी कोई और पे (अदा करना) कर रहा होता है हम ने कहा भई तुम ने ऐसी हरकत क्यों कि कहने लगे जी जहां दिल की बात होती है वहां बिल की बात क्या होती है?

सेल फ़ोन का नाजाइज़ इस्तेमाल

दो महीने पहले एक मुल्क का सफ़र करके मैं आया उस मुल्क में एक बा पर्दा बच्ची ने सेलफ़ोन के ज़रीया किसी नौजवान के साथ इतना तअल्लुक बढ़ाया कि खुफ़िया निकाह कर लिया, तीन साल तक मां बाप को पता नहीं चला और लड़के लड़की का निकाह हो चुका था और यह पर्दादार बच्ची है और नेकोकार घराने की बच्ची है जब यह वाकियात पेश आने लगें तो फिर समझना चाहिए कि यह किस क़दर ख़तरनाक चीज़ है, इसलिए इसको मैं हेल फ़ोन कहता हूं यह फ़ोन नहीं यह खून है इज़्ज़तों का खून है, पक्की बात है इसलिए इसके दुशमन बन जाइये और इसको बस मक़सद के लिए इस्तेमाल कीजिए, हमारे तजरबा में यह बात आई और इल्म में यह बात आई कि बन्दा बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था और अपनी गर्लफ़्रेन्ड के साथ बात भी कर रहा था, हम क्या रोना रोयें

नापाक रहने वाली औरत की सजा

फिर नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि मैंने एक औरत को देखा कि उसके पैर सीने पर बंधे हुए थे और उसके हाथ उसके सर पर बंधे हुए थे पूछा गया ऐ अल्लाह के नबी यह कौन थी नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया यह वह औरत थी जो पाकी और नापाकी का ख़्याल नहीं

रखती थी और औरतों में पाकी नापाकी का बड़ा मसला है बच्चों को भी उन्होंने पालना होता है खाना भी उन्हें बनाना होता है और अगर यही पाकी और नापाकी का मसला न जाने तो फिर क्या बनेगा? इसलिए बच्चियों को बिल खुसूस इस क़िस्म के मसाइल मुअल्लिमात के ज़रीया से सीखने का मौक़ा देना चाहिए इसी लिए फ़र्ज़ गुस्लों में भी ताख़ीर कर देती हैं नमाज़ें भी क़ज़ा कर देती हैं।

चुग़लख़ोर औरत की सज़ा

नबी ﷺ ने फ़रमाया मैंने पांचवें औरत को देखा कि उस औरत का चेहरा ख़िन्ज़ीर का था और बाक़ी जिस्म गधे का था यह अल्लाह के महबूब फ़रमा रहे हैं कि चेहरा ख़िन्ज़ीर का था और बाक़ी जिस्म गधे का था तो नबी ﷺ से पूछा गया ऐ अल्लाह के नबी किस वजह से? तो नबी ﷺ ने फ़रमाया इस वजह से कि उसके अन्दर ग़ीबत की आदत थी और दो रंगी थी उसके अन्दर ऊपर से कुछ और अन्दर से कुछ और इसलिए सुनी सुनाई बातों ही पर यक़ीन नहीं करना चाहिए, यह सुनी सुनाई बातें पता नहीं क्या से क्या पहुंचती हैं, ख़ास तौर पर यह जो चुग़लख़ोरी है ना यह बहुत ही ख़तरनाक बीमारी है।

हसद करने वाली औरत की सज़ा

फिर नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि मैंने छटी औरत को देखा कि उसकी शक्ल कुत्ते की थी और आग उसके मुंह में दाख़िल होती थी और पाख़ाना के रास्ते से बाहर निकल जाती थी अंगारे जा रहे थे निकल रहे थे और शक्ल उसकी कुत्ते की मानिन्द कुत्ते की तरह भूंक रही थी फ़रिश्ते उसको गुर्ज़ मार रहे थे और वह कुतिया की तरह भूंक रही थी पूछा गया कि यह कौन थी तो बताया गया यह हसद करने वाली और दूसरों पर एहसान जतलाने वाली थी आख़िरत के मामलात तभी संवर सकते हैं जब दुनिया में हम अपनी ज़िन्दगी को संवारेंगे।

अजीब ख़्वाब

एक आदमी का वाक़िया लिखा है कि उसने अपनी बेटी को बड़े नाज़ व नेमत से पाला कि मेरी बेटी बड़ी प्यारी है ख़ूबसूरत है अक़्ल मन्द है और उसको मार्डन तालीम दिलवाई, वह बेपर्दा फिरती थी अल्लाह की शान कि जवानी में उस बच्ची को मौत आ गई बाप ने ख़्वाब देखा तो ख़्वाब में अपनी उस बच्ची का सर बिल्कुल बालों के बग़ैर खोपड़ी है और उसके दोनों होंट बिल्कुल जैसे किसी ने काट दिए हों उसके दांत नज़र आ रहे थे और हाथ और पावं ज़ख़्मी हैं इस हालत में उसको ख़्वाब में देखा, उसने कहा बेटी क्या हुआ? कहने लगी अब्बा जान जब मैं यहां आई तो मुझे फ़रिशतों ने कहा तू नंगे सर फिरती थी तुझे उसकी सज़ा मिलेगी, चुनांचे मेरे सर को बड़ा बना दिया गया, मेरे एक एक बाल को बड़ की दरख़्त की तरह बना दिया गया और फिर फ़रिशतों ने मेरे सर में से एक एक बाल को उखाड़ा इतनी मुझे तकलीफ़ हुई कि मैं बता नहीं सकती, फिर एक फ़रिशता ने कहा अच्छा तेरा तो वज़ू भी ठीक से नहीं होता था यह तू क्या अपने होंटों पर लगाती थी, उसको उतारने के लिए जब ऊपर के मेरे होंट को खींचा तो मेरे दांतों तक पूरा गोश्त उसके साथ खिंच गया, फिर नीचे का खींचा फिर वह कहने लगे हां तेरा गुस्ल भी नहीं होता था कि तेरे नाख़ूनों पर भी कुछ लगा हुआ था तो उन्होंने मेरे नाख़ूनों पर जो नील पालिश थी उसको उतारने के लिए जो खींचा तो मेरे सारे नाख़ून ही खिंच गए अब्बा जान अब मैं इस हालत में हूं, आज हम अगर अपनी बच्चियों को दीने इस्लाम की तालीम नहीं देंगे तो कल इन बेचारियों के साथ पता नहीं आख़िरत में क्या मामला होगा? (मर्दों) की ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी बच्चियों को दीनी तालीम दिलवायें (तक़वा) परहेज़गारी की ज़िन्दगी सिखायें ताकि इसी ज़िन्दगी में वह अपने रब को मना सकें अपनी आख़िरत को बना सकें आज वक़्त है जितना भी बड़ा कोई गुनहगार हो अगर वह तौबा कर लेगा अल्लाह तआला उसके ज़िना का गुनाह उसके झूठ का गुनाह ग़ीबत का गुनाह जो भी गुनाह होगा

अल्लाह तआला सब गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

इसलिए आज हम अपने हाथों से अपनी आख़िरत को बना लें या अपने हाथों से बिगाड़ लें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें अपनी आख़िरत को संवारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

و آخر دعوانا عن الحمد لله رب العلمين

मुनाजात

दिले मग़मूम को मसरूर कर दे
दिले बे नूर को पुर नूर कर दे

फ़रोज़ां दिल में शमा तूर कर दे
यह गोशा नूर से पुर नूर कर दे

मेरा ज़ाहिर संवर जाए इलाही
मेरे बातिन की ज़ुल्मत दूर कर दे

मए वहदत पिला मख़मूर कर दे
मुहब्बत के नशे में चूर कर दे

न दिल मायल हो मेरा उनकी जानिब
जिन्हें तेरी अता मग़रूर कर दे

है मेरी घात में ख़ुद नफ़्स मेरा
ख़ुदाया इसको बे मक़दूर कर दे

ख़शियते इलाही

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ जुल फ़क़ार अहमद दामत बरकातहुम (नक़्शबन्दी मुजद्दिदी)

दर हालत ऐतकाफ़ मस्जिद नूर लोसाका ज़ामबिया

﴿बाद नमाज़े इशा 2003 ई0﴾

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

हमारे बड़े अजीब दुआ फ़रमाते थे कि ऐ अल्लाह आपने फ़रमाया कि तुम मुझ से मुहब्बत करो और कुफ़्फ़ार से तुम दुशमनी रखो, तो ऐ अल्लाह हम ने तेरी वजह से कुफ़्र से और कुफ़्फ़ार के तरीक़ों से दिल में अदावत पैदा कर ली ऐ अल्लाह उन दुशमनों को और हमें जहन्नम में इकट्ठा न फ़रमा देना जब हम ने आप की ख़ातिर उनसे अदावत की है उन के तरीक़ों को छोड़ दिया और आप के सामने सर झुका दिया ऐ अल्लाह आप कैसे पसन्द फ़रमयेंगें कि उन दुशमनों के साथ हमें जहन्नम की आग में इकट्ठा फ़रमायें।

﴾हज़रत पीर जुल फ़क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी मद्दा ज़िल्लहु﴿

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد .....!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ـ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔

﴿اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ﴾

(مَنْ بَكٰى مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ النَّارَ)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّم

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّم

अल्लाह के डर से रोने वाला

रसूलुल्लाह ﷺ का इरशाद गिरामी है من بکی من خشية الله जो शख़्स अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ौफ़ व ख़शिय्यत की वजह से रो पड़ा حرم الله عليه النار अल्लाह तआला उस पर जहन्नम को हराम फ़रमा देते हैं, इसमें النار से मुराद जहन्नम की आग है और हदीसे पाक में आता है कि जहन्नम की आग दुनिया की आग से सत्तर गुना ज़्यादा गर्म और सख़्त है चुनांचे हदीसे पाक में फ़रमाया (نارکم هذه احدو سبعون جزء من نار جهنم) यह तुम्हारी आग का इक्हत्तरवां हिस्सा है तो दुनिया की आग भी हमारे जिस्मों को जला देती है तो फिर जहन्नम की आग का क्या हाल होगा? इसी लिए हदीस पाक में आता है कि अगर जहंन्नम की आग का एक शोला सूरज उभरने की जगह पर रख दिया जाए और एक इंसान सूरज गुरूब होने की जगह पर खड़ा हो तो वह इंसान जल कर ख़ाक हो जाएगा एक दूसरी रिवायत में आता है कि जहन्नम के अन्दर दोज़ख़ियों को जो पसीना आएगा अगर उस पसीना में से एक क़तरा उहद पहाड़ के ऊपर डालें

तो वह भी पिघल जाए।

दुनिया व जहन्नम की आग का फ़र्क़

दोज़ख की आग और दुनिया की आग में कुछ फ़र्क़ है एक फ़र्क़ तो यह है कि दुनिया की आग हर नेक और बद को जलाती है, आम दस्तूर यही है, चुनांचे जहरत जरजीस عليه السلام अल्लाह के पैग़म्बर थे आग ने उनको जलाया, हज़रत मूसा عليه السلام की ज़बान अंगारा रखने की वजह से जल गई थी, आम दस्तूर यही है हां जब अल्लाह तआला चाहते हैं तो नहीं भी जलाती जैसे सय्यदना इब्राहीम عليه السلام के बारे में फ़रमाया ﴿قلنا يا نار كونى برداوسلاما على ابراهيم﴾ मगर यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की कुदरत थी आम सुन्नते मुबारका यही है कि आग जलाती है नेक आदमी को भी जलाएगी बुरे को भी जलाएगी, लेकिन दोज़ख़ की आग वह फ़क़त गुनहगारों को जलाएगी और नेकों को वह कुछ नुक़सान नहीं देगी, दुनिया की आग पानी से बुझ जाती है जब कि जहन्नम की आग गुनहगार मोमिन की आंख से निकले हुए आंसुओं से बुझ जाती है, मोमिन का नूरे ईमान जहन्नम की आग को ख़त्म कर देता है इस लिए मोमिन जब पुल सिरात से गुज़रेंगे तो जहन्नम पुकार उठेगी (اسرع يا مومن) ऐ मोमिन जल्दी कर (فان نورك أطفأ نارى) तेरे ईमान के नूर ने तो मेरी आग को भी बुझा डाला।

जहन्नम की आग से ख़लासी

हदीस पाक में आता है कि जो आदमी मग़रिब के बाद सात मर्तबा पढ़े (اللهم اجرنامن النار) तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बन्दे को जहन्नम से ख़लासी अता फ़रमा देते हैं, ताहम जहन्नम का डर, अल्लाह तआला का डर, हर वक़्त मोमिन के दिल में होना चाहिए।

अफ़ज़ल कौन?

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक बड़े मुहद्दिस गुज़रे हैं उन से किसी ने पूछा कि हज़रत दो आदमी हैं एक मुजाहिद था जो शहीद हो गया और

दूसरा अल्लाह तआला से डरने वाला तो दोनों में से आप के नज़दीक कौन सा अफ़ज़ल है तो उन्होंने फ़रमाया अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से डरने वाला मेरे नज़दीक ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है इसलिए कि परवरदिगारे आलम फ़रमाते हैं ﴿يـا يهـا الذين آمنوا قوانفسكم و اهليكم نـارا﴾ ऐ ईमान वालो! अपने आप को और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ, तो जहन्नम की आग से बचाने का हमें हुक्म अता फ़रमा दिया गया, इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿فـاتـقـو االنـار التى وقودها النـاس و الحـجارة﴾ अल्लाह तआला तुम्हें डराता है उस आग से जिस का ईंधन इंसान और पत्थर हैं एक जगह फ़रमाया ﴿فـانـذرتكم نـارا تلظـى﴾ मैं तुम्हें भड़कती हुई आग से डराता हूं और कुरआन मजीद में एक जगह है ﴿لهـم مـن فـوقهم ظلل من النار ومن تـحتهـم ظـلـل﴾ जहन्मी जहन्म में ऐसे होंगे कि उनके ऊपर भी आग की तहें होंगी उनके नीचे भी आग की तहें होंगी, इसी लिए उसको ﴿نـذيـر الـلبشـر﴾ कहा गया डराने वाली अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फ़रमाते हैं ﴿انهـا لاحـدى الـكبـر﴾ यह बहुत बड़ी चीज़ है, मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआला ने जहन्नम से ज़्यादा किसी ख़ौफ़ नाक चीज़ से बन्दों को नहीं डराया और यह जहन्नम ऐसी कि जिस दिन से यह पैदा की गई मीकाईल عليه السلام उस दिन से कभी भी हंसे नहीं हैं

सख़्त तबीयत फ़रिशता

नबी ﷺ मेराज पर तशरीफ़ ले गए तो आपने सब फ़रिशतों को देखा तो उन्होंने सलाम किया इस्तिक़बाल किया और उनके चेहरे पर ख़ुशी के असरात नज़र आए एक फ़रिशता ऐसा था कि उसने सलाम तो किया मगर चेहरे के ऊपर बिल्कुल अजनबिय्यत थी तो नबी ﷺ ने जिबरईल عليه السلام से पूछा जिबरईल! हर फ़रिशता ने सलाम किया और मैंने उसके चेहरे पर मुस्कुराहट देखी शगुफ़तगी देखी, यह कौन है कि

जिस के चेहरे के ऊपर इतनी अजनबिय्यत है? ज़रा मुस्कुराहट नज़र नहीं आई! कहने लगे ऐ अल्लाह के महबूब! यह जहन्नम का दारोग़ा "मालिक" नामी फ़रिशता है इसके चेहरे पर कभी मुस्कुराहट नहीं आती ऐसा सख़्त तबीयत अल्लाह तआला ने इसको बनाया है।

जिससे अकाबिरीन डरते थे

एक जगह फ़रमाया ﴿وَالَّذِيْنَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُوْنَ﴾ इसलिए वही लोग जन्नत में जायेंगे जो दुनिया में अज़ाबे इलाही से डरने वाले होंगे और वह जन्नत में जाकर कहेंगे एक दूसरे को ﴿إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ، فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ﴾ जहन्नम की आग ऐसी है ज़रा तवज्जोह से सुनिए और दिल के कानों से सुनिए उस जहन्नम की आग से अल्लाह तआला ने अपने महबूब को भी डराया है, हम तसव्वुर कर सकते हैं इस बात का अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने महबूब को भी डराया है उस आग से, क़ुरआन अज़ीमुश्शान सुनिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमाते हैं, ऐ महबूब ﴿ولا تجعل مع الله الها آخر فتلقى فى جهنم ملوما مدحورا﴾ अल्लाहु अकबर, हमारे अकाबिर जब इस आयत को पढ़ते थे ना तो कई तो रोते थे और कई रोते रोते बेहोश हो जाते थे, कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने महबूब को फ़रमा रहे हैं अल्लाहु अकबर हम किस खेत की गाजर मूली हैं हमारी क्या औक़ात है तो हमें वाक़ई अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के बनाई हुई अज़ाब देने वाली इस जहन्न्म से डरना चाहिए।

ख़ौफ़े ख़ुदा कितना हो?

नबी ﷺ ने इरशाद ने फ़रमाया लोगो! तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे शमा जलाए तो पतिंगे उस शमा की तरफ़ भागते हैं तुम ख़्वाहिशात की इत्तिबा की वजह से जहन्न्म की तरफ़ भाग रहे हो मैं तुम्हारी कमरों से पकड़ पकड़ कर तुम्हें पीछे हटा रहा हूं, अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रिशतों को भी जहन्नम की आग से डराया है ﴿ومن يقل

﴿منهم انى اله من دونه فذالك نجزيه جهنم كذالك نجزى الظلمين﴾ कि फ़रिशतों में से भी अगर कोई कहेगा मैं इलाह हूं तो हम उन फ़रिशतों को भी दोज़ख़ की आग में डाल देंगे, तो यह ख़ौफ़े खुदा इस हद तक होना चाहिए कि बन्दे को गुनाहों से बचा दे, मुहब्बते इलाही की कोई इन्तिहा नहीं ख़ौफ़े खुदा की इन्तिहा है ख़ौफ़े खुदा की इन्तिहा यह कि जिस से बन्दा गुनाहों से बच जाए इतना ख़ौफ़ काफ़ी है, मगर मुहब्बत की कोई हद नहीं, जितना बन्दा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में बढ़ सकता है उतना उसको बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए तो ख़ौफ़े खुदा भी अल्लाह तआला की नेमत है तभी तो इसकी वजह से बन्दा गुनाहों से बच सकता है, मुफ़स्सिरीन ने इसकी दलील दी है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सूरए रहमान में जहां अपनी नेमतों का तज़किरा फ़रमाया वहां इरशाद फ़रमाया ﴿ولمن خاف مقام ربه جنتن﴾ कि डरने वाले के लिए दो जन्नतें हैं और आगे फ़रमा दिया (فبای الاء ربكما تكذبان) तुम अपने रब की कौन कौन सी नेमतों को झुठलाओगे, तो इससे मालूम होता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इतना ख़ौफ़ जो बन्दे को गुनाहों से बचा ले यह भी अल्लाह तआला की नेमत है।

अकाबिर का ख़ौफ़

हमारे अकाबिर जब जहन्नम के तज़किरे सुनते थे उनकी हालत बदल जाया करती थी चुनांचे फ़ुज़ैल बिन अय्याज़ के बेटे का नाम था अली, उनकी तो हालत यह थी कि उनके सामने अगर कोई सूरए अलक़ारिया पढ़ देता था तो वह सूरत के दरमियान ही बेहोश हो कर गिर जाया करते थे अल्लाह तआला से दुआयें मांगा करते थे, ऐ अल्लाह मुझे अपनी ज़िन्दगी में यह सूरत मुकम्मल सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे, क़ारी पढ़ना शुरू करता था यह बेहोश हो जाते थे, ऐसा लगता था कि जैसे वह लोग जहन्नम को अपनी आंखों से देख रहे हों,

अवैस क़रनी" के बारे में आता है कि एक दफ़ा एक गली में से गुज़रे जहां लोहार की भट्ठी थी, लोहार की भट्ठी पर नज़र पड़ी तो यह उसी वक़्त बे होश हो कर गिर गए लोहार की भट्ठी को देख कर उनको जहन्नम की आग याद आ गई कि इस भट्ठी की आग में लोहे को गर्म करें तो लोहा पिघल जाता हे, जब बन्दे को डालेंगे जहन्नम की आग में तो बन्दे का क्या हाल होगा? इसलिए रिवायत में आता है जिस बन्दे को जहन्नम का सबसे थोड़ा अज़ाब होगा उसको आग के जूते पहनाये जायेंगे और वह जूते इतने गर्म होंगे कि उस बन्दा का दिमाग़ हंडिया की रह उबल रहा होगा।

जिबरईल भी रोने लगे

चुनांचे एक मर्तबा ज़िबरईल ﷺ तशरीफ़ लाए और उन्होंने नबी ﷺ के सामने जहन्नम का तज़किरा किया तो हदीस पाक में आता है कि उस जहन्नम के तज़किरे को सुन कर अल्लाह तआला के महबूब इतना रोए कि जिबरईल ﷺ को भी रोना आ गया।

लफ़्ज़ ख़शिय्यत

एक लफ़्ज़ है हदीस में "خشية الله" जो रोया अल्लाह तआला की ख़शिय्यत से इमाम राग़िब अस्फ़हानी" अलमुफ़रेंदात में लिखते हैं (الخشوع الضراع) कि यह खुशू तज़र्रू का दूसरा नाम है, गिड़गिड़ाने, डरने का दूसर नाम है, (واكثر ما يستعمل فی ما يوجد على الجوارح) और यह इस्तेमाल होता है अकसर जो कुछ इंसान के आज़ा पर पाया जाता है, चुनांचे इमाम ग़ज़ाली" ने लिखा है कि जिस तरह इंसान आग जलाए तो धुआं निकलना ज़रूरी है, धुएं से आग की पहचान होती है, दरख़्त लगायें तो फल उसकी पहचान होती है, इसी तरह जिस बन्दे के दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ख़ौफ़ हो उसके आज़ा के देखने से ही उसके दिल के ख़ौफ़ का अंदाज़ा हो जाता है ऐसा बन्दा कभी तो रोता है, कभी तड़पता है, कभी अल्लाह के ख़ौफ़ से

कांपता है और कभी अल्लाह की याद में आहें भरता है।

क्यों दिल जलों के लब पे हमेशा फ़ुगां न हो
मुमकिन नहीं कि आग लगे और धुआं न हो

तो दिल जलों की ज़बान पर तो फिर आहें होंगी।

आहें भी निकलती हैं गर दिल में लगी हो
हो आग तो मौक़ौफ़ धुआं हो नहीं सकता

सहीह मोमिन की पहचान

चुनांचे कुरआन मजीद की आयत ﴿الم يأن للذين آمنوا ان تخشع قلوبهم لذكر الله﴾ इस आयत में इमाम राज़ी॰ फ़रमाते हैं कि ان المؤمن لا يكون مؤمنا فى الحقيقة الا بخشوع القلب कि मोमिन हक़ीकत में मोमिन हो ही नहीं सकता, जब तक उसके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ न हो, जब तक उसके दिल में ख़ुशू न हो, चूंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाते हैं (تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم) इमाम ग़ज़ाली॰ फ़रमाते हैं कि ख़शिय्यत का मतलब होता है बाज़ औक़ात आज़ा के अन्दर सुकून होना तमानीयत का होना उसको भी ख़शिय्यत कहा गया और कई मर्तबा बन्दा तड़पता है, कई मर्तबा बन्दा आहें भरता है और कई मर्तबा बन्दा रो पड़ता है यह सब की सब उस ख़ुशू की निशानियां होती है वह उसकी तफ़सील लिखते हैं वह कहते हैं कि अगर नमाज़ में देखा जाएगा तो ख़ुशू का मतलब तमानीयते आज़ा लिया जाएगा जैसे नबी ﷺ ने एक आदमी के बारे में फ़रमाया था कि अगर बन्दे के दिल में ख़ुशू होता तो उसके आज़ा के अन्दर ठहराव होता, तो नमाज़ में ख़ुशू कहेंगे कि आज़ा के अन्दर जमाव, ठहराव हो, ज़िक्र की हालत में बन्दे का ख़ुशू किया कि उसके ऊपर गिड़गिड़ाने की कैफ़ियत तारी हो, उसके ऊपर रोने की कैफ़ियत हो और वह अल्लाह तआला के सामने डरने कांपने लगे इसको ख़ुशू कहते हैं।

डर की वजह से आहें

डर की वजह से भी आहें निकलती हैं, मुहब्बत की वजह से भी आहें निकलती हैं इसलिए अल्लाह तआला ने सय्यदना इब्राहीम عليه السلام के बारे में फ़रमाया ﴿ان ابرهيم لاواه حليم﴾ कि "मेरे इब्राहीम बड़े हलीम थे और आहें भरने वाले थे" اواه कहते हैं आहें भरने वाले को चुनांचे रूहुल बयान में लिखा है (اواه ،الاء، الخاشع المتضرع) कहते हैं जिसके दिल में ख़ुशू हो जिस के दिल में ख़ुज़ू हो और यह भी ज़ेहन में रखना कि जब बन्दे की आह निकलती है तो वह फिर आवाज़ से निकलती है आह हमेशा ज़ोर की होती है चुनांचे इमाम बुख़ारी" लिखते हैं एक शायर का शेअर

اذما كنت ارحلها بليل طأطاها آهته رجل الحزين

यानी ऊंटनी आवाज़ निकालती है जैसे बन्दे की आह होती है तो वह फ़रमाते हैं कि यह ग़मनाक मर्द की तरह आहें भरती है

ख़ामोश रह के दिल का निकलता नहीं गुबार
ऐ अन्दलीब बोल दुहाई ख़ुदा की है

तड़पना तिलमिलाना हिज्र में रो रो के मर जाना
है शेवा आशिक़ी में यह मरीज़ाने मुहब्बत का

एक शायर ने लिखा

फ़र्ते ग़म ने किया सद चाक मेरा दामने ज़ब्त
आसमां तक गई आवाज़ मेरे नालों की

तो जब बन्दा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में रोता है तो साफ़ ज़ाहिर है कि फिर उसके मुहं से आहें निकलती हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के डर में वह कांप रहा होता है।

चश्म और चश्मा

(عين بكت من خشية الله) वह आंख जो अल्लाह तआला की ख़शिय्यत की वजह से रो पड़ी अल्लाह तआला उस आंख को जहन्नम पर हराम फ़रमा देते हैं, अरबी में عين का लफ़्ज़ आंखों के लिए भी

इस्तेमाल होता है (चश्म के लिए) और عيـن का लफ़्ज़ चश्मा के लिए भी इस्तेमाल होता है ﴿عيـنا فيها تسمى سلسبيلا﴾ तो चश्म के लिए भी यह लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है और चश्मा के लिए भी होता है मगर (दोनों में फ़र्क़ है)

☆...... जिस तरह चश्मा पानी के बग़ैर बेकार होता है
ऐसे ही मोमिन की चश्म आंसू के बग़ैर बेकार होती है

☆...... चश्मा के पानी से दुनिया में बाग़ लगता है
और चश्म के पानी (आंसू) से आख़िरत का बाग़ लग जाता है।

☆...... चश्मा के पानी की फ़सल फ़ानी होती है
लेकिन चश्मा के पानी से जो फ़सल लगती है वह हमेशा दाइमी हुआ करती है

☆...... चश्मा के पानी से ज़ाहिर की नजासत दूर होती है
और चश्म के पानी से इंसान के बातिन की ग़लाज़त दूर होती है

☆...... चशमा के पानी से ज़ाहिर का वुज़ू इंसान कर लेता है
और चश्म के पानी से इंसान के बातिन का वुज़ू हो जाता है।

☆...... नीज़ चश्मा का पानी मीज़ान में नहीं तौला जाएगा।
मगर इंसान की चश्म से निकला हुआ पानी क़ियामत के दिन मीज़ान में भी तौला जाएगा, बल्कि हदीस पाक में है सनद के साथ बात कर रहा हूं मीज़ान में हर चीज़ का वज़न हो सकेगा, लेकिन मोमिन गुनहगार के नदामत से निकले हुए आंसू इतने वज़नी होंगे कि मीज़ान में उसका हिसाब भी करना मुश्किल हो जाएगा।

रोने और डरने का हुक्म

चुनांचे हदीस में है (عـن عبـد الـلـه بـن عمرؓ قال قال النبى ﷺ تـضـرعـوا وابكو افان السموات والارض والشمس والقمر والنجوم يبـكـون مـن خشية الـلـه) "अब्दुल्लाह इब्ने उमरؓ" फ़रमाते हैं कि नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया डरो और रोया करो कि ज़मीन व

आसमान सूरज और चांद और सितारे सबके सब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ौफ़ से रोते हैं" इसलिए फ़रमाया अगर तुम्हें हक़ीक़त का पता चल जाए कि तुम्हें किस किस इम्तिहान से गुज़रना है यानी पुल सिरात के ऊपर से गुज़रना है ﴿فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا﴾ "तुम हंसो थोड़ा और रो ज़्यादा" इसलिए हमें चाहिए कि हम अपनी आख़िरत के मामलात सोचें गुनाहों को सोचें और फिर अल्लाह तआला से रो रो कर माफ़ियां मांगें।

रोने के अक़साम

उलमा ने लिखा है कि रोने की मुख़तलिफ़ अक़साम हैं सबसे पहली क़िस्म

(1)...... मुसीबत के ऊपर रोना किसी इंसान पर कोई मुसीबत आ जाए तो फ़ितरतन बन्दा रो पड़ता है, जैसे तालिबे इल्म फ़ेल हो गया, रोएगा, रेज़ल्ट निकलता है तो कितने लोगों को रोते हुए देखा, किसी को कारोबार में बड़ा नुक़सान हो जाए बे इख़्तियार आंसू निकल पड़ते हैं तो मुसीबत के ऊपर रोना यह इंसान की फ़ितरत है।

(2)...... एक है किसी के फ़ेराक़ में रोना, किसी की जुदाई में रोना जैसे नबी ﷺ के बेटे सय्यदना इब्राहीम फ़ौत हो गए तो नबी ﷺ उनको जन्नतुल बक़ी में दफ़न फ़रमा रहे थे उस वक़्त आप की मुबारक आंखों से आंसू बह रहे थे, एक सहाबी ने देखा तो हैरान हुए, फ़रमाने लगे ऐ अल्लाह के नबी आप भी रो रहे हैं नबी ﷺ ने फ़रमाया (العين تدمع و القلب يحزن) दिल मग़मूम है आंख रोती है (وانا بفراقك يا ابراهيم لمحزونون) ऐ इब्राहीम हम तेरी जुदाई के अन्दर ग़मगीन हैं, तो फ़ितरी चीज़ है मां बाप फ़ौत हों तो औलाद रोती है औलाद फ़ौत हो तो मां बाप रोते हैं, जिस मां का बच्चा फ़ौत हो जाए उसको रूलाने के लिए मरसिय्या ख़्वां की ज़रूरत नहीं होती, वह दुख और दर्द की वजह से ग़म की वजह से खुद रो रही होती है, चुनांचे यूसुफ़ عليه السلام की जुदाई

में हज़रत याक़ूब عليه السلام भी रोए थे फ़ितरी मुहब्बत होती है, इतना रोए इतना रोए कि ﴿وابيضت عيناه من الحزن فهو كظيم﴾ रो रो के उनकी आंखें सफ़ेद हो गई थीं, बीनाई चली गई अब सवाल पैदा होता है कि इतना बड़ा दिल तो होना चाहिए कि बन्दा उस ग़म को बर्दाश्त कर सके। मगर याक़ूब عليه السلام का रोना दो वजह से था एक रोना इस वजह से था कि वह समझते थे कि मेरे बेटे को अल्लाह ने जन्नती हुसन का नमूना दिया लिहाज़ा जन्नती हुस्न जुदा होने की वजह से वह रोया करते थे, ﴿ما هذا بشرا ان هذا الا ملك كريم﴾ और दूसरा याक़ूब عليه السلام इस वजह से रोते थे कि बचपन में मेरा बच्चा जुदा हो गया उसको सहीह ईमान की तलक़ीन भी नहीं कर सके मालूम नहीं वह किस हाल में मेरा बेटा दुनिया से रूख़सत हुआ इस वजह से रोते थे इस लिए जब खुशख़बरी देने वाले ने आकर बताया कि आप के बेटे यूसुफ़ عليه السلام ज़िन्दा हैं तो याक़ूब عليه السلام ने पहली बात यह पूछी कि तूने उसको किस दीन पर पाया उसने कहा कि मैंने उनको दीने इस्लाम पर पाया याक़ूब عليه السلام फ़रमाने लगे (الآن تمت نعمة ربی) कि मेरे रब की नेमत अब मुझ पर मुकम्मल हो गई कि मेरा बेटा भी सलामत है उसका दीन भी सलामत है, तो फ़ेराक़ में लोग रोते हैं।

सहाबा का हुज़ूर के फ़ेराक़ में रोना

सहाबए केराम नबी صلى الله عليه وسلم के फ़ेराक़ में रोया करते थे, चुनांचे सय्यदना बिलाल رضي الله عنه के बारे में आता है कि जब नबी صلى الله عليه وسلم ने पर्दा फ़रमाया तो उन्होंने दिल में सोचा कि पहले तो यहां महबूब का दीदार होता था मैं मस्जिदे नबवी में अज़ान देता था अब मैं अगर महबूब का दीदार नहीं कर सकूंगा तो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूंगा, चुनांचे उन्होंने मुल्के शाम में हिजरत फ़रमा ली, फिर उसके बाद उन्होंने अज़ान नहीं कही नबी صلى الله عليه وسلم की वफ़ात के बाद हज़रत बिलाल رضي الله عنه ने सिर्फ़ दो मर्तबा अज़ान दी एक अज़ान तो जब बैतुल मक़दिस फ़तेह हुआ हज़रत उमर رضي الله عنه के ज़माना

में, उस वक़्त सहाबा का दिल मचल उठा और सहाबा केराम ने कहा अमीरूल मोमिनीन आप बिलाल से कहिए यह अल्लाह के महबूब के मुअज़्ज़िन थे आज ज़रा याद ताज़ा हो जाए और बैतुल मक़दिस में उनकी अज़ान हो जाए तो बिलाल ने पहले तो इन्कार फ़रमाया जब अमीरूल मोमिनीन ने हुक्म दिया अब इन्कार की गुन्जाइश नहीं थी तो एक तो उन्होंने क़िब्लए अव्वल में अज़ान दी नबी ﷺ की वफ़ात के बाद फिर एक मर्तबा शाम में रात को सोए हुए थे नबी ﷺ का दीदार हुआ तो महबूब ने फ़रमाया कि बिलाल कितनी बे वफ़ाई है इतना अरसा गुज़र गया तुम हमारी मुलाक़ात के लिए भी नहीं आते बस इस ख़्वाब के आते ही उठ बैठे अपनी बीवी से कहा कि मेरी ऊंटनी तय्यार करो और मैं अब मदीना जा रहा हूं चुनांचे शाम से मदीना तय्यबा का सफ़र किया अब जब मदीना तय्यबा में आए तो नमाज़ का वक़्त भी था सहाबए केराम की चाहत थी कि हम नबी ﷺ के ज़माना की अज़ान सुनें, महबूब की याद ताज़ा हो उन्होंने इंकार फ़रमा दिया चुनांचे सय्यदना हसन और सय्यदना हुसैन दोनों शहज़ादों ने अपनी तमन्ना ज़ाहिर की कि हमारा जी चाहता है कि अपने नाना के दौर की अज़ान सुनें अब शहज़ादों की ख़्वाहिश तमन्ना ऐसी थी कि उसका इंकार नहीं कर सकते थे चुनांचे कहने लगे अच्छा मैं अज़ान देता हूं बिलाल ने अज़ान देनी शुरू की अब अचानक जब मदीना में सहाबा ने बिलाल की आवाज़ सुनी जिस आवाज़ को वह दौरे नबी में सुना करते थे तो उनके दिल में नबी ﷺ की याद ताज़ा हो गयी सहाबा केराम तो मुर्ग़ नीम बिस्मिल की तरह रोने लग गए एक आवाज़ बुलन्द हुई हदीसे पाक का मफ़हूम कि मदीना की औरतें वह भी अपने घर से चादरें सर पर करके मस्जिदे नबवी की तरफ़ भागीं और उस वक़्त एक अजीब कैफ़ियत पैदा हो गई कि जब औरतें भी रो रही थीं मर्द भी रो रहे थे एक छोटे बच्चे ने जो मां के कन्धे पर बैठा था उसने बिलाल को देखा तो अपनी अम्मी से पूछने लगा अम्मी बिलाल तो इतने अरसा के बाद वापस आ गए तो

बताओ नबी ﷺ कब वापस आयेंगे?

कहते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि॰ जब اشهد ان محمدا رسول الله पर पहुंचे فلم يقدر عليه فسكت مغشيا عليه حبا للنبى ﷺ अपने आप पर क़ाबू न रख सके नबी ﷺ की मुहब्बत में बे क़रार होकर नीचे गिर गए (وشوقا اليهم واشتد عند ذالك بكاء اهل المدينة من المهاجرين و الانصار) मुहाजिरीन और अंसार की मदीना में इतनी आवाज़ें बुलन्द हुईं (حتى خرجت النساء من خمورهن) हत्ता कि औरतें भी अपनी चादरें लेकर पर्दा करके घरों से निकल कर मस्जिद में अज़ान सुनने के लिए आ गईं शौक़न इलन नबी ﷺ अब खुश्क मिला को क्या पता कि यह रोना क्या चीज़ होती है? यह तो वही जानता है जिस के दिल में लगी होती है कि नबी ﷺ की मुहब्बत में रोना क्या चीज़ होती है, तो एक रोने की क़िस्म है किसी के फ़ेराक़ में रोना।

(3)...... तिलावते कुरआन में रोना जो कुरआन मजीद के मफ़हूम को समझने वाले कुरआन मजीद के मानी के जानने वाले हैं वह जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के कलाम को पढ़ते हैं तो कुछ जगहों पर जाकर फिर वह बे इख़्तियार रोया करते हैं चुनांचे हदीसे पाक में है तवज्जोह से सुनिए कि तिलावते कुरआन के वक़्त जो शख़्स रोया अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके लिए जन्नत को वाजिब फ़रमा देते हैं इसी लिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि॰ फ़रमाते थे (فان لم تبكو افاليتباكوا) जब तुम अज़ाब की आयतों को पढ़ो अगर रो न सको तो तुम रोने वाली शक्ल ही बना लिया करो, क्या पता अल्लाह को तुम्हारा बहरूप ही पसन्द आ जाए।

(4)...... एक चौथी किस्म का रोना है गुनाहों को याद करके रोना चुनांचे हदीसे पाक में आता है तवज्जोह से सुनिए अब यह आजिज़ अपने मज़मून को समेटना चाहता है हदीस पाक में आया من تذكر خطاياه जिसने अपने गुनाहों को याद किया و بكى عيناه और उसकी आंखें रो पड़ीं رضى منه الله तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस

बन्दे से राज़ी हो जाते हैं।

(5)...... इश्क़े इलाही में रोना, मुहब्बते इलाही में रोना, चुनांचे हदीसे पाक में आता है (من بكى باشتياق المولى فله جنة الماوى) जो इंसान अल्लाह की याद में मुहब्बत में रोता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसको जन्नते मावा अता फ़रमा देते हैं हज़रत मूसा عليه السلام को لن ترانى का जब ख़िताब हुआ था कहते हैं कि उसके बाद ज़िन्दगी भर किसी ने हंसता हुआ नहीं देखा था, सय्यदना हफ़सा رضي الله عنها उम्मुल मोमिनीन फ़रमाती हैं एक मर्तबा नबी ﷺ मेरे पास आराम फ़रमा रहे थे अचानक मैंने अपने रूख़सार पर कोई गर्म चीज़ महसूस की जब हाथ लगाया तो पानी! मैं उठ बैठी तो क्या देखा नबी ﷺ रो रहे थे और आप की मुबारक आंखों के जो गर्म गर्म आंसू थे वह मेरे रूख़सार पर पड़ रहे थे, कहती हैं मैंने उठते ही पूछा ऐ अल्लाह के महबूब आप क्यों रो रहे हैं? आप ने फ़रमाया हफ़सा तुम सुन नहीं रही, तुम्हारा भाई तहज्जुद में क्या पढ़ रहा है? फ़रमाती हैं तब मैंने ध्यान दिया अब्दुल्लाह इब्ने उमर मेरे भाई साथ वाले कमरे में तहज्जुद पढ़ रहे थे और तहज्जुद पढ़ते हुए इस आयत पर पहुंचे ﴿كلا انهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون﴾ कि यह काफ़िर लोग अल्लाह तआला से पर्दे में रह जायेंगे तो महबूब ने यह आयत सुनी तो दिल अल्लाह की याद में इतना तड़प उठा कि कुछ लोग होंगे, जिन को क़ियामत के दिन अल्लाह का दीदार नहीं होगा, रोने लगे, अल्लाह हमें अपना दीदार अता फ़रमा दे, तो फ़रमाती हैं मैंने पूछा आक़ा कोई तकलीफ़ है फ़रमाया नहीं मैंने कहा आक़ा आप जन्नत की याद में रो रहे हैं फ़रमाया नहीं मैंने पूछा जहन्नम की याद से रो रहे हैं फ़रमाने लगे नहीं मैंने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब आख़िर क्यों रो रहे हैं? नबी ﷺ ने फ़रमाया कि हफ़सा انا مشتاق मैं अल्लाह का मुशताक़ हूं और इस वक़्त मेरे दिल में शौक़ बढ़ गया अल्लाह की मुलाक़ात का जिसने मुझे रोने पर मजबूर कर दिया।

सारी चमक दमक तो इन्हीं मोतियों से है

आंसू न हो तो इश्क़ में कुछ आबरू नहीं

आंसू न हो तो फिर मुहब्बत की क़ीमत ही क्या रह जाती है, इसलिए हज़रत शुऐब عليه السلام अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में रोए فقال الله له ما هذا البكاء अल्लाह तआला ने पूछा ऐ मेरे प्यारे पैग़म्बर عليه السلام यह रोना क्या है? أشوقا الى الجنة क्या जन्नत की याद में रो रहे हैं? أم خوفا من النار؟ या आग के ख़ौफ़ से रो रहे हैं فقال لا يارب फ़रमाने लगे ऐ रब ऐसा नहीं ولكن شوقا الى لقائك बल्कि मैं आप की मुलाक़ात के शौक़ में रो रहा हूं فاوحى الله اليه अल्लाह ने उनकी तरफ़ वही नाज़िल फ़रमाई ऐ शुऐब मेरी मुहब्बत में रोने की वजह से आप को क़ियामत के दिन मेरी मुलाक़ात की बशारत नसीब हो।

रोने में सहाबा رضي الله عنهم की हालत

इमाम ग़ज़ाली रह० लिखते हैं कि तिलावते कुरआन मजीद के वक़्त बाज़ सहाबा तो ऐसे थे कि जिन पर झर झरी तारी हो जाती थी ومنهم من بكى बाज़ ऐसे थे जो कुरआन पढ़ते हुए रो पड़ते थे ومنهم من غشيه عليه और बाज़ ऐसे थे जो बेहोश हो जाते थे ومنهم من مات فى غشيه और बाज़ ऐसे थे इस बेहोशी के आलम में उनकी रूह निकल जाया करती थी।

चुनांचे नबी عليه السلام एक मर्तबा तहज्जुद पढ़ रहे थे और आप को पीछे पता नहीं था एक सहाबी आए और उन्होंने पीछे ख़ामोशी से ममाज़ शुरू कर दी इमरान रज़ि० उन सहाबी का नाम था नबी عليه السلام ने जब कुरआन पाक की तिलावत करते हुए पढ़ा जहन्नम के बारे में ﴿ان لدينا انكالا و جحيما و طعاما ذاغصة و عذابا اليما﴾ वह सहाबी पीछे गिरे और उनकी रूह परवाज़ कर गई जहन्नम की हथकड़ियों के बारे में बेड़ियों के बारे में इस आयत के अन्दर तज़किरा किया गया है।

चुनांचे एक सहाबी पढ़ रहे थे जब इस आयत पर पहुंचे ﴿فلنسئلن

﴿الذين ارسل اليهم و لنسئلن المرسلين﴾ हदीस पाक में आता है अल्लाह के महबूब फूट फूट कर रोने लगे, चुनांचे सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ि० जब नमाज़ पढ़ाते थे तो वह भी रोते थे इस लिए जब आख़िरी दिनों में इमाम किस को बनाया जाए उस के बारे में आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से मशवरा किया गया तो उन्होंने इसी लिए कहा था कि आप मेरे अब्बू को इमामत के लिए न कहें ﴿ان ابا بكر اذاقام فی مقامك لم يسمع الناس عن البكاء﴾ कि जब मेरे वालिद आप के मुसल्ले पर खड़े होंगे इतना रोयेंगे लोग उनकी तिलावत भी नहीं सुन सकेंगे, चुनांचे अब्दुल्लाह इब्ने शद्दाद रज़ि० एक सहाबी हैं वह फ़रमाते हैं एक मर्तबा मैंने मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ी उमर रज़ि० ने पढ़ाई और मैं आख़िरी सफ़ों में था फ़रमाते हैं (سمعت نشيج عمر و انا فی آخر الصفوف يقرأ انما اشكو بثی و انما اشكو حزنی الی الله) कि उन्होंने सूरए यूसुफ़ की आयत पढ़ी انما اشكو بثی و حزنی الی الله तो उस वक़्त पढ़ते पढ़ते इतना रोए कि मुझे आख़िरी सफ़ में खड़े उनके रोने की आवाज़ आ रही थी।

दोस्तो! कोई हमने भी कभी ऐसी नमाज़ पढ़ी कि जिस नमाज़ में हम तिलावत करते हुए रोए हों अल्लाह की याद में रोए हों, इसलिए इमाम शाफ़ई रह० ने जब आयत सुनी ﴿هذا يوم لا ينطقون ولا يؤذن لهم فيعتذرون﴾ तो इमाम शाफ़ई रह० इस आयत को सुनकर बेहोश हो गए थे, अली बिन फ़ुज़ैल रह० ने आयत सुनी ﴿يوم يقوم الناس لرب العلمين﴾ इस आयत को पढ़ कर वह भी बेहोश हो गए, सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० एक मर्तबा पूरी रात इस आयत को पढ़ती रहीं ﴿وبدالهم من الله مالم يكونو يحسبون﴾ और पढ़ पढ़ कर रोती रहीं चुनांचे शिबली रह० ने एक क़ारी से नमाज़ में जब आयत सुनी ﴿لان شئنا لنذهبن بالذی اوحينا اليك﴾ तो इस आयत को पढ़ कर वह बेहोश होकर तरावीह की नमाज़ में नीचे गिर गए थे।

नाज़ है गुल को नज़ाकत पे चमन में ऐ ज़ौक़
उसने देखे ही नहीं नाज़ व नज़ाकत वाले

कौन कब रोता है?

आज हमें शेअर सुन कर रोना आता है शाइरों के अशआर सुन कर रोना आ जाता है अल्लाह का कुरआन सुन कर रोना नहीं आता, इसकी वजह उलमा ने लिखी है कि जिस के दिल में मख़लूक़ का तअल्लुक़ ज़्यादा मज़बूत होगा वह मख़लूक़ के कलाम को सुन कर रोएगा और जिसके दिल में अल्लाह और उसके रसूल का तअल्लुक़ ग़ालिब होगा वह कुरआन को और महबूब के फ़रमान को सुन कर रोएगा, चुनांचे कुरआन मजीद गवाही दे रहा है ﴿واذا سمعوا ما انزل الى انرسول ترى اعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق﴾ सहाबा केराम के बारे में है कि जब वह सुनते थे जो नबी ﷺ पर नाज़िल हुआ तो उनकी आंखों से आंसू की लड़ियां जारी हो जाया करती थीं फ़तहुल बारी में (बुख़ारी शरीफ़ की शरह) लिखा है कि (يستحب البكاء مع القراءة) कि जब क़िराअत की जाए कुरआन पढ़ा जाए तो कुरआन पढ़ते हुए रोना मुस्तहब है وطريق تحصيله और इस रोने की कैफ़ियत को हासिल करने का तरीक़ा यह ان يحضر قلبه الحزن कि अपने दिल में हिज़्न और ख़ौफ़ को हाज़िर करे और अगर फिर भी रोना न आए فانه من اعظم المصائب तो फिर इससे बड़ी बन्दे पर कोई मुसीबत नहीं हो सकती।

कौन कितना रोया?

......हज़रत आदम عليه السلام अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने अपनी भूल पर तीन सौ साल तक रोते रहे।

...... हज़रत दाऊद عليه السلام चालीस साल तक रोए हमारे अकाबिरीन अल्लाह के ख़ौफ़ से बहुत रोया करते थे।

...... हसन बसरी॰ के बारे में आता है कि रोते थे आंसू ज़मीन पर गिरने लग जाते थे इतने आंसू ज़मीन पर गिरते थे कि उस जगह पर पानी की वजह से घास उग आया करती थी।

...... राबिया बसरिय्या अल्लाह की नेक बन्दी एक मर्तबा मुनाजात में रोती रहीं और अपने आंसू ज़मीन पर फेंकती रहीं जब मुनाजात करके उठीं तो आने वाले बन्दे ने आकर पूछा कि आप ने इस जगह पर वुज़ू किया है आंसुओं का इतना पानी था कि देखने वाले ने उसको वुज़ू का पानी समझा, वह कहने लगीं यह तो रोने के आंसू हैं वह कहने लगे मैंने आंसुओं का पानी इससे पहले कभी बहते हुए नहीं देखा था, इसी लिए एक मर्तबा उनको खाने के लिए भुना हुआ मुर्ग़ा पेश किया गया तो राबिया बसरिय्या रोने लग गईं उसने कहा अम्मां इसमें रोने की बात क्या है कहने लगीं रोने की बात यह है कि इस मुर्ग़े को पहले ज़िबह करके जान निकाली गई फिर आग पर भूना गया अगर राबिया को क़ियामत के दिन माफ़ी न मिली तो इसे तो ज़िन्दा हालत में जहन्नम में भूना जाएगा, इसलिए उलमा ने लिखा है कि जो इंसान दुनिया में गुनाहों पर शर्मिन्दा होगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसको क़ियामत के दिन शर्मिन्दा न फ़रमायेंगे।

अजरे अज़ीम

जो इंसान दुनिया में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में रोएगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़ियामत के दिन अपने दीदार से महरूम नहीं फ़रमायेंगे इसलिए आज की यह बड़ी रात है हमें चाहिए एक तो हम अपने गुनाहों को याद करके रोयें मालूम नहीं कैसी कैसी ख़तायें की हैं आज जहन्नम से हमें पनाह मांगनी है और अल्लाह तआला से माफ़ी तलब करनी है ऐ अल्लाह हमें जहन्नम से बचा दीजिए आज की इस बा बरकत रात में जहन्नम की आग हम पर हराम फ़रमा दीजिए और दूसरे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में कि ऐ अल्लाह हम आप से आप ही को चाहते हैं यह लैलतुल क़द्र है इसमें आपकी इतनी रहमतें बरकतें नाज़िल होती हैं ऐ परवरदिगार एक रहमत से हमारे नसीब का भी फ़ैसला फ़रमा दीजिए कि हमें क़ियामत के दिन अपने आशिक़ों में

खड़ा कर दीजिए अपने चाहने वालों में ख़ड़ा कर लीजिए आज अल्लाह की मुहब्बत में जो बन्दा रोएगा वह क़ियामत के दिन अल्लाह के दुशमनों में खड़ा नहीं किया जाएगा।

अजीब बात

हमारे हज़रात दो बातें किया करते थे और दोनों बातें बड़ी अजीब हैं एक बात तो यह वह फ़रमाया करते थे कि ऐ अल्लाह आप ने फ़रमाया कि तुम मुझ से मुहब्बत करो और कुफ़्फ़ार से तुम दुशमनी रखो तो ऐ अल्लाह हम ने तेरे लिए कुफ़्र से और कुफ़्फ़ार के तरीक़ों से दिल में अदावत पैदा कर ली ऐ अल्लाह उन दुशमनों को और हमें जहन्नम में इकट्ठा न फ़रमा देना, जब हम ने आप की ख़ातिर उनसे अदावत की है उनके तरीक़ों को छोड़ दिया और आप के सामने सर झुका दिया ऐ अल्लाह आप कैसे पसन्द फ़रमायेंगे कि उन दुशमनों के साथ हमें जहन्नम की आग में इकट्ठा फ़रमायें!

...... और हमारे बाज़ उलमा अजीब दुआ फ़रमाते थे कहते हैं कि मैदाने अरफ़ात में एक बुज़ुर्ग यह दुआ कर रहे थे दुआ उन्होंने यह की कि क़ुरआन मजीद में एक जगह है कि काफ़िर लोग क़सम खा कर कहते थे कि आख़िरत में दोबारा उठने वाला अक़ीदा ग़लत है ऐ अल्लाह काफ़िर क़सम खा कर कहते हैं कि मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना ग़लत है और ऐ परवरदिगार हम क़सम खा कर कहते हैं कि मरने के बाद हम ज़िन्दा होंगे आप के हुज़ूर पेश होंगे उन्होंने भी क़सम खाई हमने भी क़सम खाई दो मुख़तलिफ़ क़समें खाने वालों को जहन्नम में एक जगह पर इकट्ठा न फ़रमाना।

तो वाक़ई बात ऐसी ही है तो हमें भी अपने रब से माफ़ी मांगनी चाहिए ऐ अल्लाह! हम आप से अपने गुनाहों की सच्ची माफ़ी मांगते हैं आप हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए और हमें जहन्नम की आग से बचा लीजिए इसलिए कि मां उसको बेटे से इतना प्यार होता है कि

अपने बेटे के बारे में कोई लफ़्ज़ भी वह किसी की ज़बान से बर्दाश्त नहीं कर सकती और अगर उसके बेटे को कोई बद दुआ देदे तौबा तौबा वह शेरनी की तरह पीछे पड़ जाएगी, तू होती कौन मेरे बेटे को बद दुआ देने वाली मां बेटे की बद दुआ बर्दाश्त नहीं कर सकती तो फिर अल्लाह के महबूब ने अपनी उम्मत के लिए बद दुआ कैसे बर्दाश्त की? हदीस पाक में आता है जिबरईल आए और उन्होंने आकर बददुआ दी बर्बाद हो जाए वह शख़्स जिस ने रमज़ान का महीना पाया और अपनी मग़्फ़िरत न करवाई अल्लाह के महबूब ने इस बद दुआ पर आमीन कह दी जिस महबूब को ताइफ़ के सफ़र में पत्थर मारे गए, जिन के नालैन मुबारक खून से भर गए उस वक़्त फ़रिशते आए और कहने लगे ऐ अल्लाह के महबूब आप इरशाद फ़रमायें हम पहाड़ों को टकरा कर इस क़ौम को मिटा कर रख दें, महबूब ने उस वक़्त बददुआ न की फ़रमाया اللهم اهد قومی فانهم لا يعلمون अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत दीजिए यह मेरे मर्तबा को पहचानते नहीं, तो अल्लाह के महबूब ने कलमा गो लोगों के लिए अपने उम्मतियों के लिए मोमिनों के लिए आमीन कैसे कह दी तो इसका शारिहीन ने यह जवाब लिखा कि हक़ीक़त में रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह तआला बन्दे को माफ़ करने पर तुले होते हैं जहन्नम से निकालने पर तुले होते हैं जो बन्दा सच्चे दिल से माफ़ी मांग कर अपने आपको इस मौक़ा पर भी न बख़्शवाए उसने अल्लाह की रहमत की बे क़दरी की इस बे क़दरे बन्दे का बर्बाद हो जाना ही बेहतर है तो आज की इस रात में हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से माफ़ी मांगे ऐ अल्लाह जहन्नम की आग से हमें बरी फ़रमा दीजिए, मेरे दोस्तो हम आम बन्दे की बद दुआओं से भी डरते हैं, सोचिए जिबरईल عليه السلام ने बद दुआ की और अल्लाह के महबूब ने आमीन कही, अब इससे डरने की ज़रूरत है या नहीं है? इससे कैसे डरेंगे इससे डरने का यही तरीक़ा है कि आज की इस रात में हम अल्लाह तआला से अपने गुनाहों को बख़्शवा कर उठें, घरों में अकेले मांगेंगे तो

पता नहीं रब माफ़ करेंगे या नहीं करेंगे और इतने लोग जो यहां मौजूद हैं कोई तो अल्लाह का मक़बूल बन्दा होगा किसी के दिल में तो ख़ौफ़े ख़ुदा होगा, किसी के दिल में तो अल्लाह की मुहब्बत होगी किसी के दिल में तो हया और पाकदामनी होगी इतने लोग जो हैं सज्दा करते करते जिन्होंने अपने बाल सफ़ेद कर लिए किसी का तो कोई सज्दा अल्लाह के यहां क़बूल होगा उन लोगों में इस बड़ी रात में जब अल्लाह हमें इकट्ठा बैठने की तौफ़ीक़ दी तो लगता है कि परवरदिगार का इरादा ख़ैर का है वह हमें बख़्शना चाहता है, तभी तो आज इस मस्जिद में पहुंचा दिया लिहाज़ा इस दुआ के मौक़ा पर हम आज दिल में अहद कर लें हम ने अपने रब को रो रो के मनाना है, हमें कोई एहसास न हो कि हमारे गिर्द कौन बैठा है कौन नहीं बैठा, हमें तो अपनी पड़ी हो आज हम अपने मालिक को मना कर उठेंगे, उस वक़्त तक दुआ ख़त्म नहीं करेंगे जब तक (परवर दिगार) हमें माफ़ न कर दें, हमारे गुनाहों का बोझ हमारे सर से दूर न कर दें और हमें महबूब की बद दुआ से बचाव नसीब न हो जाए हमें अल्लाह तआला जहन्नम से बरी न फ़रमा दें जब इस निय्यत से और जज़्बा से दुआ मागेंगे तो आज की रात की बरकतें हमें नसीब होंगी (परवर दिगार) हम सब की बख़शिश फ़रमाए और आज की इस अज़ीम रात में अल्लाह तआला बख़्शे बख़्शाए सब लोगों को अपने घरों में वापस लौटाए।

و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمین

ومن ارادا لآخرة و سعى لها سعيها وهو مؤمن
فا ولئك كا ن سعيهم مشكو را

नेकी का दुनिया में फ़ाइदा

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ जुल फ़क़ार अहमद
दामत बरकातहुम (नक़्शबन्दी मुजद्दिदी)

दर हालत ऐतकाफ़ मस्जिद नूर लोसाका ज़ामबिया
(बाद नमाज़े इशा 2003 ई0)

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

सदक़ा से अल्लाह तआला रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमाते हैं नबी ﷺ ने क़सम उठा कर यह बात हदीस पाक में फ़रमाई (सदक़ा करने से रिज़्क़ बढ़ता है) अगर अल्लाह के महबूब वैसे ही बात कर देते उस सादिक़ व अमीन की यह बात सच्ची थी मगर उन्होंने क़सम खा कर फ़रमाया कि सदक़ा करने से आदमी के रिज़्क़ के अन्दर कमी नहीं आती अल्लाह तआला बरकत अता फ़रमा देते हैं

हज़रत पीर जुलफ़ेकार अहमद साहब
नक़्शबन्दी मद्दा ज़िल्लहु

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد .....!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

﴿ومن اراد الآخرة و سعى لها سعيها وهو مؤمن فا ولئك كان سعيهم مشكورا﴾

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّم

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّم

आमाल से अहवाल बनते हैं

इंसान के आमाल पर इंसान के हालात का फ़ैसला किया जाता है, अगर आमाल अच्छे हों तो अल्लाह तआला हालात को अच्छा कर देते हैं, आमाल बुरे हों तो अल्लाह तआला हालात को बुरा कर देते हैं, इसी लिए फ़रमाया गया اعمالكم عمّا لكم तुम्हारे आमाल ही तुम्हारे हाकिम हैं जैसे अमल होंगे वैसे हाकिम होंगे, आज का इंसान यह चाहता है कि हालात पहले ठीक हों अमल बाद में ठीक करूंगा, यह ख़ुदाई तरतीब को उलटने वाली बात है, एक तरतीब होती है घोड़ा आगे होता है और तांगा पीछे होता है हम अपने आमाल को पहले संवारें (परवर दिगार) हमारे हालात को संवार देंगे, अकसर सुना गया बल्कि पूछा गया कि भई आप मस्जिद में नहीं आते? जी बस कुछ काम्म कारोबार ठीक नहीं ज़रा ठीक हो जाएगा, आ जाऊंगा, यानी पहले हालात ठीक हों बाद में आमाल को ठीक करूंगा, हम उल्टी तरतीब चलना चाहते हैं यह नहीं होता, चुनांचे जो लोग अपने आमाल को दुरूस्त करते हैं अल्लाह तआला उनके हालात को भी दुरूस्त कर देता है, नेक आमाल के

आख़िरत में तो फ़ाइदे होंगे ही नेक आमाल के दुनिया में भी बहुत फ़ाइदे हैं अगर हम पर यह बात खुल जाए कि नेक आमाल के दुनिया में क्या फ़ाइदे हैं तो हम तो नेक आमाल के पीछे भागने वाले बन जायें, सहीह बात है हमें पता ही नहीं है, यह अल्लाह वाले यह बड़े दाना लोग हैं ऐसे रास्ते को उन्होंने चुना कि जिस रास्ते पर कामियाबी ही कामियाबी है।

यह बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है
जो चाहो लगा दो डर कैसा
गर जीत गए तो क्या कहने
गर हार गए तो मात नहीं

कि अगर इस रास्ते में जीत गए तो फिर तो बात ही क्या है हार भी गए तो शिकस्त नहीं है, कामियाबी ही कामियाबी है।

रूह व जिस्म की गिज़ायें

☆...... आमाले सालेह के दुनयावी फ़ाइदों में से एक फ़ाइदा यह है कि अल्लाह तआला रिज़्क़ में इज़ाफ़ा फ़रमा देते हैं, कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया ﴿لأكلوا من فوقهم ومن تحت ارجلهم﴾ अगर यह लोग नेकी और तक़वा को इख़्तियार करें हम उनको वह नेमतें खिलायें जो ऊपर से उतारते हैं और वह नेमतें अता करें जो पांव के नीचे (ज़मीन) से निकालते हैं।

इंसान दो चीज़ों का नाम है एक जिस्म और रूह, जिस्म मिट्टी से बना जिस्म की जितनी भी ज़रूरियात हैं वह मिट्टी से निकलती हैं, पानी मिट्टी से निकलता है, सब्ज़ियां फल ज़मीन से निकलते हैं, लिबास बनाने के लिए फ़सलें ज़मीन से निकलती हैं, मकान बनाने के लिए जितनी भी मादिनयात हैं वह ज़मीन से निकलती हैं, तो बदन की जितनी भी ज़रूरियात हैं अल्लाह तआला ने उनको ज़मीन में रख दिया है, रूह आलमे अम्र से आई हुई एक चीज़ है इस रूह की गिज़ा भी

ऊपर से आने वाले अनवार व तजल्लियात हैं अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे अगर तुम तक़वा इख़्तियार करोगे हम तुम्हारे ऊपर नूर की बारिश बरसायेंगे, जो तुम्हारी रूहानी ग़िज़ा बनेगी और ज़मीन से तुम्हारे लिए वह नेमतें निकालेंगे जो तुम्हारी जिस्मानी ग़िज़ा बन जाएगी, तुम बस बस करोगे हम तुम्हें इतना अता करेंगे।

अब देखो कि आदम عليه السلام के ज़माना में थोड़े लोग थे बढ़ते गए बढ़ते गए आज खरबो की तादाद में लोग हैं, तो ज़मीन में कुछ कम हुआ? कोई किसान कहता है कि जी अब मेरी ज़मीन ने फ़सल उगानी छोड़ दी, बीज डालता है ज़मीन ने फ़सल निकाल दी और अभी ज़मीन को पता ही नहीं कि कुछ निकला भी है या नहीं वाह मेरे मौला आप ने कितनी बरकत ज़मीन में रख दी, अरबो इंसान रोज़ाना इन नेमतों को खा रहे हैं और ज़मीन के अन्दर के ख़ज़ानों को भी पता नहीं इसलिए ज़मीन को बनाने में दो दिन लगे थे और इंसान के लिए इस में ग़िज़ायें रखने में चार दिन लगे थे وبارك فيها في اربعة ايام अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि चार दिनों में हमने तुम्हारे लिए बरकतें रखीं।

साइंस दानों की तहक़ीक़

चुनांचे आज साइंस दानों ने यह बात लिखी कि अगर ज़मीन से सब्ज़ी लें या फल लें और बाक़ी ज़मीन से जो निकलता है वह ज़मीन को वापस दे दें तो हमें इंसान की बनाई हुई खादों की पूरी उम्र ज़रूरत नहीं पड़ेगी, अल्लाह तआला की शान देखिए वह कहते हैं सब्ज़ी और फल इंसान के लिए है और बाक़ी जो कुछ है वह तो ज़मीन ही में रहना चाहिए, तो अगर वह वापस ज़मीन में डाल दिया जाए तो इसमें इतनी फ़रटीलाइज़र होती है कि इंसान को आर्टीफ़ीशियल फ़र्टीलाइज़र की कभी ज़रूरत नहीं पड़ेगी, अल्लाह तआला ने देखो इंसान के लिए ज़मीन में क्या कुछ रख दिया है।

रिज़्क़ रज़्ज़ाक़ के ज़िम्मे

यह रिज़्क का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ले लिया अल्लाह तआला रिज़्क पहुंचा कर रहते हैं यह पक्की सच्ची बात है ﴿وما من دابة فی الارض الا علی الله رزقها﴾ ज़मीन में जो भी कोई जानदार है उसका रिज़्क हमारे ज़िम्मा है अल्लाह तआला रिज़्क पहुंचाते हैं, समुन्दर में मछलियों को, हवा में परिन्दों को और ज़मीन पर इंसान को हर एक को उसका रिज़्क पहुंचता है अच्छा इंसान तो फिर भी जमा करके रखता है लेकिन परिन्दे कौन सा जमा करते हैं कोई है परिन्दा जो अपने घोंसले में जमा करके रखता हो? कोई नहीं रखता रोज़ अल्लाह तवक्कल निकलते हैं और अल्लाह तआला रोज़ उनको रिज़्क अता फ़रमा देते हैं।

पल्ले रिज़्क न बन्दे पखो न दरवेश
जना तकिया रबदा अना रिज़्क हमेश

कि दरवेश और परिन्दे यह अपने पल्ले रिज़्क नहीं बांधा करते जिनको अल्लाह पर तवक्कल होता है उनको रिज़्क हमेशा मिला करता है, रोज़ अल्लाह उनको अता फ़रमाते हैं रिज़्क का मामला ऐसा है बिलों में चूंटियों को रिज़्क देता है पानी के अन्दर मछिलयों को रिज़्क देता है।

व्हील मछली की ग़िज़ा

हम समझते थे यह जो बड़ी बड़ी व्हील मछलियां होती हैं यह बड़ी बड़ी मछलियों को खाती होंगी और टनों के हिसाब से यह गोश्त खाती होंगी, तब उनका काम चलता होगा, लेकिन जब पढ़ा तो पता चला कि नहीं उनकी ग़िज़ा पानी के अन्दर छोटे छोटे ज़र्रात हैं जो हमें आंख से नज़र भी नहीं आते यह पानी अपने अन्दर लेती हैं और वह छोटे छोटे ज़र्रात फ़िल्टर करके पानी निकाल देती हैं ज़र्रात टनों के हिसाब से उनकी ग़िज़ा बन जाते हैं हमने एक मज़मून पढ़ा कि जब बलो व्हील पैदा होती है तो उसकी ज़िन्दगी में ऐसे दिन आते हैं कि 500 किलो

ग्राम उसका वज़न रोज़ाना बढ़ता है अब बताइए कि जिस का पांच सौ रोज़ाना वज़न बढ़ रहा है उसकी ख़ोराक कितनी होगी और वह ख़ोराक क्या? कि हमें पानी में नज़र ही नहीं आती वाह मेरे मौला रिज़्क़ का बन्दोबस्त परवरदिगार ने कर दिया है।

क़िस्सा एक पत्थर का

हमारे एक दोस्त डाक्टर साहब थे वह अपनी फ़ैमली के साथ पहाड़ी इलाक़ा में घूमने फिरने गए, एक पहाड़ पर गोल ख़ूबसूरत सा पत्थर था उस पर जब उनकी नज़र पड़ी तो उनकी बेटी ने कहा कि मम्मी वह पत्थर देखो जैसा हमारे ड्राइंग रूम का कलर है बिल्कुल उससे मैच करता है, मां ने कहा बेटी उठा लो, वह गोल सा पत्थर था, छोटा सा उन्होंने उठा लिया उनकी बीवी ने कहा कि हम सफ़र की यादगार के तौर पर उसको ड्राइंग रूम में रखेंगे, दो साल वह पत्थर उनके ड्राइंग रूम में रहा एक दिन उनकी बीवी सफ़ाई कर रही थी, खुद उसने पत्थर को उठाया तो वह पत्थर उसके हाथ से फिसला और फ़र्श के ऊपर गिरके दो टुकड़े हो गया, उसने देखा कि उसके अन्दर एक सूराख़ है उसंमें से एक कीड़ा निकल कर ज़मीन पर चल रहा है, हैरान हुई कि दो साल से यह पत्थर हमारे घर पर है, ऐ मालिक तू कितना बड़ा है कि बन्द पत्थरों में भी तू कीड़ों को ग़िज़ा पहुंचा देता है, लिहाज़ा यह हक़ीक़त है कि रिज़्क़ जिस का हो उसको मिल कर रहता है।

कुत्ते का एक अजीब वाक़िया

एक दफ़ा हमें सफ़र करना था, गर्मी का मौसम था, मैंने गाड़ी चलाने वाले बन्दे से कह दिया कि भई सुबह ज़रा जल्दी निलकेंगे, ताकि धूप निकलने से पहले पहले कोई चार पांच घंटे का सफ़र है यह मुकम्मल कर लें, लाहौर से ख़ानेवाल जाना था, उसने कहा बहुत अच्छा अब अल्लाह तआला की शान देखें कि सुबह सुबह तो सड़कें ख़ाली

होती हैं और सड़क बनी हुई भी अच्छी थी तो ड्राइवर सफ़र तय करने के शौक़ में ज़रा तेज़ी से तय कर रहा था यह आजिज़ पीछे बैठा किसी किताब का मुताला कर रहा था अचानक उस ड्राइवर ने ज़ोर की ब्रेक लगाई तो जैसे कोई चीज़ गाड़ी के साथ टकराती है ऐसे फ़रंट पर ज़रा टकराई भी हमें उसकी आवाज़ सी आई मैंने उससे पूछा कि भई क्या हुआ? कहने लगा कि हज़रत बस कुत्ता आगे आ गया था मैंने बचाने की बड़ी कोशिश की मगर लगता है वह नीचे आ गया, मैंने कहा कि मुझे लगता है रात को आपने नीन्द ही नहीं पूरी की आपको नीन्द आ रही है मैंने आपको पहले भी समझाया था कि जब सुबह सफ़र पर निकलना हो तो रात नीन्द पूरी कर लिया करो, अच्छा ऐसा करें कि आगे आप को कोई हाटल मिले तो ज़रा रोकना मैं आपको एक कप चाय पिलाता हूं, ताकि आपकी नीन्द ठीक हो जाए, ख़ैर उसने फिर गाड़ी भगानी शुरू कर दी तीस या पैंतीस मील गाड़ी चली और पैंतीस मील जाने के बाद एक रेस्टोरेंट था सड़क के बिल्कुल ऊपर उसने वहां जाकर गाड़ी रोकी, मैंने उससे कहा आप चाय पियें, मेरे दिल में ख़्याल आया पता नहीं आगे कोई चीज़ लगी थी डेंट पड़ गया होगा मैं ज़रा देखूं तो इस आजिज़ ने नीचे उतर कर फ़रन्ट पर आकर देखा तो हैरान रह गया कि आगे के बम्पर के ऊपर वह कुत्ता आराम से बैठा है या अल्लाह पैंतीस किलो मीटर हम ने तेज़ रफ़तार से सफ़र किया एक सौ बीस तीस चालीस पर गाड़ी थी और कुत्ता यूं बैठा है अब मैंने जब कुत्ते को क़रीब से देखा उसने भी देखा उसने महसूस किया कि गाड़ी तो बन्द है, अब वह आहिस्ता से नीचे उतरा एक मीटर के फ़ासला पर होटल वालों ने हड्डियों का ढेर लगाया हुआ था उसने आराम से हड्डियां खानी शुरू कर दीं मैंने कहा अल्लाह बस बात समझ में आ गई असल में इसका रिज़्क़ आप ने यहां रखा हुआ था और कुत्ते के अन्दर इतनी इस्तिताअत नहीं थी कि यह चन्द मिनट में इतना फ़ासला तय करता अल्लाह ने हमारी गाड़ी को उसकी सवारी बना दिया असल में हुआ

यह कि इधर ड्राइवर ने ब्रेक लगाई और उधर उस कुत्ते ने जम्प लगाया तो गाड़ी ज़रा आहिस्ता हुई वह बम्पर के ऊपर आ पड़ा और वहीं बैठ गया पैंतीस किलो मीटर का सफ़र अल्लाह ने करवा दिया बग़ैर टिकट के रिज़्क़ का मामला अल्लाह के इख़्तियार में है वह हड्डियां थीं उसका रिज़्क़ उसने खाना था अल्लाह तआला ने उसको पहुंचा दिया।

एक दाने का अजीब सफ़र

एक साहब "कोइटा" (पाकिस्तान का एक शहर) में थे उनका बेटा था कोई सात आठ साल का अब यह बच्चे छोटे जो होते हैं यह कोई न कोई उल्टी सीधी हरकत करते रहते हैं मशहूर है,ब बकरी, ब, बन्दर ब, बच्चा यह तीनों कुछ न कुछ करते ही रहते हैं, आराम नहीं है इनको, वह बैठा हुआ चने खा रहा था और वह भी कैसे हाथ से उठा कर उछालता और फिर मुंह से कैच करता फिर उछालता फिर कैच करता अल्लाह तआला की शान कि बे ध्यानी में जो उसने दाना फेंका वह सीधा नाक के अन्दर चला गया अब उसने जल्दी से उंगुली लगाई तो और अन्दर फंस गया अब वह मां के पास आया अम्मी यह हो गया है, अब मां समझदार थी वह कहने लगी इसने पहले से इतना आगे पहुंचा दिया अगर मैंने कोशिश की तो ऐसा न हो कि यह और अन्दर चला जाए ज़ख़्म हो जाए मगर अजीब अल्लाह की शान कि उसी दिन उन्होंने लाहौर आना था अपने किसी अज़ीज़ की शादी के सिलसिला में और सवा घंटा फ़लाइट में बाक़ी रह गया था बस अभी वह मां उस से बात कर रही थी इतने में ख़ाविन्द घर आया कहने लगा मुझे दफ़्तर से आते हुए देर हो गई जल्दी से अब सामान उठाओ चूंकि पन्द्रह मिनट एयरपोर्ट पर पहुंचने में लगेंगे और घंटा पहले रिपोर्ट करनी होती है और मैं फ़लाइट मिस करना नहीं चाहता और बुकिंग है, उसकी बीवी ने कहा जी उसके साथ तो यह हो गया है, उसने कहा इसकी शरारत का

नतीजा है, अब यह घंटा डेढ़ घंटा बर्दाश्त करे हम वहां लाहौर पहुंच जायेंगे तो वहां जाकर हमारे एक कज़िन डाक्टर हैं सर्जन हैं (उन से यह निकलवा लेंग), बच्चे को मां ने समझाया बेटा घंटा की बात है तू इसको बर्दाश्त कर ले वहां जाकर निकलवा लेंगे, यह लाहौर पहुंच गए उससे आगे जिस शहर पहुंचना था सामान रखा, उसने बच्चे को लिया और अपने कज़िन के घर जा पहुंचा जब वहां पर पहुंचा तो कज़िन बाथरूम में नहा रहा था उसकी बीवी ने उसको बिठाया, ड्राइंगरूम में और कहा जी बस जैसे ही वह वाशरूम से बाहर आते हैं अभी आप के पास आयेंगे आप बैठें मैं किचन में चाय बनाती हूं वह चाय बनाने चली गई यह इन्तिज़ार में बैठ गए इतने में उस बच्चे को छींक आई और छींक ऐसी ज़ोर की थी कि नाक में से वह दाना फ़र्श पर गिरा, डाक्टर साहब के यहां एक मुर्गी थी वह क़रीब फिर रही थी उसने दाने को खा लिया।

अब देखिए वह दाना उस मुर्ग़ी की गिज़ा थी अब वह हज़ार मील से ज़्यादा दूर कैसे पहुंचे? अल्लाह ने उसको पहुंचाने वाला बना दिया वाह, मेरे मालिक, याद रखें अगर किसी पहाड़ के नीचे कोई दाना हो और वह किसी का रिज़्क़ है तो बन्दा जब तक उस रिज़्क़ को नहीं खा लेगा तब तक उसको मौत नहीं आ सकती, इस बारे में अपने रब पर यक़ीन पक्का कर लीजिए कि जो मेरे मुक़द्दर में है परवरदिगार ने मुझे पहुंचाना है ﴿نحن قسمنا بينهم معيشتهم﴾ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं यह रिज़्क़ तो हम ने तक़सीम किया है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त पहुंचा देते हैं।

भूखे नौजवान का वाक़िया

एक मस्जिद के आलिम ने मसला बयान किया कि भई जिस का रिज़्क़ हो उसको ज़रूर पहुंच कर रहता है, एक नौजवान अनपढ़ देहाती था उसने कहा यार इसको आज़माते हैं कि मैं जब नहीं खाता तो मुझे

रिज़्क़ कैसे पहुंचेगा? उसने खाने पीने से हड़ताल कर डाली, मां ने उसके लिए बिरयानी बनाई, बेटे खा ले कहा मैं ने नहीं खाना, मां ने बहुत समझाया वह मानता ही नहीं था, अल्लाह की शान दोपहर का वक़्त हो गया मां मिन्नत समाजत करती रही करती रही, जब उसने देखा कि मां मुझ पर बहुत ही ज़्यादा ज़ोर डाल रही है तो वहां से उठकर बस्ती के क़रीब खुली सी जगह थी दरख़्त थे, वहां जा कर आराम करने लगा वहां जा के दरख़्तों के दरमियान सो गया, अब मां बेचारी उसके पीछे नाशता ले कर चलती रही, वह भी वहीं पहुंच गई बेटे कुछ खा ले? उसने कहा अम्मी मुझे आप मजबूर न करें मैं ने नहीं खाना, ख़ैर उसके कामों में देर हो रही थी उसका खाना वहीं रख दिया और आ गई अब उसको भी गर्म गर्म महक आ रही थी खाने की और उस का जी भी चाह रहा था वह उठकर थोड़ा दूर लेट गया थोड़ा और आगे कि मुझे खाने की खुशबू ही न आये अल्लाह तआला की शान कि कुछ लोग चोर थे वह दोपहर के वक़्त जब गर्मी की शिद्दत होती और लोग घरों में दुबक कर बैठ जाते उस वक़्त वहां बैठ कर पलानिंग करते थे, अब जब वहां पहुंचे उनमें से जो एक ने खाने की महक सूंघीं तो कहने लगा यार यह तो बड़ा मज़ेदार खाना है, वह उठा कर ले आया उनका जो बड़ा था समझदार था, वह कहने लगा नहीं! मत खाना, हो सकता है किसी ने इसमें ज़हर मिलाया हो और हमारे लिये हिलाकत हो, उसने कहा कौन मिला सकता है कहने लगा अच्छा जिसने मिलाया होगा वह क़रीब ही होगा कहीं, ज़रा देखो अब वह जो इधर चले तो यह साहब पड़े हुए मिल गये, उन्होंने उनको पकड़ लिया और कहने लगा अच्छा मक्कारी करता है, चल खा इस खाने को वह कहता जी मैं नहीं खाता, अब उनको पक्का यक़ीन हो गया कि उसने ही कुछ मिलाया है, वह कहने लगा कि खा कहता है मैं नहीं खाता, अब उन्होंने जूते उतारे और उसके लगाने शुरू कर दिये खूब जूते मारे जब टिका के उसकी पिटाई की तो चोरों के सरदार ने कहा कि

ज़बरदस्ती इसके मुंह में डालो, तीसरें ने जूते लगाये, जब लुक़्मा अन्दर गया कहने लगा मारो नहीं मैं तुम्हें बता देता हूं, कहा बात क्या है? कहने लगा जी असल वजह तो यह थी इस में कोई ज़हर नहीं है, बहरहाल आप लोगों ने जितना मार लिया उतना ही काफ़ी है खुदा के वास्ते और कुछ न कहो ख़ैर उन्होंने छोड़ दिया अब यह घर आ गया रोटी खानी शुरू कर दी, जब अगला जुमा का दिन आया तो मौलाना साहब ने फिर आगे अपना मसला छेड़ मजीद आयतें और हदीसें बताई यह ग़ौर से सुनता रहा जब जुमा पढ़ लिया तो उठा और मौलाना साहब से आकर मिला कहता है मौलाना साहब आप मसला अधूरा बयान न किया करें, उन्होंने कहा क्या मतलब? कहने लगा कि आप ने पिछली दफ़ा कहा था कि जिस का रिज़्क़ होता है उसको पहुंच के रहता है और अगर नहीं लेता तो जूते खा कर लेना पड़ता है, वाह मेरे मौला! आप कैसे देने वाले रज़्ज़ाक़ हैं कैसे पहुंचाने वाले रज़्ज़ाक़ हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने रिज़्क़ का ज़िम्मा लिया है।

रिज़्क़ का मामला

याद रखना कि जब बन्दा उस रिज़्क़ को नेकी के काम में इस्तेमाल करता है फिर अल्लाह तआला उस रिज़्क़ में बरकत दे देते हैं।

उस वक़्त की बात है जब डालर आठ रूपये का होता था अब तो साठ रूपये का है, हम लोग कराची में गुज़र रहे थे कि हमें एक रेढी के ऊपर एक आदमी दाल सेवईयाँ बेचने वाला मिला, जो मेरे साथी थे वह कहने लगे यहाँ से कुछ ले लेते हैं और जहाँ जा रहे हैं उनके पास बैठ खाऐंगे तालिब इल्मी का ज़माना था हम ने कहा बहुत अच्छा ले लो, उस ने कुछ दाल सेवईयाँ ले लीं, मैं ने उस आदमी से पूछा कि भई आप यह दाल सेवईयाँ बेचते हैं तो एक दिन में आप की कितनी बिक जाती हैं वह मुझे कहने लगा जी अल्लाह का बड़ा करम है, यह वह वक़्त था कि जब इन्जीनियर की तनख़्वाह एक महीना की एक सौ

पच्चास रूपये होती थी अढ़ाई सौ रूपये हो गई फिर तीन सौ रूपये हो गई हम बड़े हैरान होते थे इतनी तनख़्वाह इन्जीनियर की बढ़ गई तीन सौर रूपये हो गये, तो जब उस से पूछा कहने लगा जी अल्हम्दोलिल्लाह रोज़ाना इस रेढी से छ हज़ार रूपये की दाल सेवईंयाँ बेचता हूँ, जब इन्जीनियर की तनख़्वाह एक हज़ार से कम थी महीना की दाल सवईंयाँ बेचने वाला रेढी के ज़रिया से छ हज़ार की रोज़ बेचा करता था, रिज़्क़ की कुन्जियाँ अल्लाह के हाथ में हैं।

हमारी जमाअत के एक दोस्त हैं उन्होंने एक ख़त लिखा कि हज़रत जब से मैं ने नेकी इख़्तियार की, अल्लाह ने रिज़्क़ में बहुत बरकत दे दी है फिर अजीब बात तो यह लिखता है कि मेरा चाए का खोखा है, हज़रत चाए के उस खोखे में रोज़ाना बारह हज़ार रूपये कमा कर उठता हूँ बारह हज़ार, आज तनख़्वाह नहीं है किसी स्कूल के टीचर की, वह अनपढ़ बन्दा है और रोज़ाना चाए के खोखे से बारह हज़ार रूपये ले कर उठता है।

रिज़्क़ का तअल्लुक़ मोक़द्दर से है

चुनांचे एक आदमी मिला कहने लगा जी शुरू में मेरा रिज़्क़ बहुत ही थोड़ा था दुआयें मांगता था कोई अल्लाह वाले मेरे घर आए और उन्होंने दुआ दे दी उस दुआ का नतीजा निकला कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मेरी सुपारी चला दी कहने लगा अगर इस वक़्त मैं देखना चाहूँ कि मेरे पैसे कितने हैं तो मुझे अपने अकाउन्ट मालूम करने में एक महीना लग सकता है, असल में रिज़्क़ देने वाला कौन है? अल्लाह! कई लिखे पढ़े पी एच डी डॉक्टर हैं नौकरी नहीं मिलती धक्के खाते फिरते हैं, चुनांचे हमारे भाई जान का एक शागिर्द था उस ने मैटरिक का इम्तेहान दिया और फिर चला गया कई सालों के बाद आकर उन को मिला कहा उस्ताज़ जी! अस्सलाम अलैकुम, वअलैकुल अस्सलाम भई क्या हुआ? आप तो कई सालों के बाद मिले, कहने लगा जी बस मुझ

पर अल्लाह का करम हुआ उस्ताज़ जी मैं ने मैट्रिक का इम्तेहान दिया अल्हम्दुलिल्लाह मैं फेल हो गया, वह बड़े हैरान कि यह क्या कह रहा है? कहने लगा उस्ताज़ जी मुझ पर अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ मैं ने मैट्रिक का इम्तेहान दिया और अल्हम्दुलिल्लाह मैं फेल हो गया, फिर कहने लगा जी मैं यहाँ से फ़ैसलाबाद चला गया शर्म के मारे, रिश्तादार क्या कहेंगे, घर वाले क्या कहेंगे वहाँ जाकर मैं ने एक रेढी लगाई और उसके ऊपर बनियान जुराबें बेचनीं शुरू कर दीं रोज़ के सौ पचास मिल जाते थे, फिर मेरे पास कुछ पैसे हो गये एक दुकानदार था उसके दरवाज़े पर मैं ने एक गज़ की जगह ले ली कि बजाए सारा दिन घूमने फिरने के बैठ कर काम करूं वह किराए पर ले कर मैं ने वहाँ कुछ तौलिये और चीज़ें बेचनी शुरू कर दीं कहने लगा अल्लाह ने उसमें भी बरकत दे दी फिर अहिस्ता आहिस्ता मैं ने एक दुकान किराए पर ले ली उसमें भी अल्लाह तआला ने बरकत दे दी कहने लगा कि मुझे चार साल गुज़रे हैं और चार साल में मै फ़ैसलाबाद में थोक की कपड़े की दो दुकानों का मालिक बना हुआ हूँ, यानी होल सेल की कपड़े की दो दुकानें हैं और मुझ पर कोई क़र्ज़ नहीं, कहने लगा उस्ताज़ जी अगर मैं मैट्रिक में पास हो जाता तो कहीं मुलाज़मत पर लग जाता शुक्र है मैं फ़ेल हो गया अल्लाह ने मुझे इस वक़्त इतना बड़ा बिज़नेस मैन बना दिया है, तो दोस्तो (परवर दिगार) ने रिज़्क़ पहुंचाना है पढ़े लिखे मुंह देखते रह जाते हैं अल्लाह अनपढ़ों को रिज़्क अता कर देता है, भई इसका तअल्लुक़ न अक़्ल से है न शक्ल से है न खानदान से है इसका तअल्लुक बन्दे की किस्मत से है, मोक़द्दर से है ﴿نحن قسمنا بينهم معيشتهم﴾ इसलिए जो बन्दा ज़रूरत से ज़्यादा स्मार्ट बनने की कोशिश करता है उसका बिज़नेस फिर नीचे आता है, हम ने कितनों को अपनी ज़िन्दगी में डूबते देखा, इसलिए जब मिलना ही है तो इन्सान रिज़्क़े हलाल क्यों न कमाए।

कई लोगों को देखा अच्छा करोबार चल रहा है बड़े कारोबार के

शौक़ में बैंक से लोन ले लेते हैं ठीक काम था पुर सुकून ज़िन्दगी थी इज़्ज़त थी सब कुछ था बड़े कारोबार के शौक़ में बैंक से लोन ले लिया बस ऐसी बे बरकती होती है जो पहला होता है वह भी सारा बैंक के हवाले हो जाता है इस लिए इस हराम से इन्सान बहुत बचे आप यूं समझें जैसे दूध हो उसके अन्दर कोई पेशाब को मिलाता है? कभी नहीं मिलाता, ऐसे ही कोई ज़रा हलाल के पैसों में सूद के पैसे मिलाता है यह सूद के पैसे तो पाख़ाना और पेशाब के मानिन्द हैं इस लिए अहलुल्लाह जब कश्फ़ की नज़र से देखते हैं उनको सूद की यह सारी चीज़ें नजासत और पाख़ाना की तरह नज़र आती हैं थोड़े पर राज़ी हो जाइये सब्र कर लीजिए अल्लाह तआला उसी में बरकत देंगे, मगर इस सूद के चक्कर में मत पड़िए ।

सूद के बारे में वईद

कुरआन मजीद में है जो बन्दा सूद का काम करेगा ﴿فاذنوا بحرب من الله ورسوله﴾ अल्लाह तआला और उसके रसूल से जंग के लिए तैयार हो जाए, अब जब अल्लाह तआला और उसके रसूल से जंग करेगा तो नतीजा फिर क्या निकलेगा? इसलिए अगर पहले ऐसा काम कर चुके तो तौबा करके अल्लाह से माफ़ी मांग लें, तौबा से अल्लाह तआला माफ़ कर देते हैं और आईन्दा के लिए नीयत कर लें कि हम ने इस मुसीबत से जान छुड़ानी है अल्लाह ताला मदद फ़रमा देंगे, अपनी औलाद को भी नसीहत कर जाना कि बेटा कभी सूद के चक्कर में मत फंसना, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेहरबानी फ़रमा देते हैं हलाल चाहने वालों को अल्लाह तआला हलाल ही अता फ़रमा देते हैं।

रिज़्क़ के अन्दर बरकत कैसे हो?

(1).......मामलात में सदाक़त

उसूल तो यह कि जो आदमी नेकी दियानत सच्चाई के साथ अपना कारोबार करे इन चीज़ों की वजह से बरकत लाज़मी होती है, दलील इस की ख़दीजतुल्कुबरा रज़ि. ने नबी عليه السلام को सामाने तिजारत दे कर भेजा तो नबी عليه السلام ने उसको जाकर बेचा सदाक़त, दियानत, अमानत, फ़िरासत इन चीज़ों को इस्तेमाल किया नतीजा क्या निकला? कि उस माल में मुनाफ़ा आम मामूल से दो गुना हुआ, जिस पर ख़दीजतुल कुबरा रज़ि. हैरान हुई कि भई इतना ज़्यादा मुनाफ़ा तो होता ही नहीं था, (उलमा) ने लिखा है कि जब नबी. عليه السلام ने पराए माल पर अपनी सिफ़ात को इस्तेमाल किया, माल पराया था अमानत अपनी थी दियानत अपनी थी सदाक़त अपनी थी फ़िरासत अपनी थी जब इन सिफ़ात को पराए माल पर इस्तेमाल किया अल्लाह ने उसमें दो गुना मुनाफ़ा दे दिया ऐ बन्दे! तू अपनी सिफ़ात को अपने माल पर इस्तेमाल करेगा तो अल्लाह तुझे कितना नफ़ा अता फरमायेंगे इसलिए दस में नौ हिस्सा रिज़्क़ अल्लाह ने तिजारत में रखा और एक हिस्सा रिज़्क़ बाक़ी नौकरियों में,और यह तिजारत अंबिया عليه السلام का काम है, इसी लिए दियानत दार ताजिर क़यामत के दिन अंबिया, सिद्दीक़ीन के साथ खड़ा किया जाएगा, हालांकि तिजारत करता होगा।

(2)........इस्तिग़फ़ार

अगर इन्सान को रिज़्क़ की परेशानी है तो उस के लिए कसरत से इस्तिग़फ़ार करे चूंकि कई दोस्त परेशान होते हैं बरकत के बारे में पूछते हैं तो बजाए अलग अलग बताने के क्यों न सब दोस्तों को ही बता दें, सब को फ़ायदा हो जाएगा बल्कि यह और आगे किसी को बतायेंगे अल्लाह की मख़लूक़ को फ़ायदा हो जाएगा, तो रिज़्क़ की परेशानी दूर करने के लिए पहला अमल इन्सान कसरत से इस्तिग़फ़ार करे,

استغفر الله ربی من کل ذنب واتوب الیه अगर यह पूरा पढ़े तो बहुत अच्छा वरना कम अज़ कम استغفر الله، استغفر الله यह तो ज़रूर ही पढ़ता रहे, देखो दलील कुरआन पाक से ﴿استغفروا ربكم انه كان غفارا﴾ नूह عليه السلام ने क्या कहा था सब के सामने? इस्तिग़फ़ार करो वह तुम्हारे गुनाहों को बख़्शने वाला है ﴿يرسل السماء عليكم مدرارا﴾ बारिशें बरसाएगा ﴿ويمددكم باموال﴾ माल से तुम्हारी मदद करेगा तो इस्तिग़फ़ार से अल्लाह तआला बन्दे की माल से मदद फ़रमा देते हैं, फिर बन्दों की मदद नहीं मांगनी पड़ती, फिर बन्दों के परवरदिगार की मदद उतरती है, और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे की मदद करते हैं फिर उसकी कश्ती को दरमियान में नहीं छोड़ते हैं हमेशा किनारे लगा दिया करते हैं।

(3)....... सदक़ा

जितनी हैसियत हो अल्लाह तआला के रास्ते में सदक़ा करे मसलन कुछ लोग रोज़ाना सदक़ा करते हैं यह कहां लिखा कि रोज़ाना आप ने हज़ारों लाखों के हिसाब से सदक़ा करना है, आप अगर रोज़ का रूपया भी सदक़ा करेंगे तो सदक़ा करने वालों में शामिल हो जायेंगे, पांच भी करेंगे, तो भी सदक़ा करने वालों में शामिल हो जायेंगे, तो मिक़दार को न देखें अपनी हैसियत को देखें और हैसियत के हिसाब से आप अगर अल्लाह के रास्ता में कुछ निकालेंगे तो इस सदक़ा से अल्लाह तआला रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा देंगे, नबी. عليه السلام ने क़सम उठा कर यह बात हदीस पाक में फ़रमाई (सदक़ा करने से रिज़्क़ बढ़ता है) अगर अल्लाह के महबूब वैसे ही बात कर देते उस सादिक़ व अमीन की यह बात सच्ची थी मगर उन्होंने क़सम खाकर फ़रमाया कि सदक़ा करने से आदमी के रिज़्क़ के अन्दर कमी नहीं आती अल्लाह तआला बरकत अता फ़रमा देते हैं।

(4).......कमज़ोरों की मदद

कमज़ोरों के ऊपर एहसान करने से रिज़्क़ में बरकत होती है कोई माजूर है बेवह है, यतीम है मिस्कीन है छुप कर उसकी मदद करना पता ही न चले, सहाबए किराम के अन्दर यह बड़ी सिफ़ात थी कि वह ऐसे काम करते थे और किसी को पता भी नहीं चलने देते थे चुनांचे सैयदना उमर रज़ि. एक मर्तबा आए और उन्होंने आकर देखा कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने अपने काम वाली जगह पर एक रजिस्टर रखा हुआ है और उस पर लिखा है कि फ़लां बन्दा माजूर है हाजत मन्द है ज़रूरत मन्द है और उसकी ख़िदमत कौन करेगा, आगे उसका नाम भी लिखा हुआ है सारा रजिस्टर देखा, एक जगह लिखा था कि यह बेवह है बूढ़ी है उसके घर में झाडू देना है और पानी भरना है मगर आगे उसके ख़िदमत करने वाले ख़ाना में कोई नाम नहीं था, उमर रज़ि. ने रजिस्टर देखा उन्होंने नीयत कर ली अच्छा भई उसकी ख़िदमत मैं करूंगा, चुनांचे अगले दिन फ़ज्र के बाद उसके घर पहुंचे दरवाज़े पर दस्तक दी अम्मां मैं ख़िदमत के लिस आया हूँ उन्होंने कहा जी ख़िदमत करने वाला तो आया था वह ख़िदमत करके चला गया, अच्छा चलो मैं कल फ़ज्र से पहले आ जाऊंगा, अगले दिन उमर तहज्जुद पढ़ने के बाद फ़ज्र से पहले ही उसके दरवाज़े पर पहुंचे कि मैं उसकी ख़िमत करूंगा, झाडू दूंगा उस का पानी भरूंगा दस्तक दी , तो बुढ़िया ने कहा कि जी वह तो कोई आया था पानी भी भर गया झाडू भी दे गया, वह भी उमर इब्ने ख़त्ताब थे कहने लगे मैं देखता हूं, अगले दिन ईशा पढ़ कर वह रास्ते में एक जगह छिप कर बैठ गए कहने लगे अब देखता हूँ कौन जाता है ख़िदमत करने वाला, जब रात गहरी हो गई थी उस वक़्त अचानक उन्होंने देखा कि कोई आहिस्ता आहिस्ता क़दमों से उस बुढ़िया के दरवाज़े की तरफ़ जा रहा है, उमर रज़ि. खड़े हो मए कहने लगे مـن انـت؟ तू कौन है? जब पूछा तो आगे जवाब में अमीरूल मोमिनीन सैयदना सिद्दीके अकबर रज़ि. की आवाज़ आई कि मैं अबू बक्र हूँ हज़रत उमर रज़ि. ने पूछा अमीरूल मोमिनीन आप कहां जा

रहे हो? फ़रमाया मैं इस बुढ़िया की ख़िदमत के लिए जा रहा हूं और मैं ने अपना नाम रजिस्टर में लिखना मुनासिब नहीं समझा था इसलिए तुम्हें ख़ाना ख़ाली नज़र आया वरना उसका पानी तो मैं रात को आकर भर देता हूँ. उन्होंने देखा कि अमीरूल मोमिनीन के पांव में तो जूती भी नहीं हैं तो उमर रज़ि. ने पूछा अमीरूल मोमिनीन रात में आप नंगे पांव गलियों में चल रहे हैं? अमीरूल मोमिनीन ने कहा हां मैं जूता इसलिए नहीं पहनता ताकि मेरे जूतों की आवाज़ से किसी की नींद में ख़लल ना आ जाए मैं रात को नंगे पांव चल कर इस बुढ़िया का पानी भर देता हूँ, इसके घर में झाडू दे देता हूं, वह यूं छुप कर काम करते थे हम भी छुप कर करते हैं, लेकिन नेकी नहीं गुनाह, आज तो हमारी हालत यह है कि हम दायें हाथ से गुनाह करते हैं बायें हाथ को पता नहीं चलने देते ऐसे छुप कर गुनाह करते हैं, सहाबा किराम दायें हाथ से सदक़ा करते थे और बायें हाथ को पता नहीं चलता था।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह. का वाक़िया

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह. जब उनकी वफ़ात हुई तो नहलाने वाले ने देखा कि उनके कंधे के ऊपर एक काला सा निशान है अल्लाह ने उनको बड़ा खूबसूरत जिस्म दिया था बड़े नाजुक बदन थे गुस्ल देने वाला बड़ा हैरान हुआ बात समझ न आई तो उसने घर के लोगों से पूछा यह निशान कैसा है? कहा हमें भी नहीं पता, बात उनकी अहलिया तक पहुंची उन्होंने भी ला इल्मी का इज़हार किया कई दिन गुज़र जाने के बाद जो बेवायें थीं जो नादार थे उनके घरों से आवाज़ आई वह कहां गया जो हमें पानी पिलाया करता था, तब पता चला कि रात के अंधेरे में पानी की मशक अपने कंधे पर ले कर ज़रूरत मन्द लोगों के घरों में पानी भरने जाते थे और ज़िन्दगी में पता ही नहीं चलने दिया कि कौन आकर भर जाता है उनके मरने के बाद पता चला तो जो ख़िदमत है वह अल्लाह तआला को बड़ी महबूब है।

एहसान का एक वाक़िया

चुनांचे हमारे नक़्शबन्द सिलसिला के बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन बुख़ारी रह. उनके बारे में लिखा है कि एक मर्तबा जा रहे थे तो उन्होंने क़ब्रस्तान में एक ज़ख़्मी कुत्ते को देखा उनके दिल में बड़ा असर हुआ कि यह कुत्ता है और ज़ख़्मी है, उनके पास जो कुछ पैसा था उन्होंने उसकी मरहम पट्टी पर लगा दिया, वह रोज़ाना जो कारोबार करते थे यानी मज़दूरी वग़ैरा उसमें से कुछ घर वालों को देते और जो बचता उसकी रोटी ले कर उस कुत्ते को डाल आते, जहाँ वह ज़ख़्मी हालत में पड़ा हुआ था, चन्द दिन उस कुत्ते को वह खाना देते रहे और उसके ज़ख़्म पर मरहम लगाते रहे हत्ताकि उस कुत्ते का ज़ख़्म ठीक हो गया और वह सेहत मन्द हो गया, जब वह सेहत मन्द होकर उस जगह से दूसरी जगह चला गया तो अल्लाह ने उसी रात उनको मारेफ़त का नूर अता किया और सिलसिला आलिया नक़्शबन्दिया की तफ़सीलात अता फ़रमाईं, तो यह उनकी ज़िन्दगी के हालात में लिखा है कि कुत्ते की ख़िदमत करने पर अल्लाह ने उनको अपनी मारेफ़त का नूर अता फ़रमा दिया तो अगर हम किसी इन्सान की ख़िदमत करेंगे तो उस पर अल्लाह की क्या कुछ रज़ा मिलेगी।

तो रिज़्क़ में बरकत का एक सबब इस्तिग़फ़ार करना दूसरा सदक़ा करना तीसरा कमज़ोरों पर एहसान करना है चौथा मामलात में सदाक़त।

(5) .... तक़्वा इख़्तियार करना

तक़्वा इख़्तियार करने पर अल्लाह तआला बन्दे के रिज़्क़ में बरकत अता कर देते हैं, तक़्वा और परहेज़गारी पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेहरबानी फ़रमा देते हैं।

(6) ....हिजरत करना

यह भी रिज़्क़ के बढ़ने का सबब है, हदीस पाक में आता है चुनांचे

अगर एक बन्दे का काम एक जगह नहीं चल रहा तो वह अपनी जगह बदल कर किसी और जगह जा कर काम शुरू कर दे, हो सकता है अल्लाह तआला वहां रिज़्क़ खोल दें।

(7)....... बार बार हज करना

और एक आख़री बात जो हदीस पाक में कही गई कि बार बार हज और उमरा करना यह बन्दे का रिज़्क़ बढ़ने का एक सबब है, एक आदमी आता था कि ऐ अल्लाह के नबी ﷺ मेरे रिज़्क़ में तंगी है नबी ﷺ फ़रमाते अच्छा हज कर आओ एक और बात भी बताते थे लेकिन वह आप को नहीं बतानी उसके लिए जवान भी तैयार हो जायेंगे और बूढ़े भी तैयार हो जायेंगे, तो अगर यह चन्द आमाल अपनाए जायें तो इन आमाल से इन्सान के रिज़्क़ के अन्दर बरकत आ जाती है कुछ लोगों को अल्लाह तआला देता है तो वह कसरत से हज और उमरा करते हैं यह अच्छी आदत है बाज़ लोग कहते हैं जी आप क्यों हर साल हज करते हैं किसी को करवा दें किसी पर ख़र्च कर दें, तो भई देखो जैसे सेल फ़ोन सारा दिन चलता रहता है, तो उसकी बैट्री डाऊन हो जाती है तो फिर उसको चार्जर के साथ लगाना पड़ता है बिल्कुल उसी तरह हम जब सारा साल दीन का काम करते हैं कारोबार करते है तो फिर बन्दे की कैफ़ियात की बैट्री भी डाऊन हो जाती है और उस का चार्जर अल्लाह ने अपना घर बनाया हुआ है, इस लिए जिन लोगों को अल्लाह दे अगर वह हर साल इस नियत से हज या उमरा करें हम वहां जायेंगे और बैट्री चार्ज करवा कर आयेंगे और फिर दीन का काम करेंगे तो हर साल हज और उमरा करना उनके लिए बरकतों का सबब बन जाएगा।

कपड़ा मैला हो तो फिर वाशिंग मशीन में जाता है या नहीं जाता? वाशिंग मशीन में मैले कपड़े को डालते हैं, हफ़्ता में एक बार मैला हो तो एक दफ़ा डालते हैं रोज़ मैला हो तो रोज़ डालते हैं अल्लाह तआला

की शान, बैतुल्लाह शरीफ़ के गिर्द सात चक्कर लगाते हैं (तवाफ़) करते हैं तो लगता है कि जो आदमी अपने मैले दिलों के साथ अल्लाह के घर जाता है वह दिलों के धोने की वाशिंग मशीन है अल्लाह सात तवाफ़ के चक्कर लगवाकर धोकर बन्दे को निकाल देता है लिहाज़ा इसकी दुआयें करनी चाहियें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मांगना चाहिए और वैसे भी जिन को अल्लाह दे वह हर साल हज करें क्यों? इस लिए कि अब हालात ऐसे हैं क्या पता कौन सा हज ऐसा हो जिस में अल्लाह के मक़बूल बन्दे ज़ाहिर हो जायें जो इस नीयत से हज करेगा तो और दो गुना सवाब मिल जाएगा।

आमाले सालेह का मज़ीद फ़ायदा

आमाले सालेह का एक फ़ायदा कि अल्लाह तआला बरकतें अता फ़रमा देते हैं। सिर्फ़ रिज़्क़ में नहीं हर चीज़ में बरकत, सेहत में बरकत, उम्र में बरकत, वक़्त में बरकत, अक़्ल समझ में बरकत, औलाद में बरकत, दीन में बरकत, इज़्ज़त में बरकत, हर चीज़ में अल्लाह तआला बरकतें अता फ़रमा देते हैं चुनांचे इर्शाद फ़रमाया ﴿ولوان اهل القرى آمنوا واتقوا﴾ कुरआन अज़ीमुश्शान, देखो अल्लाह का कलाम अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अगर यह बस्ती वाले ईमान लाते और तक़वा को इख़्तियार करते ﴿لفتحنا عليهم بركات من السماء والارض﴾ हम आसमान ज़मीन पर से बरकतों के दरवाज़े उन पर खोल देते हैं" वक़्त में बरकत हो जाती है, थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम समेट लेता है आप ने देखा कुछ लोगों को वह कहते हैं यार सारा दिन भागते रहते हैं, काम सिमटते नहीं हैं, होते होते काम रह जाता है, बनते बनते काम बिगड़ जाता है, इसकी क्या वजह होती है? बरकत नहीं होती, और जिन को अल्लाह तआला मेहरबानी करके बरकत दे देता है थोड़े वक़्त में अल्लाह तआला उनके ज़्यादा कामों को समेट देता है।

बरकत का अजीब वाक़िया

एक बूज़ुर्ग थे वह किताब लिखते थे जब फ़ौत हुए तो उनकी किताबों के जो सफ़हे थे जब उनकी तादाद गिनी गई तो उनकी ज़िन्दगी के ऐतबार से यौमिया बीस सफ़हे निकली अब बीस सफ़हे तो हम रोज़ पढ़ते भी नहीं हैं और इसमें से हमारे पहले पन्द्रह से बीस साल तालीम के निकाल दिए जायें तो यह बीस की बजाए भी चालीस बन जायेंगे तो चालिस सफ़हे नई किताब के रोज़ लिख देना इसका मतलब है कई दिन ऐसे भी होंगे जब नहीं लिख सके होंगे सेहत भी, बीमारी भी, सर्दी भी गर्मी भी, वतन में भी, मुसाफ़िरी में भी, सौ क़िस्म की बातें हैं तो इसका मतलब है कि कभी अगर नहीं लिखते होंगे तो किसी दिन में पच्चास, साठ, सौ, भी लिखते होंगे अल्लाह तेरी शान ऐसी अल्लाह ने वक़्त में बरकत अता फ़रमाई थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम कर गये।

नबी ﷺ की ज़िन्दगी में बरकत

नबी ﷺ की ज़िन्दगी में बरकत देखिए, दस साल का थोड़ा सा अर्सा था जिस में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस्लाम को पूरी दुनिया में फैलाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी थी नेकी से हाफ़ेज़ा में बरकत कुव्वेत, याद्दाश्त में बरकत आ जाती है, आज कल अकसर नौजवानों को देखा कहते हैं जी मैं बात भूल जाता हूँ, औरतें भी इसका शिकवा करती हैं मर्द भी इसका शिकवा करते हैं, तो गुनाहों की वजह से याद्दाश्त कम हो जाती है निस्यान की वजह बात ही ज़ेहन से निकल जाया करती है, अल्लाह तआला ने हमारे अकाबिर को वह बरकत दी थी कि उनकी याद्दाश्त النقش كالحجر की मानिन्द बन गई थी, पत्थर पर लकीर होती है जैसे ऐसी बन गई थी।

तक़वा की बिना पर ज़ेहानत में बरकत

वाक़िया.......(1)

अबु हुरैरा रज़ि. ने जब इस्लाम क़बूल किया तो बुढ़ापे की उम्र थी

और दो ढाई साल ही उनको नबी ﷺ की सोहबत नसीब हुई थी, ख़ैबर के वक़्त मुसलमान हुए थे तो उसके बाद थोड़ी ज़िन्दगी थी, शुरू शुरू में बातें भूल जाते थे कहते हैं मैं ने नबी ﷺ से अर्ज़ किया कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मैं बातें भूल जाता हूं अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया अबू हुरैरा चादर फैलाओ कहते हैं मैं ने चादर फैलाई अल्लाह के नबी ने ऐसे जैसे उसमें कोई चीज़ डाल रहे हों ऐसे इशारा किया और फ़रमाया इसको ले लो मैं ने गठरी बांध कर अपने ऊपर ले ली इसके बाद अल्लाह ने ऐसी कुव्वते याद्दाश्त दी कि मैं भूलता ही नहीं था, चुनांचे सहाबए किराम में सब से ज़्यादा हदीस की रिवायत उन्होंने की, अब्दुल मलिक बिन मरवान को एक मर्तबा शक हुआ कि भई इतनी हदीसें यह ब्यान करते हैं तो यह रिवायत बिल लफ़्ज़ ब्यान करतें हैं या रिवायत बिल ,माना करते हैं रिवायत बिल माना कहते हैं कि मफ़हूम तो ठीक हो अलफ़ाज़ अपने हों और रिवायत बिल लफ़्ज़ यह कि मफ़हूम भी वही हो और अलफ़ाज़ भी वहीं हों लिहाज़ा उसके ज़ेहन में वहम पड़ गया, उसने कहा कि अच्छा इनका इम्तेहान लेते हें उसने सैयदना अबु हुरैरा रज़ि. को दावत दी अब जब दावत दी तो खाना खाया खाने के बाद उसने एक परदा लगाया हुआ था उसके पीछे उसने दो कातिब बिठाए हुए थे, उनको कहा कि जो यह कहें आप दोनों ने लिखना है और उनसे फ़रमाईश की कि जी आप हमें नबी ﷺ की अहादीस सुनाइये, चुनांचे उन्होंने एक सौ से ज़्यादा नबी ﷺ की अहादीस सुनाईं वह कातिब लिखते रहे, महफ़िल ख़त्म हो गई एक साल गुज़र गया एक साल के बाद उसने फिर उनको दावत दी और उन दोनों कातिब को बुलाया और कहा कि तुम अपना रिकार्ड लेकर बैठना मैं उनसे कहूंगा कि यह वही हदीस सुनायें जो पिछले साल सुनाई थीं और जहां फ़र्क़ हो तुम निशान लगाते जाना अबु हुरैरा رضي الله عنه को कुछ पता नहीं है कि यह सब हो रहा है, चुनांचे खाना खाया फिर हदीस सुनाने की महफ़िल हुई तो वह कहने लगा जी जो पिछले साल अहादीस सुनाई थीं वह

हदीसें फिर सुना दीजिए, अबू हुरैरा रज़ि. ने वहीं हदीसें फिर सुनाईं दोनों कातिबों ने उनको इमला के साथ मिलाया और उनको कहीं पर एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ नज़र न आया, सुब्हानल्लाह यह कुव्वते (याद्दाश्त थी।

वाक़िया...... (2)

इमाम बुख़ारी रह. जब बसरा पहुंचें तो बसरा के उलमा ने उनका बड़ा इस्तिक़बाल किया क्योंकि उस वक़्त इमाम बुख़ारी हाफ़िज़ मशहूर हो चुके थे आज तो हाफ़िज़ कहते हैं कुरआन पाक के हाफ़िज़ को पहले ज़माना में हाफ़िज़ का लफ़्ज़ हाफ़िज़े हदीस के लिए इस्तेमाल किया जाता था। हाफ़िज़ इब्ने कैयम हाफ़िज़ जहबी यह सब हाफ़िज़ इब्ने कसीर यह हदीस के हुफ़्फ़ाज़ थे कुरआन मजीद तो हिफ़्ज़ होता ही था हर एक को, किसी को कामिल होता था किसी को ज़रा कम होता था कुछ न कुछ तो हर एक को याद होता था तो यह लफ़्ज़ तो इस्तेमाल होता ही है हदीस के हुफ़्फ़ाज़ के लिए तो हाफ़िज़ इस्माईल मशहूर हो गए थे, तो बसरा के उलमा ने कहा कि इनका इम्तेहान ले लें, अब जब उलमा इम्तेहान लेने के लिए तैयारी करें तो अल्लाह ही उसमें कामियाब करे उन्होंने ऐसा इस्तिक़बाल किया कि यूं समझिऐ कि पूरे शहर के लोग बाहर निकल कर उनके इस्तिक़बाल के लिए आए बे मिसाल इस्तिक़बाल किया फिर उनको एक जगह बिठाया तख़्त पर और शहर के सारे उलमा वहां इकट्ठे हो गए और फिर उनकी खूब तारीफ़ें कर लीं तो फिर उनको कहा कि जी हमें भी इससे फ़ायदा दीजिए और उन्होंने क्या किया दस बन्दे चुने हुए थे और हर बन्दे को दस हदीसें याद थीं हदीसों में थोड़ा सा फ़र्क़ कर रखा था, चुनांचे एक आदमी खड़ा हुआ कहने लगा जी मैं ने दस हदीसें याद की हैं अगर यह इतने बड़े हाफ़िज़ुल हदीस हैं तो यह बतायें कि यह रिवायत उन तक पहुंची है? अब उसने दूसरी पढ़ी इमाम बुख़ारी रह. ने फ़रमाया नहीं मुझ तक

नहीं पहुंची,

फिर उसने दूसरी पढ़ी आप ने फ़रमाया नहीं मुझ तक नहीं पहुंची,

फिर उसने तीसरी पढ़ी फ़रमाया नहीं,

दस पढ़ी और दस पर नहीं फ़रमाया अब देखो कैसा प्रेशर डाला उन्होंने कि भई किसी पर तो उनका दिल कहेगा हां मैं ने सुनी है जब इतने बड़े हाफ़िज़ुल हदीस हैं, फिर दूसरा खड़ा हुआ उसकी दस हदीसों पर भी नहीं फ़रमाया फिर तीसरा, फिर चौथा, दस बन्दों ने दस दस हदीसें पढ़ीं और हर बात पर उन्होंने नहीं कहा, मजमा हैरान भई यह भी कैसे हाफ़िज़ुल हदीस हैं इनको कोई हदीस पहुंची तो है नहीं जब वह सब सुना चुके उस वक़्त इमाम बुख़ारी रह. ने फ़रमाया कि सुनो!

पढ़ने वालों ने हदीसों को ऐसे पढ़ा फिर आप ने जिस बन्दे ने जो हदीस पढ़ी थी ग़लती के साथ पहले वह पढ़ी फिर फ़रमाया इसमें यह ग़लती है इसको फिर सहीह हदीस पहुंचाई फिर दूसरी ग़लत पढ़ी, फिर सहीह हदीस पहुंचाई, सौ की सौ तरतीब के साथ ग़लत हदीसें जो उन्होंने पढ़ी थीं वह भी पढ़ कर सुनाई. और उसके बदले जो सहीह हदीसें थीं वह भी पढ़ कर सुनाई उलमा लिखते हैं कि इमाम बुख़ारी रह. के लिए सौ हदीसें सुना देना कोई बड़ी बात नहीं थी बड़ी बात यह थी जिस तरतीब से उन्होंने एक मर्तबा हदीसें पढ़ कर सुनाई अल्लाह ने उनको ऐसी याद्दाश्त दी थी एक दफ़ा सुन कर वह तरतीब याद रही और वह हदीसें भी याद हो गई ऐसी ज़ेहानत अल्लाह ने उनको दी थी।

वाक़िया ....(3)

एक मोहद्दिस थे अबु ज़र उनको लाखों हदीसें याद थीं अल्लाह तआला की शान देखें कि उनका एक शागिर्द था उसकी शादी हुई और एक दिन वह हदीस के दर्स में आया तो ज़रा देर हो गई जब वापस

पहुंचा तो बीवी ज़रा उस दिन मूड में थी मिज़ाज गर्म थो तो उसने झगड़ना शुरू कर दिया, बैठे रहते हैं, वक़्त ज़ाया करके आ जाते हैं, हम तो इन्सान ही नहीं हैं हम इन्तेज़ार करते हैं भूक लगी होती है खाना खाना होता है, लिहाज़ा बातें होती रहीं उसने कहा भई वहां ऐसे तो नहीं वक़्त ज़ाया करने जाता मैं इल्म हासिल करने जाता हूं लेकिन वह कुछ ज़्यादा ही नाज़ में थी गुस्सा में आ गई तेरे उस्ताज़ को कुछ नहीं आता तू वहां जाकर क्या सीखेगा, अब जब उसने यह कह दिया कि तेरे उस्ताज़ को कुछ नहीं आता तू वहां जाकर क्या सीखेगा तो नौजवान था और लगता है कि उसको भी आज कल का दिमाग़ मिला हुआ था उसने भी फ़ौरन कह दिया कि अच्छा अगर मेरे उस्ताज़ को एक लाख हदीसें याद न हों तो फिर तुझे तीन तलाक़ लो अब रात तो ज़रा गर्मी सर्दी में गुज़र गई सुबह उठ कर बीवी को भी फ़िक्र कि कहीं तलाक़ ही न वाक़ेय हो गई हो, तो बीवी ने पूछा कि जी वह क्या बिना तलाक़ का? उसने कहा मशरूत थी तो मैं हज़रत से पूछता हूं अगर तो उनको लाख हदीसें याद होंगी तो तलाक़ नहीं हुई वरना हो गई, अब वह पहुंचा अपने उस्ताज़ के पास उनको बताया कि हज़रत बस मुझ से गुस्सा में यह बात हो गई अब बतायें कि मेरी बीवी को तलाक़ वाक़ेय हुई या नहीं हुई आप को एक लाख हदीसें याद हैं या ऐसे ही मैंने बात कर दी तो इमाम अबू ज़र मुस्कुराए और फ़रमाने लगे जाओ" मियां बीवी की तरह ज़िन्दगी गुज़ारो एक लाख हदीसें मुझे इस तरह याद हैं जिस तरह लोगों को सूरह फ़ातेहा याद होती हैं, कहते हैं कि उनको दो लाख हदीसें याद थीं, सिर्फ़ केराअत से मुर्तअल्लेक़ा चालिस हज़ार हदीसें याद थीं, अल्लाहु अकबर, तो देखिए फिर अल्लाह ने उनको कैसी ज़िहानत दी थी यह तक़्वा की वजह से नेकी की वजह से होता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बन्दे को फिर ऐसी फ़ोटो गराफ़िक मेमेरी अता फ़रमा देते हैं कि इन्सान हैरान रह जाता है और जब इन्सान गुनाह करता है तो फिर अल्लाह तआला मत भी मार देते हैं, ज़ेहानत छीन भी

लेते हैं।

बरकत का मफ़हूम

यह बरकत अल्लाह तआला घर में भी देते हैं कारोबार में भी देते हैं औलाद में भी देते हैं, औलाद में बरकत का क्या मतलब? कि औलाद आंखों की ठंडक बन जाती है नेक बनती है, मेहनती बनती है, औलाद को देख कर बन्दे का दिल खुश होता है, कारोबार का क्या मतलब? यह नहीं कि वह करोड़ों पती बन जाता है मतलब यह होता है कि जितना काम करता है उसकी ज़रूरियात पूरी होती हैं उसने किसी का देना नहीं होता है कोई परेशानी ही नहीं होती यह कारोबार की बरकत है।

नेकी के दुनिया में छ मज़ीद फ़ाइदे

फ़ायदा ......(1)

नेक अमल की वजह से अल्लाह तआला बन्दे की परेशानियों का इज़ाला फ़रमा देते हैं चुनांचे आप देखेंगे अल्लाह वालों को तो उनके अन्दर बे चैनी नहीं होगी कोई परेशानी आएगी भी तो उनको बेचैन नहीं करेगी अल्लाह तआला काम संवार दिया करते हैं कोई भी मुसीबत में फंसें अल्लाह तआला उसमें रास्ता निकाल देता है कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا ويرزقه من حيث لا يحتسب﴾ अल्लाह तआला उसके लिए रास्ता निकाल देते हैं ऐसी तरफ़ से रिज़्क़ देते हैं जिस का उसको गुमान भी नहीं होता।

एक वाक़िया

हज़रत थानवी रह. ने एक वाक़िया लिखा है कि चन्द भाई थे उनके वालिदैन बूढ़े हो गए उनमें से एक तो बड़े शौक़ से ख़िदमत करता बाक़ी बस ख़िदमत करते जैसे बोझ दूर कर रहे हों, तो छोटे ने उनसे कहा कि भई मेरे साथ एक वादा कर लो उन्होंने कहा कि क्या? उसने

कहा कि भई वालिद की ख़िदमत अकेले मुझे करने दो और जायदाद जितनी है मुझे बेशक न देना, आप सब आपस में तक़सीम कर लेना, वह बड़े खुश हो गए, चुनांचे उन्होंने हां कर ली, वालिदैन की ख़िदमत करता रहा वालिदैन आख़िर दुनिया से चले गए अब उसको रिज़्क़ की काफ़ी परेशानी रहती थी एक दिन उसने ख़्वाब देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है फ़लां पत्थर के नीचे तीस दीनार हैं आप जाओ और उनको ले लो उस ने पूछा उन में बरकत है? चूंकि उसकी मां हमेशा दुआ देती थी कि ऐ अल्लाह इसको बरकत वाला रिज़्क़ अता फ़रमा तो उसको बात याद रह गई थी कि मेरी अम्मी मुझे दुआ देती थी उसने कहा बरकत है उसने कहा बरकत नहीं है, उसने कहा तब तो मैं नहीं लेता, आंख खुल गई सुबह उठे तो उसने ख़्वाब बीवी को सुनाया और बीवियां तो माशाअल्लाह अल्लाह की वलियां होती हैं, उसने कहा बेशक तुम न लेना जाकर देखो तो पड़े हुए हैं या नहीं पड़े हुए हैं, शौहर ने कहा जब मैं ने लेने नहीं तो मैं ने जाना भी नहीं, ख़ैर अगली दफ़ा उसने फिर ख़्वाब देखा किसी कहने वाले ने कहा कि अगर तुम जाओ तो तुम्हें बीस दीनार रह गए हैं वह तुम्हें मिल जायेंगे उसने कहा बरकत है? जवाब मिला बरकत तो नहीं है, उसने कहा मैं ने नहीं लेना अगले दिन बीवी को कहा तो बीवी ने कहा देखो मैं कहती थी ना कि कल ही ले लेते चलो आज ही जाकर ले आओ तीस न सहीह तो बीस सहीह, उसने कहा मैं नहीं जाता बरकत नहीं है, चनांचे अगले दनि दस हो गए, हत्ता कि उसको अगले दिन ख़्वाब आया कि भई उसके नीचे एक दीनार है अगर चाहो तो ले लो उसने कहा बरकत है या नहीं? कहा हां इस दीनार में बरकत है यह उठा और उसने बीवी को बताया कि मैं जा रहा हूं लेने के लिए बीवी ने कहा चालिस तीस छोड़ दिए एक लेने जा रहा है यह भी कोई अक़्ल मन्दी है? ख़ैर वह गया और उसने एक दीनार ले लिया, अब जब रास्ता में ला रहा था तो उसको ख़्याल आया कि बीवी तो गुस्सा हो रही थी कि तुम ने नुक़्सान कर

लिया चलो उस के लिए मछली ले चलते हैं बीवी को आज देंगे वह पकाएगी तो खुश हो जाएगी, उसने रास्ता से मछली ख़रीदी हज़रत लिखते हैं कि जब वह मछली ले कर घर आया तो कुछ बचे हुए पैसे भी दे दिए बीवी को मछली भी दे दी कि, भई पकाओ और खाओ, उसकी बीवी ने जब मछली को काटा तो उसके अन्दर एक क़ीमती हीरा मौजूद था जब उस हीरे को ले जाकर उसने बाज़ार में बेचा उसकी पूरी ज़िन्दगी के ख़र्चे के पैसे उसको वहां से मिल गए, हज़रत फ़रमाते हैं इसको बरकत कहते हैं, हमेशा के लिए मसला ही समेट देते हैं अल्लाह तआला रोज़ रोज़ की चख़ चख़ से जान छुड़ा देते हैं।

फ़ायदा.......(2)

अल्लाह तआला बन्दे की मुरादें पूरी कर देते हैं अगर उसकी कोई नेक तमन्ना होती है अल्लाह तआला हालात बना देते हैं वह बात पूरी हो जाती है कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ومن يتق الله يجعل له من امره يسرا﴾ जो तक़वा इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसके कामों में आसानियां कर देते हैं, तो जब रब आसानियां करे तो फिर काम ही कहां मुश्किल रहता है, नेक आमाल से जो दुनिया के फ़ाइदे हैं जब यह खुल जायेंगे तो मुमकिन है कि फिर हमारा नफ़्स नेक आमाल करने पर और ज़्यादा रागिब हो जाए तो मक़सद तो नेकी की तरफ़ आना है रब्बे करीम हमें अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा ले।

फ़ाइदा ....(3)

उसकी मुरादें पूरी हो जाती हैं अल्लाह तआला दिल की नेक तमन्नाओं को पूरा कर देते हैं, हदीस पाक में है कि कुछ अल्लाह के नेक बन्दे ऐसे होते हैं बिखरे बालों वाले अगर किसी दरवाज़े पर चले जायें तो वह दरवाज़े वाले ख़ाली भेज दें मगर अल्लाह तआला के यहां उनका इतना मक़ाम होता है ﴿لو اقسم على الله لا بره﴾ अगर वह

क़सम उठा कर बात कर दें तो अल्लाह उनकी क़सम को ज़रूर पूरा कर देते हैं, तो अल्लाह तआला उनकी मुरादें पूरी कर देते हैं ख़ुद बख़ुद हालात ही उनके साज़ गार कर देते हैं उनको दुनिया के झमेलों में परेशानियों में उलझाया नहीं करते, आप ने देखा होगा कि कुछ घोड़े होते हैं जो दौड़ने के लिए पाले जाते हैं लोग उनके ज़रिया इनामात जीतते हैं उनकी बड़ी रक़म होती, लाखों रूपये में एक एक घोड़ा मिलता है, बाक़ायदा उनका नसब नामा होता है, कोई भी बन्दा उसको गधा गाड़ी की जगह इस्तेमाल नहीं करता किसी को अगर कह दें तो वह हंस पड़ेगा, कहेगा यह दुनिया में रिकार्ड क़ायम करने वाला घोड़ा मैं इसे गधे गाड़ी में कैसे इस्तेमाल करूं जिस तरह हम लोग दौड़ने वाले घोड़ों को रेस जीतने वाले घोड़ों को गधे गाड़ी में इंस्तेमाल नहीं करते उसी तरह अल्लाह तआला भी अपने नेक बन्दों को दुनिया की गधा गाड़ी में उलझाया नहीं करते, वह फ़रमाते हैं यह मेरे दीन का काम करने वाले लोग हैं यह नबी ﷺ की विरासत का हक़ अदा करने वाले लोग हैं मैं इनको दुनिया के मामला में कैसे उलझाऊं तो अल्लाह तआला उनके काम संवार देता है उनकी मुरादें अल्लाह तआला पूरी फ़रमा देते हैं।

मुरादें पूरी होने का वाक़िया

चनांचे एक मर्तबा चार हज़रात तवाफ़ करके बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब बैठे थे, एक का नाम था मुसअब बिन जुबैर रज़ि. के बेटे अस्मा बिन्त अबी बक्र के बेटे और दूसरे थे अरवा बिन जुबैर और तीसरा था अब्दुल मलिक बिन मरवान और चौथे थे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. अब यह आपस में बैठे थे तो उनमें से किसी ने कहा कि अपनी अपनी तमन्नायें ब्यान करो किस की क्या तमन्ना है?

तो मुसअब बिन जुबैर ने कहा कि मेरे दिल की तमन्ना है कि मैं इराक़ का गवर्नर बनूं और मेरे निकाह में दो बीवियां हों, एक सकीना

बिन्त हुसैन और दूसरी आएशा बिन्त तलहा, सकीना बिन्त हुसैन को तो सब जानते ही हैं, सकीना हुसैन रज़ि. की बेटी आयशा बिन्ते तलहा यह हज़रत आयशा सिद्दीक़ी रज़ि. की भान्जी थीं, नाम उनका का भी आयशा और यह सैयदा आयशा सिद्दीक़ा रजि. की ज़ेरे तरबीयत रही थीं, उनसे उन्होंने हदीस का और तफ़सीर का इल्म सीखा था उनसे हदीसें रिवायत की हैं मोहद्दिसीन ने, यह इतनी पाक बाज़ ख़ातून थीं अल्लाह ने उनको मारेफ़त का नूर अता किया था उन जैसी दाना अक़्लमन्द पाक बाज़ और दीनदार औरत उनके ज़माना में कोई दूसरी नहीं थी और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको ज़ाहिरी हुस्न व जमाल में भी आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. की कॉपी बनाया था यह बिल्कुल अपनी ख़ाला पर गई थीं, तो इस लिहाज़ से यह वह रिश्ता था कि जिसके लिए उस दौर के नौजवान तमन्ना किया करते थे, और सकीना हुसैन रज़ि. की साहबज़ादी थीं उनके वैसे फ़ज़ायल बहुत ब्यान हुए हैं वह ज़िगर गोशए नबी की बेटी थी सादात में से थीं उनकी अपनी एक तक़वा की ज़िन्दगी थी, फ़ज़ीलत की ज़िन्दगी थी, तो उन्होंने यह दो तमन्नायें ज़ाहिर कीं कि अल्लाह करे यह दो रिश्ते मेरे निकाह में हों और मैं इराक़ का गवर्नर बनूं।

अरवा बिन ज़ुबैर से पूछा कि जी आप की तमन्ना ज़ाहिर करें? वह कहने लगे बस मेरा दिल चाहता है कि मैं इल्म फ़िक़ह में खूब मेहनत करूं अल्लाह मेरे सीना को समझ से भर दे चूंकि नबीﷺने फ़रमाया ﴿من يرد الله به خيرا يفقه فى الدين﴾ अल्लाह तआला जिस के साथ ख़ैर का इरादा करता है उसको दीन की समझ अता कर देता है।

अब्दुल मलिक बिन मरवान से पूछा तो उसने कहा कि मैं बादशाह बनना चाहता हूं।

अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि. से जब पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं जन्नत में अपने रब का दीदार चाहता हूं।

अल्लाह तआला की शान देखिए कि चारों रिश्तेदारों की चारों

तमन्नायें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हू बहू पूरी फ़रमा दीं जैसे नीयत की थी सब को वैसा मिल गया क़बूलियत का वक़्त था तो यह क़ुदरत की तरफ़ से होता है, जो इन्सान मुराद मांगता है अल्लाह तआला अता फ़रमा देते हैं हम अपने बच्चों की छोटी छोटी तमन्नायें पूरी करके ख़ुश होते हैं परवरदिगार अपने नेक बन्दों की ऐसी मुरादें पूरी करके ख़ुश हो जाते हैं ﴿من يتق الله يجعل له من امره يسرا﴾ क़ुरआन मजीद की आयत है जो इन्सान तक़वा इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसके कामों में आसानियां पैदा कर देता है इस लिए जब भी मामला उलझ रहा हो, हमेशा बन्दा समझे कि तक़वा में कमी आ गई है।

परेशानियों का हल किस में?

चुनांचे दुरूद शरीफ़ ऐसा अमल है आप कभी फंस जायें किसी जगह में मसलन किसी दफ़्तर में, किसी दोस्त के सामने, किसी जगह फंस जायें, आप चन्द दफ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़िए दिल की गहराईयों से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस परेशानी में से निकलने का आप को रास्ता दिखा देंगे।

आमाले सालेहा की तासीर

जो इन्सान मुत्तक़ी हो इस्तिग़फ़ार कसरत से करे नबी ﷺ पर दुरूद शरीफ़ कसरत से पढ़े परवरदिगारे आलम दुनिया की परेशानियों से महफ़ूज़ फ़रमा देते हैं परेशानियां आती हैं गुज़र जाती हैं, बेचैनी का बाइस नहीं बनतीं, बल्कि अल्लाह तआला पुर ख़ुलूस ज़िन्दगी अता फ़रमा देते हैं ﴿من عمل صالحا من ذكرا و انثى و هو مؤمن﴾ जो कोई भी नेक अमल करे मर्द हो या औरत और ईमान वाला हो ﴿فلنحيينه حيوة طيبة﴾ और हम ज़रूर बिज़्ज़रूर उसको पाकीज़ा ज़िन्दगी अता करेंगे अब यह परवरदिगार का वादा है क़ुरआन मजीद में कि मर्द हो या औरत हो उसको पकीज़ा ज़िन्दगी देंगे, ख़ुशगवार ज़िन्दगी देंगे पुर सुकून ज़िन्दगी अता फ़रमायेंगे, तो जब अल्लाह

तआला वादा फ़रमा रहे हैं तो इसका मतलब है कि हमें नेक आमाल करने से यक़ीनन ऐसी ज़िन्दगी नसीब होगी तीसरी चीज़ है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़हत से बचाते हैं बारिशें अता फ़रमाते हैं फल अता फ़रमाते हैं रोज़ी में बरकत अता फ़रमा देते हैं तो बन्दे को क़हत साली का सामना नहीं करना पड़ता।

हर ज़रूरत का इलाज

हज़रत हसन रज़ि. तशरीफ़ फ़रमा थे एक आदमी आया कहने लगा हज़रत बड़ा गुनहगार हूं बड़ा ख़ता कार हूं चाहता हूं कि मेरे गुनाह माफ़ हो जायें मुझे तरीक़ा बतायें? फ़रमाने लगे इस्तिग़फ़ार कर लो थोड़ी देर गुज़री एक आदमी आया हज़रत इस सीज़न में तो बिल्कुल बारिश हुई ही नहीं अब तो मवेशी भी पानी को तरसते हैं दुआ फ़रमाइये कोई अमल बताइये, फ़रमाया इस्तिग़फ़ार कर लो, एक आदमी आया हज़रत बड़ा ग़रीब हूं क़र्ज़ों ने जकड़ रखा है अदाएगी की कोई सूरत नज़र नहीं आती कोई मुझे इसका तरीक़ा बताइये इस्तिग़फ़ार पढ़े जाओ, फिर एक आदमी आया हज़रत बड़ी दिल की तमन्ना है कि कई साल हो गए शादी को अल्लाह तआला मुझे नेक बेटा अता फ़रमाए उन्होंने कहा जाओ इस्तिग़फ़ार करो एक आदमी आया कि हज़रत मेरा बाग़ तो है मगर यह दुआ करो कि इस साल इस में फल ज़्यादा लगें, फ़रमाया इस्तिग़फ़ार करो, एक आदमी आया कि हज़रत मेरी ज़मीन है मगर उसमें पानी नहीं है तो मैं कुछ कुंआ वग़ैरा खोदना चाहता हूं दुआ करें कि उसमें से अल्लाह तआला पानी निकाल दे, फ़रमाया इस्तिग़फ़ार करो।

अब एक आदमी क़रीब ही जो ख़िदमत गुज़ार था उसने कहा कि हज़रत यह एक अजीब चीज़ आप के हाथ में आई है कि जो पूछने आता है इस्तिग़फ़ार करो इस्तिग़फ़ार करो तो उन्होंने फ़रमाया कि देखो भई यह जो इस्तिग़फ़ार का अमल है ना यह मैं ने अपनी तरफ़ से नहीं

बताया यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कुरआन मजीद में बताया हैं सच्चे परवरदिगार ने अपने सच्चे कलाम में फ़रमाया ﴿فقلت استغفروا ربكم﴾ तुम इस्तिग़फ़ार करो अपने रब के सामने ﴿انه كان غفارا﴾ वह गुनाहों को बख़्शने वाला है ﴿يرسل السماء عليكم مدرارا﴾ बारिशों को बरसाने वाला, क़हत दूर करने वाला, ﴿و يمددكم باموال﴾ और माल से तुम्हारी मदद करेगा, फ़िक्र दूर हो जाएगा ﴿وبنين﴾ और तुम्हें बेटे अता करेगा, ﴿يجعل لكم جنت﴾ तुम्हारे बाग़ों में अच्छे फल लगाएगा ﴿ويجعل لكم انهارا﴾ और अल्लाह तआला तुम्हें चश्मा और नहर अता फ़रमाएगा, तो यह कुरआन मजीद की आयत है इसमें बतलाया गया है कि इस्तिग़फ़ार की कसरत से अल्लाह तआला यह सब नेमतें अता फ़रमा देते हैं, इस लिए क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा वह आदमी खुश होगा जिस ने अपने ऊपर इस्तिग़फ़ार को लाज़िम किया होगा और क़ियामत के दिन उसके नामए आमाल में इस्तिग़फ़ार बहुत ज़्यादा होगा हम चलते फिरते भी इस्तिग़फ़ार कर सकते हैं कई मर्तबा गाड़ी चलाते हुए भी इस्तिग़फ़ार कर सकते हैं, बैठे हुए भी अस्तग़फिरूल्लाह पढ़ सकते हैं ? मगर देखा यह गया कि मुश्किल से सौ दफ़ा पढ़ने की सआदत भी क़िस्मत वाले को नसीब होती है।

इस्तिग़फ़ार पढ़ने में कोताही

उमूमन इस्तिग़फ़ार नहीं पढ़ा जाता हालांकि इस इस्तिग़फ़ार में हमारी परेशानियों का हल मौजूद है नबीﷺने फ़रमाया ﴿من لزم الا ستغفار جعل الله لكل هم مخرجا﴾ अल्लाह तआला हर परेशानी में उसके लिए आसानी कर देंगे ومن كل ضيق مخرجا और अल्लाह तआला हर तंगी में से निकलने का रास्ता खोल देंगे ويرزقه من حيث لا يحتسب ऐसी तरफ़ से रिज़्क़ देंगे जिस का उसको वहम व गुमान भी नहीं होगा।

(4).........फ़ायदा

नेक आमाल से अल्लाह तआला बलायें टाल देते हैं चुनांचे हज़रत अक़दस थानवी रह. ने यह बात लिखी है कि उन्होंने नबी ﷺ की शान में एक किताब लिखी " नशरूत्तयब" नाम की, उन दिनों उस इलाक़ा में ताऊन फैला हुआ था "थाना भवन" और उसके क़रीब "कान्धला" वग़ैरा में हज़रत फ़रमाते हैं कि मेरा यह तजर्बा है कि जिस दिन मैं उसकी लिखाई का काम करता था मुझे कहीं से बन्दे के मरने की इत्तेला नहीं आती थी और अगर किसी दिन मैं कोई काम न कर पाता बन्द हो जाता तो उसी दिन किसी न किसी के मरने की ख़बर आ जाती, महबूब की शान में किताब लिखी जा रही है उसकी बरकतें इतनी हैं कि अल्लाह तआला इलाक़ा से बला को दूर फ़रमा देते हैं।

हम ने अपने हज़रत मुर्शिद आलम रह. के बारे में देखा, कोई मदरसा बन्द होता था वह वहां से गुज़रते हुए दुआ करके चले जाते थे, या थोड़ी देर बैठ जाते थे, या एक वक़्त का खाना खा लेते थे या एक रात गुज़ार लेते थे बन्द मदरसों को अल्लाह तआला चला देते थे, दरजनों के हिसाब से ऐसे वाक़ियात हम ने देखे किसी वजह से कोई परेशानी है मदरसे वाले बुला कर ले जाते थे एक रात ठहराते थे हज़रत की तहज्जुद की दुआयें ऐसी होती थीं अल्लाह उस मदरसा के मामले को सीधा कर देते थे, बलायें आई हुई अल्लाह तआला टाल देते थे फिर अल्लाह तआला की मदद और नुसरत होती थी।

चुनांचे अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿انا لننصر رسلنا﴾ हमारे ज़िम्मा में है मदद अपने रसूलों की ﴿والذين آمنوا﴾ और ईमान वालों की ﴿فى الحياة الدنيا﴾ इस दुनिया की ज़िन्दगी में ﴿و يوم يقوم الا شهاد﴾ और उस दिन जब गवाहियां दी जायेंगी।

﴿انا لننصر﴾ हमारे ऊपर लाज़िम है अगर इसका तर्जमा हम अपनी ज़बान में करें महावरे का, तो यूं बनेगा कि हमारे ऊपर रसूलों

की और ईमान वालों की मदद करना फ़र्ज़ है, याद रखिये अल्लाह तआला पर कुछ फ़र्ज़ नहीं है, मफ़हूम ऐसे बनता है यूं कहना चाहते हैं हमारे ऊपर लाज़िम है अल्लाह तआला मदद फ़रमाते हैं और अल्लाह तआला की मदद जब उतरती है तो मेरे दोस्तो यह ज़ेहन में रख लेना जिस पलढ़े में अल्लाह तआला की मदद का वज़न आ जाता है फिर वह पलढ़ा सारी दुनिया से भारी हो जाता है।

(5)...... फ़ायदा

अल्लाह तआला फ़रिश्तों के ज़रिया से बन्दे की मदद फ़रमा देते हैं, मां की दुआयें होती हैं, सदक़ा दिया होता है, फ़रिश्तों के ज़रिया अल्लाह तआला मदद कर देते हैं आपने देखा कई दफ़ा इतना बुरा ऐक्सीडेन्ट होते होते बच जाता है ऐसा लगता है जैसे किसी ने बचा लिया क़ुदरत के काम होते हैं, अल्लाह तआला चाहते हैं बन्दे को बचा लेते हैं।

फ़िज़ाए बदर पैदा कर फ़रिश्ते तेरी नुसरत को
उतर सकते हैं गर्दों से क़तार अन्दर क़तार अब भी

एक अजीब बात

मोफ़स्सिरीन ने लिखा है कि बदर में जो फ़रिश्ते उतरे अल्लाह तआला ने उनको वापस आसमानों पर नहीं बुलाया, वह दुनिया में ही हैं यह ख़ुदाई बहरी बेड़ा हवाई बेड़ा यह आ गया अब वापस नहीं जाएगा यह इधर ही है ईमान वालो जहां तुम अपने अमलों को ठीक कर लोगे अपने अन्दर तक़वा पैदा कर लोगे, तुम्हें ज़रूरत होगी, हम उनको उस जगह से तुम्हारी जगह भेज देंगे, तो दुनिया में फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इज़्ज़तें अता फ़रमाते हैं

चुनांचे हदीस पाक में आता है कि जब कोई बन्दा नेकी करता है तो अल्लाह तआला जिबरईल عليه السلام को बुलाते हैं फ़रमाते हैं जिबरईल मैं इस बन्दे से मोहब्बत करता हूं तो हज़रत जिबरईल عليه السلام एक एलान करते हैं

आसमान के सब फ़रिश्ते उस बन्दे से मोहब्बत करने लग जाते हैं फिर जिबरईल ﷺ ज़मीन पर आते हैं और ज़मीन पर आकर एलान करते हैं हदीस पाक में है ﴿ثم يوضع له القبول فى الارض﴾ जिबरईल ﷺ के एलान के बाद अल्लाह तआला ज़मीन में उनके लिए कबूलियत रख देते हैं, इज़्ज़तें मिलती हैं।

दोनों की हुकूमत अलग अलग

एक मर्तबा हारून रशीद की बीवी खिड़की में नीचे देख रही थी, और मस्जिद में नीचे इमाम अबू यूसुफ़ रह. दर्स दे रहे थे उनको जो छींक आई तो उन्होंने الحمدلله कहा जिस पर पूरे मजमा ने يرحمك الله कहा इस कहने की इतनी आवाज़ पैदा हुई कि जैसे पता नहीं क्या हुआ, हारून रशीद दूसरे कमरे में था अचानक घबरा कर आया पूछने लगा क्या हुआ? वह कहने लगी कि हारून रशीद एक बन्दा अल्लाह का उसने छींक पर अल्हम्दुलिल्लाह कहा इतने लोगों ने जवाब दिया कि तुम दूसरे कमरे से उठ कर आ गए, दर हक़ीक़त दिलों के बादशाह तो यह लोग हैं तुम तो जिस्मों के बादशाह हो यह दिलों के बादशाह हैं तो यूं अल्लाह तआला इज़्ज़तें अता फ़रमा देते हैं।

हज़रत अहमद अली लाहौरी रह. का वाक़िया

हज़रत मौलाना अहमद लाहौरी रह. सिख घराने से थे इस्लाम क़बूल कर लिया दारूल उलूम देव बन्द पढ़ने आ गए यह फ़रमाया करते थे कि मेरे ससुर बड़े समझदार आदमी थे उन्होंने अहमद अली को उस वक़्त पहचाना जबकि अहमद अली, अहमद अली नहीं था। हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह. यह विलायत कुबरा के मक़ाम के लोगों में से थे मुस्तजाबुद दावात बुज़ुर्गों में से थे उन का दर्से कुरआन बहुत मक़बूल था, बहुत मानी हुई ग़ैर मुतनाज़े शख़्सियत थी अपनी शादी का वाक़िया सुनाते हैं ज़रा शौक़ व तवज्जोह से सुनें

फ़रमाते हैं कि मेरे ससुर को बीवी ने इत्तेला दी कि मेरी बेटी की उम्र पूरी हो गई कोई मुनासिब रिश्ता हो तो इसका फ़र्ज़ निभायें, तो मेरे ससुर पन्जाब के मदारिस में अपनी बेटी के लिए मुनासिब बच्चा ढूंढने के लिए निकले मदारिस में राउंड करते करते बिल आख़िर दारुल उलूम में पहुंचे, शैखुल हिंद के ख़ुसूसी दोस्त थे उनसे मुलाक़ात हुई तो दौरए हदीस के तलबा पर नज़र डाली फ़ौरन उनकी नज़र मेरे ऊपर टिक गई उन्होंने शैखुल हिन्द से पूछा क, यह बच्चा शादी शुदा है? उन्होंने कहा नहीं इसे कौन लड़की देगा यह सिख घराने का लड़का है और यहां कई दफ़ा बैठा होता है पढ़ने के लिए तो इसकी मां जो सिख है वह आती है और गालियां निकाल कर चली जाती है चुप रहता है बेचारा, इस दरवेश को कौन बेटी देगा? उन्होंने कहा कि अच्छा आप इनसे पूछें अगर यह तैयार हों तो मैं अपनी बेटी के साथ निकाह कर दूंगा? फ़रमाया पूछ लेते हैं, शैखुल हिंद रह. ने पूछा तो कहने लगे कि हज़रत मैं बे यारो मददगार सा बन्दा हूं अगर कोई मुझे अपना बेटा बनाएं और अपनी बेटी का रिश्ता दे तो मैं तो उस सुन्नत पर अमल कर लूंगा, और इससे ज़्यादा खुश नसीबी क्या हो सकती है? उन्होंने बता दिया, चुनांचे ससुर ने कहा कि कल असर के बाद हम इनका निकाह पढ़ देंगे, फ़रमाने लगे कि मैं कमरे में आ गया अब मैं ने अपने दोस्तों को बता दिया कि भई कल मेरा निकाह होना है लिहाज़ा यह ख़बर जंगल की आग की तरह सब लड़कों में फैल गई, अब लड़के आने शुरू हो गए, जनाब कोई कुछ कह रहा है कोई कुछ कह रहा है, एक ने कहा भई बात यह है कि यह जो तुम ने कपड़े पहने हुए हैं यह तो बहुत मैले कुचैले पुराने हैं तुम किसी से उधार ले कर दूसरे पहन लो, मैं ने कह दिया भाई बात यह है कि मैं ने कभी किसी से उधार नहीं मांगा जो हैं मेरे अपने हैं मैं किसी से ले कर नहीं पहनता, साथी ने कहा अच्छा अगर आप किसी से उधार नहीं मांग सकते तो मत मांगिए ऐसा करें कि कल इन कपड़ों को आप धोकर साफ़ करके फिर

पहन लेना, मजमा में कम अज़ कम साफ़ कपड़ों में तो बैठोगे, फ़रमाने लगे मेरी बदबख़्ती आ गई कि मैं ने हां हां भर ली, अगले दिन सबक़ ख़त्म हुआ तो मैं ने धोती सी बांधी और कपड़े उतारे और उनको धो डाला, अल्लाह की शान सर्दियों का मौसम ऊपर से बादल आ गए अब जुहर का वक़्त भी क़रीब आ गया मेरे कपड़े गीले मैं मस्जिद के पीछे जाकर कपड़ों को लहरा रहा हूं और अल्लाह से दुआ मांग रहा हूं अल्लाह मेरे कपड़े खुश्क कर दे वह तो न होने थे न हुए और जुहर की अज़ान हो गई, अब मुझे मजबूरन गीले कपड़े पहन कर सर्दी के मौसम में मजमा मैं बैठना पड़ा अब सब कहें कि जी दुल्हा कौन है? अब सब की नज़र मुझ पर पड़े और और पता चले गीले कपड़े सर्दी में पहन के बैठा है फ़रमाने लगे मेरे ससुर को अल्लाह ने वह सोने का दिल दिया था उन्होंने देखा कि कल यही कपड़े थे और मैले थे आज यही हैं और गीले हैं इसका मतलब यह कि इस बच्चे के पास दूसरा जोड़ा भी नहीं है, उनके दिल पर इस बात का कोई असर ही न हुआ वह तो मेरी पेशानी के नूर को देख रहे थे।

मर्द हक़्क़ानी की पेशानी का नूर
कब छिपा रहता है पेशे ज़ी शुऊर

तो कहने लगे उन्होंने मेरा निकाह पढ़ दिया जब मैं फ़ारिग़ हो गया दौरए हदीस से और रूख़सती हो गई तो जब मैं बीवी को ले आया तो इब्तेदाई एक दो महीना मेरे पास रही उनमें भी उसे फ़ाक़ा करना पड़ा क्योंकि मेरे पास तो कुछ होता नहीं था जो मिलता हम दोनों खा लेते वरना फ़ाक़ा से दिन गुज़ारते।

महीना के बाद वह अपने मैके गई जैसे बच्चियां जाती हैं शादी के बाद, तो फ़रमाते हैं कि जब वह अपने घर गई तो उसकी मां ने पूछा बेटी तू ने अपने घर को कैसा पाया? फ़रमाने लगे इतनी तक़्या नक़्या पाकबाज़ वह बच्ची थी अपनी मां से कहने लगी कि अम्मी मैं तो सुनती थी कि मर कर जन्नत में जायेंगे और मैं तो जीते जागते जन्नत में

पहुंच गई हूं, अल्लाहु अकबर कबीरा, इतनी साबिरा शाकिरा थी कहने लगे बस फिर अल्लाह तआला ने मेरे घर में बरकतें देनी शुरू कर दीं, जब ख़ाविन्द ऐसा हो और बीवी ऐसी हो तो फिर बरकतें क्यों न होंगी, चनांचे हज़रत फ़रमाने लगे एक वह वक़्त था कि जब ख़ाने को नहीं मिलता था और एक आज अहमद अली पर वह वक़्त है कि मेरे खाने के लिए ताइफ़ से फल आते हैं और फिर उन्होंने फ़रमाया कि सरगोधा के इलाक़े के बड़े बड़े लोग जो सरगोधा के कलयार हैं उनकी बीवियां आज मेरे घर में आकर बरकत के लिए झाड़ू दे कर जाती हैं, इतने बड़े लैंनलार्ड की बीवियां बरकत के लिए मेरे घर में आकर झाड़ू दे रहीं हैं, आज अल्लाह का मुझ पर इतना करम है,

तो कितनी अजीब बात है कि सिख घराने का बच्चा जिस का कोई अपना नहीं था अल्लाह तआला ने उसको दुनिया में ऐसी इज़्ज़तें अता फ़रमा दी चुनांचे मशहूर वाक़िया है कि अपनी वफ़ात के बाद वह उलमा में से किसी बड़े आलिम को ख़्वाब में नज़र आए उस ने पूछा हज़रत आगे क्या बना तो हज़रत कसीरूल बुका थे (कसरत से रोते थे) ख़ौफ़े खुदा हर वक़्त दिल पर रहता था फ़रमाने लगे अल्लाह तआला के हुज़ूर पेशी हुई तो परवरदिगार ने फ़रमाया अहमद अली तू इतना रोता क्यों था? कहने लगे जब मुझ से पूछा तो मुझे ख़्याल आया कि नबी ﷺ का फ़रमान है ﴿من نوتش الحساب فقد عذب﴾ जिस से हिसाब किताब में पूछ शुरू हो गई वह नहीं बचेगा, तो मैं डर गया और जब मैं डरा तो परवरदिगार ने फ़रमाया अहमद अली अब भी डर रहे हो आज तुम्हारे डरने का नहीं खुश होने का दिन है, हम ने तुम्हें माफ़ कर दिया और जिस क़ब्रस्तान में तुम्हें दफ़्न किया वहां के सब गुनहगारों को भी हम ने माफ़ कर दिया, चुनांचे उनके क़ब्र की मिट्टी से खुशबू आया करती थी हज़ारों इन्सानों ने उनकी क़ब्र की मिट्टी उठा कर घर ले जाना शुरू कर दिया था, तो उलमा मतवज्जेह हुए फिर उन्होंने मिल कर मुसतक़िल दुआ मांगी ऐ अल्लाह बस जो चीज़ ज़ाहिर हो रही है

इस जुहूर को ख़त्म कर दे वरना लोग मिट्टी ही नहीं छोड़ेंगे, अल्लाह तआला ने इतने सुलहा की दुआ को क़बूल कर लिया तब जा कर उनकी क़ब्र से ख़ुशबू आनी बन्द हो गई, अल्लाह तआला इज़्ज़तें अता फ़रमा देते हैं, जिस का अपना कोई नहीं होता सारी दुनिया फिर उसी की बन जाती है जिस को खाने के लिए रोटी नहीं मिलती उसको खाने के लिए फिर तायफ़ से फल आया करते हैं माशाअल्लाह मेरे दोस्तो आज के ज़माना में तो यह आसान है जब बहरी जहाज़ आते थे उस ज़माना में यह तायफ़ से फल आना कोई आसान नहीं था, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दुनिया में इज़्ज़तें अता फ़रमाते हैं।

(6).....फ़ायदा

फ़ायदा यह कि अल्लाह तआला दुनिया में मरातिब बुलन्द फ़रमा देते हैं चुनांचे इर्शाद फ़रमाया ﴿يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين اوتو العلم درجات﴾ अल्लाह तआला (इस हुक्म की इताअत से) तुम में ईमान वालों के और (ईमान वालों में) जिनको इल्म (दें) अता हुआ है उनके दर्जे बुलन्द कर देगा।

इमाम अबू यूसुफ़ रह. ग़रीब घर के बच्चे थे यतीम हो गए मां ने भेजा बेटा जाओ और जाकर धोबी के पास कपड़े धोने का काम सीख लो कुछ कपड़े धोया करोगे तो हमारा गुज़रा चल पड़ेगा, यह घर से चले धोबी का फ़न सीखने के लिए अल्लाह तआला की शान, इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह. का दर्स हो रहा था दर्स में बैठ गए दर्स कुछ अच्छा लगा लोग उठ कर चले गए यह थोड़ी देर बैठ के सोचते रहे इमाम अबू हनीफ़ा रह. की नज़र पड़ गई वह बड़े मरदुम शनास थे, उन्होंने बुलाया बच्चा क्या नाम है? क्या करते हो? सारा कुछ बता दिया उन्होंने चेहरे से पहचान लिया कि इसके अन्दर बला की ज़िहानत है, फ़रमाने लगे कि जितना तुझे धोबी देगा उतना मैं तुझे दे दिया करूंगा तू रोज़ आकर यहां मेरे पास दर्स पढ़ा कर यह राज़ी हो गए कुछ

उनका अपना भी जी चाह रहा था कुरआन और हदीस पढ़ने को और ऊपर से जो मां का मसला था वह भी हल हो गया चुनांचे इमाम साहब हिसाब से उनको कुछ दे देते यह आगे वालिदा को दे देते इस तरह पढ़ते रहे हत्ता कि पढ़ते पढ़ते यह इमाम अबू यूसुफ़ बन गए, बहुत सी हदीस के हाफ़िज़ थे उनको कसीरूल हदीस आलिम कहा गया है, बड़े ज़हीन थे अल्लाह तआला की शान अब जब इमाम अबू यूसुफ़ बन गए तो एक दिन वालिदा को पता चला कि मेरा बेटा तो मसले मसाइल बताता है यह धोबी का काम तो नहीं करता उस ने कहा बेटे मैं ने तुम से कहा था कोई फ़न सीखना उन्होंने इमाम आज़म को बताया, उन्होंने फ़रमाया भई अपनी अम्मी से कहना कि वह आयें और मेरे साथ बात कर लें, पर्दे में यह अपनी वालिदा को लेकर आए उन्होंने उनकी बात सुनी कि जी मैं ने तो इस बच्चे को कहा था कि धोबी का काम सीखे हुनर सीखे और यह तो मसले मसायल में लगा रहता है इमाम साहब ने समझाया कि देखें जो आप की ज़रूरत है वह तो अल्लाह पूरा कर ही रहे हैं, आप को घर बैठे ख़र्चा मिल रहा है, फ़ाक़ा नहीं आता, आप इस बेटे को अगर दीन के लिए इस्तेमाल करेंगे तो यह आप के लिए आख़रत का सदक़ए जारिया बनेगा, और फिर अख़िर पर फ़रमा दिया कि मैं ने इस बच्चे को वह फ़न सिखाया है जिस की वजह से यह पिस्ते का बना हुआ हलवा खाया करेगा, मां समझी कि शायद उस्ताज़ साहब ने मेरी मज़ाक़ की है, चुप हो गई अल्लाह तआला की शान कि कुछ अरसा के बाद वक़्त के बादशाह ने यह कहा कि हुकूमत को चीफ़ जस्टिस की ज़रूरत है उसने इमाम आज़म को बनाने की कोशिश की इमाम आज़म बनते नहीं थे चूंकि वह तदवीन फ़िक़ह में लगे हुए थे उन्होंने साफ इंकार कर दिया उस ने कहा अच्छा जी कोई और बन्दा दे दो तो उन्होंने इमाम अबू यूसुफ़ रह. को दे दिया चुनांचे यह पूरी इस्लामी दुनिया के अकेले चीफ़ जस्टिस थे बाकी जितने क़ाज़ी थे इस्लामी दुनिया के सब उनके नीचे थे, तो अब आप सोचिए कि सुप्रीम

कोर्ट का जो चीफ़ जस्टिस बने उसकी वैलियू क्या होती है, अल्लाह ने उन को वह मक़ाम दिया जब यह उस मन्सब पर तइनात हुए तो दूसरे तीसरे दिन हारून रशीद उन को मिलने के लिए आया तो हारून रशीद ने कुछ बात चीत के बाद उनके सामने एक बरतन बढ़ाया उन्होंने पूछा इस में क्या है? उस ने कहा कि हज़रत जो इस मन्सब पर आता है तो उसके प्रोटोकोल में से है कि उसको दिमाग़ी काम बहुत करना पड़ता है, लिहाज़ा यह चीज़ उसको हर दूसरे चौथे दिन खिलाई जाती है, डाक्टरों के व अतिब्बा के मशवरे की वजह से दिमाग़ी काम करने वाले की यह ज़रूरत है और यह हमें भी कभी कभी मिलती है तो इमाम अबू यूसुफ़ ने पूछा यह है क्या कहने लगा जी यह पिस्ते का बना हुआ हलवा है आप को हर दूसरे तीसरे दिन मिल जाया करेगा इमाम अबू यूसुफ रह. कहते हैं मैं हैरान हो गया।

क़लन्दर हर चे गोयद दीदा गोयद

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा की फ़िरासत पर कि उन्होंने जो बात कही थी अल्लाह ने इस बात को सच साबित फ़रमा दिया तो देखिए वह बच्चा जो धोबी का फ़न सीखने जा रहा है अल्लाह तआला ने उस को वक़्त का चीफ़ जस्टिस बना दिया तो मक़ाम मिलते हैं नेकियों की वजह से।

(7)........फ़ायदा

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इन्सान को बीमारियों से भी शिफ़ा अता फरमाता है, हम ने अपने बुजुर्गों को देखा अल्हम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला की मदद होती थी, हमारे एक बुजुर्ग थे बाबू जी अब्दुल्लाह उन को डॉक्टर देखते थे तो कहते थे कि हमारी समझ में नहीं आता कि यह कैसे ज़िन्दा हैं और चल रहे हैं अल्लाहु अकबर इसलिए कि वह लोग कुरआन की तिलावत करते हैं और कुरआन मजीद उनके लिए शिफ़ा बन जाया करता है फिर अल्लाह तआला उनके नुक़सान का

तदारूक भी खुद कर देता है कुरआन मजीद की आयत सुनिए ﴿يـا يهـا الـنبـى قـل لـمن فى ايديكم من الا سرى ان يعلم الله فى قلوبكم خيـرا يـؤتـكـم خيـرا مما اخذمنكم و يغفر لكم﴾ कुरआन अज़ीमुश्शान में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि जो तुम से लिया जाएगा अल्लाह तआला तुम्हें उस से बेहतर अता फ़रमा देंगे, तुम्हारे नुक़्सान सारे पूरे कर देंगे और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फिर ऐसे बन्दों को माल की भी फ़रावानी अता फ़रमा देते हैं अब यहां से कोई यह न सोचे कि जी नबी عليه السلام. पर तो फ़ाके आए भाई नबी عليه السلام. पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जिबरईल عليه السلام. को पैग़ाम दे कर भेजा ऐ मेरे महबूब आप दुनिया में ملكا رسولا बन कर रहना चाहते हैं या عبدا رسـولا बनके रहना चाहते हैं यानी रसूल भी हों और वक़्त की शहन्शाही भी आप को मिले सुलेमान عليه السلام. की तरह या आप अल्लाह के रसूल भी हों और ज़ाहिरी तौर पर आप एक गुलाम की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें, तो जिबरईल عليه السلام ने जब यह बताया हदीस पाक में आता है जिबरईल عليه السلام ने हाथ का इशारा नीचे कर दिया बात तो नबी عليه السلام से पूछी चूंकि अल्लाह तआला ने भेजा था मगर दोस्ती का हक़ निभाया इशारा यूं नीचे कर दिया तो नबी عليه السلام ने फ़रमाया हां मैं عبدا رسولا बन कर रहना चाहता हूं एक वक़्त का खाना खाऊं अल्लाह का शुक्र अदा करूं और दूसरे वक़्त फ़ाक़ा आए तो मैं सब्र करूं तो महबूब का यह फ़ाक़ा इख़्तियारी था इज़्तरारी नहीं था।

इसी लिए एक मौक़ा पर जब आप के जिस्म पर हज़रत उमर रजि. ने चटाई का निशान देखा और कहा कि अल्लाह के नबी यह काफ़िर मनहूस तो मख़मलों पर सोयें और आप अल्लाह के महबूब हो कर चटाईयों पर सोयें और जिस्म पर निशान नज़र आयें नबी عليه السلام उठ कर बैठ गए चेहरए मोबारक सुर्ख़ हो गया फ़रमाने लगे कि ऐ उमर अगर मैं कहूं तो यह उहद पहाड़ सोने का बन कर मेरे साथ चलना

शुरू कर दे, तो इख़्तियारी मामला था महबूब की पसन्द थी।

एक उसूल की बात याद रखना जहां ख़ुलूस होता है वहां फुलूस की कमी नहीं होती हमारे एक बुज़ुर्ग थे नाम लेना मुनासिब नहीं है एक दफ़ा उलमा में ब्यान फ़रमाने लगे उलमा हज़रात अगर आप अपने इल्म पर अमल करें तक़्वा इख़्तियार करें, अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलें, अपने अन्दर इख़लास पैदा करें, तो जिन घरों में इस वक़्त आप हैं अल्लाह आप को ऐसे घर देंगे उनके बैतुल ख़ला भी तुम्हारे इन घरों से बेहतर होंगे, जिन में अब तुम रहते हो और वाक़ई अल्लाह ने उनको ऐसी नेमतें दी हुई थीं इमाम आज़म रह. को देखिए दीन का काम करते थे अल्लाह तआला लाखों उनको कारोबार में देते थे और वह उनको अल्लाह के रास्ते में बहुत ख़र्च करते थे अल्लाह देता था और वह ख़र्च करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि. का गुना

उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि. को देखिए मदीना में क़हत पड़ा और ऐन उस वक़्त उन के कई सौ ऊंट जो थे वह शाम से भरे हुए आ गए अब यह ऐसा वक़्त था कि लोग ग़ल्ले को तरस रहे थे और उनका क़ाफ़ला आ गया तो जो ताजिर थे वह भागे हुए उन के पास आए कि जी हमारे साथ थोक का सौदा कर लें, हम आप के इतने ऊंट ले लेंगे हम इतने इतने ऊंट ले लेंगे, फ़रमाने लगे कितना मुनाफ़ा दोगे ? एक ने कहा दो गुना देंगे, एक ने कहा तीन गुना, चार गुना बढ़ते गए बढ़ते गए, हत्ता कि एक ने कहा कि जो आप की क़ीमते ख़रीद है बता दें दस गुना ज़्यादा पर ख़रीद लेंगे सैंकड़ों ऊंटों पर सामान अब दस गुना पर ख़रीदने के लिए लोग तैयार उन्होंने कहा नहीं मैं नहीं बेचता किसी ने कहा उस्मान दस गुना पर ख़रीद रहे हैं इतना मुनाफ़ा भी क़बूल नहीं? फ़रमाने लगे हां एक और ख़रीदार है जो सात सौ गुना पर ख़रीदना चाहता है बल्कि ﴿ والله يضاعف لمن يشاء بغير حساب ﴾ वह बग़ैर

हिसाब मुझे इस का बदला देगा, सैंकड़ों ऊंट वह सब के सब मुसलमानों में मुफ़्त तक़सीम फ़रमा दिए।

(8)........फ़ायदा

एक फ़ायदा यह होता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने प्यारे बन्दों और अपने नेक बन्दों को इत्मिनाने क़ल्ब अता फ़रमा देते हैं, दिल को इत्मिनान दे देते हैं अगर कोई ज़ाहिरी परेशानियां होती भी हैं तो वह ज़ाहिर पर होती हैं दिल में नहीं होती कहते हैं कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह. एक मर्तबा बैठे थे तो किसी ने आकर ख़बर दी जी आप के माल का जो जहाज़ आ रहा था वह समुंद्र में डूब गया, आप थोडी देर ख़ामोश रहे फ़रमाने लगे अल्हम्दुलिल्लाह फिर दो घंटे के बाद फिर एक आदमी दौड़ता हुआ आया हज़रत वह जो इत्तेला आई थी जहाज़ डूबने की वह ग़लत थी वह डूबते डूबते बच गया और वह बख़ैरियत किनारे पर आ लगा है, आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे फ़रमाया अल्हम्दुलिल्लाह अब ख़ादिम बड़ा हैरान हज़रत डूबने की इत्तेला मिली तो अल्हम्दुलिल्लाह बचने की इत्तेला मिली तो अलहदोलिल्लाह फ़रमाने लगे कि ज़ब मुझे डूबने की ख़बर मिली मैं ने अपने दिल में झांक कर देखा तो दिल में कुछ दुख और अफ़सोस महसूस नहीं किया, मैं ने कहा अल्हम्दुलिल्लाह और जब बचने की इत्तेला मिली मैं ने अपने दिल में झांक कर देखा तो कोई खुशी महसूस नहीं की मैं ने कहा अल्हम्दुलिल्लाह अल्लाह मैं तेरे इस हाल में भी राज़ी हूं, मैं तेरे उस हाल में भी राज़ी हूं।

एक अल्लाह के वली का जवाब

चुनांचे एक बादशाह थे उन्होंने देखा कि उन के मुरीदीन बहुत ज़्यादा हैं और नेकी लोगों में फैल रही है और ज़िन्दगियां बदल रही हैं तो वह बड़ा खुश हुआ और उस ने अपना एक सिपाही भेजा और उस को एक कागज़ दे कर भेजा कि मैं ने मुल्क नीमरोज़ की हुकूमत आप

को दे दी यह जायदाद आप की है अब आप उस जागीर की आमदनी से अपनी ख़ानक़ाह का ख़र्चा चला लें लंगर चलायें उन्होंने उस को पढ़ा तो पढ़ कर उसके बैक साइड पर उसका जवाब लिख कर वापस भेजा और जवाब बड़ा मज़ेदार लिखा जवाब में पहली बात तो यह लिखी।

मेरे बख़्त काली रात की तरह सियाह हो जायें अगर मैं तेरी पेशकश को कबूल कर लूं।

दूसरी बात यह लिखी कि जिस दिन से मुझे नीम शब की शाही मिली है उस दिन से नीमरोज़ की बादशाही मेरे नज़दीक मच्छर के पर के बराबर हो गई है।

तो यह लोग नीम शब के बादशाह होते थे उस वक़्त में अपने हाथ अल्लाह तआला के हुज़ूर फैलाते हैं और फिर परवरदिगार उन की मुरादों पूरी फ़रमा देते हैं।

(9) ....फ़ायदा

इन्सान की नेकी का नफ़ा उस की औलाद तक भी पहुंचता है जिस्मानी तौर पर भी रूहानी तौर पर भी यह बड़ी अहम बात है ज़रा सुनिएगा इन्सान की नेकी का असर उसकी औलाद तक पहुंचता है जिस्मानी तौर पर रूहानी तौर पर भी जिस्मानी तौर पर तो सूरह कहफ़ के अन्दर वाक़िया है कि हज़रत मूसा عليه السلام ने जो जो दीवार सीधी की थी ﴿اما الجدار فكانت لغلامين يتيمين فى المدينة﴾ उस जगह पर दो यतीम बच्चे थे ﴿وكان تحته كنز لهما وكان ابو هما صالحا﴾ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं उस दीवार के नीचे उन का ख़ज़ाना था और उन के वालिद बड़े नेक थे, मुफ़स्सेरीन ने लिखा कि उन के ऊपर के वालिद नहीं कहीं सातवीं पुश्त पर कोई अल्लाह के बड़े वली गुज़रे थे, उस वली की रियायत की वजह से सातवीं पुश्त वालों के साथ भी अल्लाह की रहमतें हो रही हैं और अल्लाह तआला

ने चाहा कि यह बच्चे बड़े हो जायें और वह ख़ज़ाना उन को मिल जाए अब सोचने की बात है कि परवरदिगार के यहां नेक बन्दे का ऐसा मक़ाम होता है कि अल्लाह तआला सातवीं नसल के फ़ायदा का भी ख़याल फ़रमा लेते हैं अल्लाहु अकबर.

खुश नसीबी की बात

और नेकी के रूहानी तौर पर भी बड़े फ़ायदे हैं, चुनांचे कुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿ والـذيـن آمنوا و اتبعتهم ذريتهم بايمان الحقنا بهم ذريتهم و ما التناهم من عملهم من شئى﴾ जो लोग ईमान ले आए और उनकी औलाद ने ईमान के साथ उनकी पैरवी की उन के नक़्शे कदम पर चले मगर औलाद ऐसी न बन सकी जैसे उन के बाप थे फ़रमाते हैं इस निस्बत की वजह से रिश्ता की वजह से तअल्लुक़ की वजह से हम क़ियामत के दिन औलादों को भी उनके वालिदैन से मिला देंगे, कितनी बड़ी खुश नसीबी की बात है तो औलाद के लिए जिस्मानी भी फ़ायदे हैं और रूहानी भी फ़ायदे हैं अब इससे यह पता चलता है कि माल का ज़्यादा होना अल्लाह के क़रीब में रूकावट नहीं बनता इस लिए कि इस आयत के अन्दर कन्ज़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है, मुफ़स्सेरीन लिखते हैं कि कन्ज़ से मुराद ख़ज़ाना होता है छोटे मोटे पैसे नहीं होते , तो इसका मतलब कि अल्लाह के वली की औलाद थी और उनके लिए ख़ज़ाना था अल्लाह ने पसन्द किया कि ख़ज़ाना उन के बच्चों को मिल जाए तो माल का ज़्यादा होना यह कोई ऐब की बात नहीं है अगर इन्सान उस का हक़ अदा करता रहे।

(10).......फ़ायदा

अल्लाह तआला अपने उन नेक बन्दों को ग़ैबी बशारतें अता फ़रमा देते हैं कभी नबी عليه السلام का दीदार होता है इमाम अहद बिन हम्बल रह. को ख़्वाब में सौ मर्तबा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का दीदार नसीब हुआ हज़रत शैखुल हदीस ने यह वाक़िया लिखा है बशारतें होती

हैं नेक लोगों की ज़्यारतें होती हैं, चुनांचे अल–बिदाया वन निहाया में यह बात लिखी है कि हज़रत अली रज़ि. ने एक मर्तबा ख़्वाब में नबी عليه السلام को देखा और फ़ज्र की अंदर फ़रमाई जब नबी عليه السلام ने नमाज़ पढ़ाई तो उसके बाद आप मुसल्ले पर बैठ गए मुक़्तदी लोगों की तरफ़ रूख़ फ़रमा कर, उतने में एक औरत आई और उस ने नबी عليه السلام की ख़िदमत में खजूरें पेश कीं आप ﷺ ने खजूरें क़बूल कर लीं और उन में से आप ने दो खजूरें हज़रत अली रज़ि. को भी दीं जब उन्होंने ख़्वाब में ले कर खाईं तो मज़ा भी आया और आंख भी खुल गई अब हज़रत अली रज़ि. बड़े खुश थे, दौरे फ़ारूकी था (उमर रज़ि. की ख़ेलाफ़त का ज़माना था) बड़े खुश थे कि आक़ा का दीदार हुआ और ख़्वाब में आक़ा से नेमत खाने को मिली तहज्जुद का वक़्त था ख़ैर फ़ज्र हो गई तो यह आए नमाज़ पढ़ने मस्जिदे नबवी में अल्लाह तआला की शान कि उमर रज़ि. भी आए और उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ में वही सूरतें पढ़ीं पहली और दूसरी रकअत में जो ख़्वाब में नबी عليه السلام ने पढ़ीं और उसके बाद वह मुक़तदियों की तरफ़ रूख़ करके बैठ गए फ़रमाते हैं कि मेरी हैरत की इन्तेहा न रही कि ख़्वाब इतना सच्चा निकला कि एक औरत एक तश्तरी में खुजूरें ले कर आ गई कहने लगी अमीरूल मोमिनीन क़बूल फ़रमा लीजिए हज़रत उमर रज़ि ने वह खजूरें ले लीं और उन में से दो खजूरें मुझे भी दीं कहा कि अली आप भी खा लीजिए कहने लगे मैं ने खाईं तो बड़ी मज़ेदार थीं मेरा जी चाहा कि मैं और खाऊं तो मैं ने कहा अमीरूल मोमेनीन मुझे कुछ और भी दे दीजिए तो हज़रत उमर रज़ि. मुझे देख कर मुस्कुराए फ़रमाने लगे भाई अली अगर आपको नबी عليه السلام ने और दी होती तो मैं भी आप को और देता, हज़रत अली रज़ि. कहते हैं कि मैं अमीरूल मोमिनीन की फ़िरासत और कश्फ़ के ऊपर हैरान रह गया।

एक वाक़िया

हज़रत उमर रज़ि. का एक और वाक़िया है एक मरतबा यह सोए हुए थे अचानक उठ बैठे और अचानक उठ कर फ़रमाने लगे कि "यह बनू उमैय्या का ज़ख्मी कौन है? जो उमर से पैदा होगा उसका नाम भी उमर होगा वह उमर की सीरत पर चलेगा और ज़मीन को अद्ल से भर देगा"अब सब लोगों ने यह बात सुनी कि उमर रज़ि. ने यह ख़्वाब देखा यह ख़्वाब उन की औलाद में चलता रहा चलता रहा चलता रहा नतीजा क्या निकला कि उन्होंने अपने बेटे आसिम का निकाह उस लड़की से किया था जिसने दूध में पानी मिलाने से इंकार कर दिया था मशहूर वाक़िया है उनकी एक बेटी थी उसका नाम लैला था लेकिन बाद में वह उम्मे आसिम के लक़ब से मशहूर हो गई, इस उम्मे आसिम को अल्लाह ने एक बेटा दिया उसने उसका नाम उमर रखा यह बच्चा भी छोटा था चलता फिरता था कि एक दिन यह वालिदा से नज़र बचा कर अस्तबल में निकल गया जहां घोड़े बधें हुए थे तो जैसे ही गया एक घोड़े ने उसको जो पीछे से लात मारी तो उसकी पेशानी पर लगी तो माथे से खून निकल आया, मां दौड़ी मां ने भी उसको सीना से लगाया उसका खून साफ़ किया, फिर उसका वालिद आ गया अब्दुल अज़ीज़ तो वालिदा जो थीं वह उनसे ख़फ़ा होने लगीं कि आप घर पर कोई बांदी ही दे दें कोई नौकर ही देदें जो बच्चे को ही संभाल लिया करे हम बच्चे की ही परवरिश सहीह नहीं कर सकते तो उनके वालिद ने कहा कि नाराज़ न हो, मेरा दिल कहता है कि मेरे इस बच्चे का नाम उमर भी है यह ख़ानदाने उमर में से भी है और इसके चेहरे पर अल्लाह ने ज़ख़्म भी लगा दिया मुझे लगता है कि यह मेरा जानशीन बनेगा और अल्लाह ने उनकी बात सच कर दी यह उमर बड़े होकर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बने और उन्होंने ज़मीन को अद्ल व इन्साफ़ से भर दिया, इस तरह हज़रत उमर रज़ि. का देखा हुआ ख़्वाब सौ

फ़ीसद सच्चा साबित हुआ।

हज़रत मुजद्दिद का ख़्वाब

हज़रत ख़्वाजा मुजद्दिद अल्फे सानी रह. फ़रमाते हैं कि मुझे ख़्वाब में अल्लाह तआला ने यह बशारत दी कि तुझे हम एक बेटा अता करेंगे जो अपनी पूरी ज़िन्दगी में कबीरा गुनाह का मुरतकिब नहीं होगा कबीरा गुनाह करेगा ही नहीं अल्लाहु अकबर तो जब बच्चा पैदा हुआ तो उस का नाम इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फे सानी रह. ने मोहम्मद मासूम रखा उसी निस्बत से कि बशारत है कि यह कबीरा गुनाह का मुरतकिब नहीं होगा मोहम्मद मासूम और वह आप का जानशीन बना और फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनके फैज़ से आगे इंडिया पाकिस्तान में मालूम नहीं कहां कहां तक इस दीन को पहुंचा दिया।

(11) ......फ़ायदा

चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हाजत रवाई में मदद फ़रमाते अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿واستعينوا بالصبر والصلوة﴾ यह हज़रात मदद मांगते हैं नमाज़ के ज़रिया से सब्र के ज़रिया से फिर अल्लाह तआला उनकी मदद फ़रमा देते हैं चुनांचे सहाबा किराम की ज़िन्दगियों में अल्लाह तआला की मदद कैसे उतरती थी इसके लिए एक किताब है फुतूहुश्शाम अल्लामा ज़हबी रह. ने लिखी यह पहले तो अरबी में मिलती थी अब इसका उर्दू में भी तर्जमा हो गया है अब इसको आम नौजवान भी पढ़ सकते हैं मेरा जी चाहता है कि हर मुसलमान नौजवान इस किताब को ज़रूर पढ़े एहसास होता है कि सहाबा किराम ने कुर्बानियां कैसे दीं? दीन की ख़ातिर उन्होंने मुशक़्क़तें कैसी उठाईं, और अल्लाह के नाम पर उन्होंने कैसे वलवला के साथ अपनी जानों के नज़राने पेश किये जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से मदद उतरती थी मैदाने जिहाद में उसके फिर मनाज़िर पढ़ कर तो कई दफ़ा रौंगटे खड़े हो जाते हैं, चुनांचे कैसे अल्लाह तआला उनको शरहे सद्र अता

फ़रमा देता है तरद्दुद नहीं रहता शरहे सद्र मिल जाता है, किसी भी मामला में अल्लाह तआला उनके दिल में हक़ बात को इलक़ा कर देता है,

चुनांचे जब सैयदना सिद्दीक़ रज़ि. की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ि.को बुलाया और बुलाकर फ़रमाया कि आयशा मैं तुम्हारे पीछे दो भाई और दो बहनें छोड़ कर जा रहा हूं तो आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. सुन कर हैरान हो गईं अब्बा जान दो भाई तो हैं और बहन तो एक ही है अस्मा दूसरी मैं हूं और आप फ़रमा रहे हैं कि मैं तुम्हारे पीछे दो बहनें और दो भाई छोड़ कर जा रहा हूं तो सैयदना सिद्दीक़ा रज़ि. ने फ़रमाया हां वह मेरी फ़लां अहलिया इस वक़्त उम्मीद से हैं और अल्लाह तआला ने मुझे बता दिया कि इसके बतन से तुम्हारी बहन पैदा होगी चुनांचे उनकी वफ़ात के बाद वह पैदा हुई उसका नाम उम्मे कुलसूम रखा गया वह सैयदना सिद्दीक़े अकबर रज़ि. की तीसरी बेटी थीं यह उम्मे कुलसूम जो थीं यह फिर मां बनी आइशा बिन्ते तलहा की, अबू तलहा ने उनसे निकाह किया था जो फिर बड़ी मोहद्दिसा बनीं और आयशा सिद्दीक़ा रज़ि. की बड़ी शागिर्दा बनीं।

वाक़िया (1)

चुनांचे ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी है मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं एक गोरा चिट्टा बन्दा आ गया उस ज़माना में नजरान साइड के जो इसाई थे वह गोरे चिट्टे होते थे पूछा कौन है कहने लगा मैं बनू कलब का सरदार हूं और मैं ईसाई हूं और मैं इस लिए आया हूं कि आप मेरे ऊपर इस्लाम पेश करें, चुनांचे उमर रज़ि. ने उसके सामने इस्लाम की कुछ तालीमात को खोला कुरआन पढ़ा, कुरआन पाक ने उसके दिल पर ऐसा असर डाला कि उसने कलमा पढ़ा और वह मुसलमान हो गया उमर रज़ि. ने उसको देखते ही फ़िरासत से पहचान लिया कि मुख़लिस है और

अल्लाह उससे दीन का काम ले लें उन्होंने उसको ख़त लिख कर दिया आप फ़लां जगह जाइए मैं आप को इस इलाक़ा का गवर्नर बनाता हूं एक सहाबी बोल उठे हम ने ज़िन्दगी में पहला शख़्स देखा जिसने कलमा पढ़ कर एक रकअत नमाज़ नहीं पढ़ी और उमर बिन ख़त्ताब के हाथों से गवर्नर बन गया हो वह बड़े ख़ुश हुए इस बात से चुनांचे वह उस रुक्क़ा को लेकर चल पड़े कहते हैं कि बस दूसरे लोग भी उठे तो हज़रत अली रज़ि. भी उठे और हसन और हुसैन भी दोनों साथ थे तो यह तीनों हज़रात फिर रास्ते में जाकर उनको मिले सलाम किया उन्होंने पूछा जी कैसे आना हुआ तो हज़रत अली रज़ि. ने फ़रमाया कि यह मेरे दो बेटे हैं और मैं चाहता हूं कि इतने ख़ुलूस से आप ने कलमा पढ़ा कि अमीरूल मोमिनीन ने उसी वक़्त आप को एक इलाक़ा की विलायत सुपुर्द कर दी तो मैं चाहता हूं कि मेरे बच्चों को आप के साथ रिश्तादारी का तअल्लुक़ मिल जाए उसने थोड़ी देर सोचा कहने लगा मेरी बेटियां हैं तीन अली आप के साथ बड़ी बेटी का निकाह करता हूं और हसन के साथ दूसरी बेटी का निकाह और हुसैन के साथ तीसरी बीटी का निकाह कि आप तीनों नबी ﷺ के क़रीबी रिश्तेदार हैं मुझे महबूब का कुर्ब अब सबसे ज़्यादा अज़ीज़ है चुनांचे उनकी बड़ी बेटी का नाम महया था दूसरी का सलमा और तीसरी का रबाब और यह जो सकीना बिन्ते हुसैन थी यह उन्हीं रबाब की बेटी थीं अल्लाहु अकबर, तो हज़रत उमर रज़ि. की फ़िरासत देखिए कि एक बन्दा आ रहा है कलमा पढ़ रहा है कलमा पढ़ते ही पहचान लिया अल्लाह ने उससे दीन का काम लेना है और उसको एक इलाक़ा का वली बना कर भेज दिया यह फ़िरासत होती है।

वाक़िया (2)

जुनैद बुग़दादी बैठे हुए हैं एक नौजवान आया बड़ा ख़ूबसूरत, दाढ़ी है, अमामा है, जुब्बा है और आ कर कहता है कि हज़रत यह जो हदीस

मुबारका है ﴿اتقوا فراسة المؤمن فانه ينظر بنور الله﴾ इस का क्या मतलब है? ज़रा मफ़हूम समझा दीजिए तो जुनैद बुग़दादी रह. ने उसका चेहरा देखा और चेहरा देख कर फ़रमाया कि ओ अन्सारी के बेटे इसका मतलब यह है कि तुम कलमा पढ़ कर मुसलमान बन जाओ उस पर कपकपी आने लग गई वह ईसाई नौजवान था असल में वह भेस बदल कर मुसलमानों वाला आया था कि यह बड़े शैख़ कहे जाते हैं मैं इनसे इसका मतलब पूछूंगा, यह मतलब बता कर मुझे मुसलमान समझ कर सिर्फ़ बात मोकम्मल कर देंगे, फिर मैं उनको कहूंगा कि आप की तो फ़िरासत इतनी भी नहीं कि मुझे पहचानें कि मैं मुसलमान हूं या नहीं, शिकार करने को आए शिकार हो कर चले, चुनांचे उस नौजवान ने उसी वक़्त कलमा पढ़ लिया तो अल्लाह तआला ऐसी फ़िरासत अता फ़रमा देते हैं।

(12)......फ़ायदा

माल में बरकत

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त माल में बरकत अता फ़रमा देता है इसके तो पहले कई वाक़ियात आप को सुनाए भी चुनांचे हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी ﷺ ने मुझे दुआ दी अल्लाह ने मुझे इतना माल दिया मैं कुल्हाड़े से सोने की ईंटों को तोड़ा करता था भई कुल्हाड़े से जो सोना टूटे वह कितना होगा माशाअल्लाह फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनके ज़िम्मादार बनते हैं कुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ और वह परवरदिगार नेकोंकारों का सरपरस्त है अल्लाह तआला उनके सरपरस्त बन जाते हैं सरपरस्त का क्या मतलब? जो भी उनके काम होते हैं अल्लाह तआला उनके कामों को समेट लेते हैं जैसे बच्चे का बाप उनका सरपरस्त होता है अब वह नफ़ा करे या नुक़सान करे ज़िम्मादार बाप वह ज़िम्मादारी उठा लेता है बच्चे को फिर कोई ग़म नहीं होता मसलन बच्चा दूसरों को कहता है कि मैं

कराची जा रहा हूं वह कहते हैं रेल की टिकट बनवाई कहता है नहीं तुम्हें रास्ता आता है? कहता है नहीं, जाना कहां पर है? मालूम नहीं, पहले कभी गए हो? भई कोई तैयारी वग़ैरा कर ली? कहता है नहीं, फिर तुम कराची कैसे जाओगे? बच्चा मुस्कुरा कर कहता है मैं अब्बू के साथ जा रहा हूं गोया उस बच्चे को पक्का यक़ीन होता है मेरे अब्बु मेरे सरपरस्त हैं मैं उनके साथ जा रहा हूं मेरी हर ऊंच नींच के वह ज़िम्मादार होंगे, उसको सरपरस्त कहते हैं ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ जो बन्दा नेकोकार बनता है अल्लाह तआला ऐसे बन्दे के सरपरस्त बन जाया करते हैं।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह. की औलाद

चुनांचे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की वफ़ात का वक़्त आया तो उन के ग्यारा बेटे थे माशाअल्लाह तो किसी ने कहा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह. से कि जी आप ने अपनी औलाद के साथ अच्छा नहीं किया आप से पहले वाले जो लोग थे तो उन्होंने औलादों के लिए बड़ी जागीरें छोड़ी, बड़े पैसे छोड़े और आप तो औलाद के लिए कुछ भी नहीं छोड़ रहे हैं तो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह. ने फ़रमाया मुझे ज़रा उठा के बिठाओ तो उठा के बिठाया गया तो फ़रमाने लगे कि देखो अगर मैं ने औलाद की तरबियत अच्छी की हैं और मेरी औलाद नेक बनी है तो मैं इस औलाद को अल्लाह की सूपुर्दगी में छोड़ कर जा रहा हूं अल्लाह फ़रमाते हैं ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ और वह नेको कारों का सरपरस्त है और अगर यह अल्लाह के फ़रमांबरदार और नेकोकार नहीं बने तो मैं उन की बदकारी में उनका मुआविन नहीं बनना चाहता यह कह कर वह तो फ़ौत हो गए, अल्लाह तआला की शान देखें कि उनके बाद जो लोग आए और उन्होंने हुकूमत संभाली अब वह मुख़तलिफ़ इलाक़ों के गवर्नर बनाना चाहते तो उनको उमर रज़ी के बेटों जैसा कोई और दाना पढ़ा लिखा अच्छा बच्चा न मिलता एक बेटा

गवर्नर बना दूसरा बना तीसरा बना अजीब बात तो यह है एक वक़्त वह आया उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ग्यारा बेटे ग्यारा सूबों के गवर्नर बने हुए थे, यह होता है ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ ।

हर साल अक़ीक़ा

हमारे एक दोस्त थे क़रीबी हमारे बड़े हज़रत के ख़ादिम भी थे और माशाअल्लाह जब हज़रत उन के शहर में आते हर साल उन्होंने हज़रत के लिए अक़ीक़ा का गोश्त तैयार रखा होता था, अल्लाह तआला की शान कि उन की एक बीवी से तेईस बच्चे हुए ! और अल्लाह तआला की शान कि अल्लाह तआला ने उनको भी सेहत ऐसी दी थी कि तेईस बच्चों के बाप को जो देखे तो वह महसूस करे कि क़ारी साहब की शायद अभी शादी होने वाली है, अब मेरी अहलिया की जब उन से मुलाक़ात हुई उन की अहलिया से पहली मर्तबा तो उन्होंने दो एक जैसी औरतों को देखा तो मुलाक़ात की फिर उन में एक मुस्कुराने लगी कहने लगी आप मालूम करना चाहती होंगी कि यह कौन हैं हां मैं मां हूं और यह मेरे बटी है, अहलिया यह फ़र्क़ न कर सकी कि इसमें से मां कौन है और बेटी कौन है? बीवी भी तेईस बच्चों के बावजूद ऐसी अल्लाह तेरी शान ख़ैर एक घर में रहती थीं और उसके दो क़मरे थे अब जब औलाद बड़ी हो गई उन्होंने सब को आलिम हाफिज़ क़ारी बनाया उन के कुछ बच्चे तो बचपन ही में फ़ौत हो गए मगर उन की एक बेटी और नौ बेटे ज़िन्दा सलामत सेहत मन्द रहे सब बेटों को उन्होंने आलिम हाफ़िज़ क़ारी बना दिया अब जब उनकी शादी का वक़्त आया तो फ़िक्र लगी कि भई कोई काम कारोबार भी ऐसा नहीं ज़्यादा से ज़्यादा कहीं बच्चों को पढ़ा देते हैं तो इस पर अब उनको बेटी कौन देगा? अब दोस्त भी उनको कहते कि भई आप ने एक दो को हाफ़िज़ बनाया था बाक़ियों को कम्प्यूटर सिखाते, कारोबार सिखाते, मियां तुम ने भी फिर अजीब ही काम किया है अब वह बड़े हैरान कि मैं क्या करूं?

मकान ही नहीं कि बच्चे सो सकें अलाहदा और बड़ा बेटा जवान हो गया चुनांचे एक जगह उनकी इस आजिज़ से मुलाक़ात हुई फ़रमाने लगे कि हज़रत दुआ फरमायें पहले बेटी के लिए एक रिश्ता देखने जाता है अल्लाह तआला आसानी फ़रमा दे, मेरे दोस्त मुझे बहुत डराते हैं कि तुम ने कारोबार कराना था और मैं ने तो उन सब को दीन पढ़ाया है आलिम बने हैं हाफ़िज़ बने हैं, क़ारी बने हैं, अब वसाइल भी नहीं हैं अल्लाह आसानी फ़रमा दे, हम जानते थे कि भई हज़रत के पुराने ख़ादिम हैं हम सब ने मिल कर के दुआ कर ली, अल्लाह तआला की शान अगले दिन वह उसी जगह मिलने के लिए आए तो मिठाई का इतना बड़ा डब्बा हमारे पास लाए हम ने सोचा कि भई ख़ैर तो है, कहने लगे क्या मतलब? हम ने कहा कोई और अक़ीक़ा तो तैयार नहीं हो गया? कहने लगा हज़रत नहीं बात और है, हज़रत बस आप ने जो कल वह दुआ करवाई थी महफ़िल में वह अल्लाह ने ऐसी पूरी की कि मेरे तसव्वुर में भी नहीं हम ने कहा भई वह कैसे? कहने लगा हज़रत अजीब बात यह थी कि जिस घर गए वह इन्जीनियर का घर था बड़ा नेक मुत्तक़ी परहेज़गार ख़ानदानी बन्दा, सारी औलाद उसकी पढ़ी हुई थी, थोड़े दिन पहले वह ऐक्सीडेन्ट में शहीद हो गया हम उसकी बेटी के बारे में रिश्ता ले कर गए अपने बेटे के लिए कि बेवा औरत है हो सकता है वह जल्दी बेटी का फ़र्ज़ अदा कर दे कहने लगा जी मैं और मेरी बीवी हम वहां गए और मेरी बीवी उसके पास चार पांच मिनट बैठी तो उसने मुझे कहा जी आलाहदा कमरे में मिलना चाहती हूं, चुनांचे अलाहदा कमरे में जब मैं गया तो बीवी वहां मौजूद थी कहने लगी अल्लाह ने फ़ज़्ल कर दिया मैं ने कहा क्या हुआ कहने लगी कि इस बेवा की नौ बेटियां हैं हर बेटी हमारे बेटे से दो साल छोटी है इतनी तबीयतें मिल गंई हैं उसने हमारे नौ बेटों के लिए नौ रिश्ता दे दिए, देखिए एक रात में अल्लाह ने उसके नौ बेटों के रिश्ते तय करवा दिए ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ देखो जो दीन को अपनाते हैं मालिक

उनके काम ऐसे समेटा करते हैं, वरना नौ बच्चों की शादी करते करते बाल सफ़ेद हो जाते हैं एक ही जगह पर अल्हम्दुलिल्लाह नौ बेटों का रिश्ता तय हो गया।

एक नौजवान का क़िस्सा

एक नौजवान था लाहौर का जर्मनी में पढ़ा लिखा था बहुत खूबसूरत यह वाक़िया उसने खुद मुझे सुनाया जर्मनी में यानी जिस बन्दे के साथ पेश आया उस बन्दे ने अपना वाक़िया खुद सुनाया कि जी अपनी बात सुनाता हूं दूसरों को तो सुनाते शर्म आती है आप को बता देता हूं उस ने सुनाया बिल्कुल सच्चा वाक़िया है, कहने लगा हज़रत जिस दफ़्तर में मैं काम करता था वहां पर एक जर्मन लड़की थी शक्ल व सूरत की कोई ज़्यादा ही खूबसूरत थी हमारे आफ़िस का हर नौजवान जर्मन था या कोई और वह यह चाहता था कि उस लड़की से मेरा तअल्लुक़ हो जाए और वह लड़की बड़े अच्छे रैंक में थी और जिस्म में वह ऐसी थी कि हज़रत यूं सझ लें कि अल्लाह ने हूर दुनिया में भेज दी थी, अब जर्मन लड़के भी उसके चक्कर में और मैं भी उसके चक्कर में कहने लगा कि बस दोपहर कभी खाने के वक़्फ़ा में एक कमरे में टेबल लगा हुआ था तो कभी हम खा रहे होते तो वह भी अपना खाना खा कर चली जाती वह बड़ी समझदार थी किसी को जुरअत भी नहीं होती थी उससे ज़्यादा बात करने की।

एक दफ़ा रमज़ानुल मुबारक आया तो मैं ने रोज़े रखे उसने मुझ से पूछा कि बताओ दो तीन दिन से तुम्हें वहां दोपहर खाने पर नहीं देख रही हूं, तो मैं ने कहा कि हमारा रमज़ान का महीना है मैं रोज़ा रखा होता हूं उसने कहा अच्छा रोज़े रखते हो? मैं ने कहा हां तो मैं ने कुछ उसको रोज़े के बारे में ज़रा बता दिया उस ने शौक़ से मेरी बात सुनी मेरे दिल में ख़्याल आया कि भई अगर यह इतनी सी बात शौक़ से सुनती है तो और बात भी शौक़ से सुनेगी चलो क़रीब होने का यही

ज़रिया सही अब मैं ने इस्लाम पर एक किताब भी ली और उसको अगले दिन जाकर दी, कि भई तुम ने इस्लाम के बारे में पढ़ना हो तो यह पढ़ो कहता है कि एक हफ़ता दस दिन के बाद वह किताब पढ़ कर आई और मुझ से कुछ सवाल पूछने लगी जो मुझे कुछ याद थे मैं ने बता दिए तो मैंने देखा कि वह ज़रा और इस्लाम में दिलचस्पी ले रही है मैं ने भी उसको बताना शुरू किया, अब जब कभी दोपहर खाने का वक़्त होता कुदरती वह भी उसी वक़्त खाने के लिए आ जाती और इस्लाम के बारे में मुझ से गुफ़तगू करती अब जर्मन लड़कों को भी मुझ से जलन होने लगी कि भई यह जो है इसको बैठ कर बातें सुनाता है, कहने लगा कि कुछ अरसा के बाद एक दिन वह आई और कहने लगी कि हमारे घर के क़रीब एक मुसलमानों का इस्लामिक सेन्टर है तो आज मैं वहां गई थी और मैं ने कलमा पढ़ लिया है और मैं मुसलमान हो गई यह सुन कर मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि न पुछिए, इस्लाम लाने की ख़ुशी तो अपनी जगह थी ही मज़ीद यह ख़ुशी कि अब मेरा काम पक्का है, साफ़ ज़ाहिर है कि यह मुसलमान से शादी करेगी तो मेरा काम पक्का, कहने लगा मैंने उससे बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया अब उसने हिजाब लेना शुरू कर दिया वह बड़ी बा हिम्मत थी किसी से डरती नहीं थी, फिर उसने नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी, फिर खुले आम इस्लाम वाले काम करती, बातें करती, और अगर कोई जर्मन उससे बात करने लगता तो उसको ऐसा झड़कती कि उसको पसीना छूट जाता, अब वह मेरे और क़रीब होती गई हत्ता कि रोज़ हम आपस में बैठ कर इस्लाम से मुतअल्लेक़ा कोई न कोई टापिक छेड़ कर बातें करने लग जाते, कहने लगा इस दौरान मेरा दिल तो चाहा कि मैं उनसे रिश्ता की बात करूं मगर वह इतनी समझदार और शख़्सियत की मालिक थी कि उससे बात करते हुए भी बन्दा घबराता था, तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि भई मुनासिब वक़्त होगा तो ही मैं उसके सामने बात करूंगा।

एक रोज़ वह कहने लगी कि देखो मिस्टर इस दफ़ा मैं निज़ाम बना रहीं हूं कि मैं अपनी छुटिट्यां तुर्की में गुज़ारूंगी वह इस्लामिक कन्टरी है, मैं वहां जाऊंगी, और मुख़्तलिफ़ जगहों को देखूंगी और मुझे वहां से और इस्लामी तालीमात मिलेंगी, नौजवान कहने लगा मेरे दिल में ख़्याल आया आप ऐसा करो कि बजाए तुर्की जाने के लाहौर क्यों नहीं चली जातीं? और फिर मैंने बताया वहां तो यह भी है और वह भी है असल मक़सद मेरा क्या था कि यह वहां जाएगी तो मैं अपनी वालिदा से बहनों से कहूंगा वह सारी एम ए लड़कियां थीं जो यूनीवर्सीटी में पढ़ी हुई थीं तो वह उसको मेरे साथ शादी के लिए तैयार कर देंगी, उसने कहा अच्छा मैं सोचूंगी कहने लगा उसने सोच कर कुछ चन्द दिन बाद कहा हां ठीक है, मैं ने भी लाहौर जाने का प्रोग्राम बना लिया जिस दिन उसने प्रोग्राम बनाया था छुटिट्यां ले कर मैं ने भी उसी दिन जाने का प्रोग्राम बना लिया कहने लगा उसने इन्टर नेट के ज़रिया होटल की बुकिंग भी करवा ली, जब मुझे उसने बताया कि मैं ने सब काम करवा लिए हैं मैं ने उस से कहा कि वहां हमारा घर है तुम होटल में क्यों ठहरोगी? कहने लगी नहीं देखो में एयर पोर्ट से सीधी होटल जाऊंगी होटल में जिस को तुम अपनी मां बहनों को भेज देना मैं उनके साथ बात चीत करूंगी, अगर मुनासिब समझा तो मैं उनके साथ तुम्हारे घर आ जाऊंगी वरना मैं होटल में रहूंगी, मैं ने कहा ठीक है लाहौर पहुंच तो सहीह, कहने लगा हज़रत! अब मैं दुआयें मांग रहा हूं या अल्लाह यह उससे पीछे न हटे हर नमाज़ के बाद या अल्लाह उसका प्रोग्राम पक्का हो जाए उसका प्रोग्राम पक्का हो जाए मुझे आख़री लमहा तक यक़ीन नहीं था कि यह जाएगी या नहीं जाएगी, कहने लगा हैरान तो मैं हुआ कि जब मैं ने चेकिंग करवाया और आगे गेट पर पहुंचा तो वह भी अपना बिरीफ़ केस लेकर वहीं गेट पर पहुंच गई कहने लगी मैंने भी चेकिंग करवानी है, मैं ने कहा ठीक है, इधर घर फून करके इत्तेला दी हुई थी अपनी वालिदा को भी बताया था बहनों को भी और मेरी बहनों

ने कहा था कि तुम फ़िक्र न करो हम बात कर लेंगे एयर पोर्ट से उतर कर वह तो सीधी होटल चली गई मैं ने डिस्टर्ब करना मुनासिब न समझा अगले दिन मैं ने अपनी बहनों को भेजा मेरी तीन चार बहनें थीं सब ने एम ऐ किया हुआ था, वह सब गईं और उससे मिलीं और उसको लेकर अपने घर आ गईं, अब यह नौजवान बड़े अमीर घर का नौजवान था उनका कार का बिज़नेस था कई शो रूम थे करोड़ पती ख़ानदान का यह बेटा था उनका घर भी महल नुमा था उसको देख कर भी बन्दा हैरान हो जाए ऐसा जैसा बिल्कुल यूरोप का बना हुआ कोई घर होता है, कहने लगा वह घर आई वहां बड़ी सहूलतें थीं इतनी तो होटल में भी नहीं थीं ख़ैर मेरी वालिदा ने भी उसको कहा कि बेटी तुम यहीं ठहर जाओ हम तुम्हें कम्पनी देंगे, वहां तुम अकेली हो, उस ने वहां एक दिन गुज़ारा, फिर कहने लगी ठीक है मैं यहीं रह जाती हूं, बहनों ने कहा कि हम आपको अजायब घर दिखाएंगे, फ़लां बादशाह की मस्जिद दिखायेंगे, फलां दिखायेंगे, वह कहने लगी ठीक है दो हफ़्ता उस ने रहना था अब दो हफ़्ता में मेरी बहनों ने उस पर काम किया और उसको तैयार करने की कोशिश की, तो जब तीसरे चौथे दिन काफ़ी बे तकल्लुफ़ी सी हो गई हंसी मज़ाक़ की बातें होने लगीं तो फिर मेरी बहनों ने कहा यह हमारा भाई देखो कितना खूबसूरत नौजवान है, तो अगर तुम राज़ी हो तो हम तुम्हारी शादी करके तुम्हें वापस भेजें कहने लगा उस ने साफ कह दिया कि मैं ने उस से शादी नहीं करनी धोकर जवाब दे दिया, कि जी मैं ने उस से शादी नहीं करनी इतना खरा जवाब कि बहनें हैरान, ख़ैर मेरा एक छोटा भाई था वह मुझ से ज़्यादा खूबसूरत था और पढ़ा लिखा था तो मेरी बहनों ने उसकी बात चलानी शुरू कर दी कि चलो भई उस से नहीं करनी तो इस से शादी कर लो कहने लगी कि तीन चार दिन और गुज़र गए और उस ने उसके बारे में भी धोकर जवाब दे दिया, मेरी बहनों ने बताया कि देख हमारे पास रिज़्क़ है इज़्ज़त है यह दोनों भाई हमारे इतने खूबसूरत

नौजवान हैं पढ़े लिखे हैं कितना अच्छा रिश्ता है तुम्हारे लिए जोड़ है उस ने कहा नहीं, हम हैरान वह इस्लाम के ऊपर किताबें पढ़े कभी देखे कभी कुछ करे कहने लगा हज़रत किया बंताऊं मेरे एक चचा हैं ग़रीब से वह तबलीग़ी जमाअत में आने जाने वाले बन्दे हैं, कहने लगा उन का एक बेटा है उन्होंने उस को जामिया अशरफ़िया में आलिम बना दिया कभी खाने को मिलता है कभी नहीं मिलता वह चचा का बेटा एक दिन मेरी अम्मी को कोई बात करने के लिए आया अब उस लड़की ने उस को देखा तो उस ने मेरी अम्मी से पूछा कि यह कौन आ गया है? उस ने कहा यह मेरे देवर का बेटा है और यहा आलिम है, मेरी अम्मी उस को बता बैठीं कि यह आलिम है तो वह कहने लगी कि मैं ने एक दो मसले पूछने हैं, मैं इस से पूछ लूं? अम्मी ने कहा पूछ लो, चुनांचे अम्मी ने फ़ोन भी लाकर दे दिया, उस ने उस से दो चार मसले जो पूछने थे पूछे उन्होंने मसले बता दिये फिर उस ने कहा मेरी यह किताब है वह मौलवी साहब किताब देने आ गए और उसकी जब उस से बिल मोशाफ़ा मुलाक़ात हुई तो उस लड़की ने ख़ुद उस से कहा कि मैं तुम से निकाह करना चाहती हूं कहने लगा हज़रत मेहनत हम ने की तैयार हम ने किया वह जामिया अशरफिया का पढ़ा हुआ, हमारी बहनें कहतीं थीं उस को तो कोई रिश्ता नहीं देगा, वह जरमन लड़की को पसन्द आ गया, ख़ुद कहने लगी कि मैं तुम से शादी करना चाहती हूं उस ने कहा मैं अब्बु से पूछूंगा चुनांचे उस ने वालिदैन से पूछा उन्होंने कहा बेटा अगर वह चाहती है तो कर लो चुनांचे उस लड़के से उस ने निकाह करवा कर अगले दिन जरमन एम्बेसी ले गई उस का पक्का वीज़ा लगाया कहने लगी वह जामिया अशरफ़िया का पढ़ा हुआ चटाइयों पर बैठने वाला अब वह यहां आकर उस का ख़ाविन्द बन कर रह रहा है ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ नेकूकारों का वह सरपरस्त है वह काम संवार देता है, अब देखो कि उन के ख़ानदान वालों ने कोशिश करके उन को जरमनी भेजा और उस के वालिद ने उसको

दीन पढ़ाया उसने जमाअत से दीन सीखा और अपने बेटे को दीन पर लगाया और लोग उसको ताना देते थे कि तेरे बेटे को तो कोई भी बेटी का रिश्ता नहीं देगा, अल्लाह तआला ने कहां से भेजी और उस ने अपनी ज़बान से उस से निकाह किया और उसको लेकर गई अल्लाह ने दीन तो दिया ही था उसको दुनिया भी अता कर दी वह कहने लगे कि अल्लाह ने उसकी दुआयें ज़्यादा ही क़बूल कर लीं औरों को तो मर कर हूरें मिलेंगी उसको तो दुनिया ही में मिल गई है, तो वाक़ई इन्सान दिल से बेदार हो तो रब्बे करीम उसके मामलात को खुद समेट लेते हैं।

(13).......फ़ादया

एक नेकी का फ़ायदा यह कि अल्लाह तआला उनको इमामत अता फ़रमाता है इमामत का मन्सब अता कर देता है ﴿وجعلنا للمتقين اماما﴾ फिर अल्लाह तआला उन को इमामत देता है और यह इमामत जो है बड़ी करामत है यह अल्लाह तआला की तरफ से एक इज़्ज़त है, एक इकराम है जो परवरदिगार अपने बन्दों को अता फरमा देते है आप ने देखा होगा किताबों में लिखा है कि बिलाल रज़ि. आते थे तो उमर रज़ि. उन को कहते थे सैयदना बिलाल आ गए हालांकि गुलाम थे, बिके हुए थे, मगर सैयदना उमर रज़ि. जो वक़्त के ख़लीफा थे वह भी उनको सैयदना बिलाल कह कर पुकारते थे, चुनांचे एक उसी तरह गुलाम थे वह फ़रमाया करते थे कि मैं तीन सौ दिरहम में बिका था फिर जब अज़ाद हो गया तो मैं ने दीन पढ़ना शुरू कर दिया हत्ता कि मैं आलिम बना, फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ से दरसे हदीस की ख़िदमत क़बूल फरमाई हत्ता कि इतना अल्लाह ने मुझे इज़्ज़त का मक़ाम दिया कि जब मैं दरस में होता था वक़्त का ख़लीफ़ा मेरे दरवाज़े पर आकर मेरी मुलाक़ात के लिए एक एक घंटा खड़ा रहता था, वह कहते थे कि औक़ात मेरी यह कि मैं तीन सौ दिरहम में **बिका और दीन**

ने मुझे वह इज़्ज़तें दीं कि वक़्त का हुकमरान मेरे दरवाज़े पर एक एक घंटा मेरी मुलाक़ात के लिए इन्तेज़ार करता था, ﴿اعزنا الله تعالى بهذا الدين﴾ अल्लाह तआला ने उस दीन की वजह से हमें इज़्ज़तें अता फ़रमाई।

(14)......फ़ायदा

बुरी मौत से हिफाज़त

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बुरी मौत से हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं चुनांचे कुरआन मजीद की आयत है ﴿يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحيوة الدنيا﴾ तो इस आयत के तहत मोफ़स्सेरीन ने लिखा कि अल्लाह रब्बुल इज़्जत उनको अच्छी मौत अता फ़रमा देते हैं कलमा पर मौत अता फ़रमा देते हैं फिर उनकी उम्र में अल्लाह तआला बरकत देते हैं इज़ाफ़ा देते हैं कभी तो इस्केल बढ़ा देते हैं और कभी जो इफ़ेक्टिव उम्र होती है सेहत मन्दी की अल्लाह उसको इस किनारे से उस किनारे तक कर देते हैं उनको ज़िन्दगी में दूसरों का मोहताज नहीं होना पड़ता।

(15)......फ़ायदा

अल्लाह की हिफाज़त

एक फायदा यह है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं ﴿فالله خير حافظا وهوارحم الراحمين﴾ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त खुद उनके महाफ़िज़ बन जाते हैं चुनांचे नबी अ. की हेफ़ाज़त किस ने फ़रमाई ﴿والله يعصمك من الناس﴾ अल्लाह तआला इन्सानों से बचाएगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने देखो अपने महबूब की कैसी हिफ़ाज़त फ़रमाई, आराम फ़रमा रहे थे दरख़्त के नीचे ऐ काफ़िर ने देखा कि अच्छा मौक़ा है तलवार उठा कर वार करने का, अल्लाह के महबूब की आंख खुल गई तो आप ने जब उसकी तरफ

देखा तो उस ने कहा ﴿من يمنعك منى يا محمد﴾ अए मोहम्मद स. आप को अब मुझ से कौन बचाएगा आप ने फ़रमाया अल्लाह बस अल्लाह का लफ़्ज़ कहा उस पर ऐसा रोअब और कपकपी तारी हुई, तलवार उस के हाथ से गिर गई महबूब ने तलवार उठाई फ़रमाने लगे ﴿من يمنعك منى﴾ तू बता तुझे कौन बचाएगा, अब लगा मन्नत करने आप बनू हाशिम की औलाद में से हैं करीम हैं और इतने करीम हैं और माफ़ करने वाले हैं फ़रमाने लगे चल मैं ने तुझे माफ़ कर दिया आगे से कहता है अल्लाह के नबी अब कहां जायेंगे अब जहां आप जायेंगे वहां आप का गुलाम जाएगा, आप ने तो महबूब माफ़ कर दिया मुझे कलमा पढ़ा दीजिए, ताकि मेरा अल्लाह भी मुझे माफ़ फ़रमा दे, यूं अल्लाह ताला हिफ़ाज़त फ़रमा देते हैं।

(16)..... फ़ायदा

माल की चोरी से हिफ़ाज़त

कहते हैं कि राबेआ बसरिया अल्लाह की नेक बन्दी अपने कमरे में सोई हुई थीं एक चोर घुस आया तो चोर को और तो कुछ न मिला एक चादर पड़ी थी उसने कहा चलो यह ही ले जाते हैं उसने चादर उठाई और जब बाहर जाने लगा तो उसे रास्ता नज़र न आया, घबरा कर उस ने चादर फेंक दी चादर फेंकतें ही उसे रास्ता नज़र आने लगा, जब निकलने लगा उसको एक आवाज़ आई अगर एक दोस्त सोया हुआ है तो दूसरा दोस्त तो जागता है यहां तो चिड़िया को पर मारने की इजाज़त नहीं तुम चीज़ चुरा के कैसे ले जा सकते हो अल्लाह यूं हिफाज़त फ़रमा देता है।

वाक़िया ....(2)

चुनांचे दारूल उलूम देवबन्द के एक ख़ादिम थे ख़ाज़ानची नेक बन्दे थे उनका तकिया कलाम था अल्लाह के फ़ज़्ल से हर बात में "अल्लाह के फ़ज़्ल से " बोलते थे, अल्लाह तआला की शान एक दिन वह एक

रात तहज्जुद में उठे तो तहज्जुद पढ़ रहे थे इतने में एक चोर आ गया अब चोर उस कमरे का ताला तोड़ने लगा कि जिस में उनका माल पैसा था मगर वह ज़कात पूरी पूरी अदा करते थे उनके दिल में पक्का यक़ीन था कि मेरा माल ज़ाया नहीं हो सकता, चूंकि हदीस में है जो पूरी ज़कात अदा करता है उसका माल अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आ जाता है वह नमाज़ पढ़ते रहे और यह ताला तोड़ता रहा ताला न खुला जब उन्होंने सुन्नतें भी पढ़ लीं अब जाना था मस्जिद में तो फिर उस वक़्त उस चोर को कहा अरे मियां यह अब तक ताला आप से नहीं टूटा तो अब भला तुझ से क्या टूटेगा चोर ने देखा कि यह जाग गए तो भाग गया, ख़ैर यह मस्जिद आए कहने लगे जो इमाम थे उन्होंने नमाज़ पढ़ाई, यह नमाज़ पढ़ने के बाद उनके क़रीब आए कहने लगे हज़रत आप को एक नई बात सुनाऊं ? आज तो अल्लाह के फ़ज़्ल से अल्लाह का ग़ज़ब हो गया, अब वह कहने लगे कि तुम कह क्या रहे हो? हज़रत मैं ठीक सुना रहा हूं, आज तो अल्लाह के फ़ज़्ल से अल्लाह का ग़ज़ब हो गया, असल में वह कहना चाहते थे कि जी आज तो अल्लाह का ग़ज़ब हो गया मगर तकिया कलाम की वहज से कह रहे थे अल्लाह के फ़ज़्ल से अल्लाह का ग़ज़ब हो गया, फिर उन्होंने यह सारा वाक़िया सुनाया तो देखो जो अल्लाह तआला का हक़ अदा कर देते हैं फिर मालिक उनकी जान व माल का निगरान बन जाता है, अल्लाह की हिफ़ाज़त हो जाती है।

एक बुढ़िया का वाक़िया

वाक़िया ....(3)

एक बुढ़िया थी बात बादशाह के महल के क़रीब उसका घर था एक मौक़ा पर बादशाह ने इरादा किया कि मैं अपने महल में कुछ तामीरी इज़ाफ़ा करूं, उस ने पुलिस वालों को भेजा कि उसको कहो यह कहीं दूसरी जगह चली जाए और यह जगह हमको बेच दे, उसने कहा नहीं

मेरी उम्र तो इसी कुटिया में गुज़री, मेरी तबियत लगी हुई है तो मैं तो नहीं बेचना चाहती, उन्होंने बादशाह को जाकर बता दिया अल्लाह तआला की शान कि बुढ़िया चन्द दिन के लिए किसी बीमार की अयादत के लिए चली गई, उस को कोई दो महीना वहां लग गए अब दो महीना के बाद वह वापस आई, तो उसे अपनी झोंपड़ी नज़र ही नहीं आई हैरान वहां तो उस जगह पर आलीशान महल बना हुआ था, उसने लोगों से पूछा तो उन्होंने कहा तू तो कहीं ताला लगा कर चली गई थी पीछे उन्होंने तेरी सब चीज़ें बराबर कर दीं और अपने महल को दो महीना में एस्टैन्ड करके इतना बड़ा बना दिया, उसका नाम व निशान ही नहीं उसने कहा ऐसा क्या? लोगों ने कहा तू थी जो नहीं, जब लोगों ने उसे कहा कि तू थी जो नहीं, उन्होंने ऐसा किया तो कहते हैं कि उस बुढ़िया ने आसमान की तरफ़ देख कर कहा "ऐ अल्लाह! अगर मैं यहां नहीं थी तू तो यहीं था" यह अलफ़ाज़ कहने थे कहते हैं कि महल की छत जो थी वह ज़मीन के ऊपर आ गई बादशाह को बताया गया कि बुढ़िया आ गई और तुम्हारे महल की छत ज़मीन के ऊपर आ गई उसने आकर माफ़ी मांगी फिर बुढ़िया को अलग कुटिया बना कर दी, तब उसको पता चला कि यह बुढ़िया अल्लाह तआला की कितनी मक़बूल बन्दी थी, तो भई जहां बन्दा नहीं होता वहां पर बन्दे के परवरदिगार तो होते ही हैं इस लिए नेकोकारी में इतने फ़ायदे हैं कि जो हमारी सोच से भी बाला तर हैं रब्बे करीम हम इन दुनिया के फ़ायदों के भी तलबगार और मोहताज हैं और मोहताज का काम मांगना होता है, अल्लाह तआला से मांगते हैं रब्बे करीम हमें दुनिया व आख़िरत की सरफ़राज़ी अता फ़रमा दे।

किस की मग़्फ़िरत नहीं होती

जब तक बन्दा इन्सानों के हुकूक़ अदा नहीं करता तब तक परवरदिगार भी अपना हक़ माफ़ नहीं करता हदीस पाक में आता है शबे

क़दर में अल्लाह तआला सब गुनहगारों की मग़्फ़िरत कर देते हैं चन्द गुनहगारों की नहीं करते, उनमें से एक जो क़तअ रहमी करने वाला होता है, क़तअ रहमी कहते हैं रिश्ते नाते तोड़ने वाला है, कई होते हैं जिनको न बात का सलीक़ा और न मेल मिलाप का तरीक़ा, ज़रा ज़रा सी बात पर इससे भी बोलना बन्द उससे भी बोलना बन्द इसको डरा रहे हैं उसको धमका रहे हैं लोगों के दिल दुखाते हैं परवा ही नहीं होती, यह जो क़तअ रहमी करने वाले हैं उनकी शबे क़दर में भी अल्लाह तआला मग़्फ़िरत नहीं फ़रमाते और दूसरा बन्दा जो किसी के बारे में दिल में नफ़रत रखे, कीना रखे बद गुमानी रखे, जिसके दिल में किसी मुसलमान के बारे में कीना हो अल्लाह तआला उसकी भी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमाते हैं, तो भई अगर आज हम चाहते हैं कि हमारी मग़्फ़िरत हो तो फिर हमें इन दोनों गुनाहों से मख़सूस तौबा करनी पड़ेगी, एक तो हमारे दिल में जितनों के बारे में दिल में नफ़रत है या रनजिश है यह दिल से निकालनी पड़ेगी अल्लाह के लिए हमें माफ़ करना पड़ेगा, जब तक नहीं निकालेंगे मग़्फ़िरत नहीं होगी और दूसरी बात कि जो बन्दों के दिल दुखाए हैं उनसे माफ़ियां भी मांगनी पड़ेंगी, अजीब बात है कि लोग इन्तेज़ार में रहते हैं कि जब मर जायेंगे तो हमारे जनाज़े पर एलान होगा कि जी इस मैयत को माफ़ कर दिया जाए, भाई मैयत को कौन माफ़ करता है कौन माफ़ नहीं करता अब वक़्त है जीते जागते माफ़ी मांगनी आसान है पता नहीं कौन एलान सुनेगा कौन नहीं सुनेगा, कौन माफ़ करे कौन न करे, हुक्म तो हमें है कि हम दुनिया में माफ़ी मांगें लेकिन अजीब बात है कि हमारे अन्दर तकब्बुर इतना होता है कि हम " माफ़ करना " यह लफ़्ज़ " कहना ही गवारा नहीं करते, अंग्रेज़ों ने तो इस अच्छी आदत को इतना बनाया कि ज़रा सी बात पर एक्स कियूज़ मी कह देते हैं, यह जो एक्स कियूज़ मी कहते हैं इसी को तो उर्दू अरबी में माफ़ करना कहते हैं काफ़िरों ने इस अच्छे आदत को अपनाया ज़रा सी कोई बात होती है फ़ौरन ऐक्स

कियोज़ मी करते हैं यह तालीम हम मुसलमानों के लिए थी और आज हम इतना भूल गए हम दोस्तों के दिल भी दुखाते हैं हम उनसे फिर भी माफ़ी नहीं मांगते तो भई इस महफ़िल में आज एक बात बताईये कि क्या हम दूसरों से यह हक़ माफ़ करवाना चाहते हैं या नहीं करवाना चाहते ज़बान से बोलें बोलने में बरकत होती है तो भई अगर हम यह हक़ माफ़ करवाना चाहते हैं तो इसका तरीक़ा यह है कि बैठ कर सोचें हम ने किन का दिल दुखाया है किन के साथ बुरी बात कही किन को रनजिश दी किन का देना है किन का हक़ आता है, उसकी फ़ेहरिस्त बनायें जिन का लेन देन है उनका लेन देन किलयर करें और जिन से फ़कत बातों का मामला है तो भई उनसे अभी कह दीजिए कि भई अल्लाह के लिए माफ़ कर दो, और आप देखेंगे जिस को आप कहेंगे जी गलती हुई अल्लाह के लिए माफ़ कर दें वह अल्लाह का बन्दा ज़रूर कह देगा मैं ने माफ़ कर दिया, आसान है दुनिया में वरना क़ियामत के दिन सब को अपनी नेकियां देनी पड़ेंगी, और नेकियां तो हमारे पास पहले ही नहीं हैं इतनी तो हम क्या देंगे, लिहाज़ा आसान तरीक़ा यह है कि आज की रात एतेकाफ़ वाले बिलखुसूस, और दूसरे अहबाब बिल उमूम इस बात पर बैठ कर सोचें कि हम हुकूकुल इबाद कैसे माफ़ करवा सकते? अब पता है आप ने कितनों की ग़ीबत की होगी, कितनों के बारे में बदगुमानी दिल में होगी कितनों पर आप ने उलटे सीधे इलज़ाम लगा दिए होंगे तो आसान तरीक़ा यह है कि उसको सोच कर और जो जो बन्दा दिल में आए उन सब से यह अल्फ़ाज़ कहें कि भई मुझ से ग़लती हुई अल्लाह के लिए माफ़ कर दें और अगर आप को याद भी नहीं तो जितने आपके दोस्त अहबाब हैं उनसे मिलते हुए कहें भई इन्सान हैं ख़ता हो जाती है अगर आप का कोई मेरे ऊपर हक़ आता है अल्लाह के लिए माफ़ कर दें, या अगर उसने कह दिया कि मैं ने माफ़ कर दिया तो जो आप ने उसकी ग़ीबत की थी, इलज़ाम लगाया था जो भी किया था अल्लाह तआला सब के

गुनाहों को माफ़ कर देगा, तो इस छोटे से फ़िक़रे को कल आप सब के सामने दोहराइये, आज रात जहां माफ़ी मांग सकते हैं हत्ता के ख़ाविन्द बीवी से भी माफ़ी मांगे बीवी ख़ाविन्द से माफ़ी मांगे ऐसा न हो कि मियां बीवी की रंजिशों की वजह से अल्लाह के यहां मग़्फ़िरत रूकी रहे, अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला हमें माफ़ कर दें तो हमें भी तो फिर यह माफ़ी का तरीक़ा कार बनाना पड़ेगा, तो बीवी से कहने में क्या हर्ज है हो सकता है झिड़क दिया हो, बे वजह हम ने उसका दिल दुखा दिया हो, तो इतने अल्फ़ाज़ कहने में क्या हर्ज है? कि जी इन्सान ख़ता का पुतला है रमज़ान के आख़िरी लमहात हैं भई अगर कोई आप का हक़ मुझ पर आता हो मैं ने सुस्ती की हो कोताही बरती हो, तो आप माफ़ कर दें इतने अल्फ़ाज़ कह देने से आप के सर से बोझ उतर जाएगा अल्लाह फिर आप की मग़्फ़िरत आसानी से फ़रमा देंगे, और अगर आप के अपने दिल में है तो आप अल्लाह के लिए सब को माफ़ कर दीजिए ﴿ ارحمو امن فی الارض یرحمکم من فی السماء﴾ ज़मीन वालों पर तुम रहम करोगे आसमान वाला तुम्हारे ऊपर रहम करेगा।

और एक बात यह भी ज़ेहन में रखिए कि दीन के काम करने वाले जो लोग हैं वह कई मर्तबा आपस में भी उलझ पड़ते हैं बेवक़ूफ़ी की वजह से कम समझी की वजह से अल्लाह तआला ने इइ दीन के शोबे बना दिए हैं ﴿ يتلوا عليهم آياته و يزكيهم و يعلمهم الكتاب و الحكمة﴾ चार शोबे, अब इसकी मिसाल ऐसी है जैसे जिस्म में आंख भी है कान भी हैं ज़बान भी है और दिमाग़ भी, हर एक का अपना अपना काम है सब मिल कर जिस्म बन गए इसी तरह दीने इस्लाम का मामला कि इसके मूख़तलिफ़ शोबाजात हैं एक दावत व तबलीग़ का शोबा है, आज के दौर में अलहम्दोलिल्लाह इसी से ज़्यादा बल्कि सौ से ज़्यादा मुल्कों में इस वक़्त हमारे यह भाई जा रहे हैं और अल्लाह के दीन का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं अल्लाह तआला उनको हमारी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए कोई ऐसा दिन नहीं इस आजिज़ का कि जब

इन भाईयों के लिए मैं तहज्जुद में दुआ ना करता हूं इस लिए कि महबूब का काम है हमारा काम है और कुछ हज़रात मदारिस में काम रहे हैं उनके लिए भी दुआयें करते हैं कोई तफ़सीर पढ़ा रहा है कोई हदीस पढ़ा रहा है कोई फ़िक़ह पढ़ा रहा है कोई ज़िन्दगी के मसायल के जवाबात समझा रहा है वह भी एक शोबा है काम करने का, कहीं पर ख़ानक़ाहों में अल्लाह अल्लाह की ज़रबें लगवा रहे हैं ताकि दिलों का मैल दूर हो और दिल में अल्लाह की मोहब्बत भर जाए और कहीं पर इक़ामते दीन के लिए कोशिशें हो रही हैं तो यह मुख़तलिफ़ शोबाजात हैं हक़ीक़त में यह सब के सब दीन का काम करने वाले लोग हैं आपस में एक दूसरे के साथ मोहब्बतें होनी चाहियें नेक तमन्नायें होनी चाहियें जहां ज़रूरत हो एक दूसरे का मोआविन बनना चाहिए इसको कहते हैं ﴿واعتصموا بحبل الله جميعا﴾ तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो भई हम सब एक हैं.

जब ईसाइयों पर मुसीबत आई थी तो कहते हैं कि बादशाह ने उन पर हमला किया था और उनके उलमा आपस में इस पर बहस कर रहे थे कि ईसा عليه السلام जब उठाए गए थे तो उन्होंने गन्दुम की रोटी खाई थी या जौ की रोटी खाई थी यह फ़ैसला होने के लिए मोनाज़रा हो रहा था कि गन्दुम की रोटी खाई थी या जौ की रोटी खाई थी यह मुनाज़रे कर रहे हैं और दुश्मन उनको दुनिया से ही ख़त्म कर रहा है।

तो शैतान ऐसा ही करता है आपस में उलझाने की कोशिश करता है और यह उलझाव बेवकूफ़ी की वजह से कम इल्मी की वजह से या अपनी तबियत की बे बाकी की वजह से होता है जो भी समझ दार होगा ना वह हमेशा एक दूसरे का एहतेराम करेगा जिस ने अमल ही कुछ नहीं करना वह इस क़िस्म के काम ज़्यादा कर रहा होता है तो भई जोड़ पैदा कीजिए तोड़ से बचिए नबी ﷺ ने फ़रमाया ﴿صل من قطعك﴾ जो तुझ से तोड़े तू उससे जोड़ यानी कोई तोड़ना भी चाहे तो

हम उससे जोड़ने की कोशिश करें यह है नबी ﷺ की तालीमात कोई तोड़ना भी चाहे तो फिर हम उससे जोड़ने की कोशिश करें और यहां तो ज़बान कैंची होती है चल रही होती है वह ज़बान नहीं चल रही होती वह कैंची चल रही होती है उससे भी तोड़ इससे भी तोड़, आज अभी वक़्त है मोहलत है, रमज़ानुल मोबारक के इन बा–बरकत लमहात में हम अपने रब से माफ़ी मांग लें और अपनी इन कोताहियों को बख़्शवा लें आपस में उलफ़तें और मोहब्बतें पैदा कर लें जितना एक दूसरे के साथ हम ज़्यादा मिलेंगे ज़्यादा मोहब्बतें उलफ़तें क़ायम करेंगे उतना अल्लाह की रहमतें होंगी इस लिए तो कहा गया कि इत्तेफ़ाक़ में बरकत है तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से रहमतें होंगी आप देखना हम इसी जगह बैठ कर अभी दुआ करेंगे या कल दुआ करेंगे अगर इस दौरान हमने खुद भी माफ़ कर दिया दूसरों से भी माफ़ी मांग ली इन्शाअल्लाह आख़री महफ़िल जो होनी है उससे पहले पहले परवरदिगार हमारे बोझ को भी आसान फ़रमा देंगे, तो यह एक ज़िम्मादारी है और मेरे दोस्तो हम वाक़ई इस बात के मुहताज हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारी बख़्शिश फ़रमा दे अगर न हुई नबी ﷺ की बद दुआयें बड़ी डरने वाली बात है बड़ी रोने वाली बात है अल्लाहु अकबर कबीरा और यह सबक़ याद कर लेना कि हम ने तोड़ पैदा नहीं करना हम ने जोड़ पैदा करना है अल्लाह तआला हम सब को नेक बनाए और एक बनाए एक बन कर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

و آخر دعوانا ان الحمدلله ربّ العلمین

﴿وقال ربكم ادعونى استجب لكم﴾

मुतालबा-ए-दुआ

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल फ़क़ार अहमद दामत बरकातहुम (नक़्शबन्दी मुजद्दिदी)

दर हालत ऐतकाफ़ मस्जिद नूर लोसाका ज़ामबिया

﴿बाद नमाज़े इशा 2003 ई0﴾

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

ज़बान से कुरआन मजीद की तिलावत तो कर रहे होते हैं मगर उसके हुक्मों की ज़िन्दगी में कोई अहमियत नहीं होती इन वजूहात से फिर बन्दे की मांगी हुई दुआयें ऐसे क़बूल नहीं होती जैसे वह मांगता है आख़िरत में तो हो जाएंगे लेकिन मिन व अन क़बूल नहीं होतीं तो हमें चाहिये कि क़ौल और फ़ेअल के तज़ाद को दूर करें दो रंगी को दूर करके यकरंगी की ज़िन्दगी को इख़्तियार करें

दोरंगी छोड़ दे एक रंग हो जा
सरासर मोम हो जा या फिर संग हा जा

﴾हज़रत पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक़्शबन्दी मद्दा ज़िल्लहु﴿

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد .....!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم۔

﴿و قال ربكم ادعو انى استجب لكم﴾

و قال الله تعالى فى مقام آخر

﴿ام من يجيب المضطر اذا دعاه﴾

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَ سَلِّمْ

दुआ का हुक्म

و قال ربكم और फ़रमाया तुम्हारे परवरदिगार ने ﴿ادعوانى استجب لكم﴾ तुम दआ करो मैं कबूल करूंगा, सच्चे परवरदिगार का सच्ची किताब में सच्चा फ़रमान है, कि तुम दुआयें करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से फ़ैसला है, तय शुदा बात है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे की दुआओं को क़बूल करता है मगर कबूल करने की तीन मुख़तलिफ़ शकलें हैं।

﴿1﴾ ....अगर वह दुआ उसके हक़ में बेहतर हो दीन के मामले में दुनिया के मामला में नेकी के बारे में तो अल्लाह तआला उसको वैसा ही क़बूल करके पूरा कर देते हैं इसको हम कहते हैं जी दुआ क़बूल हो गई जो मांगा वह मिल गया।

﴿2﴾........बाज़ औक़ात इन्सान दुआ मांगता है उस पर कोई परेशानी आने वाली होती है उसको कोई मुसीबत आने वाली होती है उसको कोई बीमारी पहुंचने वाली होती है, कोई सदमा पहुंचने वाला होता है,

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त करीम हैं उसकी दुआ को अल्लाह तआला ज़रिया बना कर उस आने वाली मुसीबत परेशानी बीमारी से उसको महफ़ूज़ फ़रमा देते हैं, यह भी दुआ क़बूल होने की एक अलामत है हम इसको शायद क़बूल होना समझते ही नहीं हैं, हमें क्या पता कि हमने क्या दुआ मांगी और उसके बदले में अल्लाह तआला ने हमें किस आने वाली मुसीबत से नजात अता फ़रमाई।

﴾3﴿ अगर यह भी न हो तो अल्लाह तआला इस दुआ को अपने पास ख़ज़ाना बना लेते हैं हदीस पाक में आता है कि जब यह बन्दा क़ियामत के दिन जाएगा अल्लाह तआला फ़रमायेंगे मेरे बन्दे तूने मुझ से दुआयें मांगी थीं और मेरा वादा था कि मैं कबूल करूंगा, तो मैं ने दुनिया में तो इन दुआओं को पूरा न किया कि तुम्हारे लिए बेहतर नहीं था यह अब मेरे पास तुम्हारा ख़ज़ाना है मैं तुम्हें इस का बदला देता हूं हदीस पाक में आता है अल्लाह तआला उसकी उन दुआओं पर इतना बदला देंगे कि वह बन्दा यह कहेगा काश दुनिया में मेरी कोई दुआ पूरी न होती हर दुआ का अजर और बदला मुझे यहां आख़रत में मिल जाता तो तीन में से किसी न किसी एक सूरत में दुआ ज़रूर क़बूल हो जाती है।

बेसब्री का मुज़ाहरा न करे

हदीस पाक में आता है कि जब बन्दा दुआ मांगे और फिर कह दे हमारी तो दुआ क़बूल ही नहीं होती हमारी तो सुनता ही नहीं यह शिकवे की बात है यह अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी है, यह बेसब्री का मोज़ाहिरा है अगर बन्दा यह अल्फ़ाज़ ज़बान से कह दे माज़ल्लाह हमारी तो सुनता नहीं हमारी क़बूल नहीं होती हमारी दुआयें पूरी नहीं होतीं, तो अल्लाह तआला को इतना जलाल आता है अल्लाह तआला उसकी दुआ को फटे कपड़े की तरह उसके मुंह पर दे मारते हैं अपने दर से धक्का दे देते हैं, तो मोमिन को तो यह सोचना ही नहीं

चाहिए कि दुआ क़बूल नहीं होती जब अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿ادعوانی استجب لکم﴾ तुम दुआ करो मैं क़बूल करूंगा अब शक कैसा? बहुत से लाग यह समझते हैं कि हम तो गुनहगार हैं हमारी दुआ कहां क़बूल होगी ऐसा नहीं है दुआ बुरे और नेक सब की क़बूल होती है हैरत की बात तो यह है कि शैतान की क़बूल हो गई, उस ने भी तो कहा था ﴿رب انظرنی الی یوم یبعثون﴾ अल्लाह! क़ियामत तक के लिए मोहलत दे दीजिए परवरदिगार ने फ़रमाया ﴿انك من المنظرین﴾ तो शैतान की अगर क़बूल हो सकती है तो क्या मुसलमान की क़बूल नहीं हो सकती? इस लिए कुछ लोग यूं कहते हैं जी हम तो गुनहगार हैं हमारी दुआ क़बूल नहीं, भई ऐसी बात हरगिज़ नहीं कहनी चाहिए, दुआ यक़ीनन क़बूल होती है हां अल्लाह तआला पाबन्द नहीं हैं कि जो हम चाहते हैं वह पूरा करें वह क़ादिरे मुतलक़ हैं वह बन्दों के बारे में बेहतर फ़ैसला करने वाला है हो सकता है हम ऐसी दुआ मांग रहे हों कि जो हमारे लिए परेशानी का सबब बनती हो मसलन एक बन्दा खुला पैसा मांगता है और अल्लाह तआला को पता है अगर मिल गया तो यह शख़्सियत ऐसी है कि यह ईमान ही से ख़ाली हो जाएगा, अल्लाह तआला उसको वह नहीं देते तो न देना भी उसकी रहमत है देना भी उसकी रहमत है, जैसे मां बच्चे को देती है तो भी प्यार है उसका, और अंगारा उठाने से मना करती है यह भी प्यार है उसका, दस्तूर यह है बन्दा मांगेगा अल्लाह तआला अता करेगा इसलिए जब भी दुआ मांगें हुस्ने ज़न के साथ मांगे।

दुआ क़बूल न होने की वजूहात

हां कुछ आमाल हैं जिनसे दुआओं की क़बूलियत का अन्दाज़ा हो जाता है तवज्जोह से सुनियेगा हमारे मशाइख़ ने लिखा कि दुआयें क़बूल होने की ज़ो अहम वजूहात हैं उन में से:

......पहली यह है कि इन्सान ज़बान से तो कहता है कि दुनिया की

कोई वक़अत नहीं अमलन देखें तो सारा दिन उसी को समेटने में लगा होता है क़ौल और फ़ेअल का फ़र्क़ ज़बान से कहे जी मच्छर के पर के बराबर भी हैसियत नहीं लेकिन इधर अमली तौर पर देखो तो नमाज़ की भी फ़ुरसत नहीं, लगा हुआ है उसी में दिन रात तो एक तो यह वजह होती है।

......दूसरी वजह यह कि ज़बान से तो कहता है कि दुनिया फ़ानी है मगर उसके रहने की तदबीरें पलानिंग ऐसी होती हैं जैसे उसने कभी मरना ही नहीं लम्बी पलानिंग होती है रहने का तौर तरीक़ा जैसे उसने जाना ही न हो दुनिया से, ज़बान से यह कहता है कि आख़रत दुनिया से बेहतर है अमल देखो तो दुनिया को आख़रत पर मुक़द्दम किए हुए है, ज़बान से यह कहता है मैं अल्लाह का बन्दा हूं मैं उसका दोस्त हूं, लेकिन अगर उसकी ज़िन्दगी को देखो तो अल्लाह के दुश्मनों की बातें मान रहा होता है, यानी शैतान की मान रहा होता है, या कुफ़्फ़ार की नक्क़ाली कर रहा होता है, उनकी पैरवी कर रहा होता है हालांकि परवरदिगार ने फ़रमाया ﴿ان الشيطان لكم عدو فاتخذوه عدوا﴾ शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम भी उसे अपना दुश्मन समझ कर रहो, तो उसको दुश्मन समझने की बजाए उसके मशवरों पर अमल कर रहे होते हैं उसकी बात मानते हैं।

......ज़बान से कहते हैं कि हम नबी ﷺ के आशिक़ हैं अमल को देखो तो सुन्नत से महरूम होते हैं।

वही समझा जाएगा शैदाए जमाले मुस्तफ़ा
जिस का हाल हाले मुस्तफ़ा हो क़ाल क़ाले मुस्तफ़ा

यह कैसे हो सकता है कि बन्दा कहे कि जी मुझे मुहब्बत नबी ﷺ से है और तरीक़े फ़िरंगियों के पसन्द हैं

ई ख़्याल अस्त व महालस्त व जुनूं

"انَّ الْمُحِبَّ لِمَا يُحِبُّ مُطِيعٌ" मुहिब्ब जिस से मोहब्बत करता है उसका मुतीअ उस का फ़रमाबरदार होता है।

......ज़बान से कुरआन मजीद की तिलावत तो कर रहे होते हैं मगर उसके हुक्मों की ज़िन्दगी में कोई अहमियत नहीं होती इन वजूहात से फिर बन्दे की मांगी हुई दुआयें ऐसे क़बूल नहीं होतीं जैसे वह मांगता है आख़रत में तो हो जायेंगी लेकिन मिन व अन क़बूल नहीं होतीं, तो हमें चाहिए कि क़ौल और फ़ेअल के तज़ाद को दूर करें दो रंगी को दूर कर के यक रंगी की ज़िन्दगी को इख़तियार करें।

दो रंगी छोड़ दे यक रंग हो जा
सरासर मोम होजा या संग हो जा

आमाल कैसे हों?

﴿صبغة الله و من احسن من الله صبغة﴾

अल्लाह तआला के रंग में हम रंग जायें इसलिए मेरे दोस्तो जब लोग आमाल की कसरत में मशगूल हों तो आप को चाहिए कि आमाल की कैफ़ियत हासिल करने में भी मशगूल हो जायें परवरदिगार मिक़दार नही देखते ﴿ايكم احسن عملا﴾ तुम में से कौन बेहतरीन अमल करता है यह देखतें हैं, यह नहीं कहा ايكم اكثر عملا तो इबादत थोड़ी करें मगर जैसे हक़ बनता है उस कैफ़ियत के साथ इबादत करें।

......जब लोग ज़ाहिर को संवारने में मशगूल हों तो ऐ दोस्त! तू अपने बातिन को संवारने में मशगूल हो जा।

......जब लोग दुनिया संवारने में मशगूल हों तू अपनी आख़रत को संवारने में मशगूल हो जा।

......जब लोग मख़लूक़ की मोहब्बत में मशगूल हों तू अपने परवरदिगार की मोहब्बत में मशगूल हो जा।

एक बात ज़ेहन में रखिएगा जो दुनिया में अल्लाह तआला का दोस्त बनेगा, वह आख़रत में कभी भी दुशमनों की क़तार में खड़ा नहीं किया जाएगा, यह कैसे हो सकता है कि दुनिया में वह अल्लाह का दोस्त बना और अल्लाह तआला उस दोस्त को आख़रत में दुशमनों की क़तार

में खड़ा कर दें, यह नहीं हो सकता।

एक क़ीमती नुस्ख़ा

हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह. ने एक अजीब बात लिखी है वह फ़रमाते हैं कि जो बन्दा दिल की गहराईयों से दुआ मांगेगा, ऐ अल्लाह मुझे नेक बना दे मैं हाज़िर हूं मुझे पेशानी के बालों से पकड़ कर नेकी के रास्ते पर चला दे जो यह दुआयें मांगेगा वह फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उससे पूछेंगे ऐ मेरे बन्दे तू नेक क्यों न बना तो वह बन्दा आगे से जवाब देगा ऐ अल्लाह मैं दुआ तो मांगता था, दिल तो आपकी दो उंगलियों के दरमियान थे, अल्लाह मुझे नेक बना दे, अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमायेंगे कि देखो इसके नामए आमाल में यह दुआ है, वह कहेंगे कि मौजूद है, यह आप से दरख़्वास्त करता था अल्लाह मुझे नेक बना दे अल्लाह तआला फ़रमायेंगे चूंकि तू दिल से चाहता था कि नेक बन जाए बाक़ी मामला हमारे इख़तियार में था चलो हम ने नेकों में तुम्हारा हश्र फ़रमा दिया तो दिल की गहराईयों से नीयत कर लें कि हम ने नेक बनना है।

खुलासए कलाम

बहरहाल जितने बयानात हुए उनका अगर लुब्बे लबाब पूछना चाहें तो एक बात तो यह कि इन्सान पर ज़्यादती न करे, यह बड़े गुनाहों में से एक गुनाह है किसी का दिल दुखाना किसी पर ज़्यादती करना क़ौली तौर पर या फ़ेअ़ली तौर पर ज़बान से किसी को तकलीफ़ देना हाथ से किसी को तकलीफ़ देना यह चीज़ अल्लाह तआला को बहुत नापसन्द है, कभी इन्सान दूसरे का दिल न दुखाए कहने वाले ने तो यह कहा।

मस्जिद ढ़ादे मन्दिर ढ़ाते ढ़ादे जो कुछ ढ़ेंदा
पर किसे दा दिल ना ढ़ावें रब दिलावच रहींदा

कि तू मस्जिद गिरा दे या मन्दिर गिरा दे जो तेरा जी चाहता है

गिरा दे, लेकिन किसी का दिल न तोड़ना इसलिए कि अल्लाह दिलों में रहता है।

तअज्जुब की बात

नबी ﷺ ने एक बार बैतुल्लाह शरीफ़ को देख कर फ़रमाया कि बैतुल्लाह तेरा शरफ़ और तेरी ताज़ीम बड़ी है लेकिन ﴿حرمة المؤمن ارجح من حرمة الكعبه﴾ एक मोमिन कलमा गो का एहतराम बैतुल्लाह की इज़्ज़त से भी ज़्यादा है, अब बैतुल्लाह के ग़ेलाफ़ को तो पकड़ के दुआयें और दूसरी तरफ़ मोमिन का गिरेबान पकड़ें इधर तो रो रो कर दुआयें मांगे, महबूब फ़रमाते हैं उस मोमिन की हुरमत ज़्यादा है, तो भई किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए अल्लाह के बन्दों के लिए वबाले जान नहीं बनना चाहिए, सुख पहुंचायें।

किसी का दिल न दुखाओ

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है, बनी इसराईल की बदकार ज़ानिया औरत प्यासे कुत्ते को पानी पिला कर बख़्शी जा सकती है तो क्या उम्मते मोहम्मदिया का गुनहगार प्यासे बन्दे को पानी पिला कर नहीं बख़्शा जा सकता, तो सबसे पहली बात उसको उसूल बना लें हमने किसी का दिल नहीं दुखाना और कई दफ़ा ज़बान से इन्सान बात ऐसी निकाल देता है कि उसके अल्फ़ाज़ दूसरे बन्दे के दिल को चीर कर रख देते हैं, याद रखना तलवार के ज़ख़्म तो मंदमिल हो जाते हैं ज़बान के ज़ख़्म कभी मंदमिल नहीं होते, जिन रिश्ता नातों को तलवार भी नहीं काट सकती यह ज़बान उन रिश्तों को भी थोड़ी देर में ख़त्म करके रख देती है अल्लाह तआला के बन्दों की क़द्र करें उनसे मोहब्बत करें अल्लाह के लिए ख़ैर ख़्वाही हो नबी ﷺ ने फ़रमाया ﴿الدين النصيحة﴾ दीन सरासर ख़ैर ख़्वाही है, क्या मतलब? तो मोमिन वह होता है जो दूसरे का ख़ैर ख़्वाह होता है बद ख़्वाह नहीं होता, किसी का बुरा नहीं सोचता हमेशा अच्छा सोचता है, और अगर हम किसी से

ज़्यादती करेंगे तो हमारे साथ भी कुछ होगा इसलिए कि ऊपर परवरदिगार भी तो है, एक तो यह छत है एक ऊपर नीली छत भी है हम अगर किसी से ज़्यादती करेंगे तो मज़लूम की पुकार सुनने वाला भी कोई है इसलिए फ़रमाया कि मज़लूम की पुकार जब निकलती है आसमान के दरवाज़े खुलते हैं कोई रोकावट नहीं होती उस पुकार को अल्लाह के हुज़ूर पेश कर दिया जाता है तो एक बात कि किसी का दिल न दुखायें।

ज़रा सी ज़रा सी बात पर बच्चे को डांट डपट न करें, बच्चे सहम जाते हैं मार से वह बात नहीं समझते जो आप समझाना चाहते हैं, डांटने से दबते हैं समझाने से समझते हैं।

एक छोटा सा उसूल याद रखें

......कि बच्चा बारा साल तक बाप का गुलाम

......और अट्ठारा साल तक बाप का मुशीर बारा से अट्ठारा की उम्र मशवरे देता है अब्बू यूं कर लो ऐसे होता तो क्या था? अम्मी यूं क्यों नहीं करतीं?

इसके बाद या बाप का दुश्मन है या बाप का दोस्त है।

हम डांट से उसको अपना दुश्मन बना रहे होते हैं हम डांट से उसको दीन से दूर कर रहे होते हैं, वह डांट हमारे लिए उलटा अल्लाह तआला से दूरी का सबब बन रही है, इस लिए दूसरों का दिल दुखाने से पहले डरें बहुत डरें और उस से बहुत बचें।

साज़िश न करें

दूसरी बात किसी के ख़िलाफ़ तदबीर न करें, मोमिन के ख़िलाफ़ तदबीर न करना इसलिए कि अगर आप मोमिन के ख़िलाफ़ तदबीर करेंगे तो ﴿والله خير المكرين﴾ तदबीर करने वालों में बड़ा तदबीर करने वाला परवरदिगार है, जो गढ़ा खोदता है वह उसी गढ़े में गिर जाता है, यह बहुत अहम बात है कोई ज़्यादती करता है तो माफ़ कर

दो माफ़ करने वालों के साथ अल्लाह की मदद होती है।

अहद शिकनी न करें

और तीसरी चीज़ कभी भी अहद न तोड़ें जो कौल दे दिया वह दे दिया जब आप अपने कौल का लिहाज़ करेंगे अल्लाह तआला आप की ज़बान से निकली हुई बात का लिहाज़ फ़रमायेंगे हमारा यह तजर्बा है कि जो बन्दा झूट छोड़ देता है अल्लाह ताआला उस बन्दे की दुआओं को रद करना छोड़ देते हैं, तजर्बा कर लीजिए इस पर मेहनत करनी पड़ेगी झूट न बोलना इस पर तीन से पाँच साल लगते हैं कम अज़ कम हर वक़्त जो कहे वह सोचे हर वक़्त मैं क्या कह रहा हूं बार बार झूट बोलेगा बार बार ज़रा अपने आप को सीधा करना पड़ेगा, इसी लिए झूट की वजह से ज़िन्दगी के अन्दर बे बरकती हो जाती है बाज़ रिवायत में आता है बन्दा झूट बोलता है उसके मुंह में से इतनी बद बू निकलती है अल्लाह के फ़रिश्ते उससे कई मील दूर चले जाते हैं और बाज़ औक़ात झूट बोलते बोलते इतना झूट बोलता है अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं मेरे यहां झूटों के दफ़तर में बन्दे का नाम लिख दिया जाए, तो झूट कितना ही तेज़ भागे सच उसको पकड़ लेता है, सच बिल आख़िर सच है उसके साथ अल्लाह की मदद है

दरयाए रहमत की वुसअत

आज लैलतुल जायज़ा है हदीस पाक में आज की इस रात के बड़े फ़ज़ाईल हैं इसमें इबादत करने के हदीस पाक में फ़ज़ाईल काफ़ी वारिद हुए, तो कोशिश कीजिए कि आज की रात की तहज्जुद चार रकअत ज़रूर नसीब हो जाए, कुछ दुआयें मांगने में गुज़रे, अल्लाह तआला को मनाने में गुज़रे, एतेकाफ़ वालों की इस साल की आख़री महफ़िल और मजलिस है तो दिल में ख़्याल आया कि चन्द बातें बता दी जायें कि दुआयें क़बूल क्यों नहीं होतीं, और किन बुनियादी बातों से हमें बचना है और हमें कैसे ज़िन्दगी गुज़ारनी है, रब्बे करीम हमें दुनिया

आख़रत की कामियाबी नसीब फ़रमाए और इस जगह उठने से पहले अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमाए अल्लाह तआला के लिए यह कोई मुश्किल नहीं, हदीस पाक में आता है कि नबी जिहाद से वापस लौट रहे थे एक जगह दरिया के किनारे आप ने पड़ाओ डाला तो आम तौर पर दरिया के किनारे रेत होती है नमाज़ पढ़ी उसके बाद आप ने अपनी उम्मत के लिए रो कर दुआ की जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी तो आप ने देखा कि एक छोटा सा परिन्दा आया और उसने नबी ﷺ के सामने रेत के चन्द ज़र्रे अपनी चोंच में लिए और वह दरिया के ऊपर चला गया फिर दोबारा आया फिर चन्द ज़र्रे ले कर चला गया जब दो तीन दफ़ा ऐसा हुआ तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के महबूब मुतवज्जेह हुए कि यह क्या कर रहा है? उस वक़्त जिबरईल عليه السلام आए जिबरईल عليه السلام. ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब आप ने जो दुआ मांगी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसको आप के सामने तमसील के तौर पर पेश फ़रमा दिया है तो नबी عليه السلام ने फ़रमाया वह कैसे? कि यह परिन्दा यह पैग़ाम दे रहा है कि ऐ अल्लाह के महबूब जिस तरह मैं अपनी चोंच में दो चार ज़र्रे रेत के उठा सकता हूं और इन ज़र्रों को मैं दरिया में जा कर डलता हूं तो दरिया के पानी के सामने इन ज़र्रों की कोई हैसियत नहीं उसी तरह आप की पूरी उम्मत के गुनाह इन रेत के ज़र्रों के मानिन्द हैं मेरी रहमत के दरिया के सामने उन की कोई भी हैसियत नहीं।

तो भई सच्चे दिल से माफ़ी मांगेंगे परवरदिगारे आलम ज़रूर माफ़ फ़रमायेंगे इस महफ़िल से फ़ायदा उठा लीजिए सच्चे दिल से गुनाहों की माफ़ी मांगिए और जैसे कल रात इस आजिज़ ने अर्ज़ किया कि हुकूकुल्लाह की माफ़ी तो मांगेंगे ही हुकूकुल इबाद को भी माफ़ करवा लिजिए तो भई अगर आप हज़रात को इस आजिज़ से कोई तकलीफ़ पहुंची हो कोई दुख हो कोई आप के अदब में कमी रह गई हो तो यह

आजिज़ माफ़ी मांगता है आप सब हज़रात इस आजिज़ को भी माफ़ फ़रमा दें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम सब को माफ़ फ़रमा दे।

و آخر دعوانا ان الحمدلله رب العلمين

निय्यत की अहमियत

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल फ़क़ार अहमद
दामत बरकातहुम (नक़्शबन्दी मुजद्दिदी)

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

इक़्तिबास

पहाड़ों जैसे अमल क़ियामत के दिन निय्यत की ख़राबी की वजह से هباء منثورا बना दिये जाएंगे और छोटे छोटे अमल जिन को इंसान करके भूल गया था निय्यत के इख़लास की वजह से क़ियामत के दिन इंसान की बख़शिश का सबब बन जाएंगे, चुनांचे हदीस पाक में आता है कि क़ियामत के दिन एक बन्दा अल्लाह के हुज़ूर पेश किया जायेगा, उससे अपने हक़ लेने वाले बहुत होंगे जब उनको उनका हक़ दिया जाएगा तो उस बन्दे के सारे अमल ख़त्म हो जाएंगे और देखने वाले समझेंगे कि अब यह बन्दा जहन्नम में गया मगर परवरदिगार फ़रमाएंगे कि उसके नामए आमाल में जितने भी अच्छे आमाल हैं गरचे वह लोगों में तक़सीम हो गये हैं लेकिन उनमें यह भी लिखा हुआ है कि उसकी निय्यत में सब बन्दों के लिए भलाई हुआ करती थी तो यह जो उसकी भलाई की निय्यत है वह मुझे इतनी पसन्द आई कि इस निय्यत पर मैं ने इस बन्दे की बख़शिश कर दी।

हज़रत मौलाना पीर जुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक़्शबन्दी मद्दा ज़िल्लहु

بسم الله الر حمن الرحيم

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَ كَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيۡنَ اصۡطَفٰى اما بعد .....!

اَعُوۡذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطَانِ الرَّجِيۡمِ ۔ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ۔

﴿ اَلااللّٰہ الدين الخالص ﴾

وقال تعالى ﴿ مخلصين له الد ين ﴾

سُبۡحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِيۡنَ وَ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعَالَمِيۡنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَ سَلِّمۡ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَسَلِّمۡ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكۡ وَ سَلِّمۡ

मोमिन की नीयत

नबी ﷺ का इरशाद गिरामी है ﴿انما الاعمال بالنيات﴾ कि आमाल का दारो मदार नीयत के ऊपर है और यह भी हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया कि ﴿ نية المؤمن خير من عمله﴾ "मोमिन की नीयत उसके अमल से भी ज़्यादा अच्छी होती है एक तालिब इल्म को यह बात समझने में ज़रा दुशवारी पेश आती है मगर हक़ीक़त यही है कि नीयत अमल से ज़्यादा बेहतर होती है इसकी वजूहात हैं सबसे पहली बात तो यह कि

☆...... नीयत करने से मोमिन को अज्र मिलता है नेकी लिखी जाती है अमल में इमकान रिया का है लेकिन नीयत करने से उसके आमाल में नेकी ज़रूर लिखी जाती है

☆...... और दूसरी इसकी वजह यह है कि नीयत क़ल्ब का अमल है और क़ल्ब को इन्सान के पूरे जिस्म में फ़ज़ीलत का मक़ाम हासिल है कि यहां इन्सान को मारेफ़त हासिल होती है लिहाज़ा क़ल्ब का अमल बाक़ी इन्सान के सारे आज़ा पर फ़ज़ीलत रखता है तो मोमिन

की नीयत उसके अमल से ज़्यादा बेहतर है इस लिए हमेशा अपनी नीयतों को टटोलते रहना चाहिए निगरानी करते रहना चाहिए कि हम जो काम भी कर रहे हैं क्या वाक़ई अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रज़ा के लिए कर रहे हैं या फिर किसी और मक़सद के लिए कर रहे हैं।

☆...... तीसरी वजह यह कि नीयत के अन्दर दवाम होता है अमल में दवाम नहीं होता कोई भी अमल करें महदूद होगा लेकिन नीयत उसके ऊपर कोई हद नहीं मिसाल के तौर पर एक आदमी नीयत कर सकता है कि जब तक मेरी ज़िन्दगी है मैं तहज्जुद पढूंगा अब अगर उसकी ज़िन्दगी सौ साल है तो सौ साल की नीयत हुई अगर उससे भी ज़्यादा है तो उसने हमेशा के लिए नीयत कर ली तो यह जो दवाम है इसकी वजह से नीयत अमल से अफ़ज़ल हो जाती है।

एक नुक्ता

एक नुक्ता जो अक्सर तलबा को परेशान करता है कि इन्सान इस दुनिया में जो भी आमाल करता है वह महदूद होते हैं लेकिन उनको जन्नत मिलेगी जहां हमेशा रहेगा और जितने भी गुनाह करता है वह महदूद होते हैं लेकिन जहन्नुम का अज़ाब मिलेगा तो काफ़िर ने कुफ़्र तो किया महदूद उम्र के लिए मगर हमेशा हमेश का अज़ाब तो उलमा ने इसकी वजह भी यही बताई कि अगरचे मोमिन ने महदूद अमल किए मगर उसकी नीयत यह होती है कि जब तक मेरी ज़िन्दगी है मैं अपने परवरदिगार की फ़रमांबरदारी करूंगा, इस वजह से हमेशा हमेश के लिए जन्नत में और काफ़िर की नीयत यह होती है कि मैं ने अल्लाह को नहीं मानना या उसके साथ किसी शरीक को बना लिया तो इस नीयत की वजह से उसको हमेशा हमेश का अज़ाब दिया जाता है।

दिल की तमन्ना नामए आमाल में

पहाड़ों जैसे अमल क़ियामत के दिन नीयत की ख़राबी की वजह से هباء منثورا बना दिए जायेंगे और छोटे छोटे अमल जिन को इन्सान

करके भूल गया था नीयत के इख़लास की वजह से क़ियामत के दिन इन्सान की बख़्शिश का सबब बन जायेंगे, चुनांचे हदीस पाक में आता है कि क़ियामत के दिन एक बन्दा अल्लाह के हुज़ूर पेश किया ज़ाएगा, उससे अपने हक़ लेने वाले बहुत होंगे जब उनको उनका हक़ दिया जाएगा तो उस बन्दे के सारे अमल ख़त्म हो जायेंगे और देखने वाले समझेंगे कि अब यह बन्दा जहन्नुम में गया मगर परवरदिगार फरमायेंगे कि उसके नामए आमाल में जितने भी अच्छे आमाल हैं गरचे वह लोगों में तक़सीम हो गए हैं लेकिन इनमें यह भी लिखा हुआ है कि उसकी नीयत में सब बन्दों के लिए भलाई हुआ करती थी तो यह ज़ो उसकी भलाई की नीयत है वह मुझे इतनी पसन्द आई कि इस नीयत पर मैं ने उस बन्दे की बख़्शिश कर दी, और यह भी रिवायत में आता है कि क़ियामत के दिन एक बन्दा पेश किया जाएगा और उसके नामए आमाल में हज का और उमरे का और कितनी ही शब बेदारियों का सवाब लिखा होगा वह बड़ा हैरान होगा कि रब्बे करीम मैंने तो हज किया भी नहीं और कोई उमरा भी नहीं किया या इतने नहीं किए जितने लिखे गए, मेरी उम्र कम थी और हजों की तादाद उससे भी ज़्यादा यह क्या मामला है? तो उसको कहा जाएगा कि तुम ने तो अमल थोड़ा किया था लेकिन तुम्हारे दिल के अन्दर नीयत होती थी हर साल अल्लाह के दर पर हाज़िरी देने की हर रात में उठ कर तहज्जुद पढ़ने की वह जो तुम कहते थे कि ऐ काश मेरे बस में होता अगर वसायल होते अगर मेरे हालात मुवाफ़िक़ होते तो मैं यह कर लेता, वह जो तुम्हारे दिल से एक आरज़ू उठती थी और तमन्ना उठती थी उस तमन्ना के इख़लास को देखते हुए हम इस अमल का सवाब तेरे नामए आमाल में लिख दिया करते थे।

एक लोहार का वाक़िया

चुनांचे इमाम अहमद बिन हंबल रह. का पड़ोसी एक हद्दाद (लोहार)

था वह फ़ौत हो गया किसी ने ख़्वाब में देखा कि भाई क्या बना? कहने लगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत हुई मुझे बख़्श दिया गया और मुझे इमाम अहमद बिन हंबल रह. के दर्जा में पहुंचा दिया गया वह बड़ा हैरान हुआ आंख खुली यह खुद भी मोहद्दिस थे आलिम थे, उन्होंने ख़्वाब देखा सोचने लगे कि उसके अहले ख़ाना से पूछना चाहिए कि इसका कौन सा ख़ास अमल था जो रब्बे करीम का पसन्द आ गया उन्होंने पूछा उनके अहले ख़ाना से, उनके अहले ख़ाना ने बताया कि उनमें दो बातें अजीब थीं।

(1) एक तो यह कि उनके दिल में अल्लाह तआला का बहुत एहतराम था, इतना था कि जब यह लोहा कूट रहे होते और हथौड़ा जब सर से ऊपर उठाते नीचे मारने के लिए अगर ऐन उस वक़्त अल्लाहु अकबर अज़ान की आवाज़ सुनते तो यह उसी वक़्त हथौड़ा को नीचे रख-देते थे, कहते थे कि अब मेरे परवरदिगार ने बुला लिया अब मैं पहले उसका हुक्म अदा करूंगा।

(2) और दूसरा यह था कि जब वह घर आते और रात में देखते कि इमाम अहमद बिन हंबल रह. अपनी छत के ऊपर इबादत करते तो यह दिल में हसरत किया करते थे ठन्डी सांस लिया करते थे और कहते कि मैं क्या करूं मेरे बच्चे ज़्यादा हैं अगर मैं काम नहीं करूंगा तो इन बच्चों के लिए इन्तेज़ाम कैसे होगा अगर मेरी पीठ हलकी होती मेरे ऊपर यह बोझ न होता और मैं वक़्त फ़ारिग़ कर सकता तो मैं भी इमाम अहमद बिन हंबल जैसी रातें गुज़ारता, उन्होंने कहा कि यह उसका अमल ऐसा था कि उसके दिल के इख़लास की वजह से रब्बे करीम ने उसे वही दर्जा अता फ़रमा दिया जो इमाम अहमद रह. का था।

नेकी की आरज़ू

अगर इन्सान अमल कर नहीं सकता उसकी तमन्ना तो दिल में रख

सकता है, आरजू तो दिल में रख सकता है, हम नेक नहीं बन सकते तमन्ना तो रख सकते हैं, हम सर से लेकर पांव तक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की शरीअत के मुताबिक़ नहीं बन सके तमन्ना तो रख सकते हैं, तो नीयत कर लेने से बसा औक़ात इन्सान को वह नेमतें मिल जाती हैं जो अमल पर भी उसको नहीं मिला करतीं, इस लिए आज इस महफ़िल में हम एक नीयत तो यह करें कि हम आज के बाद अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के हुक्मों के मुताबिक़ और नबी ﷺ के सुन्नतों के मुताबिक़ गुज़ारेंगे।

बन्दा इख़्तियारी आमाल करे

उलमा ने लिखा है कि सिद्क़े दिल की अलामत यह कि जो इन्सान के बस में हो वह कर ले एक बन्दा कहता है कि जी मैं यह चाहता हूं अब कैसे पता चले कि वह ठीक कह रहा है या ग़लत तो सिद्क़े दिल की अलामत यह लिखी गई कि जितना उसके इख़्तियार में है वह अगर कर लेगा तो अल्लाह उसे वह अज्र भी अता कर देगा जो उसके इख़्तियार से बाहर होगा, इस लिए क़ियामत के दिन कितने लोग ऐसे होंगे कि जो दुनिया के अन्दर बड़े अमीर गुज़रे होंगे उमरा के अन्दर उनका शुमार होगा मगर क़ियामत के दिन अल्लाह तआला फुक़रा में उनको शुमार फ़रमायेंगे और कितने लोग ऐसे होंगे कि जो दुनिया में नान शबीना को तरसते थे फ़ाक़ों में ज़िन्दगी गुज़ारते थे मगर क़ियामत के दिन क़ारून के साथ उनका हश्र कर दिया जाएगा इसलिए कि दिल की नीयत उनकी वही थी जो क़ारून के दिल के अन्दर थी तो यह दिल की नीयत पर मुन्हसिर है अगर हमारे दिल में यह नीयत होगी कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मारेफ़त को हासिल करना चाहते हैं उसकी मोहब्बत से अपने दिल को लबरेज़ करना चाहते हैं ऐन मुमकिन है यह उसी नीयत को अल्लाह क़बूल करके क़ियामत के दिन अपने चाहने वालों की जमाअत में शामिल फ़रमा लेगा।

इख़लास की बात

फ़कीह अबुल लैस समरक़न्दी रह. से किसी ने पूछा यह हम इख़लास के बारे में बड़ा कुछ सुनते रहते हैं, हज़रत हमें कोई मिसाल दे कर समझायें यह इख़लास क्या होता है? मुख़्लिस कौन होता है? अजीब मिसाल से उन्होंने बात समझाई फ़रमाने लगे तुम ने कभी बकरियों का चरवाहा देखा? जी कि जब वह नमाज़ पढ़ता है तो उसके इर्द गिर्द बकरियां मौजूद होती हैं तो यह बताओ कि कभी उसके दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि मेरी इस इबादत पर मेरी बकरियां मेरी तारीफ़ करेंगी, उसने कहा नहीं, उसके दिल में ख़्याल भी कभी नहीं आया होगा कि इस इबादत पर मेरी बकरियां मेरी तारीफ़ करेंगी, फ़रमाने लगे कि यह मुख़लिस बन्दे की निशानी है कि वह लोगों के दरमियान बैठ कर अल्लाह तआला की इबादत करता है उसके दिल में ज़रा भी यह नहीं होती कि लोग मेरी इबादत की तारीफ़ करें, जैसे किसी बकरियों से तारीफ़ की उम्मीद नहीं होती उसी तरह उसके दिल में भी लोगों से कोई उम्मीद नहीं होती।

जिसका अमल हो बे ग़रज़ उसकी जज़ा कुछ और है

ज़र्रे का पहाड़

हीरा और मोती देखने में कितना छोटा होता है, मगर क़ीमत के ऐतबार से कितना ज़्यादा होता है, जिस अमल में भी इख़लास होगा वह हीरे और मोती के मानिन्द होगा, हज़रत मोजद्दिद अल्फ़े सानी रह. ने यह वाक़िया लिखा है कि एक मर्तबा में बैठा हुआ कुछ लिख रहा था मकतूबात वअज़ व नसीहत की बातें, क़लम ठीक नहीं चल रहा था,तो मैं ने हाथ के अंगूठे के नाखुन पर ज़रा उस को ठीक किया तो सियाही लग गई, फ़रमाते हैं कि मैं लिखता रहा कुछ देर के बाद मुझे क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत महसूस हुई तो जब मैं बैतुल खुला में गया और ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के लिए बैठने लगा तो अचानक मेरी नज़र उस

सियाही पर पड़ी तो मेरे दिल में ख़्याल हुआ कि जस सियाही को मैं अल्लाह के कलाम और नबी ﷺ के फ़रमान के लिखने में इस्तेमाल करता हूं अगर मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुआ और तहारत के लिए पानी इस्तेमाल किया तो यह सियाही धुल कर उस नजासत के अन्दर शामिल हो जाएगी, यह चीज़ मुझे अदब के ख़िलाफ़ महसूस हुई, मैं ने अपने तक़ाज़े को दबाया बैतुल ख़ला से बाहर वापस आया, और पाक जगह पर उस सियाही को मैं ने धो लिया, जैसे ही पाक जगह पर धोया उसी वक़्त इलहाम हुआ अहमद सरहिन्दी तेरे इस अमल की वजह से हम ने जहन्नम की आग को तेरे ऊपर हराम कर दिया, अब अमल कितना छोटा है मगर चूंकि इख़लास था मग़्फ़िरत का सबब बन गया।

तीन बातों का एहतमाम

इन्सान दिल में नीयत यही रखे कि मैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की फ़रमांबरदारी वाली ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता हूं इसलिए तीन बातें अल्लाह के लिए ख़ास हैं।

(1)......एक "रूजूअ" कोशिश की जाए कि हमेशा अल्लाह की तरफ़ रूजूअ रहेंगे इसे कहते हैं अनाबत इलल्लाह रूजूअ इलल्लाह منيبين اليه ثم اناب यह अनाबत हमेशा दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ हो,।

(2)...... दूसरा "एहतियात" कि इन्सान ज़रूरत के वक़्त हमेशा अपने रब की तरफ़ मतवज्जेह हो, कोई भी ज़रूरत हो हत्ता के जूते का तिस्मा भी टूट जाए तो अपने परवरदिगार से मांगे।

(3)...... और तीसरी चीज़ "एतमाद" हमेशा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के वादों पर कोई भी काम किया ज़ाए अल्लाह ताआला पर भरोसा रखे, जिस बन्दे के यह तीन अमल ठीक होंगे, उसकी ज़िन्दगी शरीयत और सुन्नत के मुताबिक़ बन जाती है, आज के दौर में तीन बातों में क़ौल

और फ़ेअल का तज़ाद बहुत हो गया है, पहली बात तो यह है कि हम कहते हैं हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के बन्दे हैं मगर काम आज़ाद लोगों जैसे करते हैं ज़िन्दगी ऐसे गुज़ारते हैं कि जैसे हम मन मर्ज़ी के मालिक हों और हम वह करेंगे जो हमारी मरज़ी होगी, भई जब कलमा पढ़ लिया तो हमारी मरज़ी तो गई, अब तो रब की मरज़ी चलेगी, हमारी मरज़ी नहीं चलेगी, जो शरीयत का हुक्म होगा बस अब उसी को फ़ज़ीलत देंगे।

ज़रा गौर करें

हम अल्लाह तआला के बन्दे हैं उसकी मिल्क हैं वह हमारा मालिक है अल्लाह तआला को बन्दों पर इख़्तियार बहुत ज़्यादा है बनिस्बत उसके जो एक बन्दे को गुलाम के ऊपर होता है, तो गुलाम से क्या तवक़्क़ो की जाती है कि हर बात वह अपने आक़ा की माने क्या हम भी अपने परवरदिगार हक़ीक़ी की बात उसी तरह मानते हैं? तो ज़बान से तो कहतें हैं कि हम बन्दें अल्लाह तआला के हैं लेकिन काम आज़ाद लोंगों वाले करते हैं, हमें अपनी कोताहियां नज़र नहीं आतीं? बाक़ी सब लोगों के अन्दर ऐब नज़र आते हैं, इसी लिए किसी आरिफ़ ने कहा कि ऐ दोस्त तुम लोगों के ऐब इस तरह न देखो कि जैसे तुम लोगों के आक़ा हो बल्कि इस तरह से देखो कि जैसे तुम भी किसी के गुलाम हो, दूसरी बात कि हम यह कहतें हैं कि अल्लाह अब्बुल इज्ज़त हमारा राज़िक़ है रिज़्क़ देने वाला है लेकिन दिलों को इत्मिनान उस वक़्त तक नहीं आता कि जब तक कि सब कुछ अपने पास हासिल नहीं कर लेते, ज़बान से कहते हैं यह अल्लाह के वादे सच्चे मगर रिज़्क़ के मामले में जब तक आंख से नज़र नहीं आ जाता कि अब सब कुछ आ गया है जेब में मौजूद है उस वक़्त तक यक़ीन नहीं होता इस लिए जब बन्दा दीनदारी की ज़िन्दगी गुज़ारता है तालिब इल्म बनना चाहता है सबसे पहले घर वालों का यही सवाल होता है कि खाओगे कहां से ? समझ

ही में नहीं आती यह बात कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त रिज़्क़ कैसे पहुंचायेंगे?

एक साहब बैरून मुल्क में मिले वह कहते थे कि मैं तक़लीद को नहीं मानता, फ़लां को नहीं मानता, कुछ बातें करने के बाद मुझे कहने लगे यह आप लोगों को अल्लाह अल्लाह के सिवा और कोई काम नहीं? तो मैं ने उसके सामने हाथ जोड़ कर कहा कि अल्लाह के बन्दे अल्लाह के वास्ते क़ियामत के दिन यही गवाही दे देना कि इन लोगों को अल्लाह अल्लाह के सिवा कोई काम नहीं था, तो ज़बान से तो कहतें हैं कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारे राज़िक़ हैं, हमें उस वक़्त तक यक़ीन नहीं होता जब तक कि हमारी जेब में कुछ आ नहीं जाता।

फ़िक्रे आख़िरत

तीसरी बात अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मुलाक़ात के लिए तैयारी की ज़रूरतें इस बात को तो हम सब मानते हैं मगर ज़िन्दगी ऐसे गुज़ारते हैं कि जैसे मरना ही नहीं हर बन्दा कहेगा कि जी मौत आनी है लेकिन अगर पूछा जाए कि इसकी तैयारी किसने की? तो हम में से कोई भी हाथ खड़ा नहीं करेगा, तो हमें मौत की तैयारी किस तरह से करनी चाहिए हम नहीं कर पाते दुनिया ही के मामलात में उलझे हुए होते हैं, दुनिया इन्सान के जिस्म को बूढ़ा कर देती है और उसकी आरज़ूओं को जवान बना देती हैं उम्र गुज़रने के साथ साथ आरज़ूयें भी जवान होती चली जाती हैं, हम अपने कामों को समेटते नहीं हैं यह तो ऐसा ही हुआ कि जैसे बारात वाले घर पहुंच गए थे और लड़की वाले लड़की के कान कहीं सिलवाने गए हुए थे इसी तरह खड़े पैर इन्सान के लिए वक़्त आएगा और सब कुछ समेट कर जाना पड़ेगा।

अच्छा ज़रा सोचिए एक मिसाल कि अगर किसी दिन हम काम करने बैठे हुए हों और कोई आकर कहे कि अभी उठ कर चलो फ़लां शहर फ़लां काम के लिए जाना है उस वक़्त हमें कितनी मुसीबत नज़र

आती है कि यार मुझे इस काम को करना है और भी दूसरे काम हैं इसी पर मौत को क़यास करो कि जब मलकुल मौत आयेंगे वह तो अचानक लेकर चले जायेंगे, इस मौत की तैयारी हमें इसी ज़िन्दगी में करनी है इसके लिए हमें कोई अलग से वक़्त नहीं मिलेगा

अच्छे सालिक की अलामत

इसी लिए उलमा ने लिखा कि जो अच्छा सालिक होता है उसकी तीन अलामतें होती हैं

(1) ...... वह अपने दिल से दुनिया को ठुकरा देता है और दुनिया से निगाहें हटा कर आख़रत पर निगाहें जमा लेता है, इसलिए कि दुनिया फ़ानी है और एक न एक दिन हमें छोड़ कर जाना है तो इस धोके वाले घर से उसका दिल कट जाता है और आख़रत की तरफ़ तबीयत मायल हो जाती है, जब ऐसी कैफ़ियत हो तो फिर इन्सान दुनिया के पीछे नहीं पड़ता फिर दुनिया उसके पीछे आती है, दुनिया आख़रत के साए के मानिन्द है साए के पीछे भागोगे तो यह साया कभी नहीं मिलेगा लेकिन आख़रत को बनायेंगे तो दुनिया खुद बखुद पीछे आती चली जाएगी इन्सान को बिन मांगे दुनिया तो मिल सकती है लेकिन बिन मांगे आख़रत नहीं मिल सकती इसके लिए मेहनत कर रनी पड़ेगी।

(2)...... वह मौत को महबूब समझता है और आज तो हालत यह है कि घर में अगर आप मौत का नाम ले दें तो औरतें नाम भी सुनना पसन्द नहीं करतीं और हमारे अकाबिरीन का यह हाल था कि मौत को याद करने का एहतमाम फ़रमाया करते थे सैयदना उमर रज़ि. ने एक अंगूठी बनवाई और उस पर लिखवाया ﴿كفى بالموت واعظا﴾ मौत ही नसीहत के लिए काफ़ी है और एक आदमी को इस बात पर मुतअय्यन किया कि मुख़तलिफ़ महफ़िलों में साथ रहो और मौक़ा की मुनासेबत से मौत का तज़किरा छेड़ते रहा करो ज़रा सोचिए कि क्या

हम भी अपनी मौत को याद करने का कोई ऐसा एहतमाम करते हैं, इसी वजह से ग़फ़लत में पड़ जाते हैं तो सालिक की दूसरी पहचान कि वह अपनी मौत को महबूब समझता है, इस लिए हज़रत उमर रज़ि. ने सहाबा किराम को फ़रमाया था जब रूमी को ख़त लिखा था कि मेरे साथ एक ऐसी कौ़म है जो मौत का प्याला पीना इस तरह पसन्द करती है जैसे तुम शराब का प्याला पीना पसन्द करते हो, सहाबा किराम जब मलकुल मौत को देखते थे तो कहते थे कि कितना अच्छा मेहमान आया हम तो इतने अर्से से तुम्हारा इन्तेज़ार करते थे।

(3)…… वह सुलहा का मक़बूल हो, यह अच्छे सालिक की पहचान होती है, आप ने कुछ लोगों को देखा होगा कि वह उलमा ही पर एतराज़ करते रहते हैं उनको तसव्वुफ़ में कोई हिस्सा हासिल नहीं जिनको उलमा से हुस्ने ज़न हासिल नहीं, और कुछ लोग इल्म के ही मुख़ालिफ़ होते हैं इल्म तो ज़िक्र व सुलूक के रास्ते में रोकावट नहीं बल्कि मुआविन होता है, चुनांचे हसन बसरी रह. ने फ़रमाया कि मैं और मेरा एक और साथी हम इकट्ठे सुलूक के रास्ते पर चले, लेकिन अल्लाह तआला ने मेरे लिए मंज़िल ज़्यादा आसान कर दी क्योंकि मैं इल्म में अपने भाई से बढ़ा हुआ था तो सुलहा में मक़बूल हो, वह मुराद बने जैसे सैयदना अबू बकर रज़ि. नबी अकरम ﷺ के मुराद बने जैसे सैयदना उमर रज़ि. नबी ﷺ के मुराद बने और जैसे अमीर खुसरू रह. ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह. की मुराद बने, उनके शैख़ उनसे इतना खुश थे फ़रमाया करते थे कि अगर शरीअत इजाज़त देती कि दो बन्दों को एक क़ब्र में दफ़न किया जाए तो मैं वसीयत कर जाता कि मुझे और अमीर खुसरू को एक ही क़ब्र में दफ़न किया जाए, हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह. ने क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती रह. के मोतअल्लिक़ भी इसी तरह के अल्फ़ाज़ कहे हैं फ़रमाते थे कि अगर क़ियामत के दिन रब्बे करीम ने मुझ से पूछा कि तू मेरे पास क्या लाया तो मैं सनाउल्लाह को पेश कर दूंगा, तो अव्वल तो मुराद बने और

अगर नहीं बन सकता तो कम अज़ कम मुरीद तो बने, इरादत तो दिल में हो, आज के दौर में तो इरादत भी ख़ाली खूली होती है, मुरीद चाहता है कि मैं पीर बन कर रहूं और पीर से तवक़्क़ो करता है कि वह मुरीद बन कर रहे इरादत चूंकि पुख़्ता नहीं होती इसलिए बहुत सारे फियूज़ात से इन्सान महरूम हो जाता है।

अजीब वाक़िया

किताबों में एक अजीब वाक़िया लिखा है कि एक बुजुर्ग थे उनसे तअल्लुक़ रखने वाले बहुत ज़्यादा थे, वक़्त के बादशाह को ख़तरा हुआ कि इसके मुरीदीन ज़्यादा होते जा रहे हैं कहीं ऐसा न हो कि तेरे लिए कोई ख़तरा तो उन्हें बुलाकर पूछा बुजुर्ग ने कहा कि तुझे परेशान होने की ज़रूरत नहीं है इस लिए कि यह जो भीड़ जमा है इसमें मुरीदीन थोड़े हैं उसने कहा कि नहीं मैं ने सुना है कि लाखों आपके चाहने वाले हैं, फ़रमाने लगे कि आप को ग़लत इत्तेला मिली है ऐसा नहीं उसने कहा कि नहीं हम तो खुद देखते हैं कि सैंकड़ों रोज़ आते जाते हैं उन्होंने कहा कि जनाब ऐसा नहीं है मेरे तो इसमें कुल डेढ़ मुरीद हैं, तो जब डेढ़ मुरीद कहा तो बादशाह भी हैरान कहा कि यह लाखों का मजमा और आप कहते हैं कि डेढ़ मुरीद उन्होंने क़हा कि जी हां, उस ने कहा कि जी मैं नहीं मानता बुजुर्ग ने कहा मैं आप को तरीक़ा बता देता हूं चेक करने का आप आज़मा लें, चुनांचे उन्होंने बादशाह को एक तरकीब बताई तो बादशाह ने एलान करवाया कि जितने भी उनके तअल्लुक़ रखने वाले है वह सारे के सारे फ़लां जगह जमा हो जायें लाखों का मजमा अब वहां पर बादशाह ने यह एलान किया कि भई देखो उस शैख़ से एक ऐसी ग़लती हुई कोताही हुई कि जिसकी वजह से आज उनको क़त्ल करना ज़रूरी है हां अगर उनके बदले कोई अपनी जान पेश कर सकता है तो फिर हम उनको माफ़ी देने के बारे में सोच सकते हैं, अब कौन हाथ खड़ा करे वहीं से लोगों ने जाना शुरू

कर दिया थोड़े से रह गए उसने कहा कि भई है कोई जो इनकी जगह पर अपने आप को पेश करे तो एक मर्द आगे बढ़ा और उसने कहा कि जी हां आप बे शक मुझे क़त्ल कर दें और मेरे शैख़ को आप छोड़ दीजिए. चुनांचे बादशाह ने ख़ीमा लगाया हुआ था और ख़ीमा के अन्दर एक बकरी भी पहुंचाई गई चुनांचे वह उस मुरीद को जो कहता था कि मुझे आप बे शक क़त्ल कर दें उसको उस ख़ीमा में पहुंचा दिया और उस बन्दे की बजाए वहां जाकर उस बकरी को ज़िबह कर दिया गया जब बकरी का ख़ून बाहर निकला तो सारे अफ़राद ने देखा कि बन्दे को तो क़त्ल कर दिया गया अब ख़ौफ़ व हरास और बढ़ गया फिर उसने एलान किया कि भई एक बन्दे की और ज़रूरत है कोई और है दूसरा जो अपने आप को पेश करे अब तो ख़ून भी देख चुके थे अब कौन अपने आप को पेश करत्ता चुनांचे सब ख़ामोश जब बार बार पूछा तो एक औरत ने कहा कि जी हां मैं भी अपनी जान पेश करती हूं मुझे क़त्ल कर लो और मेरे शैख़ को तुम छोड़ दो. इसके बाद फिर किसी और ने हाथ नहीं खड़ा किया तो शैख़ ने कहा कि मैं नहीं कहता था कि आप को लाखों का मजमा नज़र आता है मगर मेरे मुरीद तो इसमें डेढ़ ही हैं, बादशाह ने कहा कि हां ठीक है मर्द की गवाही पूरी और औरत की आधी तो आप ने ठीक कहा कि मर्द पूरा मुरीद और औरत आधी मुरीद उसने कहा कि नहीं इसका उलट है मर्द आधा मुरीद था औरत पूरी मुरीद थी कि जिस ने ख़ून अपनी आंखों से देखा और फिर अपनी जान देने के लिए तैयार हो गई तो इरादत कहते तो हैं, मगर इरादत की पुख़तगी आज हर एक को हासिल नहीं है, इसी बिना पर फिर मक़सूद हर एक को हासिल नहीं होता चुनांचे तीन बातें लोहे की लकीर हैं इनको अपने सीनों पर लिख लीजिए हमेशा इनको सच्चा पायेंगे।

लोहे की लकीर

......(1) सब से पहली बात कि जो बन्दा अपने बातिन को दुरूस्त कर लेता है अल्लाह तआला उसके ज़ाहिर को संवार दिया करते हैं, आज कल कहते हैं कि मेरे लिए यह रोकावट है और वह रोकावट है यह रोकावटें इसीलिए हैं कि मन में ख़राबियां होती हैं जो बन्दा अपने मन को साफ़ कर लेगा एक वक़्त आयेगा कि अल्लाह तआला सब रोकावटों को दूर फ़रमा देंगें ना मुवाफ़िक़ हालात को अल्लाह तआला मुवाफ़िक़ बना देंगे, तो पहली बात कि जो बन्दा अपने बातिन को दुरूस्त कर लेता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके ज़ाहिर को भी दुरूस्त फ़रमा देते हैं।

......(2) दूसरी बात जो बन्दा अपनी आख़रत को संवार लेता है अल्लाह रब्बुल इज्ज़त उसकी दुनिया को भी संवार देते हैं,

......(3) तीसरी बात जो बन्दा अपना मामला अपने परवरदिगार के साथ दुरूस्त कर लेता है अल्लाह तआला उसका मामला मख़लूक़ के साथ भी दुरूस्त फ़रमा देते हैं आज सोचते हैं नौजवान कि जी मैं क्या करूं चेहरा पर सुन्नत सजाऊंगा अम्मी नाराज़ हो जाएगी, अब्बू नाराज़ हो जायेंगे फ़लां नारज़ हो जाएगा, नहीं शरीयत के मामला में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रज़ा सब से पहले है لا طاعة المخلوق فی معصية الخالق अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इताअत सबसे पहले है ख़ाविन्द कहता है कि दुआ करो बीवी दीन के मामले में हम से कोई तआव्वुन नहीं करती, बीवीयाँ कहती हैं दुआ करो दीन के मामले में ख़ाविन्द हमारा साथ नहीं देते लेकिन ऐसी बात नहीं होती अगर यह मियाँ या बीवी अपने तअल्लुक़ ठीक कर लें अल्लह तआला उसके और मख़लूक़ के मामले को खुद बखुद ठीक कर देगा, चोर अपने अन्दर होता है हम उसे किसी और जगह ढूंढ़ रहे होते हैं हमें नज़र नहीं आता है कि यह औलाद ठीक नहीं है लेकिन वह औलाद में चोर नहीं है, चोर हमारे दिल के अन्दर है, हम अगर अपने आप को सौ फ़ीसद शरीअत के ऊपर जमा लेंगे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारे और मख़लूक़ात के

दरमियान के तअल्लुक़ात को दुरूस्त फ़रमा देंगे और अगर हम यह कहेंगे कि जी हम तो जैसे हैं सो हैं बस औलाद ठीक हो जायें वैसे भी तो औलाद ठीक नहीं होती हमारे एक बुज़ुर्ग थे उनके पास एक बन्दा अपने बेटे को लेकर आया हज़रत जी दुआ करो कि यह मेरा बेटा नेक बन जाये और वह मासूम दूध पीता बच्चा उन्होंने उसके चेहरा पर हाथ फेर का कहा, अच्छा हम दुआ करते हैं कि पहले अल्लाह बाप को नेक बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये–

तसव्वुफ़ का पहला क़दम

याद रखें जो इंसान अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़िलाफ़ बग़ावत का अलम बुलन्द करता है फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसकी दुनिया को भी बर्बाद कर देता है तो तसव्वुफ़ व सुलूक का पहला क़दम यह कि इंसान हत्तलवसा कोशिश करे कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाफ़रमानी न करे इसका मतलब क्या है क्या हव फ़रिशता बन जायेगा? नहीं इस का मतलब यह है कि दिल में नीयत यही रखे अगर किसी वक़्त नफ़्स ग़ालिब आये, शैतान बहकाये और गुनाह करवाए तो फ़ौरन तौबा के साथ, इस नीयत का इरादा करे नीयत हर वक़्त दिल में यही रखे कि मैं ने अपने रब की नाफ़रमानी नहीं करनी है, इसलिए गुनाहों की वजह से आज रूहानी हालतें बहुत ज़्यादा अबतर हो चुकी हैं,

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां

हमारे सिलसिला आलिया के बुज़ुर्ग थे मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां बड़े ही बा ख़ुदा और साहबे कश्फ़ बुज़ुर्ग थे उनके बारे में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने अपनी किताब में लिखा है कि इस वक़्त मिर्ज़ा साहब जैसा साहिबे रूहानियत शख़्स मुझे पूरी दुनिया में नज़र नहीं आता, शाह वलीउल्लह मुहद्दिस देहलवी लिखते हैं उन्होंने अपने घर के साथ मस्जिद बनाई हुई थी वह रोज़ाना की नमाज़ें तो बाजमाअत वहाँ पढ़ते थे अलबत्ता जुमा पढ़ने के लिए वह देहली की जो जामे मस्जिद

है वहाँ जाया करते थे चितली क़ब्र में हज़रत का घर था और चन्द सौ क़दम के फ़ासले से वह मस्जिद थी जामे मस्जिद तो चूंकि हज़रत बाहर नहीं निकलते थे इस लिए मुरीदीन मिलने के लिए देखने कि लिए तड़पा करते थे, जुमा के दिन सिर्फ़ आते थे इस लिए मिलने वाले उनसे मिल लेते थे मगर वह क्या करते कि जैसे ही मस्जिद में दाख़िल होने लगते थे तो अपने चेहरे के ऊपर कपड़ा ले लेते थे रूमाल ले लेते थे, अब जो लोग देखने वाले थे वह बेचारे और परेशान होते तो उनका एक ख़ादिम था उसने एक दिन पूछ लिया कि हज़रत लोग आप से इतनी मुहब्बत करते हैं और आप का दीदार करना चाहते हैं और आप का मामला यह कि आप छ दिन तो बाहर निकलते नहीं और अगर सातवें दिन निकलते हैं तो अपना चेहरा ही छुपा लेते हैं तो उन्होंने ख़दिम को बुलाया और वही अपना रूमाल उसके सर पर डाल दिया, ख़ादिम ने तो चीख़ मारी और बे होश हो गया जब होश में आया तो पूछा कि भई क्या बना तो उसने बताया कि जैसे ही उन्होंने मेरे सर पर रूमाल डाला मैं ने लोगों की तरफ़ देखा तो मुझे मस्जिद में चन्द इंसान नज़र आए और बाक़ी कुत्ते बिल्ली फिरते हुए नज़र आये उनकी रूहानी शक्लें जो गुनाहों के सबब थीं वह उनको नज़र आती थीं तो मिर्ज़ा साहब ने फ़रमाया कि देखो यह कैफ़ियत है मेरी इस वजह से मैं अपने चेहरे को छुपा लेता हूँ कि मेरी नज़र ही न पड़े मुझे क़िसी से बदगुमानी न पैदा हो, तो तसव्वुफ़ व सुलूक का निचोड़ यह कि हम अपनी पूरी ज़िंदगी शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ बनायें सर से लेकर पांव तक हम अपने रब की फ़रमांबरदारी वाली ज़िंदगी को इख़्तियार करें, यह तमन्ना अपने दिल में हर वक़्त रखें वरना गुनाहों का वबाल हमें अपनी ज़िन्दगी में खुद भी देखना पड़ेगा,

तीन गुनाह गुनाहों की जड़

तीन गुनाह तमाम गुनाहों की बुनियाद हैं

(1) सबसे पहला गुनाह "तकब्बुर" यह माँ हैं फिर उजब खुद पसंदी यह सब इसी तकब्बुर के अन्दर समाई हुई हैं, अर्श के ऊपर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाफ़रमानी इस गुनाह की वजह से हुई शैतान ने तकब्बुर किया—

(2) दुसरा गुनाह "हिर्स" यह जो हिर्स है बहुत बड़ी मुसीबत है नौजवान में जो शहवत होती है वह हिर्स ही की औलाद है, असल बुनियाद हिर्स होती है अब एक आदमी का निकाह हो गया बीवी नेक है मुहब्बत करने वाली है लिहाज़ा उसकी घर की ज़िंदगी ख़ुशी से गुज़रनी चाहिए, मगर नहीं उसकी नज़र किसी और पर है, किस वजह से हिर्स की वजह से, हज़रत आदम से जो भूल हुई थी जन्नत में उसकी बुनियाद क्या बनी थी? हिर्स यह अच्छी भी होती है बुरी भी होती है, उनके दिल में यह था कि मुझे हमेशा जन्नत में रहने का मौक़ा मिले अल्लाह तआला का कुर्ब नसीब हो—

(3) और तीसरा गुनाह "हसद" यह जो कीना दिल में होता है ईमान वालों के ख़िलाफ़, यह हसद की वजह से होता है, और सबसे पहला क़त्ल का जो गुनाह हुआ वह हसद की वजह से हुआ कि एक भाई ने दूसरे भाई को क़त्ल कर दिय।

इन तीन गुनाहों की वजह से हम बचने की पूरी कोशिश करें, तो यह तीन गुनाह बुनियाद हैं इन गुनाहों से बचने के लिए पूरी कोशिश करने की ज़रूरत है उम्र गुज़रती जाती है और इंसान गुनाहों को छोड़ने की बजाये गुनाह की आदत में पुख़्ता होता चला जाता है।

बूढ़ों के लिए इबरत

सैय्यदना उमर रज़ि. एक दफ़ा नबी ﷺ की ख़िदमत में पेश हुए तो क्या देखा कि नबी ﷺ की मोबारक आंखों से आंसू टपक रहे हैं उमर रज़ि. बड़े परेशान हुए ऐ अल्लाह के महबूब आप क्यों रो रहे हैं? तो नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि अभी मेरे पास जिबरईल आए थे और

वह आकर मुझे कहने लगे कि जो बन्दा कलमा पढ़ लेता है और कलमा पढ़ते पढ़ते उसके बाल सफ़ेद हो जाते हैं उस बूढ़े को मुझे अज़ाब देते हुए हया आती है, तो मैं इस बात पर रो रहा हूं कि अल्लाह तआला को तो बूढ़े को अज़ाब देते हुए हया आती है मगर बूढ़े को अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करते करते क्यों हया नहीं आती।

· इस लिए एक बुज़ुर्ग थे उन्होंने अपने बेटे को नसीहत की कि बेटे! गुनाह न कर अल्लाह से हया कर और अल्लाह से हया नहीं तो मख़लूक़ से हया कर और अगर मख़लूक़ से हया नहीं तो अपने आप को जानवरों में शुमार कर,

कामियाबी के तीन गुर

आज की पहली महफ़िल में तीन बातें आप अपने दिलों में महफ़ूज़ कर लीजिए कि

(1)...... सालिक कामियाब तब होता है कि उसके दिल में गुनाहों से बचने के लिए अल्लाह का ख़ौफ मौजूद हो, जो बन्दा कहे कि जी मेरे दिल में अल्लाह का बड़ा ख़ौफ़ है और फिर इरादा से गुनाह का इरतेकाब करे समझ लो कि यह ग़लत बयानी कर रहा है अल्लाह तआला के ख़ौफ की पहचान यह कि इन्सान नाफ़रमानी से बच जाता है।

(2)...... दूसरी बात कि एक आदमी दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से नेक उम्मीदें रखे और उम्मीद रखने की पहचान कि बन्दा हर वक़्त इबादत में मशगूल रहे जो कहे कि जी मुझे अल्लाह से बड़ी नेक उम्मीदें है और नमाज़ें भी पूरी न पढ़ता हो, तो समझ लो कि उसकी उम्मीद ठीक नहीं है उसकी उम्मीद ग़लत है।

(3)...... और तीसरी बात यह कि उस बन्दे को हर वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ध्यान नसीब रहे, याद रखें हर चीज़ की पहचान होती है मोहब्बत की पहचानप ध्यान होता है, किसी को मोहब्बत हो किसी से

तो हर वक़्त उसका ख़्याल रहेगा उसका ध्यान रहेगा वह बन्दा आप को सोचों में गुम नज़र आएगा, अल्लाह तआला से भी मोहब्बत करने वालों का यही मामला है वह भी हर वक़्त अल्लाह तआला की सोचों में गुम होते हैं अल्लाह के ख़्याल में, अल्लाह तआला के ध्यान में वह आप को गुम नज़र आयेंगे, इसी को वक़ूफ़ क़ल्बी कहते हैं, तो हमारे मशायख़ ने फ़रमाया कि लेटे बैठे चलते फिरते हर वक़्त हम अपने दिल में अपने रब का ध्यान रखें।

नाकामी की तीन चीज़ें

तीन चीज़ें ईमान ज़ाया होने का सबब बनती हैं

(1)...... सब से पहली बात कि जो इन्सान ईमान की नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता उसके ईमान सल्ब होने के चांस ज़्यादा होते हैं क्योंकि जिस नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करते अल्लाह तआला उस नेमत को वापस ले लेते हैं, नेमत तब बाक़ी रहती है जब इन्सान उस नेमत पर अपने रब का शुक्र अदा करता है उस लिए दुआयें सिखला दी गईं رضيت بالله ربا وبالاسلام دينا وبسيدنا محمد ﷺ نبيا ورسولا तो हम अपने दिल में भी यही सोचें हम अपने रब से राज़ी हैं वह हमारा परवरदिगार है हम नबी ﷺ से राज़ी हैं वह हमारे आक़ा और सरदार हैं और हम दीन से राज़ी हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमें यह नेमत अता फ़रमाई तो पहली बात कि हम नेमते ईमान पर हम अल्लाह का शुक्र अदा करें।

(2)...... और दूसरी बात ईमान के सल्ब होने के बारे में मुतफ़क्किर रहें जो इन्सान ईमान सल्ब होने से बेपरवाह हो जाता है ईमान वह ईमान से कई मर्तबा महरूम हो जाता है भई जब एक आदमी को ध्यान ही नहीं किसी चीज़ का तो साफ़ ज़ाहिर है कि वह नेमत उससे छिन जाएगी, इस लिए किताबों में लिखा है कि कितने लोग ऐसे हैं कि ज़िन्दगी भर उनका नाम मुसलमानों की फेहरिस्त में रहता है मगर मौत

के वक़्त मुसलमानों की फ़ेहरिस्त से नाम ख़ारिज कर दिया जाता है, हदीस पाक में आया कि कुर्बे क़ियामत में ऐसा वक़्त आएगा सुबह में एक आदमी ईमान वाला होगा और जब शाम सोने के लिए बिस्तर पर जाएगा ईमान से खाली होगा, इस की वजह क्या होगी? कि शक पैदा करने वाली बातें उस ज़माना में आम हो जायेंगी, कभी अल्लाह के बारे में शक कभी नबी ﷺ के बारे में कभी दीन की बातों में यह शक बन्दे के ईमान को ज़ाया कर देता है।

(3)...... और तीसरी बात दीनदारों से नफ़रत होना आप ने देखा होगा कई लोगों को कहते हैं जी हमें मौलवी अच्छे ही नहीं लगते या कोई भी दीनदार चेहरा हम को अच्छा नहीं लगता तो जिस बन्दे को दीनदारों से नफ़रत हो उस बन्दे का ईमान सल्ब हो जाता है यह तीन बातें बहुत अहम हैं एक नेमते ईमान पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें, दूसरा ईमान की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह से हमेशा दुआयें मांगते रहें और तीसरा दीनदारों के साथ मोहब्बत रखें

खुलासए कलाम

हमारे मशायख़ ने कहा कि तमाम आसमानी किताबों का अगर निचोड़ निकालें तो तीन बातें बनती हैं

(1)...... पहली बात कि इन्सान के दिल में सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हो ताकि वह गुनाहों से बच सके।

(2)...... और दूसरी बात कि बन्दे के दिल में अल्लाह तआला से उम्मीद उसके ख़ौफ़ से भी ज़्यादा हो

(3)...... और तीसरी बात कि इन्सान अपने भाई के लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करे।

अब बतायें हम चाहते हैं कि कोई हमारी ग़ीबत करे, हम किसी की क्यों करते हैं? हम चाहते हैं कोई हमारे साथ झूठ बोले हम क्यों झूट बोलते हैं हम चाहते हैं कोई वादा ख़िलाफ़ी करे, हम क्यों वादा

ख़िलाफ़ी करते हैं? हम चाहते हैं कोई हमारी इज्ज़त की तरफ़ बुरी नज़र उठाए हम क्यों किसी की इज़्ज़त की तरफ़ बुरी नज़र उठायें? तो जो हम अपने लिए पसन्द करते हैं वही हम अपने भाई के लिए पसन्द करें और यह चीज़ें तब नसीब होती हैं जब इन्सान की नीयत के अन्दर इख़लास हो इन सब का दारोमदार इन्सान की नीयत पर है हमारे एक बुजुर्ग जो बड़े मशायख़ में से गुज़रे हैं उन्होंने पन्जाबी में अजीब व ग़रीब अशआर कहे तो एक शेअर हमारे इस मज़मून के साथ बहुत मुवाफ़क़त रखता है लेकिन हमारे कई दोस्तों को पंजाबी समझ में नहीं आएगी ताहम कुछ इसका तर्जमा करने की कोशिश की जाएगी फ़रमाते हैं।

जती सतियां रब मिल दाते मिल दादा दां ख़सयानों

लोग कहते हैं कि जी मियां बीवी का तअल्लुक़ अल्लाह तआला की मारेफ़त में रोकावट है वह कहते हैं कि अगर भाई यह इज़्दवाजी ज़िन्दगी से हट कर ज़िन्दगी गुज़ारने से रब मिलता तो यह जो ख़स्सी जानवर होते हैं फिर उनको रब मिल जाया करता उनकी इज़्दवाजी ज़िन्दगी कोई नहीं होती।

सर मनायां रब मिल दां ते मिल दा भेंड अस्सयानो

अगर सर मुडा देने से रब मिलता तो इक भेड़ होती है जिस के सिर पर बाल नहीं होते उनको रब मिल जाता।

नाते धोते रब मिल दाते मिल दाकमया मछयानो

नहाने धोने से रब मिलता तो फिर मछलियों को और कछुवे को रब मिल जाता।

रब मिल दाते मिल दानीता अच्छयानों

अल्लाह तआला तो अच्छी नीयत वाले को मिलता है हम अपनी नीयत अच्छी करें हर एक के बारे में हमारी नीयत ख़ैर ख़्वाही का हो, कोई बुरा भी करे हम उसके साथ अच्छा करें।

मोमिन कैसे ज़िन्दगी गुज़ारे

हज़रत ईसा عليه السلام को किसी ने बुरा भला कहा आप ने उसके साथ अच्छाई का मामला किया तो देखने वाला बड़ा हैरान हुआ, हज़रत उसने ऐसी बदतमीज़ी की और आप इतने अच्छे अख़लाक़ से पेश आए फ़रमाया كل اناء يترشح بما فيه हर बरतन के अन्दर से वही निकलता है जो बरतन के अन्दर मौजूद होता है, उसके अन्दर शर था शर निकला अगर हमारे अन्दर अल्लाह ने ख़ैर डाली है तो हम ख़ैर की बात ही करेंगे, तो नीयत साफ़ हो अच्छी हो किसी के बारे में बुरी नीयत न हो, यह जो होता है कि फ़लां के बारे में दिल में कीना यह चीज़ इन्सान के दिल को सियाह कर देती है और लोग कहते हैं कि जी फ़लां ने ज़्यादती की अब हमारे दिल में उसके बारे में दिल में कीना न हो तो और क्या हो? भई अच्छाई वाले के बारे में दिल में कीना कोई होगा कीना तो उसी के बारे में होगा जो बुरा करे मोमिन की अज़मत यह है कि बुराई करे उसके बारे में भी दिल में कीना न रखे, अल्लाह के लिए माफ़ कर दे।

इस लिए लैलतुल क़द्र में हर गुनहगार की मग़्फ़िरत होती है सिवाए चन्द एक के जिन में से एक वह बन्दा भी है जिस के दिल में कीना होता है, अल्लाह तआला शबे क़द्र में भी उसकी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमाया करते, कोई कितना हमारे साथ बुरा क्यों न करे, ज़्यादती क्यों न करे, हम उस मोमिन के बारे में दिल में कीना न रखें , अल्लाह के लिए माफ़ कर दें, इसकी फिर बरकतें देखिए तो नीयत में जब इख़लास होता है फिर अमल भी कबूल हो जाते हैं फिर अल्लाह तआला फ़ैज़ जारी फ़रमा दिया करते हैं।

आज मदारिस तो बहुत बनते हैं मगर सब मदारिस का फ़ैज़ तो आगे नहीं चलता हम ने देखा कितनी ईमारतें बनी हुई हैं उजाड़ नज़र आती हैं एक जगह इमारत बनाई मदरसा की नीयत से और आज

उसके अन्दर अंग्रेज़ी स्कूल चल रहा है तो हर इदारे को तो क़बूलियत नहीं होती क्यों? इख़लास नीयत की वजह से फ़र्क़ आ जाता है एक होता है अरबी का हम एक होता है उर्दू का हम अरबी का जो "हम" है उसका मतलब "ग़म" होता है और उस हम से मोहतमिम बना है कि जिस के दिल में ग़म हो और एक उर्दू का "हम" कि हम ही हम हैं, तो उर्दू का हम होगा तो इदारा गया, और अरबी का हम होगा तो इदारा अल्लाह के यहां क़बूल होगा, हमारे अकाबिरीन उलमाए देवबन्द की ज़िन्दगियों को देखें एक एक की ज़िन्दगी में ऐसा खुलूस मिलता है कि इन्सान हैरान हो जाता है और इसी वजह से उनका फ़ैज़ पूरी दुनिया में जारी हुआ है आज आप कहीं चले जायें आप को हर जगह उलमाए देवबन्द के फ़रज़न्द बैठे दीन का काम करते नज़र आयेंगे।

यह इल्मो हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शह पारा है
हर फूल यहां इक शोला है, हर सू यहां मीनारा है
आबिद के यक़ीन से रौशन है सादात का सच्चा साफ़ अमल
आंखों ने कहां देखा होगा इख़लास का ऐसा ताज महल
कुहसार यहां दब जाते हैं तूफ़ान यहां रूक जाते हैं
इस काख़ फ़क़ीरी के आगे शाहों के महल झुक जाते हैं

तो यह अज़मतें मिलती हैं इख़लासे नीयत की वजह से हमारे वह फ़र्द जो दीनी इदारे चला रहे हैं वह ज़रा मतवज्जेह हों इसको ग़म बनायें हम न बनायें ग़म बनायें अल्लाह से तहज्जुद में मांगें नमाज़ों के बाद मांगा करें जब दिल में ग़म होगा फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से क़बूलियत होगी, तो आज की इस महफ़िल में एक तो हम दिलों में यह नीयत करें कि हम हर मामले में अपनी नीयत को ख़ालिसतन अल्लाह के लिए करेंगे, और दूसरी बात कि हम किसी के बारे में कीना नहीं रखेंगे और तीसरी बात कि हम हमा तन अल्लाह तआला के ध्यान में ज़िन्दगी गुज़ारें।

وآخر دعوانا ان الحمدلله رب العالمين